श्रीवीतरागायनमः।

संसार विषय जितने जीव दीख पड़ते हैं सबही अपने दुःख की निवृत्ति और सुखकी वांछा करते हैं परंतु सुखका मूल कारण शुभ परिणामहै और शुभाशुभ का विचार विना ज्ञान और शास्त्र स्वाध्याय के कदापि नहीं होसक्ता और शास्त्र स्वाध्याय का प्रचार शास्त्रोंके देश काल भाव के अनुसार न मिलनेसे बहुतही कमहोगयाथा इसका विचार कर हमने जैनग्रंथों के शुद्ध छपाने का बीड़ा उठाया था शुरू में बहुत से भाइयोंने कम समझीसे हमसे द्वेषकर इस कार्य में विघ्न डाले परंतु अब वह भी मानगए कि विना जैन ग्रंथों के छपे कदापि काम नहीं चलसक्ता ऐसा विचार कर हमने बड़े बड़े जैनग्रंथ और छोटी छोटी बहुतसी पुस्तकें छपाई और दूसरे भाइयोंकेछपाएहुए ग्रंथकुल मंगाकर एकत्र किए जिससे दूसरे भाइयोंको हमारे पास सर्व प्रकारके ग्रंथ हरसमय मिलसकैं थोड़े से ग्रंथों की सूची इस ग्रंथ के साथ भी है सो देख लेना इन के सिवाय हमेशा नए नए ग्रंथ छपते रहतेहैं जो हमारे दफ्तर से खबर मालूम होसक्तीहै।

ग्रंथ मिलनेका पता—

लाला जैनीलाल जैन—मालिक जैनधर्मप्रचारकपुस्तकालय

मु० देवबन्द. जि० सहारनपुर

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

अथ श्री तेरह द्वीप जिनमंदिर पूजापाठ-

विधान प्रारम्भः ।

॥ दोहा ॥

श्री अरहंत प्रणाम कर, पंच परम गुरु ध्याय ।
तिन के गुण वर्णन करूं, मन बच सीस निवाय ॥१॥

॥ सवैया ईकतीसा ॥

अरहंत देव को प्रणामकरूँ वार वार, सिद्धनको सीस न्यायगुण गाइयतु हैं। सुरउबझाय दोऊइनके जुगलपाय, हिरदे मैं धार तिहुंकाल ध्याइयतु हैं॥साधु सिव मारग बिशाल दरसावत हैं, पावत परम-पद सीस नाइयतु हैं। येही पंच परम धरम को स्वरूप कहो तिन को सुध्यान धार मोक्ष पाइयतु हैं २॥

॥ दोहा ॥

चार घाति या कर्म जे, तिन को कीनो नाश ।
तब केवल परघट भयो, लोकालोक प्रकाश ॥ ३ ॥
ऐसे अरहंत देव के, गुण छीलीस निहार ॥

तिन का कुछ वर्णन करूं, सुनो भव्य चितधार ॥ ४ ॥
दस जनमत दस ज्ञान के, सुरकृत चौदह जान ।
चार अनंत चतुष्ट गिन, प्रात्य हार्य वसु मान ॥ ५ ॥
धरैं सुगुण छयालीसजे, तेअरहंत जिनेश ।
तिन के चरणन सीस नय, पूजत सकल सुरेश ॥ ६ ॥

पद्धड़ी ॥

जैस्वेद रहितं जिन तन सुजान । मल रहितं सु निरमल हियेआन ॥ तन रुधिर सु उज्जल क्षीर वर्न । जग तारण प्रभु सबदुःख हर्न ॥ ७ समचतुर धरैं संस्थान सार । तन बज्र ब्रषभ नाराच धार ॥ मन मोहन मूरत सरस देख । शसि सूर सुछवि वारो बिशेख ॥ ८ ॥ तन मैं जु सुगध लसै अपार । लक्षण एकसो अरु आठधार ॥ बोलत प्रियहित मित वचनजान । बलहैअनंततनसो प्रमान ॥ ९ ॥

दोहा

दसजनमत पूरनभई, अबकेवल दससार ।
तिनको सुन समझैं सुधी, परम शुद्धता धार ॥ १० ॥

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

जोजन सतचार कहो प्रमान, दुर्भिक्ष पड़ै नाहिं जिनवखान ॥ केवल लहि गगन चलैं जिनेश, कोइ जीवघात नहि लहै लेश ॥ ११ ॥ केवल प्रकटे बर्जित अहार। उपसर्ग रहित प्रभुतनबिचार ॥

चतुरानन प्रभु को दरस होय । सब जीव लहैं आनंद सोय ॥ १२ ॥ सब विद्याके ईश्वर महान । परमौदारिक तन विमल जान ॥ तन छाया रहित कहो गणेश । लागै न पलक सों पलक लेश ॥ १३ ॥ नखकेश बढ़ैं नहिं जिन शरीर । केवल अतिशय दंसभई बीर ॥ जै जै जिनवर तुम गुण विशाल । गावैं ते शिव पद लहैं हाल ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

दंस अतिशय केवलतनी, पूरण भई सुजान ।
अब सुरकृत चौदह सरस, भाषी श्रीभगवान ॥ १५ ॥

॥ अड़िल छन्द ॥

सरस मागधी भाषाजिन मुखतै खिरैं। समझैं सबही जीव पाप तिनके हरैं ॥ सब जीवनकै मैत्री भावनिहारये । सब रितु के फल फूल फलैं सुविचारये ॥ १६ ॥

सुंदरी छंद ।

सरस दरपण समसुधरालसे । सरवजीवन कै आनंदवसै ॥ पवनगंध सुगंध तहां चलै । अघ समूह सबै ही दलमलैं ॥ १७॥ धूल कंटक कहुं नहि देखये । जो जनातरतांहि नलेखये ॥ हो तगंधो दक बरषासही । परमपावन शोभित है मही ॥ १८ ॥ रचत कंमलसुदेवसुहावने । पंचदस पंकति मनभावने ॥ भएहैं सौपाच्चिस जानिये । सकलधान फलैं परमानिये ॥ १९ ॥ सुरसु आव्हाननविधि कोकरै । गगनें निर्मलता द्युति को धरैं ॥ धरम चक्रसुआगे कोचलै । पाप पुंज समूहनकोदलै ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

कहे सिद्ध महाराज के, यह अद्भुतगुण आठ।
तिनको सुमरण भवि करैं, कीजे निशदिन पाठ ॥ ३५ ॥

॥ मद अविलिप्त कपोल छन्द ॥

गुण छत्तिसको लिये विराजत श्री आचारज। धरैं परम वैराग भाव धारैं शुभ आरज ॥ बीसेंपांच गुण धरैं अंग पूरब सुखदाई ॥ सोउवझाय सुजान तिनैं हम सीस निवाई ॥ ३६ ॥ आठैबीस गुण सहित सर्व जीवन उपकारी। धरैं दिगम्बररूप साधुपदके अधिकारी ॥ इनको सीस निवाय ध्याय उर अंतरभाई। करो मङ्गलाचरण सुभविजन को सुखदाई ॥ ३७ ॥

अथ श्री आदिनाथजी की स्तुति दोहा।

भए वंश इष्वाक मैं, श्री आदीश्वर देव।
सुर नर मिल पूजत सदा, कीजे तिनकी सेव ॥ ३८ ॥

॥ पद्धड़ी छंद ॥

श्रीनाभिराय मरु देविजान॥तिनउर उपजे भगवान आन॥इंद्रादिक सब मिल हरषधार। गर्भादिजन्म उत्सवविचार ३९ मनमथ मदमर्दन को सुसूर। सब क्रोध कषाय कियो है दूर॥ चारोंसो घातिया कियेनाश। तबकेवल ज्ञान भयो प्रकाश ४० दरशो सब लोकालोकजान। तिन कहो धरम बर्णन बखान॥ जिनमुखते बानी खिरैसार। सुनकें भविभव दधभए पार ॥ ४१ ॥ ऐसेश्रीरिषभ जिनेशराय। कैलाश सिखरतैं मोक्षपाय॥ जैजैत्रिभुवन के नाथराय। भविलाल नमत भुँवि सीस लाय ॥ ४२ ॥ अंतिम श्रीबीर

जिनेश देव । सुरनर नित तिनकी करत सेव ॥ तिनको अब वर्णन करूं गाय । संक्षेप मात्र बुधि तुच्छ पाय ॥ ४३ ॥ प्रभु नाथ बंश में जनमलीन । सिद्धारथ नृप बहुदान दीन ॥ ले गए सुदर्शन मेर इंद्र । कर जनम महोत्सव सव सुरिंद्र ॥ ४४ ॥ इंद्रानी श्रीजिन देवलेय । माता त्रशला की गोद देय ॥ पूजे माता अरु तात पांय । निज निज थानक सब देव जांय ॥ ४५ ॥ चौबीसौं[२४] जिनेश्वर एकवार । तिनके पद प्रणमूं हरषधार ॥ मंगलकरता मङ्गल स्वरूप । तिनको सिरनावत सरव भूप ४६

॥ दोहा ॥

जिन वाणी गुण अगम है, कोइ न पावै पार ।
करूं मङ्गलाचरण मैं, तुच्छ बुद्धि अनुसार ॥ ४७ ॥

मद अविलिप्तकपोल छन्द ॥

नमूंसारदामाय परम सुंदर सुखदाई । मोह तिमर के नाश करन को रवि समगाई । शिव मारग दरशाय करैं सब कारज जी के । जो धारैं उरमांहि सुजिन बानी गुण नीके ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरुचरण प्रणाम कर, मन वच सीस निवाय ।
मङ्गलमइ मङ्गल करण, जग जीवन सुखदाय ॥ ४९ ॥

॥ मद अविलिप्तकपोल छन्द ॥

धरैं दिगंवर रूप भूप सब पदको परसैं । हिये परम वैराग मोक्ष मारग को दरसैं ॥ जे भवि सेवैं चरण तिनैं सम्यक दरसावैं । करैं आप कल्याण सतोगुन[१२] भाव न भावैं ॥ ५० ॥ पंच महाव्रत धरैं

वरैं शिव सुंदर नारी । निज अनुभव रसलीन परमपद के सुविचारी ॥ [१०]दंस लक्षण जिन धर्म गहैं रत्न त्रयधारी । ऐसे श्रीमुनिराज चरण पर जग बलहारी ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

गुरुप्रसाद तै पाइये, ज्ञान अधिक जगमाँहि ।
कारज कारी जीव को, गुरु समान कोउ नाँहि ॥ ५२ ॥

इति मङ्गलाचरण संम्पूर्ण ।

॥ अथ मांडने की विधि प्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

[४]चाँर [२०]बीसं [४०]चाँलीस [६४]गँज, इतनो क्षेत्र सुजान ।
तामैं रचो सुमांडनो, गोलाकार प्रमान ॥ ५३ ॥

॥ सुंदरी छंद ॥

अब सुमांडने की विधिजानिये । सरस सुंदरता परमानिये ॥ बैठकै भविजीव विचार कै । बुद्धिवंत हिये अवधारकै ॥ ५४ ॥ दीप[२½]अढ़ाई सुंदर सोहना । सुरसुनर सबके मन मोहना ॥ तासु मध्य विराजैं सारजू । पंच मेर परम सुखकार जु ॥५५॥ एक मेरतनो बर्णन भनो । [४]चाँर बनचारों दिश मैं गनो ॥ बनरहे जिन मंदिर सोहने ॥ चाँर दिश [१६]सोलह मन मोहने ॥ ५६ ॥ सरवशोभाकर सो लसत हैं । भव्यजन मुनिजन मन वसत हैं ॥ देव जै जैकार तहां करैं । बजत दुंधभि बाजे मन हरैं ॥५७॥

॥ दोहा ॥

जिन मंदिर गिरपांच[5] के, भए सु अंस्सी[80] जान ।
अब आगें बर्णन करूं, सो सुनिये उर आन ॥ ५८ ॥

मद अचिलिप्त कपोल छन्द ।

गजदंतनके बीस[20] कूट द्रुमके दस[10] जानो। जिनमंदिर गन तीस[30] कुलाचलके परमानो ॥ सौसत्तर[170] वैताड़ अंसी[80] बक्षार विराजैं। इष्वाकार सुचार[4] सरस जिनमन्दिर छाजैं ॥ ५९ ॥

दोहा ।

नंदीश्वर बावन[52] गनो, मानुपोत्र के चार[4] । कुंडलगिर और रुचिकागिरि, चार[4] चार[4] उरधार ॥ ६० ॥
एक[1] एक मंदिर विषै, ध्वजा सुगिनिये एक[1]। रत्न डंडकर सोहनी धरैं अनादि सुटेक ॥ ६१ ॥

अथ अकृत्रिम जिन मंदिर वर्णन ॥ कुसुमलता छंद ॥

केवल ज्ञानी श्री जिनवरनें द्वादश[12] बानी कही सुभाय। श्री जिन मंदिर कहे अकृत्रिम तिनकी गिनती सुन मनलाय ॥ मध्यलोक में तेरहे[13] द्वीपलो कहे चारसैठावन[458] गाय। तहां जाय निरजर निरजरनी पूजत श्री जिन वरके पाय ॥ ६२ ॥ श्री जिन मंदिर कहे अकृत्रिम समो सरण रचना सब ठौर। बिंब एकसौआठ[108] अनूपम इक[1] इक[1] मंदिर मैं नहि और ॥ धरैं पाँचसै धनुष उँचाई धारैं तीन[3] क्षत्र सिर-मौर। इंद्रादिक तहां पूजन आवैं यक्ष गदाले ठाड़े पौर ॥ ६३ ॥

अथ एकंसौ इन्द्र तिनके नाम॥ कुसुमलता छन्द ।

भवनपती चौंलीस[40] बताए बीस[20] प्रतेंद्र इन्द्र फुनि बीस[20] ॥ बिंतर देवतने जिनभाषे सरस बिभूति धरे बतीस[32]

कहे कल्पवासी सुखरासी परम महा सुंदर चौबीसैं[२४] । दोयं[२] जोतपी दोनैंर[२] पशु के सब जिन वरको नावत सीस ॥ ६४ ॥

अथ कितेन इंद्र कहां कहां गमन करैं यह वर्णन ॥ कुसुमलता छंद ॥

जहां जहां जिन भवन बिराजत तहां सुर सुरपति पूजन जाय । दीप अढाई मैं सब मिलकर नर तिरयंच जजैं जिनराय ॥ बाकी एक शतक द्वै बर्जित इंद्र आपनी सैनसो लाय । हम पूजत आव्हान न करकै अपने घर मैं मंगल गाय ॥ ६५ ॥

दोहा ।

देख दरश जिन राज के, होत परम आनंद ।
भव्यजीव सम्यक लहैं, कटैं कर्म के फंद ॥ ६६ ॥
ऐसे श्री सर्वज्ञ पद, पूजत इंद्रसो सर्व ।
परमहर्ष धारैंसु उर, लेले वसु बिधदर्व ॥ ६७ ॥

अथ अष्टप्रकार द्रव्य वर्णन ॥ सवैया इकतीसा ॥ ३१ ॥

क्षीरोदधि समसार उज्जल दरणनीरं[१], चंदनं[२] पवित्र घस केसर मिलायकै । अक्षत[३] मनोज्ञ मानो मोती हैं विराजमान, फूल[४] नाना भांति के सुगंधित मंगायकै ॥ नेवज[५] अनेक भांति तुरत बनाय लाय जग मग जोति होत दीपकं[६] जगायकै । खेवत सुगंध[७] सों दिश माहीं फैलरही, फलले[८] सुफल पाय देव कूं चढ़ायकै ॥ ६८ ॥ उज्जलसु जललाय चंदन सुगंध भरो, अक्षत मनोज्ञ स्वेत धोयकै सुलायकै ।

सुदंर सु फूल नाना भांति के सुगंध भरे, नेवज मनोहर सु तुरत बनायकै ॥ जग मग जोति दीप धूपहु सुगंध भरी, लावत हैं फल महामिष्ट को मंगायकै । ऐसो द्रव्य लाय भव्य पूजत जिनेश पाय पुन्य के समूह भरैं प्रभुको चढायकै ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

श्री जिन पूजा जो करैं, सो नर इंद्र समान ।
पुन्यवान ता समनहीं, सेवत सुरनर आन ॥ ७० ॥

अथ सामग्री बनावने की बिधि प्रारम्भः ॥ कवित्त ॥

जल[1] चंदन[2] अक्षत[3] प्रसून[4] ले नेवज[5] दीप[6] धूप[7] फल[8] जान । धरती धरी गिरी धरतीपर नाहिं उठावत जे बुधिवान ॥ पगसों लगै दुष्टकोउछोवै बहुत लोग सपरस नहि ठान । प्रानी चोकर करले न चलै सो मलिन वस्त्र नहिं ढकै सुजान ॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

यह बिपरीत बचायकै, सुंदर द्रव्य सुधोय ।
ले जिनवर पूजाकरै, शिवतिय बल्लभ होय ॥ ७२ ॥

अथ पूजा कारक लक्षण ॥ सवैया इकतीसा ॥

सुंदर स्वरूप लहै देव शास्त्र ज्ञान वहै, गहै व्रत शील दया हिरदे धरतुहै। गुणके समूह धरै चारों विधि दान करै, पुन्य के भंडार भरै पातिक हरतुहै ॥ तीरथ गमन गुरु बिनय की लगन सदा, ध्यानमैं

मगन रहै नेकना टरतुहै । नर पर्याय पाय सुंदर सु द्रव्य लाय, जिनजु के थान जाय पूजाको करतुहै ॥

अथ जितने जीवन को पूजा मने है सो वर्णन ॥ सवैया इकतीसा ॥

कानो अंध धुंध टेर फोलो आंखमें सुजान, कानकटे नाक कटी भंग अंग ठानिये । खोड़ो कुब्ज तोतलो सुर भंग अंगुली न होय, पंगुभेद गाठ गूंगा खाँसी जो प्रमानिये ॥ फोड़ा कोढ़ कक्ष दाद बवेसी अदृष्ट जान, बहरा भगंदर सु स्वेत दाग जानिये । बिशन जो सातँलीन स्वांस रोग नाक बहै एते नर जीवन को पूजा मनै आनिये ॥ ७४ ॥

अथ पूजा कारक जैसा होय ताका वर्णन ॥ कुसुमलता छंद ॥

पढै ग्रंथ सामायक बिधिकर पाप समूहन को जुहरै । छैहो कायके जीव विचारे तिनपर करुणा भावधरै ॥ उज्जल चीर पहर आभूषण भाव भक्तिसों नाहिंटरै । मन बचकाय लाय चरणन चित पूजा श्री जिन राज करै ॥ ७५ ॥

अथउज्जलचीर वर्णन ॥ दोहा ॥

सातँहाथ लाँबागिनो, चौड़ा साढ़े तीन ।
सूत बसन उज्जल अमल, पहरतनर परवीन ॥ ७६ ॥
ओढ़ै सिखा लगायपद, सकल देहढकजाय ।
नेत्रनासिका करखुले, पूजत श्रीजिनराय ॥ ७७ ॥
धोतीस्वेत सुसूतकी, पहिरे मनहरषाय ।

मन वच तनलौलाय कै, पूजत श्री जिनराय ॥ ७८

अथआभूषण लक्षण ॥ दोहा ॥

श्री जिनकीपूजा करै, सोनर इंद्रसमान ।
आभूषण पहिरेइते, सोलीजे पहिचान ॥ ७९ ॥

॥ सुंदरी छंद ॥

धरैसीस सु मुकुट सुहावनो । भुजनमैं बाजूबन्द सुलावनो ॥ करन कुंडल मण मई सोहनो । रतन जड़ित कड़े करमोहनो ॥८०॥ सरसकण्ठ विषैकण्ठीकही। धुक धुकीअरु हारसुलहलही॥ परमपहुंचीपहर सुहावनी । जगमगात सोजोति कहाभनी ॥ ८१ ॥ पहरकै जोजनेऊ सारजू । कनक मणमइ अति मनहारजू ॥ रतन मई कटमेखल जानिये । परमछुद्र सुघंटिक मानिये ॥ ८२ ॥ पहर अँगुरिनमें दस मुंदरी । कनक रत समूहनसों जरी ॥ कनक साकर घुँघरू पगलसैं । झुन झुनात सुभविजन मनवसैं॥८३॥औरबहु आभर्ण विख्यातहैं।पहिरकै सब मन हरपातहैं ॥ करसुबपु प्रक्षाल सुचात्रसों । चलत श्रीजिनमंदिर भावसों ॥ ८४ ॥

दोहा ।

आभूषण यह पहरकर, पूजै जिनवर देव ।
पाप पुंज को दल मलै, सुखपावै स्वयमेव ॥ ८५ ॥

अथ पण्डित लक्षण ॥ सवैया इकतीसा ।

बाल नहिं होय नहिं वृद्ध नहिं हीन अंग, क्रोधी क्रिया हीन नहि मूरख गनीजिये । दुष्ट नहिं होय नहिं विशन विषै सुरति पूजापाठ बाचने में बुद्धिसार लीजिये ॥ दया कर भीजरहा हिरदाकमल जा-को सुंदरस्वरूप पाय दान सदा दीजिये मीठे हैं बचन मुख अक्षर सुपुष्ट कहै, गहै विनय गुरु की सु-पण्डित कहीजिये ॥ ८६ ॥

॥ अथ जिनपूजाविधि वर्णन—श्रीमण्डप वर्णन ॥ कुसुमलताछंद ॥

श्रीजिनमन्दिर बने अनूपम रचो मांडनो परम विशाल । ताके पश्चिमदिश वेदी गिन तीनैंपीठ अ-द्भुत सुरिशाल ॥ गंधकुटीपर सिंहासन है सुवरण रतन जड़ित द्युतिलाल । ताके बीचकमल सुंदर छवि परम मनोहर अतिसुख माल ॥८७॥ कमल बीच मैं बनी किरणका जगमग जगमग जोतिमहान । तापर श्रीजिनबिंब विराजत दर्शन करत सचीपति आन ॥ भामण्डल भव सातँ दिखावत तीनैंछत्र सोहैं सुखकार । चौसँठ चँवर ढुरैं सिर ऊपर इन्द्र उच्चरत जै जै कार ॥ ८८ ॥

दोहा ।

श्रीजिनमुख पूरबदिशा, लखत दृगन हरपाय ।
वह सुख जानै सुखधनी, कै जानैं जिनराय ॥ ८९ ॥

अथ पूजाविधि वर्णन ॥ कुसुमलता छन्द ।

जो नर पूजा करैं जिनेश्वर प्रथम काम इम करैं बनाय । मांजैं बासन सरिताके तट तथा कूपजल

लाव जाय ॥ दाहर छन्ना छान नीरको विलछन देय तहां पहुँचाय । या विधिकर जल झारी भरके श्री जिन न्हवन करैं मन लाय ॥ ९० ॥ मंगलपाठ पढ़ैं जहां भविजन मुख उचरत जै जै धुन गाय । मंगल द्रव्य धरैं तहांसुंदर बाजैं झांझर श्रवण सुहाय ॥ वसुविधि द्रव्य मनोहर लेकर प्राशुक जलते धोय बनाय । देव शास्त्र गुरुकी पूजा कर वहुविधि भक्ति करैं मनलाय ॥ ९१ ॥ चमर छत्र भा मंडल तोरन बहुबिध बंदरवार बंधाय । झारी धूप दहन चन्द्रोपक सब उपकरण धरैं त्रिहिसाय ॥ बाजन की ध्वनरही छाय तहां सुर खग नाचत मन हरपाय । धन्न भाग उन ही जीवन के जो यह कौतुक देखन जाय ॥ ९२ ॥

अथ पूजाकारक नौतिलक वर्णन ॥ अडिल्लछंद ।

सिखा सीस की जान ललाट[2] सुलीजिये । कंठ[3] हृदय[4] अरु कान भुजा[6] सु गनीजिये ॥ कूष हाथ अरु नाभि सरल शुभ कीजिये । तब जिनवरको जजो तिलक नव कीजिये ॥ ९३ ॥

अथपूजाकारक खडाहोनेकीविधिवर्णन ॥ अडिल्लछन्द ॥

वेदी दक्षिण ओर उतरमुख जानिये । अथवा पूरब ओर सुसन्मुख मानिये ॥ मौन गहे सुखदाक प्रक्षालितगात है । पूजत श्री जिन देव सु मनहरषात है ॥ ९४ ॥

अथ पूजा आरंभ वर्णन ॥ कुसुमलता छंद ॥

वेदी ऊपर कनक रकावी तामैं करो थापना सार । सुवरण थार धरो ता आगे ताविच रचो साथ याकार ॥ ताके ऊपर श्री पूजा विधि द्रव्य चढावो अष्टप्रकार । सकल सभा के नरनारी मिल मुखसों वोलो जैजैकार ॥ ९५ ॥

॥ दोहा ॥

या विधिसों पूजा करै, मनबच तन धर ध्यान ।
सुरगन के पद भुजकै, पावैं पद निर्वान ॥ ९६ ॥

॥ इति श्री अकृत्रिम जिन मंदिर पूजन पाठ की पीठका सम्पूर्ण ॥

अथ तेरह द्वीप संबन्धी चारसौ अट्ठावन जिन मंदिरजी की पूजन प्रारम्भः ॥

प्रथम श्री सिद्ध परमेष्टीजी की पूजन प्रारम्भः ॥ १ ॥

अथस्थापना ॥ छप्पयछंद ॥

स्वयंसिद्ध जिनभवन रतनमई बिंबाबिराजैं। नमत सुरासुर इंद्र दरशलख रविशासि लाजैं ॥ चारश तक पंचौंसआठ भुँविलोक बताए। जिनपद पूजन हेत भावधर मंगलगाए ॥ मंगल मई मंगलकरण शिवपददायक जानके। आव्हानन करके जजूं सिद्धसकल उर आन कै ॥ १ ॥ ऊँह्रींअनंत गुण बिराजमान श्री सिद्धपरमेष्टीभ्योः ॥ अत्रा वत्रा वत्रसंबौ षटाव्हाननं अत्रातिष्ट तिष्ट ठः ठः अस्थापन अत्रमम सन्नहितो भवभव बिषट संधी सकरणं स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चाल ॥

उज्जलजल शीतललाय, जिनगुण गावतहैं। सबसिद्धन कोंसु चढ़ाय, पुन्यबढ़ावतहैं ॥ सम्यक सुक्षायक जान, यह गुण पावत हैं। पूजो श्री सिद्ध महान, बल बल जावतहैं ॥२॥ ऊँ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्टीभ्योः

श्रीसुमत्तः ॥ १ ॥ णाणः ॥ २ ॥ दंशणः ॥३॥ वीर्यं ॥ ४ ॥ सुहमत्तहेवः ॥ ५ ॥ अवगाहनः ॥ ६ ॥ अगुरुलघु ॥ ७ ॥ अव्वाबाधा ॥ ८ ॥ अष्टगुणानसिद्धाणेभ्योः ॥

॥ चाल छन्द ॥

जलं॥ करपूरसुकेसरसार, चंदनसुखकारी। पूजोश्रीसिद्धनिहार, आनंदमनधारी॥सबलोकालोकप्रकाश, केवलज्ञानजगो। यहज्ञानसुगुणमनभाप, निजरसमाँहिपगो ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल की उनमान, अक्षतधोय धरे। अक्षयपद पावत जान, पुन्यभंडार भरे॥ जगमें सु पदारथ सार, तेसबदरसावैं। सोसम्यक दर्शन धार, यहगुण मनभावैं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं० ॥अक्षतं॥ सुंदर सुगुलाब अनूप, फूल अनेक कहे। श्रीसिद्ध सुपूजत भूप, बहुविधि पुन्यलहे॥ तहांबीर्य अनंतोसार, यहगुण मनआनो। संसार समुद्र तेपार, कारक प्रभुजानो ॥ ५ ॥ ॐह्रीं० ॥ पुष्प ॥ फेनीगोझा पकवान, मोदक सरसबने। पूजो श्री सिद्धमहान, भूखबिथा जुहने ॥ झलकै सबएकहि बार, ज्ञेयकहैं जितने। यहसूक्षमता गुणसार, सिद्धन के तितने ॥६॥ ॐह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ दीपककी जोत जगाय, सिद्धनको पूजो। करआरति सन्मुख जाय, निरभयपद हूजो ॥ कछुघाट न बाट प्रमाण, गुरुलघु गुणराखो। हमसीस नवावत आन, तुमगुण मुखभाखो ॥ ७ ॥ ॐह्रीं० दीपं ॥ बरधूप सुदसैं विधलाय, दंसादिश गंधधरै वसुकर्म लजावत जाय, मानो नृत्यकरै॥ इकसिद्ध मैंसिद्ध अनंत, सत्ता सवपावैं। यह अवगाहण गुणसंत सिद्धनके गावैं ॥ ८ ॥ॐह्रीं० ॥ धूपं ॥ लेफलउतकृष्टमहान, सिद्धनको पूजो। लहिमोक्ष परमसुखथान, प्रभुसम तुम हूजो ॥ यहगुण बाधाकर हीन, बाधा नाशभई। सुख अव्वा बाध सुचीन, शिवसुं-

दर सुलंइ ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफल भर कंचनथाल, अरचत करजोरी । तुमसुनयो दीन दयाल, विनती हैमोरी ॥ कर्मादिक दुष्टमहान, इनको दूरकरो । तुमसिद्ध महा सुखदान, भव भव, दुःखहरो ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

नमोसिद्ध परमात्मा, अद्भुत परम बिशाल ।
तिन गुण अगम अपार है, सरस रची जयमाल ॥ ११ ॥

॥ पद्धड़ी छंद ॥

जेजे श्रीसिद्धन को प्रणाम । जै शिव सुखसागर के सुधाम ॥ जै बल बल जात सुरेस जान । जै पूजत तनमन हरष आन ॥ १२ ॥ जै छायक गुण सम्यक्तलीन । जै केवल ज्ञान सुगुण नवीन ॥ जे लोकालोक प्रकाश वान । यह केवल अतिशय हिये आन ॥ १३ ॥ जै सर्व तत्व दरशे महान । सो दर्शन गुण तीजोसुजान ॥ जै वीर्य अनंतो है अपार । जाकि पटतर दूजो न सार ॥ १४ ॥ जै सूक्षमता गुण हिये धार । सब ज्ञेय लखो एको हिवार ॥ एक सिद्ध में सिद्ध अनंत जान । अपनी२ सत्ता प्रमान ॥ १५ ॥ अवगाहण गुण अतिशय विशाल । तिन के पद वंदो नमतभाल ॥ कछु घाट न वाट कहे प्रमान । सो गुरु लघु गुण धारैं महान ॥ १६ ॥ जै वाधा रहित बिराजमान । सो अव्या बाध कहो वखान ॥ ये वसु गुण हैं व्योहार संत । निश्चय जिनबर भाषे अनंत ॥ १७ ॥ सब

सिद्धन के गुण कहे गाय। इन गुणकर शोभित हैं बनाय॥ तिनको भविजन मन बचन काय। पूजत वर्सुविध अति हरप लाय॥ १८॥ सुर पति फन पति चक्री महान। बलहर प्रतिहर मनमथ सुजान गणपति मुनिपति मिल धरत ध्यान। जै सिद्ध शिरोमणि जग प्रधान॥ १६॥

घत्ता॥ सोरठा॥

ऐसे सिद्ध महान, तिन गुण महिमा अगम है।
वरणन कहो बखान, तुच्छ बुद्धि भवि लालजू॥ २०॥

॥ दोहा॥

करताकी यह बीनती, सुनो सिद्ध भगवान।
मोह बुलावो आप ढिग, यही अरज उर आन॥ २१॥

इति श्री सिद्ध परमेष्टी पूजा सम्पूर्णम्॥

अथ सुदर्शन मेर पूजा प्रारम्भः॥ २॥

॥ अथस्थापना॥ पद्धड़ी छंद॥

प्रथम सुदर्शन मेर सुजानो। भद्रशालबन प्रथम प्रमानो॥ नंदन बन सोमनश बखानो। चौथो पांडुकवन मनमानो॥ १॥ चैत्याले सोलहैं सुखकारी। चारोंबन चहुंदिश मनहारी॥ सुरनर खग

मिल पूजन आवैं। सो शोभा हम किहि मुख गावैं ॥ २ ॥ आव्हानन तिनको हम कीनो । मनवच तन निज भाव नवीनो ॥ तिष्ट तिष्ट संवौषट् कहिये । जिनपद पूज अभयपद लहिये ॥ ३ ॥ ॐह्रीं श्री सुदर्शन मेरके चारवनें चारोंदिश षोडस जिन मंदिरेभ्योः अत्रा वत्रा वत्र संवौषट व्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः अस्थापनं । अत्र ममसन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं मद अविलिप्त कपोल छंद ॥

पद्म द्रहको नीरसु लेकर रतन कटोरी मांहिधरो । श्री जिन चरण चढावत भविजन जन्म जरा दुख दूर करो ॥ चैत्याले सोलह सुखकारी मेर सुदर्शन तने सुजान । तिनको पूजत सुरनर खग मिल परम भगत उर अंतर आन ॥ ४ ॥ ॐह्रीं सुदर्शन मेरके भद्रशाल बन संबंधी ॥ पूर्व ॥ १ ॥ दक्षिण ॥ २ ॥ पश्चिम ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ ४ ॥ नंदनबन संबंधी पूर्व ॥ ५ ॥ दक्षिण ॥ ६ ॥ पश्चिम ॥ ७ ॥ उत्तर ॥ ८ ॥ सोमनसबन संबंधी पूर्व ॥ ९ ॥ दक्षिण ॥ १० ॥ पश्चिम ॥ ११ ॥ उत्तर ॥ १२ । पांडुकबन संबंधी पूर्व ॥ १३ ॥ दक्षिण ॥ १४ ॥ पश्चिम ॥ १५ ॥ उत्तरदिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ १६ ॥ जलं ॥ चंदन अगर कपूर मिलाकर मलयागिर घसिये मनलाय । भव आताप निवारण कारण श्री जिन सन्मुख देत चढाय ॥ ५ ॥ चैत्याले० ॥ ॐह्रीं० ॥ चंदनं ॥ देवजीर सुखदाससु अक्षत मुक्ताफल सम उज्जल सार । श्री जिन चरण कमलतल सन्मुख पुंजदेत अति हरष अपार ॥ ॥ ६ ॥ चैत्याले० ॥ ॐह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतुकी फूल मनोहर अरु गुलाब सुंदर महकाय । करुना आदि फूल बहु तरुके पारजात मंदार सुलाय ॥ चैत्याले० ॥ ७ ॥ ॐह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी

घेवर मोदक ताजे खाजे गोभा भरो बनाय। श्री जिन सन्मुख रतन थाल भर जजत जिनेश्वर मन हरपाय। चैत्याले० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोत होत दीपक की ऐसे रत्न अमोलिक-सार। कंचनथार संवार दीपद्युति जिनचरणन पर लेलेवार। चैत्याले० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर वरधूप सुगंधित दस विधवरणी परम विशाल। श्री जिन सन्मुख अग्निदाह कर छिन मैं करम जलैं तत्काल ॥ चैत्याले० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्री फल लौंग सुपारी भारी पिस्ता नये सु लीजसार। श्री जिनचरण चढावत भविजन पावत मोक्ष सु फल सुखकार ॥ चैत्याले० ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल आठ दरवले उत्तम पूजत भविजन मन हरपाय। अर्थ देत भविलाल मनोहर श्री जिनवर पद सीस निवाय ॥ चैत्याले० ॥ १२ ॥ ओंह्रीं० । अर्घं ॥

अथप्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

मेरसुदर्शनपूर्वदिश, भद्रशालबनजान। तहांजिनभवनसुहावने, अर्घजजोधरध्यान ॥ १३ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके भद्रशालबन संबंधी पूर्वदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ अर्घं । मेर सुदर्शन तेगिनो, दाक्षिण दिशसुखदाय। भद्रशालवन के विषै जिनपूजो हरपाय ॥ १४ ॥ ओंह्रीं सुदर्शनमेर के भद्रशालवन संबंधी दक्षिण दिशकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ अर्घं ॥ मेर शुदर्शन तै सु ले पश्चिम दिशा अनूप। भद्रशालवन जिन भवन, पूजत सुरगण भूप ॥ १५ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके भद्रशालवन संबंधी पश्चिम दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ३ ॥ ॥ अर्घं ॥ मेर सुदर्शनते गिनो, उत्तर

दिश सुखकार। भद्रशालवन जिन भवन, अर्घ जजो भरथार ॥ १६ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके भद्र,
शालवन संबंधी उत्तरादिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ४ ॥ ॥ अर्घ ॥

॥ मद अवलिप्त कपोल छंद ॥

मेर सुदर्शन पूरब दिशमें नंदनबन शोभै सुविशाल। तहां जिन भवन अनूपमसोहै सुरपति न-
रपति नमत त्रिकाल॥ अष्टद्रव्यसों पूजाकरकर नाचत थेइ थेइ पगअवधार। जेनर ध्यावत पुन्य बढा-
वत पावत शिव संपत सुखकार ॥१७॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके नंदनबन संबंधी पूरब दिश सिद्धकूट
जिनमंदिरेभ्योः ॥ ५ ॥ ॥ अर्घ॥ मेर सुदर्शन दाक्षिण दिशमें नंदनबनसोहै सुबिचार। तहां जिन
भवन अकीर्तम सुंदर सुरगण मोहित रूपनिहार ॥ केइ गावत केइ तालवजावत नाचत उरधर
हरपअपार। अरघ चढावत पुन्यबढावत शब्दउचारत जयजयकार ॥ १८ ॥ ओंह्रीं सु-
दर्शन मेरके नंदनबन संबंधी सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ६ ॥ ॥ अर्घ ॥ मेरसुदर्शन पश्चिम
दिशमैं नंदनवन मनमोहैसार। जहांजिन बिंबाविराजै अद्भुत ऐसे जिनमंदिर सुखकार॥
तिनको ध्यान देखकर मुनिगण निजस्वरूप अपनो सुनिहार। करम कलंक पंकानित धो
वत भविजन तिनको अर्घउतार ॥ १९ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके नंदनवन संबंधी पश्चिम दिशासिद्ध
कूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ मेर सुदर्शन उत्तर दिशागिन नंदनवन में मंदिर जान। जहां
जिनविंब अनूपम सोहै इंद्रादिक पूजतहैं आन ॥ सुरसुरांगना अर विद्याधर सबमिल जिनगुण गावत
सार। यहकौतुक बनरहो सु निशादिन पूजत जे पावत भवपार ॥ २०॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके नंदन
वनसंबंधी उत्तरदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

॥ सोरठा ॥

मेरसुदर्शन सार, ताकी पूरवदिश विषै। वनसोमनश निहार, जिनगृह पूजो अरघसों ॥ २१ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके सोमनश बन संबंधी पूर्वदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ९ ॥ दक्षिणदिशा सुजान, मेरसुदर्शन की गिनो। बन सोमनश प्रमान, श्रीजिन मंदिर पूजिये ॥२२॥ ओंह्रीं सुदर्शनमेरके सोमनशबन संबंधी दक्षिणदिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ १० ॥ अर्घ ॥ पश्चिम दिश सुखकार, मेर सुदर्शन कीसही। जजो सुजिन आगार, बन सोमनश विषैसदा ॥ २३ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके सोमनशबन संबंधी पश्चिमादिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥११॥ अर्घ॥ उत्तरदिशा जुसार, मेरसुदर्शन ते कही। जिनपद जजोनिहार, मंदिर बन सोमनश मैं ॥ २४॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके सोमनश बन संबंधी उत्तरदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १२ ॥ अर्घ ॥

॥ चालछंद ॥

पांडुकवन शोभैसार, महिमा को वरनै। गिरमेर सु पूरब द्वार, पाप तिमिर हरने ॥ तामै जिनमन्दिर सार, शोभित सुखकारी। मन वच तन अरघ सँवार, जिनपद तलधारी ॥२५॥ ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके पांडुक बन संबंधी पूरवदिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ दक्षिण दिश सरस अनूप, मेर सुदर्शनते, आतिहार्षित सुर खग भूप, श्री जिनपर्शनते ॥ पांडुक बन मैं जिन भोन, शोभा को वरनै। इन्द्रादिक पूजत तौन, पाप तिमिर हरनै ॥ २६ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके पांडुक वन संबंधी दक्षिणदिश सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योः ॥ १४ ॥ अर्घ ॥ पश्चिमदिश मेर रिशाल, पांडुक

वन सोहै । जिनमन्दिर बनो विशाल, सुरनर मन मोहै ॥ तहां ध्यावत सुर खग जाय, अर्घ लिये कर में । हम जिनपद सीस निवाय, पूजत निज घर में ॥२७॥ ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिमदिश पांडुक बन संबंधी सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योः ॥१५॥ अर्घ ॥ है मेरसु उत्तरभाग, पांडुक बन प्यारो । तामैं जिन भवन सुहाग, सुंदर मनधारो ॥ तहां सुरनर गावत गीत, तन मन हरष धरै । बसु अरघ चढावत प्रीत, पुन्य भंडार भरै ॥ २८ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शनमेर के पांडुकवन संबंधी उत्तरदिश सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योः ॥अर्घ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

मेर सुदर्शन जिन भवन, सोलह[१६] बरने गाय ।
तिनकी भवि जयमाल सुन, परम हरष उरलाय ॥ २९ ॥

॥ पद्धड़ी छद ॥

जैमेर सुदर्शन है अनूप । जानो सब गिरवर को सुभूप ॥ ताको कछु वर्णन करूं गाय । बनभद्रशाल भूपरसुहाय ॥ ३० ॥ नंदन वन दूजो सघन रूप । तीजो सोमनश बनो अनूप ॥ चौथो बन पांडुक है विशाल । जहां सुर खग मुनि वंदत त्रिकाल ॥ ३१ ॥ जिनराज जन्म अवसर सुपाय । तब इंद्र महोत्सव करैं आय ॥ इस विधि बन चार कहे रवन्य ॥ दिस चार सरब सोलह[१६] सुधन्य ॥३२॥ तहां इके इके जिन मंदिर सुजान । सत आंठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ उपमा सब समव सरण निहार ॥ सुरपति सिर नावत बार बार ॥ ३३ ॥ जै सिंहासन अद्भुत बिशाल । तापर सुकमल सोहै रिशाल ॥ ता ऊपर श्रीजिन शोभमान । जै तीनै छत्र सिर धेरे जान ॥३४॥ जै अमर सुढारत चमर सार । जै तन

द्युति छायरही अपार ॥ तहां देवी देवकरें सुगान । जहां नाचत सुर अरु सुरी आन ॥ ३५ जै सा-ज समाज बनो अनूप । इंद्रादिक निरखैं जिनस्वरूप ॥ शशि सूर्य कोट द्युति उदय जान । ऐसी छ-वि जिन तनकी प्रमान ॥ ३६ ॥ पूजाकर इन्द्र गए सुथान । जिनभक्ति हिये धारैं सुजान ॥ जैस्व-यम् सिद्ध रचनाअपार । कवि को पावे गुण अगमसार ॥ ३७ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

मेर सुदर्शन की भई, पूजासरसबिशाल ।
जेभवि पढ़ैं उत्साहसों, सुखपावैं सोहाल ॥ ३८ ॥

॥ सोरठा ॥

धरैं कंठ यह हार, बहुगुण रचत सुहावनो। ते होवैं भवपार, मनवचतन भविजो पढ़ैं ॥३९॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तमताको पाठपढ़ै मनलाय । जाके पुन्यतनी अति महिमा बरणन को कर सके बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपति बाढै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदले शिव पुरजाय ॥ ४० ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति सुदर्शनमेर पूजासंपूर्णम् ॥

अथ सुदर्शनमेरके चार विदिशामध्ये चार गजदंत पर-सिद्धकूट चार जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नं० ॥ ३ ॥

॥ अथस्थापना ॥ मद अवलिप्तकपोल छंद ॥

जंबूद्वीप महान सर्वदीपन में जानो । ताके मध्यसुजान सुदर्शन मेर बखानो ॥ जाकी विदिशा मांहि चार गजदंत बताए । तापर श्री जिन भवन सुपूजत मन हर्षाए ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

तिनकी आव्हाननसुबिधि, करोभविक मनलाय । तिष्ठतिष्ठ थापन सहित, बसुबिधि पूजरचाय ॥ २ ॥
ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके चारों विदिशामध्येचारगजदंत तिनपर चार जिनमंदिर सिद्धकूट विराजमानेभ्योः ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रममसन्नाहितो भवभव विषट संधीसकरणं । स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ चालकातिकीकी ॥

प्राणीउज्जल जल सुमँगायकै, धर रतन कटोरी मांहि । प्राणी श्रीजिन चरणचढाइये, सवजन्मजराढुखजांय ॥ प्राणी श्रीजिनवरपदपूजिये ॥ प्राणी मेरसुदर्शनके कहे, गजदंत सुचारों जान । प्राणी चारों विदिशा में सही, तिनपर जिनभवनबखान ॥ प्राणी श्रीजिनवरपदपूजिये ॥ ३ ॥ ओंह्रीं सुदर्शनमेरकी अग्निदिशमांही सोमनश ॥ १ ॥ नैरित्रिदिशाविद्युतपरम ॥ २ ॥ बाइबदिशामालवान ॥ ३ ॥ ईशानदिशा गंधमादननामगजदंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ४ ॥ जलं ॥ प्राणीमलयागिर अतिसीयरो, करपूरसुकेसरलाय । प्राणीभवआता-

पनिवारनै, लेश्रीजिनचरणचढाय ॥ प्राणीश्रीजिन० ॥ प्राणीमेरसु० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ प्राणदिवेजीरसुखदासके, लेअक्षतसरसअनूप । प्राणीश्रीजिनचरणचढाइये, हाशिवरमणीवरभूप ॥ प्राणीश्री० ॥ प्राणीमेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ प्राणीबेलचमेलीकेवडो, मिलफूल अनेक प्रकार । प्राणीश्रीजिनचरणचढाइये, मिटजाउरकामबिकार ॥ प्राणीश्री० ॥ प्राणीमेरसु० ६ ओंह्रीं०॥ पुष्पं ॥ प्राणी बिंजन नानाभांतिके ॥ सुंदरनैननसुखदाय ।प्राणीश्रीजिनचरणचढाइये तवक्षुधारोगसुविलाय ॥ प्राणीश्री० ॥ प्राणीमेर०॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ प्राणीदीपअमोलक लीजिये, रतननकीजोतिजगाय । प्राणीश्रीजिनचरणचढाइये, सबमोहतिमरनशजाय ॥ प्राणीश्री-प्राणीमेरसु० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥दीपं॥ प्राणीकृश्नागरकरपुरले, बहुभांतिसुगंधमिलाय।प्राणी श्रीजिन चरणचढ़ाइये, देकर्मसमूहजलाय ॥ प्राणीश्री० ॥ प्राणीमेर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ प्राणीलौंग सुपारीलायची,लेपिस्तादाखमिलाय । प्राणीश्रीजिनचरणचढ़ाइये, शिवथानलहैसोजाय॥ प्राणीश्री० ॥ प्राणीमेर०॥ १० ॥ओंह्रीं०॥फलं॥प्राणीजलफलअरघबनायके, वसुद्रव्यमिलावोलाय। प्राणीश्रीजिनसन मुखजायके, गावतजिनगुणहरपाय ॥प्राणीश्री० ॥ प्राणीमेर० ॥ ११ ॥ ओंह्रींअर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ मद अवलिप्तकपोल छंद ॥

मेर सुदर्शन तनी दिशा अगनेय सुजानो । ता गजदंत सुनाम जान सोमनश प्रमानो ॥ तापर जिनवर भवन महा सुंदर सुखकारी । सुरनर पूजत पाय लाल तिनपर बलहारी ॥ १२ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरकी अग्नि दिश सोमनश नाम गजदंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ १ ॥ अर्घ ॥

मेर सुदर्शन तनी दिशा नैरित्र सुलीजे । विद्युत प्रभ गजदंत नाम ताको जानीजे ॥ तापर जिन

वर धाम लसै अद्भुत तुमजानो । सुरनर पूजत आय हरष उर अंतर आनो ॥ १३ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरकी नैरित्रिदिश विद्युत्प्रभनाम गजदंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ अर्घ ॥ मेरसुदर्शन तनी दिशा बाइब तहां लहिये । मालवान गजदंत नाम सुंदर तहां कहिये ॥ तहां जिन मंदिर बनो बिंब जिन राज बिराजैं । पूजत भव्य सुपाय परम आनँद उरछाजैं ॥ १४ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके बाइब दिशा मालवान नाम गजदंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ मेर सुदर्शन तनी दिशा ईशान जु सोहै । धरैं सुगंध अपार गंध मादन मन मोहै ॥ है गजदंत सुनाम तास पर मंदिर जानो । पूजत श्री जिन बिंब परम आनंद उरआनो ॥ १५ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके ईशान दिश गंधमादन नाम गजदंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ४ ॥ अर्घ ॥ इतिप्रत्येकार्घ ॥

॥ अथ जयमाल प्रारम्भः ॥ दोहा ॥

गजदंतन पर जिन भवन, बने सु परम विशाल । सुर खग मिल पूजत सदा,अब सुनिये जयमाल १६

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

जै मेर सुदर्शन स्वयं सिद्ध । ताकी चारों विदिशा प्रसिद्ध ॥ तहां हस्ती दंत रचे बनाय । गिर निषध नीलसो लगे जाय ॥ १७ ॥ तिनपर जिन मंदिर कहे जान । हैं रतन मई भाषैं पुरान ॥ तहां वेदी मध्य रची सुजान । सोहैं कटनी तीनों महान ॥ १८ ॥ जै सिंहासन द्युति है रिशाल । तापर सु कमल शोभे विशाल ॥ जहां श्री जिन बिंब बिराजमान । सतआँठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ ॥ १९ ॥ जै इंद्र सु ढारत चमर आय । जै भा मंडल द्युति रही छाय ॥ जै तीनक्षत्र सोहैं अनूप । यह

अतिशय श्री जिन राजभूप ॥ २० ॥ जै सुरपति अर सुर सुरी आन । जिन राजसु पूजत हरपठान॥ बहु पुन्य बढावत करत गान । बाजत सब साज समाज जान ॥२१॥ जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग। इंद्रानी इन्द्र नचैं जु संग ॥ जै छम छम छम घुंघरू बजंत । जिनराज सुगुण गावैं अनंत ॥ २२ ॥ ताथेइ थेइ थेइ धुनरही पूर । बन रहो सु झुरमट जिन हजूर ॥ है जन्म सुफल तिनके सुसार । देखत जु सबै नैनन निहार ॥ २३ ॥

घत्ता ॥ दोहा ॥

यह गजदंतनकी बनी,पूजा सरस विशाल। भविजन कंठ सुहावनी लाल रची जयमाल २४इति आरती

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढै मनलाय। जाके पुन्यतनी अति महिमा वरणन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपति बाढै अधिक सरस सुखदाय । यह भव जस पर भव सुखदाई सुरनर पद ले।शिव पुरजाय ॥ २५ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति श्री सुदर्शन मेर संबधी चारों विदिशा मध्ये चारे गजदंतनपर सिद्धकूट जिन मंदिर पूजा संपूर्ण ॥

अथ सुदर्शन मेरके उत्तर ईशानकौन जंबूवृक्ष और दक्षिण नैरित्र कौन सालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिन मंदिर पूजा प्रारम्भः ॥४॥

॥ अथस्थापना ॥ दोहा ॥

मेर सुदर्शन ते गिनो, उत्तर कौन इसान। दक्षिण नैरित कौन है, सूप वृक्ष परमान ॥ १ ॥

जंबू सालमली कहे, तिनपर श्री जिनधाम । आव्हानन तिनको करो, मनबच तन सु प्रनाम ॥२॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके उत्तर ईशान कौन जंबू वृक्ष पर दक्षिण नैरित्र कौन सालमली वृक्षपर सिद्ध-कूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं । अत्रातिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्न-हितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं सुंदरी छंद ॥

जलसुपावन उज्जललीजिये । धारश्रीजिनसन्मुखदीजिये ॥ जम्बुसालमलीमनभावने । जिन-भवन तरु सीस सुहावने ॥ ३ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके उत्तर ईशानकौन जंबूवृक्ष ॥ १ ॥ दक्षिण नैरित्रकौन सालमली वृक्षपरसिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ जलं ॥ अगरचंदन केसर गारकै । पूजिये जिन चरण निहारकै ॥ जंबूसाल० ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ सरस उज्जल अक्षत लाइये । पुंजदे जिन चरण चढाइये ॥ जंबूसाल० ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं० ॥ अक्षतं । लेसुफूल मनोहर पूजिये। जोड़कर जिन सन्मुख हूजिये ॥ जंबूसाल० ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ घृत श्वेतांकर मिश्रित जा-निये । परम सुंदर नेवज आनिये ॥ जंबूसाल० ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ दीपजगमग जोति सुधारने । मोहतिमर विनाशन कारनै ॥ जंबूसालमली० ॥ ८ ॥ ओं ह्रीं० ॥ दीपं ॥ अगर चंदन धूप सुलायके । जिनसुसनमुख खेवत जायके ॥ जंबूसाल० ॥ ९ ॥ ओं ह्रीं० ॥ धूपं ॥ लौंग आदि सुफल सब लाइये । फलसों पूजत शिवफल पाइये ॥ जंबूसाल० ॥१०॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफला-दिक वसुविध जानिये । अरघ देउर आनंद मानिये ॥ जंबूसाल० ॥ ११ ॥ ओं ह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घं ॥ दोहा ॥

जंबूवृक्ष सुहावनो, पूरब शाखाजान । सिद्धकूट मंदिरजजो, अरघलियेकर आन ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके उत्तर दिश ईशान कौन संबंधी जंबूवृक्षकी पूर्वशाखापर सिद्धकूटाजिनमंदिरेभ्योः ॥अर्घ ॥ सालमली द्रुमपूर्व दिश, शाखावनी विशाल । सिद्धकूटाजिन भवन नमि, अर्घ जजो भरथाल॥१३॥ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके दक्षिण नैरित्र कौन सबंधी सालमली वृक्षकी पुर्वशाखापर संस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ अर्घ ॥

॥ अथजयमाल ॥ ॥ दोहा ॥

जंबूसालमली तनी, पूजा भई विशाल । तिन जिन मंदिर कीकहूं, अब सुनये जयमाल ॥ १४ ॥

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

जै मेर सुदर्शन ढिग सुजान । उत्तर अरु दक्षिण दिश बखान ॥ जै शोभित दोऊ वृक्षसार । जंबू अरु सालमली निहार ॥ १५ ॥ तिनपर जिन भवन बनो बिशाल । पूजत सुर विद्याधर त्रिकाल ॥ वेदीपर कटनी दिपैसार । बसुमंगल द्रव्य धरे विचार ॥ १६ ॥ सिंहासन अद्भुत शोभमान । तापर सु कमल राजै महान ॥ तापर जिन बिंब विराजमान । शशि सूर क्रांति छविछीण जान ॥ १७ ॥ धारे सिरछत्र सु तीनसार । त्रिभुवन के ईश्वर हैं निहार ॥ जै चमर ढुरै चौसंठ सुसार । सब देवकरैं जैजै पुकार ॥ १८ ॥ भामंडल की छवि रही छाय । भवि सातँ भवांतर लखै आय ॥ जहँ रत्न अमोलिक जगमगाय । खेचर खेचरनी नचैं आय ॥ १९ ॥ जिनराजरूप नैनन निहार । बिंतर गुणगान-

करैं अपार ॥ तहँ द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग । इंद्रानी इंद्रनचैं जु संग ॥ २० ॥ बहु पुन्य उपावतदेव आय॥निजजन्म सुफल अपनो कराय॥॥जिनराज सुगुण महिमा अपार। भविलालकहत पावै न पार॥२१॥

॥ घत्ता दोहा ॥

जिन गुण महिमा अगम है, को पावै तसु पार। भूप बृक्षपर जिन भवन, मनबच तन उरधार ॥२३॥

॥ सोरठा ॥

जिनगुण गुंथ संवार,विविधबरण मालारची।तेउतरें भवपार,निजगुणमाल संवारही॥२३॥इतिजयमाल॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठपढ़ै मनलाय। जाके पुन्यतनी अतिमहिमा वर्णन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपति बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदले शिव पुरजाय ॥ २४ ॥इत्याशीर्वादः ॥

इति सुदर्शन मेर संबंधी जंबूसालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ सुदर्शन मेरके पूर्वबिदेह संबंधी आठ बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजाप्रारम्भः ॥ नम्बर ॥ ५ ॥

॥ अथस्थापना-मद अवलिप्तकपोल छंद ॥

मेर सुदर्शन पूरब दिश वक्षारकूटवर। कहे आठ जिन भवन तासपर सरस सु सुंदर॥तिनकोसुर खग जजें हरष धर जिन गुण गावत। हम पूजत इह ठाम थाप निज भाव बढावत ॥ १ ॥ओंह्रीं

सुदर्शन मेर के पूरब विदेह संबंधी आर्ठबक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ अत्रा बत्रा बत्र संबौषटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं । स्थापनं ।

॥ अथाष्टकं ॥ सुन्दरी छंद ॥

सुरनदी जल शीतल लायके । जिनसु पूजत मन हर्षायके ॥ गिरबक्षारतने जिनधामजू । पूरब दिशपूजो अभिराम जू ॥ २ ॥ ऊँ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब विदेह संबंधी पश्चात् ॥ १ ॥ चित्रकूट ॥२॥ पद्मकूट ॥ ३ ॥ नालिन ॥ ४ ॥ त्रिकूट ॥ ५ ॥ प्राच्य ॥ ६ ॥ वैश्रवण ॥ ७ ॥ अंजन नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरभ्यो ॥ ८ ॥ जलं ॥ अगर केसर चंदन गारकै । जिनसुपूजत चरण निहार कै ॥ गिरबक्षार० ॥ ३ ॥ ऊँ ह्रीं ॥ चंदनं ॥ सरस अक्षत सुन्दर धोयके ॥ देत पुंज सुगंध समोयकै ॥ गिरबक्षार० ॥ ४ ॥ ऊँ ह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ लेत फूल अनेक सुहावने । कल्प बृक्ष तनेमन भावने ॥ गिरबक्षार० ॥ ५ ॥ ऊँ ह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ तुरत बहु पकवान बनायकै । जिन सुपूजत प्रीति लगायकै ॥ गिरबक्षार० ॥ ऊँ ह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ दीप जगमग जोति जगायकै । कनकथाल विषै धरलायकै ॥ गिरबक्षार० ॥ ६ ॥ ऊँ ह्रीं० ॥ दीपं । धूपदशांविध खेवतलायके । जिन सुपूजत मन वचकायके ॥ गिरबक्षार० ॥ ७ ॥ ऊँ ह्रीं ॥ धूपं ॥ फल मनोहर नैन सुहावने । जिन चढ़ाय परमपद पावने ॥ गिरबक्षार० ॥ ८ ॥ ऊँ ह्रीं० ॥ फलं ॥ द्रव्य बसुविधि सुंदरलायके । अरघदेत सुलाल बनायके ॥ गिरबक्षार० ॥ ९ ॥ ऊँ ह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ सोरठा ॥

प्रथमकूट पश्चात्, नाम सरस मन मोहनो । देखत मनहर्षात, जिन मंदिर तापर जजो ॥ १० ॥ ऊँ ह्रीं सुदर्शनमेरके पूरवविदेह संबंधी पश्चात् नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥१॥ अर्घं॥ चित्रकूट अभिराम, नाम कहो मनलायके । तापर जिनवरधाम, पूजत मन हर्षायके ॥ ११ ॥ ऊँ ह्रीं सुदर्शनमेरके पूरवविदेह संबंधी चित्रकूट नामबक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ २ ॥ अर्घ ॥ पद्मकूट सुखकार, तापर जिनमंदिर बनो । मैं पूजूं हितधार, श्री जिनवर प्रति निरखकै ॥ १२ ॥ऊँ ह्रीं सुदर्शनमेरके पूरब विदेह संबंधी पद्मकूटनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ नालिनकूट सुविशाल, जिनमंदिरकर सोहनो । मैं पूजूं त्रैकाल, जगजीवन मन मोहनो ॥ १३ ॥ ऊँ ह्रीं सुदर्शनमेरके पूरब विदेह संबंधी नालिननाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ ४ ॥ अर्घं ॥ है त्रिकूट जानाए, महिमा ताकी को कहे । परम महा अभिराम, जिन मंदिर पूजो सदा ॥ १४ ॥ ऊँ ह्रीं सुदर्शनमेरके पूरब विदेह संबंधी त्रिकूट नाम बक्षार गिरपरसिद्ध-कूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ प्राच्यकूट हैनाम, रतनमई जगमगलसै । तापर जिनवरधाम, मै पूजूं वसुंद्रव्यले ॥ १५ ॥ ऊँह्रीं सुदर्शन मेरके पूर्वबिदेह संबंधी प्राच्यनाम बक्षारगिरिपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ कूट वैश्रवणनाम, महामनोहर मनहरै । जिनमंदिर अभिराम, पूजो मन वचकायसो ॥ १६ ॥ ऊँह्रीं सुदर्शन मेरके पूर्वबिदेह सम्वधी वैश्रवण नाम बक्षार गिरपर सि-द्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ अंजनगिर बक्षार, तापर मंदिर जानिये । महिमा अगम अ-

पार, आठ दरवले पूजिये ॥ १७ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पूरबविदेह संबंधी अंजन नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

अथजयमाल ॥ दोहा ॥

मेरसुदर्शन पूर्वदिशि, गिरबक्षार बिशाल । तिनपर जिनमंदिर बने, सुनातिनकी जयमाल ॥१८॥

॥ पद्धड़ी ॥

जैमेर सुदर्शन की सुजान । पूरब दिश क्षेत्र विदेहमान ॥ तहँ तीर्थंकर राजैं मुनीश । तिनको हम नावत हैं सुशीश ॥ १९॥ श्री मंदर जुगमंदर सुदेव । सुरनर मिल तिनकी करत सेव ॥ जैजिनवानी ध्वनु खिरैसार । भवि जीवसुनैं आनंदधार ॥ २० ॥ केई दिक्षाधार कियो कर्मनाश ॥ पावैं शिवपुर अविचल अवाश ॥ केई बारहैं व्रतधर देव होय । केई श्रावण के व्रतधरैं सोय ॥ २१ ॥ तहांकाल चतुर्थ विराजमान । सबकर्म भूमि राचि रहीजान ॥ तहां गिरबक्षार बने सुआठ । तापर जिनमंदिर कहे पाठ ॥ २२ ॥ जिन बिंब विराजत छवि अनूप । सुरनर विद्याधर नमें भूप ॥ केई गावैं जिन गुण हरप धार । जिनराज छबी देखें निहार ॥ २३ ॥ कई पूजें बसु बिध द्रव्यलाय । केई पाठपढ़ैं अति मुदित काय ॥ केई अरघ जजैं करधरैंथार । केई जै जै शब्द करैं उचार ॥ २४ ॥ जग मैं जैवंतें होहु देव । हमध्यावत निश दिन करतसेव ॥ फुनि करैं वीनती सीसनाय । तुमचर्ण सदा सेवैं बनाय ॥ २५ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

मेर सुदर्शन पूर्व दिश, गिर बक्षार महान । तिनपर जिन मंदिर बने, स्वयं सिद्ध भगवान ॥ २६ ॥

आँठ अधिक अरु एकशात,प्रतिमा जिन गृहमांहि।पूजत अति भविसुखल हैं,निहचै शिवपुरजांहि २७इति.

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलताछंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तिम ताको पाठपढ़ै मनलाय । जाकेपुन्य तनी अति महिमा बर्णन को करसकै बनाय ॥ ताकेपुत्र पौत्रअरु संपतबाढ़ै अधिक सरससुखदाय । यहभव जसपर भवसुखदाई सुरनरपदले शिवपुरजाय ॥ २८ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ इतिश्री सुदर्शन मेरके पूर्वविदेह संबन्धी आठवक्षारगिरिपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथश्री सुदर्शन मेरके पूर्वबिदेह सम्बंधी आठबक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंवर ६ ॥

अथस्थापना ॥ अडिल छन्द ॥

मेरसुदर्शन ते पश्चिमादिश जानिये । तहां आठबक्षार सुगिरिपरमानिये ॥ तापरश्री जिनभवन वने सु विशाल जू । आह्वानन विधकरो नाय निज भालजू ॥ १ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शनमेरके पश्चिम विदेह संबंधी आठ बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ अत्रावत्रावत्र संबौषटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापने । अत्र ममसन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥अस्थापनं॥

॥ अथाष्टकं मदअवलिप्तकपोल छंद ॥

क्षीरोदधिको उज्जल जल ले रतन कटोरी मैं धरलाय । जनम जरा दुख दूरकरन को श्री जिनवरके पूजतपाय ॥ मेरसुदर्शन पश्चिम दिशा मैं गिरवक्षार आठ सुविशाल । तिनपर श्रीजिन-भवन विराजत भविजन पूजत हैं त्रैकाल ॥ २ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शनमेर के पश्चिम विदेह संबंधी शब्दवान ॥ १ ॥ विजयवान ॥ २ ॥ आसी विष ॥ ३ ॥ सुषावह ॥ ४ ॥ चंद्र ॥ ५ ॥ सूर्य ॥ ६ ॥ नाग ॥ ७ ॥ देवनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ जलं ॥ केसर अगर कपूर मिलेकरमलयागिर-चंदन सुखदाय । श्री जिनचरण चढ़ावत भविजन भव आताप दूरह्वैजाय ॥ मेरसुदर्शन० ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत प्राशुक जल ले धोय वनाय । पुंज देत श्रीजिनवर आगे अक्षय पद पावैं भविजाय ॥ मेरसुदर्शन० ॥४॥ ओंह्रीं० ॥अक्षतं॥ कमलकेतुकी बेल चमेली श्री गुलाव ले मंदिर आय । कामवाण के दूरकरन को श्रीजिन आगे देत चढ़ाय ॥ मेरसुदर्शन० ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी गोभा मोदक खाजे ताजे तुरत सुलेहुबनाय । क्षुधारोगके नाश करन को श्रीजिनवर पद पूजतजाय ॥ मेरसुदर्शन० ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ मणमई दीप अमोलिक लेकर जगमग जोत होत तिहवार । मोह तिमर नाशन के कारण श्रीजिनपूजत हरष अपार ॥ मेरसुद-र्शन० ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं० ॥ दीपं ॥ अगर कपूर सुगंध सुदशविध खेवत श्रीजिन मंदिरजाय । करमआठ वलवान महाठग तिनै जलावत मन हरषाय ॥ मेरसुदर्शन० ॥ ८ ॥ ओं ह्रीं० ॥ धूपं ॥ लौंग सुपारी श्रीफल भारी पिस्ता दाख छुहारेलाय । धरसन्मुख जिनपूजत फलसों शिव फलपावत

कर्मनशाय ॥ मेरसुदर्शन० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ॥ फलं ॥ जलचंदन अक्षतप्रसून मिल चरुवरदीप धूप फलसार । भविजन गायवजाय हरषधर श्रीजिनवरपद अरघउतार ॥ मेरसु० ॥ १० ॥ ओंह्रीं ॥ अर्घं ॥

अथप्रत्येकार्घं ॥ सोरठा ॥

मेरसुपश्चिम आन, शब्दवान गिरनामहै । ताके ऊपरजान, श्रीजिनमंदिर कोजजो ॥ ११ ॥
ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिमविदेह संबंधी शब्दवान नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॰॥१॥
॥ अर्घं ॥ मेरसु पश्चिमसार, विजयवान गिरनामहै । तापरभवन निहार, पूजत भवि मनलायकै॥१२॥
ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी बिजयवान नामबक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥२ अर्घं
आसीविषहै नाम, मेरसुपश्चिम दिशाविषै तागिरपर जिनधाम, सुरनर पूजत भावसों ॥ १३ ॥ ओं-ह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिम बिदेह सबन्धी आशी बिषनामवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥
॥ ३ ॥ अर्घं ॥ मेरसुपश्चिम जान. सैलसुषावहनाम है । ता ऊपर जिनधाम, मन बच तन कर पूजिये ॥
१४ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेर के पश्चिम बिदेह संबंधी सुषावह नामबक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो
॥ ४ ॥ अर्घ ॥ मेरसु पश्चिम वोर, चन्द्रनामबक्षारहै । है जिन मंदिर जोर, मैं पूजूं मन लायके ॥ १५ ॥
ओं ह्रीं सुदर्शन मेर के पश्चिम बिदेह संबंधी चन्द्रनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥५॥
॥ अर्घ ॥ सूर्यनाम गिरसार, मेर सुपश्चिम कीदिशा । श्री जिन भवन निहार अर्घ जजो बशुद्रव्यले १६
ओं ह्रीं सुदर्शन मेर के पश्चिम बिदेह संबंधी सूर्यनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥६॥
॥ अर्घ ॥ नागनामगिर जान, मेर सुपश्चिम दिशा गिनो । जिन मंदिर उरआन, भविजन पूजो भावसों १७

ओं ह्रीं सुदर्शन मेर के पश्चिम विदेह संबंधी नाग नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥७॥ ॥ अर्घ ।

देवनाम गिरसार, तापर जिनवर धाम है। करम होत सबछार। पूजत श्रीजिन राजको ॥१८॥

ओं ह्रीं सुदर्शन मेर के पश्चिम विदेह संबंधी देवनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥८॥ अर्घ॥

॥ अथ जयमाल ॥दोहा ॥

मेर सुदर्शन सोहनो, पश्चिम दिशा विदेह। गिरबक्षार कहे सुवसु, तापर श्री जिन गेह ॥ १९ ॥
तिन गुणगूंथी सरसविधु, बरनों परम रिशाल। वसुविध जिनपद पूजके, अब बरनूं जयमाल।२०।

पद्धड़ी ॥

जैमेर सुदर्शन की सुजान। पश्चिम दिश क्षेत्र विदेह मान॥ जैतीर्थकर राजैं त्रिकाल। तिनको सुरनर खग नमैं भाल ॥ २१ ॥ जैबाहु सुबाहु विराजमान। जैमुनिगण तिनका धरत ध्यान ॥ जै जिनबाणी धुनखिरैसार। श्रीगणधरदेव कहैं विचार ॥ २२ ॥ भविजीव सुनैं आनंदधार। निज निज भापा समझैं अपार। केइदुद्धर तप धारैं महान। लहिकेवल शिवपावैं निदान ॥ २३ ॥ केई श्रावक व्रत धारैं पुनीत। लहैं स्वर्ग संपदा अतिसुरीत ॥ केइ पावैं सम्यक गुण अनन्त। मिथ्यात पंथ नाशैं तुरंत ॥ २४ ॥ यह अतिशय श्रीजिनराजभूप। सतइंद्रचरण सेवैं अनूप ॥ जहाँ चौथो काल रहै सदीव। तहां कर्म भूमजानो सुजीव ॥२५॥ तहां गिरबक्षारबने सु आठ। तिनपर जिनमंदिरके सुठाठ॥ जे सिद्धकूट जिनधामसार। जैबेदी को वर्णनअपार ॥ २६ तहां सिंहासन शोभै रिशाल। तापर सुकमल राजै विशाल ॥ जै श्रीजिनबिंबविराजमान। सत आंठ अधिक बहु द्युति महान ॥ २७ ॥

जैभामण्डल छबि रही छाय। जैतीनछत्र सिरपर सुहाय॥ जैचमर जु चौसँठ ढुरतसार। जैमङ्गल द्रव्य धरे निहार॥ २८॥ जैइंद्रादिकं पूजत सुपाय। जै नृत्यकरैं जिनगुण सुगाय। जैप्रभुगुणमहिमा अगमसार। मुनिजन ताको पावैं न पार॥ २६॥

॥ घत्तादोहा ॥

मेरसुपश्चिम दिशतनी, पूजावनी विशाल। मनबच तनलवलायके, लालभनी जयमाल ॥३०॥

॥ सोरठा ॥

यहजिन पूजासार, जोनरकैं उछाहसों। तेपावैं भवपार, स्वर्ग संपदा भोगके॥ ३१॥इतिजयमाल॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलताछन्द ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताकोपाठ पढ़ै मन लाय। जाके पुण्यतनी अति महिमा वर्णनको करसकै बनाय॥ ताकेपुत्र पौत्रअरु संपतबाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यहभव जसपर भवसुखदाई सुरनर पदले शिवपुरजाय॥ ३२॥ इत्याशीर्वादः॥

॥ इतिसुदर्शन मेरके पश्चिम विदेह संबंधी आठवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिर पूजासंपूर्ण॥

अथसुदर्शन मेरके पूरव विदेह संबंधी षोडस रूपाचल-पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरपूजा प्रारम्भः॥नं० ७॥

॥ अथस्थापना ॥ मदअवलिप्त कपोलछंद ॥

मेर सुदर्शन पूरव दिशा में कहे विदेह सुषोडैसजान तहांषोडैसै वैताड़ मनोहर तिनपर श्रीजिन

भवन बखान ॥ सुरविद्याधर पूजनआवैं गावैं गुण मन हरषसुआन। हमपूजत आव्हानन करकै अपने-
घरमें आनँदमान ॥ १ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पूरवविदेह संबंधी पोडेसरूपाचलपर्वत पर सिद्धकूट
जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं ॥ अत्रातिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ अत्रमम सन्नहितो-
भवभव विपट् संधी सकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ चालछन्द ॥

क्षीरोदध उज्जल नीर, सुर गुण लावत हैं। पूजैं श्री जिनपद धीर, पुन्य वढ़ावत हैं ॥ है मेरसु-
दर्शन नाम, पूरब दिश सो है। रूपाचलपर जिनधाम, पोडेस मन मो है ॥ २ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके
पूरब विदेह संबंधी कक्षा ॥ १ ॥ सुकक्षा ॥ २ । महाकक्षा ॥ ३ ॥ कक्षकावती ॥ ४ ॥ अवर्ता ॥५।
मंगलावती ॥ ६ ॥ पुष्कला ॥ ७ ॥ पुष्कलावती ॥ ८ ॥ वक्षा ॥ ९ ॥ सुवक्षा ॥ १० । महावक्षा
॥ ११ ॥ वत्सकावती १२ ॥ रम्या ॥ १३ ॥ सुरम्या ॥ १४ ॥ रमणी ॥ १५ ॥ मंगलावती
देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन
लाय, केसररंगभरी । पूजो श्रीजिनवरपाय, आनंद की सुघरी ॥ हेमेरसु० ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफलकी उनहार, अक्षत लीजत हैं। उज्जल जिन चरण निहार, पुंजसु-
दीजत हैं ॥ हेमेरसु० ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ सुरतरु के फूलमंगाय, सुरगण लावत हैं। प्रभु
पूजत मन हरपाय, जिनगुण गावत हैं ॥ हैमेरसु० ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी गोंफा सुवनाय,
मोदक लेताजे । पूजत श्रीजिनवरपाय, बाजत हैं बाजे ॥ हैमेरसु० ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं० नैवेद्यं ॥ भवि

दीप अमोलक लाय, जगमग जोत जगी। पूजत जिनचरण चढ़ाय, तनमन प्रीतलगी ॥ हैमेरसु० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर धूप मिलाय, दसविध खेवत हैं। सबकर्मन देत जलाय, जिनपद सेवत हैं ॥ हैमेरसु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ धूपं ॥ लेफल सुंदर सुखदाय, नैनन को प्यारे। पूजत जिनवर केपाय, हरष हियेधारे ॥ हैमेरसु० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफल वसुदर्व मिलाय, अरघ बनावत हैं। जिन चरणन देत चढ़ाय, पुन्यउ पावत हैं ॥ हैमेरसु० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ सोरठा ॥

कक्षादेश सुजान, मेरके पूरब दिश गिनो। तहां रूपाचल आन, श्रीजिन भवन सुपूजिये ॥११॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरके पूरब विदेह संबंधी कक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ १ ॥ अर्घं ॥ देश सुकक्षा नाम, मेरसुपूरब दिश कही। है सुंदर जिनधाम, रूपाचलपर नित जजो १२
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब विदेह संबंधी सुकक्षा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ २ ॥ अर्घं ॥ मेरसुपूरब आन, देशमहा कक्षावनो। तहां जिन मंदिर जान, बिजयारध गिरपर जजो १३
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब विदेह संबंधी महाकक्षा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ ३ ॥ अर्घं ॥ कक्षकावती देश, मेरसुपूरब दिश विषै। गिर विजयारध वेश, जिन मंदिर तिनपर जजो १४
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब विदेह संबंधी कक्षकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ ४ ॥ ॥ अर्घं ॥

॥ दोहा ॥

मेरसुपूरब दिश विषै, रूपाचल अभिराम । देशनाम आवर्त है, पूजो जिनवर धाम ॥ १५ ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब विदेह संबंधी आवर्तादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ देश मंगलावती गिन, मेरसुपूरब वोर । बिजया रधपर जिन भवन, पूजो मनधर जोर ॥ १६ ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब विदेह संबंधी मंगलावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ६ ॥ अर्घ । मेरसुदर्शन पूर्वादिश. देश पुष्कला नाम । विजयारधके सिखरपर, पूजो श्री जिनधाम १७
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब बिदेह संबंधी पुष्कला नाम देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ७ ॥ अर्घ ॥

॥ सोरठा ॥

पुष्कलावती देश, मेरपूर्व दिश जानिये । जिन मंदिर सुविशेश, बिजयारध गिरपर जजो ॥ १८ ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब विदेह संबंधी पुष्कलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ८ ॥ अर्घ ॥ मेर पूर्व दिशसार, वक्षादेश सुहावनो । तहां जिन भवन निहार, रूपाचलपर पूजिये ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब बिदेह संबंधी वक्षा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ९ ॥ अर्घ ॥ देश सुवक्ष महान, गिनो मेर पूरब दिशा । जिन मंदिर धरध्यान, गिर वैताड़ सिखर जजो ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब बिदेह संबंधी सुवक्षा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ १० ॥ अर्घ ॥ महावक्षता नाम, देश पूर्व दिश मेरतें । रूपाचल जिनधाम, आठ दरब पूजो सदा ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पूरब विदेह संबंधी महावक्षा देश संस्थित

रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ मेरसुदर्शन जान, ताकी पूरब दिश कहो। वत्सकावती आन, रूपाचल जिनगृहजजो ॥ २२ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पूरब विदेह संबंधी वत्सकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥१२॥अर्घ॥ रम्यदेश शुभसार, मेरकी पूरबदिश विषै। रूपाचल निरधार, तिन जिनमंदिरको जजो। ॥ २३ ॥ओंह्रीं सुदर्शनमेरके पूरब विदेह सबंधी रम्यदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥ १३ ॥ देश सुरम्यासार, मेरकी पूरबदिश कहो। जहां वैताड़ निहार, श्रीजिन मंदिर को जजो ॥ २४॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पूरब विदेह संबंधी सुरम्यादेश पर संस्थित रूपाचल सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥१४॥ अर्घ ॥ रमणीदेश सुजान, पूरबदिश गिन मेरतैं। तहां रूपाचल मान, जिन मंदिर नित पूजिये ॥२५॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पूरब विदेह संबंधी रमणी देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घ ॥ मेरसुपूरबजान, मंगलावती देशहै। विजयारध परमान, श्रीजिन भवन सुपूजिये ॥ २६ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पूरब विदेह संबंधी मंगलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १६ ॥ अर्घ ॥

अथजयमाल ॥ दोहा ॥

मेर सुदर्शन पूर्वदिश, पोड़से देश विशाल। रूपाचल पर जिनभवन, सुनातिनकी जयमाल॥२७॥

॥ पद्धड़ी ॥

जैमेर सुदर्शन है महान। सवगिर को भूपकहो वखान ॥ तहां तीर्थंकर को न्हवन होय

ताको वरणन वरनें सुकोय ॥ २८ ॥ तामेरसुपूरब दिश विचार । जहां षोड़स देश बिदेहसार ॥ तहां विजयारध सोलहसुजान । तिनपर जिन मंदिर शोभमान ॥ २९ ॥ जै तिनमंदिर मेंदेव आय। पूजें श्रीजिनवर प्रीतलाय ॥ जै जै तन निरखत जिन स्वरूप । जै जिनगुण गावत सुरअनूप ॥ ३० ॥ जैसमवसरण रचना समान । वसुमंगल दर्वधरे सुजान ॥ जैवेदीको वरणन बिशाल । जैकटनी तीनें वनी रिशाल ॥ ३१ ॥ जैसिंहासन द्युति शोभमान । ताऊपर कमल वनोमहान ॥ तहांश्री जिनविंब विराजमान । शतआँठ अधिक बहुगुण निधान॥३२॥तहां खेचर खेचरनी सुआय। बहुपाठ पढ़ैं अति हरपलाय ॥ जैनृत्य करें संगीत सार । विद्या वल रूप अनेक धार ॥ ३३ जै जगमग जगमग जोत सार । जिन मंदिर की शोभा अपार ॥ जै हम पूजत यहां सीस नाय । वसुद्रव्य मनोहर ले ब-नाय ॥ ३४ ॥ जैजैजै जग जयवंत देव । तुम चरणनकी हमकरत सेव ॥ भवि जीवन की यह अरज जान । भव भव तुमसेवा मिलेआन ॥ ३५ ॥

॥ घत्ता ॥ दोहा ॥

मेर सुदर्शन पूर्वदिश, गिर वैताड़ विशाल । तिनपर जिन मंदिर कहे,तिनकी यह जयमाल ३६

कुसुमलता छंद ॥

जैजै जिनमंदर नमत पुरंदर जिनवर विम्बसु पूजाजै। जै मेर सुदर्शन पूरव दिशमैं रूपाचल गिरिलीजी जै ॥ षोडस मंदिरहैं ता ऊपर दर्शन ताको की जीजै। भवि जीव सुआवैं पुन्य बढावैं निज अनुभव रस पीजीजे ॥ ३७ ॥ इति आरती।

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मन लाय । ताके पुन्य तनी अति महिमा वर्णन को कर सकें वनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपाति वाढै अधिक सरस सुखदाय । यहभव जस परभव सुखदाई सुरनरपद ले शिवपुरजाय ॥ ३८ ॥ इति आशीर्वादः ॥

॥ इति श्रीसुदर्शनमेरके पूरवविदेहसंबंधी षोडस विजयारधपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथसुदर्शनमेरके पश्चिमविदेहसंबंधीषोडसरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ ८ ॥

॥ अथस्थापना ॥ मदअवलिप्तकपोल छंद ॥

मेर सुदर्शन की पश्चिम दिश कहे विदेह सुषोड़स जान । तहां षोड़स वैताड़ मनोहर तिनपर श्री जिन भवन वखान ॥ सुर विद्याधर पूजन आवैं गावैं गुण मन हरप सुजान ॥ हमपूजत आव्हानन करके अपने घरमें आनंद मान ॥ १ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिमविदेह संबंधी षोडस विजयारधगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रावत्र संवौपटाव्हानन ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्नहितो भवभव वषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ मदअवलिप्त कपोलछंद ॥

क्षीरोदधको उज्जल जलले परम सुगंधित नैन निहार। श्रीजिनचरण प्रक्षालित भविजन जन्म जरा दुखको निरवार ॥ मेरसुदर्शन पश्चिम दिशमें हैंषोड़स बैताड़ महान। तिनपर श्रीजिन मंदिर सोहैं तिनप्रति पूजो उरधर ध्यान ॥ २ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिम विदेह संबंधी पद्मा ॥१॥ सुपद्मा ॥२॥ महापद्मा ॥ ३ ॥ पद्मकावती ॥ ४ ॥ सुसंखा ॥ ५ ॥ नलिता ॥ ६ ॥ कुमदा ॥ ७ ॥ सरिता ॥ ८ ॥ वप्रा ॥ ९ ॥ सुवप्रा ॥ १० ॥ महावप्रा ॥ ११ ॥ वप्रकावती ॥ १२ ॥ गंधा ॥ १३ ॥ सुगंधा ॥ १४ ॥ गंधला १५ ॥ गंधमालनी देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः १६ ॥ जलं ॥ चंदन अरु मलयागिर घसकर केसर अरु करपूर मिलाय। श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन भव आताप मिटै दुखदाय ॥ मेर सुदर्शन० ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ सुंदर अक्षत सरस मनोहर मुक्ताफल सम उज्जल लाय। पुंजदेत श्रीजिनवर आगे शिवसंपत सुख बिलसै जाय। मेर सुदर्शन० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी श्री गुलाब अरु वेला फूल अनेक प्रकार। लावत सुरगन कल्पवृक्ष के कामबान मेटनहितकार ॥ मेर सुदर्शन० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ घेवर बावर मोदक फेनी नेवज नानाविध पकवान। श्री जिनचरण चढ़ावत भविजन क्षुधा रोगभागै भयमान ॥मेरसु० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोत होत रतननकी ऐसे दीपक लेहरषाय। करो आरती जिन चरणन की मोहतिमर भाजै भयखाय ॥ मेरसु० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं ॥ दीपं ॥ खेवतधूप अगन में धरकै

फलेगंध दसोंदिश जाय। जारै कर्म बंध अनादिके भेंटत श्री जिनबर के पाय॥मेरसु० ॥ ८॥ ॐह्रीं०॥ धूपं॥ लौंग इलायची पिस्ता किशमिश दाख बदाम छुहारे लाय॥ श्रीजिनचरण चढ़ावत श्रीफल पावत मुक्त श्रीफल जाय॥ मेरसु०॥ ९ ॥ ॐह्रीं ॥ फलं ॥ जल चंदन अक्षत प्रसून ले चरुवर दीपधूप फलसार। अरघ बनाय चढ़ाय गाय गुण नरभव सुफल करैं तिहबार ॥ मेरसु० ॥ ॐह्रीं० ॥ अर्घं ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ सोरठा ॥

पद्मादेश महान, तहां विजयारध गिर कहो। ताऊपर जिनथान, मैंपूजूं मन लायकै ॥ ११ ॥ ॐह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिम विदेह संबंधी पद्मादेश रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥१॥ अर्घं ॥ नाम सुपद्मादेश, तहां विजयारधगिर लसै। तापर जिनगृह बेश, मैंपूजूं हरषायकै॥ १२॥ ॐह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सुपद्मादेश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यः ॥ २ ॥ अर्घं॥ महापद्मा शुभदेश, तहां विजयारधसोहनो। तहां जिनभवन विशेश भविजन पूजो भावसों ॥ १३॥ ॐह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिम विदेह संबंधी महापद्मादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यः ॥३॥ पद्मकावती जान, देश महा सुंदरबसै। रूपागिर जिनथान, वसुविध पूजो भावसों ॥ १४ ॥ ॐह्रीं सुदर्शनमेर के पश्चिम विदेह संबंधी पद्मकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो- ॥ ४ ॥ अर्घं। देश सुसंखासार, जहां बैताड़ सुहावनो। तहां जिन भवन निहार, पूजो तनमन लायके ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पश्चिम विदेह संबंधी सुसंखा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट

जिनमंदिरेभ्यो: ॥ ५ ॥ अर्घं ॥ नालिनदेश सुखकार, तहां विजयारधगिर बनो । तापर मंदिर सार. श्रीजिनवर पद पूजिये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिमविदेह संबंधी नालिनदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ कुमदादेश सुजान, है बैताड़ सुहावनो । तापर भवन प्रमान, श्रीजिनवर पद पूजिये ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरके पश्चिम विदेह संबंधी कुमदादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ सरितादेश रिशाल, तहां बैताड़ सुजानिये । ताऊपर सुविशाल, श्रीजिन मंदिर पूजिये ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पश्चिम विदेहसंबंधी सरिता देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घं ॥ वप्रादेश अनूप, सोहै विजयारध तहां । श्रीजिनवर पद भूप, पूजत मन बच कायसै ॥१६ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिमविदेह संबंधी वप्रादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घं ॥ नाम सुवप्रादेश, तहां विजयारध गिर महा । पूजत हैं धरनेश, श्रीजिनबर पद हरषसों ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पश्चिमविदेह संबंधी सुवप्रादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ ॥ महा-वप्रा है नाम, देश सरस शोभा धरे । जहां बैताड़ सुठाम, तहां जिन भवन सुपूजिये ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के पश्चिम विदेह संबंधी महावप्रादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घं ॥ वप्रकावती सार, देश जहां बैताड़ है । तहां जिनभवन निहार, मैं पूजूं मनलाय कै ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरके पश्चिम विदेह संबंधी बप्रकावतीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घ ॥ है गंधाता नाम, देश सरस मन मोहनो । गिर विजयारध ठाम, तापर जिन मंदिर

जजो ॥ २३ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी गंधातादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ नाम सुगंधाताश, गिर बैताड़ तहां कहो। तहां जिन भवन प्रकाश, मैं पूजूं मनलायकै। २४ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शनमेर के पश्चिम बिदेहसंबंधी सुगंधादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घ ॥ देशगंधला नाम, तहां बैताड़ सुहावनो। ताऊपर जिनधाम, मैं पूजूं हरपाय कै ॥ २५ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शन मेरके पश्चिम विदेह संबंधी गंधला देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १५ ॥ अर्घ ॥ गंध मालनी नाम, तहां बिजया रध जानिये। तापर है जिनधाम, पूजत सुरनर हरष सों ॥ २६ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शनमेरके पश्चिम विदेह संबंधी गंधमालनीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल दोहा छन्द ॥

मेरसुदर्शन की कही, पश्चिम दिश उरआन। तहां षोडस बैताड़पर, जिनबर भवन सुजान॥ २७॥
तिनकी यह जयमाल है, बनी सुपरम बिशाल। जै जै जै जिन देव तुम, लाल नवावत भाल ॥ २८ ॥

॥ पद्धड़ी ॥

जैमेरसुदर्शन के सुजान। पश्चिम दिशक्षेत्र बिदेह ठान ॥ तहां षोडस देश बिदेहमान। षोडस रूपा गिर हैं सुथान ॥ २९ ॥ तिनपर षोडस जिन भवनसार। बनरहे सुअद्भुत हियेधार ॥ जैरतन मई रचना उद्योत। जै जगमग जगमग जोतिहोत॥ ३०॥ जै तीनपीठ शोभे रिसाल। तिनपर सिंहासन हैं विशाल ॥ जै कमलबनो तापरअनूप। जिन बिंब बिराजैं जिनस्वरूप॥ ३१ ॥ जै तीनै क्षत्रकर शो-

भमान । त्रिभुवनके पति याते प्रमान ॥ जै सुरनर पूजत हर्षधार । जिनराज सुछवि नैनन निहार ॥ ३२ ॥ जै ढोरत चमर सुइन्द्र आय । इन्द्रानी नृत्यकरैंवनाय ॥ जहांबाजत सबबाजे विशाल । गंधर्वदेव तहां देतताल ॥ ३३ ॥ जै झुक झुक निरखत जिनस्वरूप । जै जग जयवंती छबिअनूप ॥ जै जिनबर गुणगावैं विशाल । जै नय नय नय नावतसुभाल ॥ ३४ ॥ जै दुंद्धवि बाजन की जुशोर । सुन श्रवन नचैं भविजीव मोर ॥ तहां श्री मुनिराज विराजमान । जै अनुभव रसपीजै सुजान ॥ ३५ ॥ जे श्रावक श्रावकनी सुआय । मुनिराज चरण सेवैंनाय ॥ धर्मोपदेश मुनिदेतसार । भविजीवनपर करुणासुधार ॥ ३६ ॥ जहां खेचर खेचरनी सुआय । वहुभक्ति सहित उत्सव कराय ॥ जै जै जै श्री जिनराज देव । सुरनर विद्याधर करतसेव ॥ ३७ ॥

॥ घत्ता ॥ दोहा ॥

पश्चिमदिशा सुमेरकी, षोडस[१६] क्षेत्रविदेह । तहां षोडस[१६] वैताड़गिर, तिनपर श्रीजिनगेह ॥ ३८ ॥ जहां जिनविंब अनादिहैं, अद्भुत परमविशाल । तिनपद शीसानिवायकै, लालरची जयमाल ॥ ॥ ३९ ॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तमताको पाठपढैं मनलाय । जाकेपुन्यतनी अतिमहिमा वर्णन को करसकैं वनाय ॥ ताकेपुत्र पौत्रअरु संपति बाढै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनरपदले शिवपुरजाय ॥ ४० ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति सुदर्शनमेर के पश्चिम विदेह संबंधी षोड़स[१६]रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ सुदर्शनमेरके दक्षिणदिश भरथक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नम्बर ९

अथस्थापना ॥ कुसुमलताछंद ॥

मेरसुदर्शन दक्षिणदिश मैं भरथक्षेत्र शोभै सुरिशाल। बीसैंचार जिनबर तहां निवसैं सुरनर खगसेवैं तिहुं काल ॥ तहांपड़ो वैताड़ मनोहर तिनपर श्रीजिन भवन बिशाल। आव्हानन बिध तिनकी करकै श्रीजिनचरण निवावत भाल ॥ १ ॥ ॐह्रीं सुदर्शन मेरके दक्षिणदिश भरथक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौपटाव्हाननं॥ अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र ममसन्निहितो भवभव बिषट संधी सकरणं स्थापनं॥

॥ अथाष्टकं ॥ कुसुमलताछंद ॥

क्षीरोदधिको उज्जलजलले श्रीजिन चरणन पूजत जाय । जन्मजरा दुखदूर करनको शीसनिवावत अति सुखपाय॥मेरसुदर्शन दक्षिणदिश मैं भरथक्षेत्र सुंदरअभिराम॥जहावैताड़ मनोहर सोहै तहां जजो जिनवर के धाम ॥ २ ॥ ॐह्रीं सुदर्शन मेरके दक्षिणदिश भरथक्षेत्र संबंधी रूपाचल पर सिद्ध कूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ जलं ॥ चंदन अरुकर्पूर मिले कै केसर लावत रंगभरी । श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन भव आताप सोदूरकरी ॥ मेरसु० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं ॥ चंदनं ॥मुक्ताफल सम अक्षत उज्जल पुंजदेत अतिमन हरषाय । अक्षय पद पावत तहां भविजन जिन चरणांबुज मस्तक नाय ॥ मेरसुदर्शन० ॥ ४ ॐह्रीं अक्षतं॥ कुसुम तरुके वेल चमेली श्रीगुलाव महके सुखदाय। सुरनर विद्याधर

सब ले ले श्रीजिन चरण चढ़ावत लाय ॥ मेरसु० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं ॥ पुष्पं ॥ बावर घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत सुलेत बनाय । क्षुधारोगके दूरकरन को जजत जिनेश्वर मंगलगाय ॥ मेरसु० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोत होत मंदिरमें मणमई दीप अमोलिकलाय । मोहतिमर के नाश करनको भविजन पूजो श्रीजिनराय ॥ मेरसु० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं ॥ दीपं ॥ कृश्नागर वर धूपदसांगी खेवत जिन चरणन ढिगजाय । हाथजोड़ प्रभु सन्मुख ठाढ़े गावत जिनगुण मन हरपाय ॥ मेरसु० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं ॥ धूप ॥ श्रीफल लौंग सुपारी पिस्ता ऐला दाख छुहारे लाय । भावसहित श्रीजिनवर पूजोशिवसुं-दर को व्याहोजाय ॥ मेरसु० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं ॥ फलं ॥ जलफल आठोदरव सुलेके अर्घ चढ़ावत श्री जिनराय । बलबलजात लाल चरणनपर पूजतभाव भक्तउरलाय ॥ मेरसु० ॥ १० ॥ ओंह्रीं ॥ अर्घं ॥

अथप्रत्येकार्घ ॥ कुसुमलताछंद ॥

मेरसुदर्शन की दक्षिण दिश भरथक्षेत्र सोहैअभिराम । तहांपड़ो वैताड़ मनोहर रूपावत रूपाचल नाम ॥ ताकेऊपर सिद्धकूटहै तहां अकीर्तम श्रीजिनधाम । सुर विद्याधर पूजत वसुविध हमपूजत लेअर्थ सुठाम ॥ ११ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके दक्षिणदिश भरथक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ १ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

प्रथम मेरदक्षिण दिशा, भरथक्षेत्र सुबिशाल । रूपाचलपर जिन भवन, सुनो सुभवि जयमाल १२

॥ पद्धड़ी ॥

जैजै श्रीमेरसु प्रथम जान । हैनाम सुदर्शन सुखनिधान ॥ जैषोड़स तहां जिनभवन सार। बनरहे अकीर्तम हियेधार ॥ १३ ॥ जैतहां तीर्थकर न्हवन होय । ताकी महिमा बरणे सुकोय ॥ जैजाकी

दक्षिण दिश बखान । तहां भरतक्षेत्र शोभे महान ॥ १४ ॥ जैजैतहां कालछहो सुरीत । बरने जिन आगम कहीमीत ॥ जैतीनकालमें भोगभूम । जैकल्पवृक्षतहां रहैभूम ॥१५॥ जैचौथे मे जिनराज जन्म जैचौबीसो भाषे सुधर्म । जैनारायण बलदेव जान । प्रतिहर चक्री त्रेसठ महान ॥ १६ ॥ जैभरतक्षेत्र महिमा अपार । तहां कर्मभूम बरतौबिचार ॥ ताबीच पड़ो बैताड़ आन । तापर नौकूट अनूपजान ॥१७॥ वसुकूट सरस सुंदर अवास । तहां बिंतरदेव करैंनिवास ॥ नौमो श्रीसिद्धसुकूट जान । जहां श्रीजिन मंदिर शोभमान ॥१८॥ ताकी उपमा बरनै सुकोय । सब रतनमई द्युति दिपैसोय ॥ ऐसो जिन भवन बनो रिशाल । तिनमैं जिनबिंब लसै बिशाल ॥१९॥ तनउचित पाचसै धनुष काय । पद्माशन छवि बरनी नजाय ॥ सँतआठकहे जिनवर बखान । सुरविद्याधर पूजत सुआन ॥ २० ॥ जैरचना समव सरन प्रमान । बनरही अनादि तनी सुजान ॥ जैसुरनर पूजा करैंआय । जैवसुबिधद्रव्य सु ले बनाय ॥ २१ ॥ जै नृत्यकरत बाजे बजाय । जै भाव भक्ति उरमैंसुलाय ॥ जिनराज चरणको सीसनाय॥ निज निज थानक पहुंचे सुजाय ॥ २२ ॥

॥ घत्ता ॥ दोहा ॥

जोबांचैं यहपाठको, तन मन प्रीत लगाय। महिमा ताके पुन्यकी, मोपर कही नजाय। २३॥ बने अकीर्तम जिन भवन, रतनमई सुबिशाल । तहां जिनबिंब निहारके, दर्शन करत सुलाल ॥२४॥ इति

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छन्द ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय । जाके पुन्यतनी अति महिमा वर्णन

को करसकैं बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदले शिवपुर जाय ॥ २५ ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति सुदर्शनमेर के दक्षिण दिश भरतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ सुदर्शनमेरके उत्तरदिश ऐरावत क्षेत्रसंबंधी रूपाचल पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर १० ॥

॥ अथस्थापना ॥ कुसुमलता छन्द ॥

मेरसुदर्शन की उत्तरदिश ऐरावत है क्षेत्र विशाल । तीर्थंकर चौबीस हौंय जहां सुरनर सेवत हैं तिहुंकाल ॥ तहां पड़ो बैताड़ मनोहर तिनपर श्रीजिन भवन विशाल । आव्हानन विध तिनकी करकै मन बचकाय निवावत भाल ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरके उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्रसंबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भव भव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ कुसुमलता छन्द ॥

क्षीरोदधि उज्जल जल लेकर श्रीजिनपद प्रक्षालित जाय ॥ जन्म जरादुख दूरकरन को धारदेत अतिमन हरषाय ॥ मेरसुदर्शन की उत्तरादिश ऐरावत है क्षेत्र सुनाम ॥ जहां पड़ो बैताड़ मनोहर तहां जजो जिनबरके धाम ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के उत्तरादिश ऐरावत क्षेत्रसंबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ जलं ॥ केसर अरु करपूर मिलेके मलयागिर चंदन घसलाय ।

भव आताप हरन जिनवरपद तिन्है चढ़ावत दाह नशाय ॥ मेरसु० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत पुंज चढ़ावत शीतलगाय। अक्षय पद पावैं तहां भविजन जिनचरणांवुज मस्तक नाय ॥ मेरसु० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ बेल चमेली श्रीगुलाबले सुरतरुके बहुफूल मंगाय। सुरनर विद्याधर सब लेले श्रीजिन चरन चढ़ावत आय ॥ मेरसु० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ पुष्पं॥ घेवरबावर फेनी लाडू खाजे ताजे तुरत बनाय। क्षुधारोग के दूरकरन को जजत जिनेश्वर मंगल गाय ॥ मेरसु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोत होत मंदिर में मणमई दीप अमोलिक लाय। मोहतिमर के नाश करण को करो आरती श्री जिनराय ॥ मेरसु०॥७॥ ॐह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर वरधूपदसांगी खेवत जिनचरणन ढिगजाय। कर्मजलावत पुन्यवढ़ावत गावत जिनगुण नृत्य कराय ॥ मेरसु० ॥ ८ ॥ ॐह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंगसुपारी पिस्ता एला दाख छुहारे लाय। श्री जिन चरणचढ़ावे भविजन शिवफल पावोकर्म नशाय ॥ मेरसु० ॥ ९ ॥ ॐह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफल आठोंदव्यसुलेके अर्घचढ़ावो श्रीजिनराय। बलबल जातलाल चरणन पर पूजव भावभक्त उरलाय- ॥ मेरसु० ॥ १० ॥ ॐह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ सोरठा ॥

मेरउत्तर दिशसार, ऐरावत शुभदेश है। तहां पड़ो वैताड़, तापर जिनमंदिर जजो ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं सुदर्शनमेरके उत्तरदिश ऐरावतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ अर्घं

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

प्रथममेर उत्तर दिशा, ऐरावत सुविशाल। रूपाचलपर जिनभवन, सुनो सुभवि जयमाल ॥ १२॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै जै श्री मेर सु प्रथमजान । हैनामसुदर्शन सुखनिधान ॥ तामैं बनचार कहेंबखान । सबके ऊपर पांडुकमहान ॥ १३ ॥ चारोंदिश चारैंशिला पवित्र । हैरतनमई अतिद्युति बिचित्र ॥ ताऊपर केहर पीठ जोय । तहां तीर्थङ्कर को न्हवनहोय ॥ १४ ॥ ऐसो गिरराज बिराजमान । ताकी ऊपर दिशहै महान ॥ तहां ऐरावत बरक्षेत्र सार । जै ताको वर्णन है अपार ॥ १५ ॥ जै जै तहां कालछहो सुरीत । बरतै जिन आगम कहीमीत ॥ जैतीनकाल मैं भोग भूम । जै कल्पवृक्ष तहां रहैभूम । १६ ॥ जब चौथा काल करैप्रवेश । तब कर्मभूम लागीअशेश ॥ तबतीर्थकर चौबीसैं होय । बसुकर्मनाश शिवलहै सोय १७ चक्रीबल नारायण सुजान । प्रत्यकसब मिल त्रेसठमहान ॥ यह चौथेकाल प्रयंत होय । पंचम छट्टम मैं नहीकोय । १८ ॥ यह क्षेत्रतनी बिधकही सार । तहां जैनीजीव बसैं अपार ॥ ताबीच पड़ो बैताड़ आन । तापर नौकूंट बिराजमान ॥ १९ ॥ वसुकूट सरस सुंदरअवास । तहां बिंतरदेव करेंनिवास ॥ श्री सिद्धकूट नौमो सुजान । जहां श्री जिन मंदिर शोभमान ॥ २० ॥ जै रचना समवसरण प्रमान । बनरही अनादि तनीसुजान ॥ सबरत्नमई द्युति दिपैसोय । ताकीउपमा बरनैसुकोय ॥ २१ ॥ ऐसो जिन भवन बनोमहान । तिन मैं जिन बिम्ब बिराजमान ॥ तनउंच पांचसैं धनुषकाय । पद्मासन छवि वरनी न जाय ॥ २२ ॥ संतैआठ कहै जिन बिंबसार । सुर विद्याधर सेवत अपार ॥ इंद्रादिक पूजत श्री जिनंद । बसुद्रव्य चढ़ावत अति अनंद ॥ २३ ॥ जै नृत्यकरैं बाजे बजाय । जै भावभक्ति उर मैं सुलाय ॥ जिनराजचरण को सीसनाय । निजनिज थानक पहुंचे सुजाय ॥ २४ ॥

॥ घत्ता ॥ दोहा ॥

ऐरावत वरक्षेत्र में, मेर सुउत्तर भाग । रूपाचलपर जिन भवन, बंदत सुरनरनाग ॥ २५ ॥
ताकीयह जयमाल है, पूरण भई विशाल।जिनगुण अगम अपार है,बुद्धिहीन भविलाल २६ इतिजयमाल

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठपढै मनलाय । जाके पुन्यतनी अतिमहिमा बरणन को करसके बनाय ॥ जाके पुत्रपौत्र अरु संपति बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस पर भव सुखदाई सुरनर पदले शिवपुर जाय ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति सुदर्शनमेर के उत्तरादिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेपूजा संपूर्णम् ॥

अथ सुदर्शनमेरके दक्षिण उत्तरषट्‌ कुलाचलपर्वतपर सिद्धकूटजिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ११ ॥

॥ अथस्थापना ॥ मदअवलिप्त कपोल छंद ॥

मेरसुदर्शन दक्षिण उत्तर षट्‌ कुलगिर सोहै अभिराम । गिरके सिखर कूट की पंकत बिच बिच सिद्धकूट अभिराम ॥ सुर विद्याधर नितभांति पूजत हमैं शक्त नाहीं तिसठाम । यातें आव्हानन विध करके निजयह पूजत करत प्रणाम ॥ १ ॥ ॐह्रीं सुदर्शनमेरके दक्षिण उत्तर षट्‌ कुलाचल पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्रममसन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टक ॥ कुसुमलता छंद ॥

उज्जल जल ले क्षीरोदधि को श्रीजिन चरण चढ़ावत हैं। जन्म जरा दुख नाशन कारण जिनगुण मंगल गावत हैं ॥ मेरसुदर्शन दक्षिण उत्तर षट कुलागिरपर जिन भवनं। सुरखग मिलध्यावैं पुन्य बढ़ावैं हम पूजत हैं जिन चरनं ॥ २ ॥ ओंह्रीं सुदर्शनमेरके दक्षिणदिश निपध ॥ १ ॥ महाहिमवन ॥ २ ॥ हिमवन ॥ ३ ॥ उत्तरदिश नील ॥ ४ ॥ रुक्मानि ॥ ५ ॥ सिखर पर्वतपर सिद्धकूट जिन-मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन दाह निकंदन केसर डारी रंगभरी। भवताप निवारन निजपद धारन शिवसुखकारन पूज करी ॥ मेरसु० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ सुखदासकमोदं अति अनमोदं उपमाद्योदं चंद्रसमं। जिन चरणचढ़ावै मनहरषावै सुरपदपावै मुक्तिरमं ॥ मेरसु० ॥ ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी बेल चमेली ले गुलाब धर जिन आगे। जिनचरण चढ़ावत मनहरषावत कामबान ततक्षिण भागै ॥ मेरसु० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ नेवज ले नीको तुरत सुघीको श्रीजिनवर आगे धरिये। भरथाल चढ़ावो जिन गुण गावो शीसानिवावो शिव बरिये ॥ मेरसु० ॥ ॥ ६ ओंह्रीं० नैवेद्यं ॥ मणमई दीप अमोलिक लेकर जगमग जोत सुहोत खरी। मोहतिमर के नाश करनको श्री जिनआगे भेटधरी ॥ मेरसु० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं ॥ दीपं ॥ कृश्नागर धूपं जजाजिन भूपं लखनिज रूपं खेवतहैं। वसुकर्म जलावैं पुन्यबढ़ावैं दास कहावैं सेवतहैं ॥ मेरसु० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ बादाम छुहारे लौंग सुपारी श्रीफल भारी करधरकै। जिनराज चढ़ावै शिवपदपावै शिवपुर जावैं अघहरकै ॥ मेरसु० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ वसुद्रव्य मिलावै अर्घ बनावै जिनवर पगतल

धारतहैं। शिवपदकी आशा मन हुल्लाशा चहु गत बाशा टारतहैं॥ मेरसु० ॥१०॥ ओंह्रीं ॥ अर्घ॥

॥ अथप्रत्येकार्घ ॥ मदअवलिप्तकपोलछंद ॥

मेरसुदर्शन दक्षिणदिश मैं तप्त हेम द्युति निषधसुनाम। तीगंछद्रह द्रहबिच पंकज कमल बीच धृत देवीधाम ॥ तिंह गिरि सिखरकूट नौउन्नत ताबिच सिद्धकूट अभिराम। तहां जिन भवन निहार धार उर अर्धचद्रावत शीस नमाम ॥ ११ ॥ ओंह्रीं सुदर्शनमेरके दक्षिणदिश निषध पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ मेरसुदर्शन दक्षिणदिश मैं स्वेत महा हिमवनागिरनाम। महा पद्म द्रह द्रह बिच नीरज जलज बीच ह्रीं देवी धाम ॥ ता गिरसिखर कूट बसु शोभित तिंहबिच सिद्धकूट अभिराम। तहां जिन० ॥१२॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेर के दक्षिण दिश महाहिमवन परवतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ अर्घ ॥ मेरसुदर्शन की दक्षिणदिश हेमबरण हिमवनागिरनाम। पद्मद्रह बिच बीच पद्म है पद्म बीच श्रीदेवीधाम ॥ गिरके सिखरकूट एकादश सिद्धकूट तिहबीच सुठाम। तहां जिन० ॥ १३ ॥ ओं ह्रीं सुदर्शनमेरके दक्षिण दिश हिमवनपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ ॥ अर्घ ॥ मेरसुदर्शन की उत्तरदिश नीलबरण गिरनील सुनाम। द्रह केसरी कमलकर शोभित तहां कीर्ति देवीका धाम ॥ तिहगिर सिखरकूट नौउन्नत ताबिच सिद्धकूट अभिराम। तहां जिन०॥ १४ ॥ ओंह्रीं सुदर्शनमेरके उत्तरदिश नीलपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ ४ ॥ अर्घ ॥ मेरसुदर्शन की उत्तरदिश रजत रुक्मागिर पर्वतनाम। द्रह महा पुंडरीक पंकजजुत तापर बुध देवीको धाम ॥ ता गिरसिखर कूट बसु शोभित तिहबिच सिद्धकूट अभिराम। तहांजिन० ॥ १५ ॥ ओंह्रीं सुदर्शनमेरे

के उत्तरदिश रुक्मागिर पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ५ ॥ अर्घं ॥ मेरसुदर्शन की उत्तरादिश हेम वरन सिखरन गिरनाम । पुंडरीक द्रह द्रहविच पंकज तहां लक्ष्मी देवी को धाम ॥ गिर के सिखर कूट एकादश सिद्धकूट तिह बीच सुठाम । तहां जिन० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेर के उत्तरादिश सिखरन गिर पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ६ ॥ अर्घं ॥ मेरसुदर्शन भद्रशालवन सीतातट दोनोंदिश मान । पांचं पांचं हैं कुंडमनोहर तिहतट दसं दसं गिर परमान ॥ तिस कंचनगिरपर जिन प्रतिमा एक एक सबपर सममान । सबामिल एकशतकं नितप्रति हम जजत अर्घतज के अभिमान ॥ १७ ॥ ॐह्रीं सुदर्शन मेरके भद्रशाल बन संबंधी सीता नदीके दोनोंतट पांचं पांच कुंड तिस एक एक कुंडतट दसं दसं कंचनागिर तिन कंचनगिरपर एक एक जिनप्रतिमा अकीर्तम गंधकुटी सहित विराजमान तिनसौ प्रतिमाको ॥ ७ ॥ अर्घं ॥ मेर सुदर्शन भद्रशालवन सीतोदा दोनो तटमान । पांचं पांचंहैं कुण्ड मनोहर तिहतट दसं दसं गिर परमान ॥ तिस कंचनागिरपर जिनप्रतिमा एक एक सबपर सममान । सबमिल एक शतकं नितप्रति हम जजत अर्घ तजकै अभिमान ॥ १८ ॥ ॐह्रीं सुदर्शन मेरके भद्रशाल बन संबंधी सीतोदा नदी के दोनोंतट पांचं पांचं कुंड तिस एक एक कुंडतट दसं दसं कंचनागिर तिन कंचनागिरपर एक एक जिनप्रतिमा अकीर्तम गंधकुटी सहित विराजमान तें सौप्रतिमा को ॥ ८ ॥ अर्घं ॥ मेरसुदर्शन चारौं दिशाके षोडस भवन कहे सुखमान । षोडस गिर वक्षार मनोहर चौतिसैं विजयारध गिरमान ॥ हस्ति दंत चार पट कुलागिर दो इक इक द्रुमके परिमान । आठ अधिकं सत्तर जिनमंदिर जजो अर्घ तज

के अभिमान ॥ १९ ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके चारोंदिश संबंधी अठत्तंर जिनमंदिर सिद्धकूट तिनको ॥ ९ ॥ अर्घ ॥ मेरसुदर्शन की आठोंदिश लवण उदध लकहै मरजाद । ताके मध्यक्षेत्र बहुवरणे तहां जिनमंदिर साद अनाद ॥ सिद्धभूम तहां कहीं अनंती सुरखग जजत करत अहलाद । मन वच तन हम सीस नायकर जजत अर्घ तजकै परमाद ॥ २० ॥ ओंह्रीं सुदर्शन मेरके दिशा बिदिशा मध्ये लवणसमुद्र तक जहां जहां कीर्तम अकीर्तम जिनमंदिर होंय सिद्धभूमि होय तहां तहां ॥ १० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

पटकुल गिरपर जिनभवन, शोभित परम बिशाल । तिनप्रति सीस निवायकै, अब बरणू जयमाल २१

॥ पद्धड़ी ॥

जै मेरसुदर्शन गिरमहान । सब गिरवर में भूपतसमान ॥ जै ताकी दक्षिण दिशाबिशाल । तहां कुलगिर तीनकहे रिशाल ॥ २२ ॥ पहलो निपद्ध गिर है उतंग । दूजो महाहिमवन अति सुचंग ॥ तीजो हिमवन गिर हैप्रसिद्ध । बहु रचित खचित द्युति स्वयंसिद्ध ॥ २३ ॥ अब उत्तरदिश के सुनो नाम । पहिले गिरनील महा सुठाम ॥ दूजो गिर रुक्म महाबिचित्र । तीजो सिखरैन गिरहै पवित्र ॥ २४ ॥ एही पट कुलगिरहैं महान । तिनपद द्रहसुंदर सजल बान ॥ तावीच कमल शोभे भिराम जामैं कुल देवन के सुधाम ॥ २५ ॥ यह बिधि कुलगिर शोभे सुसार । बहु सिखरकूट पंकत अपार ॥ तिनकूट मध्यशोभे सिंगार । श्री सिद्धकूट उन्नत निहार ॥ २६ ॥ तहां जिनमंदिर बरणे पुरान ।

तामैं जिनबिंब बिराजमान ॥ प्रतिमा शतएक अधिक सुंआठ । बसुमंगलद्रव्यबने सुठाठ ॥ २७ ॥ सब समोसरण विध कही जोय । देखे भविसम्यक दरशहोय ॥ जै सुरगण मिल पूजैंसदैव। जिन भक्त हिये धारैं सुजीव ॥ २८॥ जै निरजर निरजरनी सुआय । खेचर खेचरनी सीसनाय॥ नाचैं गावैं देदेसुताल । झुक झुक जिनमुख देखैंसंभाल ॥ २९ ॥ जैद्रुम द्रुम द्रुम बाजैं मृदंग ।इंद्रानी इंद्रनचैंजुसंग ॥ जै थेइ थेइ थेइ धुन रहीपूर । बनरहा सुभुरमट जिनहजूर ॥ ३० ॥ यह विधि वर्णन बहुहै अपार । सुरगुर बरनत पावैं नपार॥जै जैजै जिनवर परम देव । तुम चरणन की हम करत सेव ३१

॥ घत्ता दोहा ॥

षटकुलगिरपर जिनभवन,पूजाबनी विशाल।पढ़त सुनत सुख ऊपजै, बल बलजात सुलाल ३२ इतिजयमाल

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलताछन्द ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा वर्णन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ैं अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदले शिवपुरजाय ॥ ३३ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति श्रीसुदर्शनमेर के दक्षिण उत्तरषट कुलाचल पर्वतपर सिद्धकूट जिनमन्दिरे पूजा संपूर्णम् ॥

॥ इति जंबूद्वीपमध्ये सुदर्शनमेर (प्रथममेर) संबंधी अठत्तैर ॥ जिनमंदिरे पूजा पाठ सम्पूर्णम् ॥

अथ धातुकी द्वीपमध्ये पूर्वदिश बिजयमेर (द्वितीयमेर)

संबंधी षोडस जिनमंदिर पूजा पाठ प्रारम्भः ॥ नंबर १२ ॥

॥ अथस्थापना ॥ मदअवलिप्त कपोल छन्द ॥

दीप धातुकी पूरवदिश में बिजयमेर बंदूं सुखखान । भद्रशाल नंदन सौमनस गिन अरु पांडुक वनचार महान ॥ चारों दिशा चार जिन मंदिर चारों बन षोडस परमान । तिनकी आव्हानन बिध करके हम पूजत अपने निज थान ॥ १ ॥ ॐह्रीं धातु की द्वीपमध्ये पूर्वदिश बिजयमेर संबंधी चारोंदिश चार वन संस्थित षोडस जिन मंदिरेभ्योः ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं।अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्र ममसन्निहितो भव भव बिषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ चाल ॥

जेक्षीरोदध उज्जल जल लीजे, सुगुणहम ध्यावें । जैश्रीजिन सन्मुख धारसु दीजे, सो गुण हम ध्यावें ॥ जै विजयमेर चारोंदिश सोहै, सो गुण हम ध्यावें । जै षोडस जिन मंदिर मन मोहै सुगुण हम ध्यावें ॥ जै देख जिनेश्वर कैसे राजें, सुगुण हम ध्यावें । जै पूजत जिनको सब दुख भाजें, सुगुण हम ध्यावें ॥ २ ॥ ॐह्रीं धातुकी द्वीप के पूरवदिश विजयमेरके भद्रशालबन संबंधी पूर्व ॥ १ ॥ दक्षिण ॥ २ ॥ पश्चिम ॥ ३ ॥ उत्तर । ४ ॥ नंदन बन संबंधी पूर्व ॥ ५ ॥ दक्षिण ॥ ६ ॥ पश्चिम ॥ ७ ॥ उत्तर ॥ ८ ॥ सोमनसबन संबंधी पूर्व ॥ ९ ॥ दक्षिण ॥ १० ॥ पश्चिम ११ ॥ उत्तर १२ पांडुकवन संबंधी पूर्व ॥ १३ ॥ दक्षिण ॥ १४ ॥ पश्चिम ॥ १५ ॥ उत्तर दिशा सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः

॥ जलं ॥ जै केसर अरकरपूर मिलेकै, सुगुण० जै पूजत जिनवर चंदन लेकै, सोगुण० ॥ जै विजयमेर० ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ जै मुक्ताफल सम अक्षत लीजे, सोगुण० । जै श्रीजिन सन्मुख पुंजसुदीजै, सोगुण० ॥ जै विजय० ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ जैफूल मनोहर लेकर, सोगुण० ।लेले जिनमंदिर पूजन जांहि, सोगुण० ॥जैविजय० ॥५॥ ओं ह्रीं० ॥पुष्पं॥ जै फेनी घेवर मोदक खाजे सोगुण० । जै पूजत जिनवर लेकर ताजे, सोगुण० ॥ जै विजय० ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जै मणमइ दीपक लेकर घालो, सोगुण० । जै जगमग जगमग होत दिवालो, सोगुण० जै विजय० ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं० ॥ दीपं ॥ जै अगरकपूर सुगंध मिलाके, सोगुण० । जै श्रीजिन सन्मुख खेवत जाके, सोगुण० ॥ जैविजय० ॥ ८ ॥ ओं ह्रीं० ॥ धूपं ॥ जैश्रीफल दाख बदाम सुपारी, सोगुण० जै जिनपद पूज बरो शिवनारी, सोगुण० ॥ जैविजय० ॥ ९ ॥ ओं ह्रीं० ॥ फलं ॥ जै जलफल अर्घ बनाय सुलावो, सोगुण० । जैलाल जिनेश्वर चरण चढ़ावो, सोगुण० ॥ जैविजय० ॥ १० ॥ ॥ ओं ह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

बिजयमेर की पूर्वदिश, भद्रशाल वनजान । तहां जिन भवन सुहावनो, पूजैं सुरगन आन ॥ ११ ॥
ओं ह्रीं बिजयमेर के भद्रशाल बन संबंधी पूर्वदिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ अर्घ ॥
बिजयमेर तैं जानिये, दाक्षिण दिश सुखदाय । भद्रशालवन जिन भवन, पूजत मनहरपाय ॥ १२ ॥
ओं ह्रीं बिजयमेर के भद्रशालवन संबंधी दाक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ अर्घ ॥

विजयमेर तैं लीजिये, पश्चिम दिशा अनूप। भद्रशालवन जिनभवन, पूजत सुरखग भूप॥१३॥
ॐ ह्रीं विजयमेर के भद्रशालबन संबंधी पश्चिम दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः॥ ३॥ अर्घ॥
विजयमेर उत्तरदिशा, जिन मंदिर सुखकार। भद्रशालवन के विषे, जजो हरष उरधार॥ १४॥
ॐ ह्रीं विजयमेर के भद्रशालबन संबंधी उत्तरदिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः॥ ४॥ अर्घं॥

॥ मदअबलिप्त कपोलछंद॥

बिजयमेर की पूरब दिशमैं नंदनबन सोहै सुबिशाल। तहां जिनभवन अनूपम शोभित सुरगण पूजत हैं त्रैकाल॥ अष्टद्रव्य ले पूजाकरकर नाचत थेई थेई देदं ताल। जेनर आवत अर्घचढ़ावत शिवसुन्दर पावे सुखमाल॥ १५॥ ॐ ह्रीं बिजयमेर के नंदनबन संबंधी पूर्वदिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः॥ ५॥ अर्घं॥ बिजयमेर की दक्षिण दिश मैं नंदनबन शोभे सुखकार। तहां जिन भवन अकीर्तम सोहैं सुरगण मोहित रूप निहार॥ केई गावैं केई तालबजावैं नाचत उरधर हरष अपार। अर्घ चढ़ावत पुन्यबढ़ावत गावत जिनगुण शिव सुखकार॥ १६॥ ॐ ह्रीं बिजयमेर के नंदनबन संबंधी दक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः॥ ६॥ अर्घ॥ बिजयमेर की पश्चिम दिश मैं नंदनवन मनमोहत सार। तहां जिनबिंब विराजत अद्भुत ऐसे जिन मंदिर सुखकार॥ तिनको ध्यानदेख सुरखग मुनि निजस्वरूप अपनो सुनिहार। करम कलंक पंक नित धोवत जजत जिनेश्वर अष्टप्रकार॥१७॥ ॐ ह्रीं बिजयमेर के नंदनबन संबंधी पश्चिम दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः॥ ७॥ अर्घं॥ विजय मेर के उत्तरदिश मैं नंदन वन जिन मंदिर जान। तहां जिनबिंब अनूपम

सोहैं इंद्रादिक पूजत हैं आन ॥ सुर सुरागना अरविद्याधर सब मिल जिन गुण करत बखान। यह कौतुक वन रहो सुनिशादिन पूजैं जिन पावैं सुखखान ॥ १८ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के नंदन वन संबंधी उत्तर दिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

॥ सोरठा ॥

बिजय मेर है सार, ताकी पूरब दिश विपै। बंन सौमनस निहार, तहां जिन मंदिर को जजो ।१६। ओं ह्रीं बिजय मेर के सौमनस बन संबंधी पूर्वादिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ९ ॥ अर्घ ॥ दक्षिण दिश सुखकार, बिजय मेरते लीजिये। बन सौमनस निहार, तहां जिनवरपद पूजिये ॥ २० ॥ ओंह्रीं विजय मेर के सोमनस बन संबंधी दक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ॥ पश्चिमदिशा सुजान, बिजय मेरकी लीजिये। जिनमंदिर सुखवान, बन सौमनस विषै जजो ।२१। ओं ह्रीं बिजय मेरके सौमनस बन संबंधी पश्चिमदिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ उत्तरदिश गिनसार, बिजय मेरतें जानिये। बनसौमनस विचार, तहां जिनवर पद पूजिये ॥ २२ ॥ ओं ह्रीं बिजयमेर के सौमनस बन संबंधी उत्तरादिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घ ॥

॥ चालछंद ॥

पांडुकबन सोहै सार। महिमा को को बरनै। है बिजय सुपूरब धार, पाप तिमर हरनै ॥ तामें जिन मंदिर सार, पूजत सुखकारी। जिनबिंब अनूप निहार, तिनपर बलहारी ॥२३॥ ओं ह्रीं विजयमेरके पांडुक बन संबधी पूर्व दिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ गिरि विजय सुदक्षि-

पसार, पांडुक वन सोहै॥ तहां श्री जिन भवन निहार, सुर नर मन मोहै ॥ इंद्रादिक पूजतपाय महिमा को वरनै। हम पूजत अर्घ चढ़ाय, पाप तिमर हरनै ॥ २४॥ ओंह्रीं विजय मेरके पांडुक वन संबंधी दक्षिण दिशा सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घ ॥ पश्चिम गिर विजय विशाल, पांडुक वन जानों। जिन मंदिर बने विशाल, सुर नरमन मानो ॥ तहां खगपति सुरपति जाय, बहुविध नृत्य करैं। हम पूजत अर्घ चढ़ाय, आनंद भाव धरैं॥ २५ ॥ ओं ह्रीं विजय मेरके पांडुक वन संबंधी पश्चिम दिशा सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥१५ ॥ अर्घ॥ गिर विजय सुउत्तर ओर, पांडुकवन प्यारो॥ तामें जिन भवन सुजोर, सुंदर मन धारो ॥ तहां सुर खग पूजन जांय, जिन गुण गान करैं। हम अर्घ चढ़ावत आय, तन मन ध्यान धरैं ॥ २६ ॥ ओं ह्रीं विजय मेरके पांडुकवन संबंधी उत्तर दिशा सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ १६ ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

विजय मेर चारों दिशा, चारो वन सुविशाल ॥ षोडस[१६] जिन मंदिर कहे, तिनकी यह जयमाल ॥२७॥

पद्धड़ी

जे द्वीप धातु कीहै उदार। ताकी पूरव दिस लसै सार॥ गिर विजय नाम कहिये उतंग। जोजन चौरासी सहस अंग ॥ २८ ॥ जैकटनी चारैं वनी अभंग। तामैं वन चारैं दिपै सुचंग ॥ वन भद्रशाल नंदन सुजान। सौमनसरु पांडुकहै महान ॥ २९ ॥ चारों दिश चारों वन मझार। श्रीजिनवर भवन दिपै सिंगार ॥ यह विध षोडस मंदिर निहार। सब समो सरण वरणन विचार

॥ ३० ॥ जैवेदी मध्य बनी पवित्र। जै कटनी तीन कही विचित्र ॥ जै तापर सिंहासन रिशाल। तिस ऊपर कमल रचो विशाल ॥ ३१ ॥ तहां श्रीजिन बिंब विराजमान। शतआठ अधिक वरणो पुरान॥ भा मंडलकी छवि रही छाय। भवसात दरश देखत जनाय ॥ ३२ ॥ जै तीन छत्र सिर फिरैसार। जै चौसठ चमर ढरैं अपार॥ जै वृक्ष अशोक सुलह लहाय। जै पुष्प वृष्टि सुर करत लाय ॥ ३३ ॥ जै दुंदुभि शब्द वजैं अकाश। भवजीव बुलावैं जिन अवाश॥ चारों दिश सोलह भवन मांहि। जैभूमर खेलत सुरसुजांहि ॥ ३४ ॥ जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजे मृदंग। जे भन भन भन सुरनचैं संग ॥ जै जिन गुण गावैं प्रीतलाय। वहु भक्त हिये धारैं बनाय ॥ ३५ ॥ इंद्रानी इंद्रनचैं सुसाथ। जिनरूप निरख नावैं सुमाथ॥ निज जोड़ अंजुलि धरतपाय। जिनराज सबै निरखैं बनाय ॥ ३६ ॥ फिर फिर फिर फिरकी लेत जाय। भुक भुक भुक भुक जिन सरण आय ॥ छम छम छम छम घुंघरू बजंत। जय जय जय जय सब सुर करंत ॥ ३७ ॥ यह विध बहु भक्ति करैंसुरेश। निरजर निरजरनी मिल असेश ॥ खेचर खेचरनी सबै आय। यह कौतुक देखत प्रीतलाय ॥ ३८॥ जैवल वल जात सुलाल देप। तुम ध्यान धरत हिरदे विशेप॥ यह अरज हमारी सुनो सार। संसार समुद्र ते करोपार ॥ ३९ ॥

॥ घत्तादोहा ॥

विजयमेर पूजा सुविध, सुंदर सरस रिशाल। बांचत भविमन लाय के, लाल नवावत भाल ४०

॥ इतिजयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलताछंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्त्तिमताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाके पुन्यतनी अतिमहिमा बरणन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुख दाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदलहि शिवपुर जाय ॥ ४१ ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति विजयमेर संबंधी षोड़स जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ धातु की द्वीपमध्ये विजय मेरके चारो विदिशा मध्ये चौंर गजदंतपर सिद्धकूट चार जिन मंदिर पूजा प्रारम्भः ॥ नंवर १३

॥ अथस्थापना ॥ मदअवलिप्त कपोल छंद ॥

विजय मेरकी चारों विदिशा तिन मैं हैं गजदंत सुचार । तिनपर सिद्धकूट जिन मंदिर ताको वर्णन अगम अपार ॥ तिनको सुरपति खगमिल पूजत हमैं शक्तनाहीं ताजान । यातैं आव्हानन विध करकै अपने घर पूजत जिन थान ॥ १ ॥ ओं ह्रीं बिजयमेर की चारों बिदिशामध्ये चौंर गज दंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्राधत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं अत्रमम सन्निहितो भवभवविषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ सुंदरीछंद ॥

जल सु उज्जल प्राशुक लाइये । जिनसु पूज परमपद पाइये ॥ गिरविजय गजदंत सुचार जू

जजो ।जिन मंदिर उरधारजू ॥ २ ॥ ओं ह्रीं विजयमेरके अग्नि दिश सोमनस ॥ १ ॥ नैरित दिश विद्युतप्रभ ॥ २ ॥ बाईव दिश मालवान ॥ ३ ॥ ईशानदिश गंधमादननाम गजदंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो । ४ ॥ जलं । परम पावन चंदन गारये । जिनसुपूजत दाह निवारये ॥ गिरविजय० ३ ओं ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ सरस अक्षत उज्जल धोयकै । जिन सुपूजत निर्मल होयकै ॥ गिरविजय० ॥ ४॥ ओं ह्रीं० ॥ अक्षतं । फूल सुरतरु के सु मंगाइये । जिनसु पूजत काम नशाइये ॥ गिरविजय० ॥५॥ ओंह्रीं० पुष्पं ॥ करत नेवज नैन सुहावनो । जिन सु पूजपरम सुख पावनो ॥ गिर बिजय० ॥ ६ । ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं० ॥ नैवेद्यं । दीप मण मइ जगमग जोत है । जिनसु पूजत जोत उद्योत है ॥ गिर विजय० ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं० ॥ दीपं ॥ धूप दश बिध खेवत लायकै । जिनसु पूजत मन हरषायकै ॥ गिरविजय० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ फलमनोहर मिष्ट मंगाइये । जिनसु पूजत शिव फल पाइये ॥ गिरविजय० ॥ ९ ॥ ओं ह्रीं० ॥ फलं ॥ जलसु फल बसु द्रव्यसुलीजिये । अर्घ श्रीजिन सन्मुख दीजिये । गिर विजय० ॥ १० ॥ओं ह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ मदअवालस कपोलछंद ॥

विजयमेर ते गिनो दिशा अग्नेय सुजानो । ता गजदंत सुनाम जान सोमनस प्रमानो ॥ तापर श्रीजिन भवन बने सुंदर सुखकारी । पूजत अर्घ चढ़ाय लाल तिनपर बलहारी ॥ ११ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के अग्नि दिश सोमनस नाम गजदंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥१॥ अर्घ ॥ मेर बिजय तैं गिनो दिशा नैरित सुलीजे । विद्युत प्रभ गजदंत नाम ताको जानीजे ॥ तापर जिनवर-

भाम लसे अद्भुत तुमजानों । पूजत अर्घचढ़ाय हरष उरअन्तर आनो ॥ १२ ॥ ओं ह्रीं बिजयमेर के नैरित दिश विद्युत्प्रभनाम गजदंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ अर्घं ॥ मेरबिजय ते जान दिशा वाइव तहां लहिये । मालवान गजदंत नाम अति सुंदर कहिये ॥ तहां जिनमंदिर बने बिंब जिनराज विराजैं । पूजत अर्घ चढ़ाय परम आनंद उरछाजैं ॥ १३ ॥ ओं ह्रीं बिजयमेर के बाईव दिश मालवान नाम गजदंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ३ । अर्घ । मेरबिजय ते जान दिशा ईशान जसो है । धरैं सुगंध अपार गंध मादन मनमोहै ॥ है गजदंत सुनाम तासपर मंदिर जानो । पूजत अर्घचढ़ाय परमआनंद उरआनो ॥ १४ ॥ ओं ह्रीं बिजयमेर के ईशान दिश गंधमादन नाम गजन्दत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ४ ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

बिजय मेरतें लीजिये, बिदिशा चारौं बिशाल ॥ गज दंतनपर जिन भवन, सुन तिनकी जयमाल॥

॥ पद्धड़ी ॥

जे द्वीप धातुकी है उदार । ताकी पूरब दिश मेर सार ॥ जै बिजय नाम गिरको सुजान । ताकी चारों विदिशा महान ॥१६॥ गजदंत चारौं सुंदर सहाय । गिर निषध नील सोलगं जाय ॥ बन भद्रशाल परसंत सिद्ध । श्री जिनवानी भाषो प्रसिद्ध ॥१७॥ तापर सोहै जिन भवन सार । वरनत सुरगुरन हि लहतपार । सब उपमा समवसरण बनाय । सिंहासन द्युति बरणी नजाय ॥ १८ ॥ तापर जिन बिंब बिराजमान । शतआठ आधिक सो है महान ॥ छवि निरखत अति आनंद होय ।

सखरूप छिपत मकरंद सोय ॥ १९ ॥ सुरपत खगपत नावत जुसीस । जै जै जिनवर त्रिभुवन के ईस ॥ सवदेवी देवकरैं सुगान । इंद्रानी इंद्रनचैं जुआन ॥ २० ॥ ता थेई थेई थेई ध्वनरही पूर । है रहोसु झरमट जिन हजूर ॥ यह कौतुक देखत हैं जुआय । सब देवी देवन चतुर काय ॥ २१ ॥ अव हम को तारो परम देव । तुम चरणन की हम करत सेव ॥ जग जाल महा दुख को निधान । तातैं काढ़ो प्रभु अरज मान ॥ २२ ॥

घत्ता दोहा ॥

विदिशा पूजैं मेरकी, कहे चार गज दंत ॥ जिन मंदिर पूजा बनी, बांचो भविजन संत ॥ २३ ॥ इतिजयमाल

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तिम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को कर सकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ २४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति विजय मेरकी चार विदिशा मध्ये चार गजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ विजय मेरके ईशान नैरित्र कौण जंबू शालमली वृक्ष-पर सिद्धकूट जिन मंदिरेपूजा प्रारम्भः ॥ नंवर ॥ १४ ॥

अथस्थापना ॥ अडिल ॥

विजय मेरतैं उत्तर दक्षिण जानिये । जंबू शालमली दो वृक्ष बखानिये ॥ तिनपर जिनवर भवन

विराजत सारजू । आव्हानन विध करो हरष उर धारजू ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विजय मेरके उत्तर ईशान कोन जंबू वृक्ष अरु दक्षिण नैरित्र कौण शालमली बृक्षपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौपटाह्वाननं ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ॥ अत्र ममसन्निहितो भव भव विषट संधी सकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥

सोगुण हम ध्यावैं, सोगुण हम ध्यावैं ॥ गण फण पति कथि पार न पावैं,सोगुण हम ध्यावैं ॥ टेक ॥ जै क्षीरोदध उज्जल जल लावो, सोगुण० । जैं श्रीजिन चरणन को सुचढ़ावो, सोगुण० । जै जंबू शालमली परजानो, सोगुण० । जै जिन मंदिर पूजत सुखमानो, सोगुण० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं विजय मेरके उत्तर दिश ईशान कोण जंबूवृक्ष ॥ १ ॥ दक्षिण दिश नैरित्र कौण सालमली वृक्षकी पूरब शाखा पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ जलं ॥ जै मलया गिर चंदन ले खासा, सोगु० । जैफै लै सर्व सुगन्ध सुबासा । सोगु० ॥ जै जंबू ॥ ३ ॥ ॐह्रीं० ॥ चंदनं ॥ जैमुक्ताफल सम अक्षत लीजै सोगु० ॥ जै श्री जिन सन्मुख पुंज सुदीजै, सोगु० ॥ जै जंबू० ॥ ४ ॥ ॐह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ जैकमल केतकी वेला लावो, सोगु० । जै श्रीजिन चरणन भेट चढ़ावो, सोगु० ॥ जैजंबू० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ जै घेवर बावर मोदक खाजे, सोगु० । जैं जिनवर पूजन करथर ताजे, सोगु० ॥ जैजंबू० ॥ ६ ॥ ॐह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जै मणमई दीपक ले करमाही, सोगु० । जै मोह तिमर दीखत कहुँ नाही, सोगु० ॥ जै जंबू० ॥ ७ ॥ ॐह्रीं० ॥ दीपं ॥ जै दसविध धूप मनोहर लाई, सोगु० । जै श्रीजिन

सन्मुख खेवत भाई, सोगु० ॥ जे जंबू ०॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ जे लौंग छुहारे पिस्ता लावो, सोगु० जे जिन पद पूजत शिवफल पावो, सोगु० ॥ जे जंबू० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जे जल फल अर्घ बनाय सुनाचो, सोगु०। जे लाल सुपूजा मनधर बांचो, सोगु० ॥ जैजंबू ॥१०॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घं ॥

॥ अथप्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

विजय मेर ईशान दिश, जंबूबृक्ष महान । पूरब शाखा जिन भवन, अर्घ जजो तजमान ॥ ११ ॥ ओंह्रीं विजय मेरके उत्तरदिश ईशान कौणसंबंधी जंबूबृक्षकी पूर्वशाखा पर संस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो: ॥ १ ॥ अर्घं ॥ विजयमेर नैरित्र दिश, सालमली द्रुमजान । पूरब शाखा जिन भवन, अर्घ जजो तजमान ॥ १२ ॥ ओंह्रीं विजय मेरके दक्षिण नैरित्र कौण संबंधी सालमली बृक्षकी पूर्व शाखा पर संस्थित सिद्धकूट जिन मंदिरे भ्यो: ॥ २ ॥अर्घं ॥

॥ अथजयमाल ॥ दोहा ॥

विजय मेर उत्तर दिशा, ताके कौण इशान । दक्षिण नैरित्र कौणहै, भूपबृक्ष दोयजान ॥ १३॥ जंबू साल मलीतनी, शाखा अधिक बिशाल। तिनपर जिन मंदिर जजो, अब सुनिये जयमाल१४

॥ चालछंद ॥

विजय मेर उत्तर दिशा जगसार हो, शोभैकोन इशान। दूजी दक्षिण दिश गिनो, जगसार हो नैरित्र कौण सुजान ॥ जान उत्तर गिन सुदक्षिण दोयबृक्ष सुहावने। जंबू सु सालमली मनोहर मन हरण मन भावने ॥ ताकी जु शाखा चार चहुं दिश फूल फल पल्लव घने । नहि खिरत काल अनाद सेती काय प्रथ्वी सोहने ॥ १५ ॥ पूरब साखा परकहे जग सारहो, जिन मंदिर सुविशाल।

सोहैं सरस सुहावने, जगसार हो । लागे रतन सु लाल ॥ लाल लागेहैं अमोलिक कौन उपमा दीजिये । जैदेव विद्याधर सु पूजैं परम उत्सव कीजिये ॥ जहां बनो सिंहासन अनूपम कमल तापर सोहनो । जापर सु जिनवर बिंबराजै भविक जनमन मोहनो ॥ १६ ॥ तीनछत्र सिरपर धरैं जगसार हो, तीन जगतके ईश।ढोरत चंवर जु सुरतहां,जगसारहो। सुरपतिनावैं शीस॥शीसनावैं इंद्र निश।दिन भक्तिवश पूजा करैं। देवो पुनीत सुद्रव्य लेकर परम आनंद उरधरैं ॥ जहां अमर अपछरा गीत गावैं हावभाव हसंतिया । रुन झुनक नाचैं ठुमक चालैं झमक मन बिह संतया ॥ १७ ॥ तुम गुण महिमा अगम है, जगसारहो। पारन पावैंकोय । तुमसेवा जेनर करैं, जगसार हो। तिनघर मंगलहोंय ॥ होंय मंगल नितनए जहां सरस पुन्य उपायकै । संसार सागर पारह्वैकर लहै शिव सुख जायकै ॥ यहभांति सुरखग परम हर्षित करत उत्सव आयकै। हम शक्तिहीन सुदीन ह्वै प्रभु नमत तुमपद ध्यायकै ॥ १८ ॥

॥ घत्तादोहा ॥

जंबूसालमली तनी, शाखा सरस बिशाल । तिनपर जिनमंदिर बने लाल नवावत भाल ॥ ॥ १९ ॥ इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः॥ कुसुमलता छन्द ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तिम ताको पाठ पढ़ै मनलाय।जाके पुन्यतनी अति महिमा बरनन

को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पात्रै अरु संपत बाढ़े अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहैं शिवपुरजाय ॥ २० ॥ इत्याशीर्वादः

इति विजयमेरके ईशान नैरित्रकौण जंबूसालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम्॥

अथ विजयमेर के पूरब विदेहसंबंधी आठ वखार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिर पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ १५ ॥

॥ अथस्थापना ॥ कुसुमलता छन्द ॥

विजयमेर पूरबदिश सोहै गिरवक्षार आठ अभिराम । तिनके ऊपर बने अकीर्तम अति उतंग जिनवर के धाम ॥ सुर विद्याधर पूजन आवैं गावैं जिनगुण आठो जाम । हम तिनकी आव्हानन विधकर पूजैं श्रीजिनवर इह ठाम ॥ १ ॥ ओं ह्रीं बिजयमेरके पूरब विदेह संबंधी आठ बक्षारगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं। अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र ममसन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ चाल छंद ॥

उज्जल जल प्राशुक लीजे । प्रभु आगे धारसु दीजे ॥ तव जन्म जरादुख छीजे । तव अजर अमर पदलीजे ॥ २ ॥ गिर बिजय सुपूरब जानो । बक्षार आठ उर आनो ॥ तिनपर जिन मंदिर सोहैं । सुरनर खगपतिमन मोहैं ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं बिजयमेरके पूरब विदेह संबंधी पश्चात्य ॥१॥

चित्रकूट ॥ २ ॥ पद्मकूट ॥ ३ ॥ नलिन ॥ ४ ॥ त्रिकूट ॥ ५ ॥ प्राच्य ॥ ६ ॥ वैश्रवण ॥ ७ ॥ अंजन नाम वक्षारगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन लावो। जिन चरणन को सुचढ़ावो ॥ भव भव आताप निवारो। शिव सुंदर रूप निहारो ॥४॥ गिरविजयसु० ॥ ॥ ५ ॥ उों ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ सुखदासक मोदक नीके। अक्षत ले धोय सुठीके ॥ जिन आगे पुंज सोदीजे। अक्षय पद तुरत सोलीजे ॥ ६ ॥ गिरबिजय० ॥७॥ उों ह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ सुर द्रुम के फूल मंगावो। जिन चरणन भेट चढ़ावो ॥ कामादिक कीच बहावो। तब परम महासुख पावो ॥ ८ ॥ गिरिविजय० ॥ ९ ॥ उों ह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी गोभा ले खाजे। जिन पूजत चरु ले ताजे ॥ तब क्षुधा रोग मिटजावै। जब आपहि सिद्ध कहावै ॥ १० गिरविजय० ॥ ११ ॥ उोंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ ले दीप अमोलिक आवो। जिनपूज सुजोति जगावो ॥ तिन मोह तिमर निरवारो। जब केवल ज्ञान पसारो ॥ १२ ॥ गिरबिजय० ॥ १३ ॥ उों ह्रीं० ॥ दीपं ॥ ले धूप सुगंधी खेवो। जिनराजचरन को सेवो ॥ वसु कर्मन को सोजलावै। तबही उत्तम पद पावै ॥ १४ ॥ गिराविजय० ॥ १५ ॥ उोंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल बादाम सुपारी। लौंगादिक प्राशुक धारी ॥ जिन चरणनको सो चढ़ावै। शिव सुंदर कंठ लगावै ॥ १६ ॥ गिराविजय० ॥ १७ ॥ उोंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल ले अर्घ सुदीजे। जिन वचन सुधा रस पीजे ॥ तब कारज सब सुखदाई। सुनियो अब मेरे भाई ॥ १८ ॥ गिरविजय० ॥ १९ ॥ उोंह्रीं० ॥ अर्घं ॥

॥ अथप्रत्येकार्घ ॥ सोरठा ॥

गिर पश्चात्य सुनाम, विजयमेर पूरब दिशा। जिन मंदिर अभिराम, अर्घ देत अति हर्ष सों ॥ २० ॥

ओंह्रीं विजय मेरके पूरब दिश पश्चात्य नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ अर्घ ॥
चित्रकूट बक्षार, विजय पूर्व दिशमैं कहो । जिन मंदिर उरधार, अर्घजजो वसुदर्वले ॥ २१ ॥ ओंह्रीं
विजय मेरके पूरब विदेह संबंधी चित्रकूट नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ अर्घ ॥
पद्मनाम बक्षार, विजय पूरब दिश जानिये । जिनमंदिर सुखकार, अर्घजजो बहु प्रीत सों ॥ २२ ॥
ओंह्रीं बिजय मेरके पूर्व विदेह संबंधी पद्मनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥
पूरब विजय सुआय, नलिन नाम बक्षार है । बसु बिध अर्घ चढ़ाय, श्री जिन मंदिर पूजिये ॥ २३ ॥
ओंह्रीं विजयमेरके पूरब बिदेह संबंधी नलिननाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ४ ॥ अर्घ ॥
है त्रिकूट बक्षार, नाम विजय पूरब दिशा । जिन मंदिर सुनिहार, पूजो अर्घ चढ़ायकै ॥ २४ ॥ ओं
ह्रीं विजय मेरके पूरब बिदेह संबंधी त्रिकूट नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥
विजय पूर्व दिशसार, प्राच्यनाम बक्षारहै । श्रीजिन भवन निहार, अर्घ जजो करभावसों ॥ २५ ॥
ओंह्रीं विजय मेरके पूरब बिदेह संबंधी प्राच्यनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥
गिर वैश्रवण सुजान पूरब विजय सुजानिये । अर्घ जजो धरध्यान, जिन मंदिर मैं जायकै ॥ २६ ॥ ओं
ह्रीं विजय मेरके पूरब बिदेह संबंधी बैश्रवण नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ७ ॥ अर्घ ॥
विजय सु पूरब द्वार, गिर अंजन बक्षारहै । बसु बिध अर्घ उतार, जिन मंदिर पूजो सदा ॥ २७ ॥ ओंह्रीं विजय
मेरके पूरब बिदेह संबंधी अंजन गिर नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

॥ अथजयमाल ॥ दोहा ॥

विजयमेर पूरबदिशा, गिर बक्षार विशाल । तिनपर जिनमंदिर बने, तिनकी सुन जयमाल २८

॥ पद्धडी ॥

वरदीप धातुकी खंडमान। ताकी पूरबगिर बिजयजान ॥ तिंहागिरकी पूरबदिश पवित्र। षोड़सें विदेह सोहैं विचित्र ॥ २६ ॥ तहां तीर्थंकर राजैं सदीव। तिनके पदपरसैं भविकजीव ॥ तहांजिनवर दोय विराजमान। स्वयं जाति स्वयंप्रभु गुणनिधान ॥ ३० ॥ तिनको सुरनर खग सीसनाय। वहु पाठपढ़ैं जिनगुण सुगाय ॥ जैमुनिगण तिनका धरैंध्यान। निजरूप निहारैं हरषठान ॥३१॥ जोजिनवाणी ध्वन रहीछाय। श्रीगणधर अर्थकरैं अर्थबनाय ॥ भविजीव सुनैं आनन्द होय। निजनिज भाषासमझैं सुलोय ॥ ३२ ॥ केईउद्धर तपधारैं बनाय। लहैं केवल शिव पहुंचैं सुजाय ॥ केई श्रावग वृत धर स्वर्ग जांय। केई सम्यक दर्शलहैं सुलाय ॥ ३३ ॥ केई षोड़सें कारण भावधार। गत तीर्थंकर बांधैं विचार ॥ केईदस विधधर्म धरैं अड़ोल। केईरत्नत्रयपालैंअमोल ३४ जे अतिशय श्रीजिन राजदेव। सतइंद्र चरणकी करत सेव ॥ जहांवरतै चौथोकाल सार। तहांकर्म भूमिजानैं बिचार ॥ ३५ ॥ तिसक्षेत्र विदेहके बीच मान। गिरआठ पड़ेबक्षार जान। तिसपर बहुकूट रचे बनाय। तहां सिद्धकूट बरनो नजाय ॥ ३६ ॥ तिनपर जिनमंदिर हैं विशाल। सुरपति खगपति नावत सुभाल ॥ तहांवेदी अतिसुंदर विशाल। तापर सिंहासन जडित लाल। ३७ ॥ तिसऊपर कमल लसै महान। तहां श्रीजिन बिंब विराजमान ॥ भामंडल की छविरही छाय। भवसात दरस देखत सुजाय। ३८॥ जैतीन छत्र सिरपर फिराय। जैचमर सुढ़ोरत अमर आय। जैदुंदुभि शब्दधुरै अकाश। सुरद्रुम के फूल खिरैं सुवास ॥ ३९ ॥ जैवृक्ष अशोक सुलहलहाय। जिन पूजन को भविजन बुलाय ॥ तहां चतुरन काय सुदेव आय। बहुनृत्य

करत बाजे बजाय ॥ ४० ॥ खेचर खेचरनी सीसनाय । गुणपाठ करत आनँद बढ़ाय ॥ जै तुमगुण वरनन है अपार । वरनत कविकैसेलहै पार ॥ ४१ ॥

घत्ता ॥ दोहा ॥

आठो गिर वक्षार की, पूजा रची बिशाल । जिनपद शीश नवायकै, लाल भनी जयमाल ॥४२॥ इतिजयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाके पुन्यतनी अतिमहिमावरनन को करसकै बनाय ॥ जाके पुत्र पौत्र अरसंपत बाढ़े अधिक सरस सुखदाय । यहभव जस परभव सुखदाई सुरनर पद लहे शिवपुर जाय ॥ ४३ ॥ इतिआशीर्वादः ॥

इति श्रीविजयमेरके पूरव विदेहसंबंधी आठवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथविजय मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी आठवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ १६ ॥

॥ अथस्थापना ॥ दोहा ॥

विजयमेर पश्चिम दिशा, कूट आठ वक्षार । तिनपर जिनमंदिर निरख, करो थापनासार ॥ १॥ ओं- ह्रीं विजय मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी आठ वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः अत्रा वत्रावत्र

संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः ॥ स्थापनं ॥ अत्र मम. सन्नहितो भव भव बिषट संधीस करणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ चौपाई ॥

क्षीरोदध उज्जल जल लीजे । श्रीजिन चरणन धारसु दीजे । जन्म जरा दुख नाशन कारन । पूजो जिन वर भव दध तारन ॥ ८ ॥ बिजय मेर पश्चिम दिश जानो । गिर वक्षार आठ उर आनो। जापर जिन मंदिर सुखकारी। तिनके पाइन धोक हमारी ॥३॥ ओंह्रीं विजयमेरके पश्चिम विदेह संबंधी शब्दवान ॥१॥ बिजयवान ॥२॥आसीबिष ॥३॥सुखावह ॥४॥चंद्र ॥५॥ सूर्य ॥६॥नाग ॥७॥देवनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरभ्यो ॥८॥ जलं ॥ मलयागिरचंदनले आवो ॥ पूजत जिनवरपुन्य कमावो ॥भव आताप महादुखदाई। ताको नाश होय सुन भाई ॥४॥ विजयमेर-०॥५॥ ओंह्रीं०॥चंदनं ॥मुक्ताफल सम अक्षत लीजै । श्रीजिन सन्मुख पुंज सुदीजे ॥ यातै अक्षय पद तुमपावो । कर्मादिक सबकीचवहावो ॥ ६ ॥ विजयमेर०॥ ७॥ओंह्रीं०॥ अक्षतं ॥सुरतरुके बहुफूल सुलावो ।श्रीजिन चरणन भेट चढ़ावो॥ यातैं कामवाण मिट जावै । जिनपद पूज परमसुखपावै॥८॥ बिजयमेर०॥६॥ ओंह्रीं०॥पुष्पं॥ फेनी गोझा मोदकखाजे । नैननको प्यारे ले ताजे ॥ क्षुधा रोग को नाश सुकीजे । अजर अमर पदवी तब लीजे ॥ १० ॥ बिजयमेर० ॥ ११ ॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं॥ दीप अमोलिक कर धर वालो । जगमग जगमग होत दिवालो ॥ मोह तिमर कहुं दीखत नाही । पूजत जिन चरणन जग माही ॥१२॥बिजयमेर० ॥१३॥ ओंह्रीं० ॥दीपं॥धूपसुगंध दशोदिश छाई । जिनचरणन भवि खेवतभाई॥ कर्ममहा रिपु को सुजलावो । पूजताजिनवर शिव सुखपावो ॥ १४ ॥

विजयमेर ०॥१५॥ ओंह्रीं ०॥ धूपं ॥ लौंग छुहारे पिस्तालाय । श्रीफलअरुवादाम मंगाय ॥ लेजिनवर के सन्मुख हूजे । पावताशिवफल प्रभु पद पूजे ॥ १६ ॥ विजयमेर०॥१७॥ ओंह्रीं०॥ फलं ॥ जलफल अर्घ चढ़ाय सुगावै । थेई थेई थेई सुर तालवजावै ॥ यहै कौतुक अद्भुत सविशेखो । पूजतजिनवरलाल सुदेखो ॥ १८ ॥ विजयमेर०॥ १९ ॥ ओंह्रीं ०॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ दोहा ॥

शब्दवान वरकूटहे विजय सुपाश्चिमवोरातापर श्रीजिन भवनलख, अर्घ जजोकरजोर२०ओंह्रींविजयमेरके पश्चिम विदेहसंबंधी शब्दवाननाम वक्षारगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥१॥अर्घ ॥ विजयवान वक्षारहे विजयसुपाश्चिमद्वार। अर्घदेतभवि भाव धर, श्रीजिन भवन निहार॥२१॥ओंह्रीं विजयमेरके पाश्चिम विदेह संबंधी विजयवान नाम वक्षार गिर पर सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो ॥ २ ॥ अर्घ॥ विजय मेर पाश्चिमदिशा, आसी विख वक्षार । तापर जिन मंदिर बनो, अर्घ देत उर धार ॥ २२ ॥ओंह्रीं विजयमेर के पाश्चिमविदेहसंबंधी आसीविखनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ॥३॥ अर्घ ॥ पश्चिम विजय सुमेरके नाम सुखावह सार। मन वचतन जिनभवन नम, अर्घ देत भर थार ॥२३॥ ओंह्रींविजयमेर के पाश्चिम विदेह संबंधी सुखावह नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ ४ ॥ अर्घ ॥ चंद्रनाम वक्षार है पश्चिम विजय सुनाम । श्रीजिनमंदिर है तहां, अर्घजजो तजकाम ॥२४ ॥ ओंह्रीं विजयमेर के पाश्चिमविदेह संबंधी चंद्रनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ॥५॥अर्घ॥ विजय सुपश्चिमवोर लख सूर्य नाम वक्षार । अर्घ जजो वसुदर्वले, जिनमंदिर सुखकार ॥२५ ॥ ओंह्रीं विजयमेरके पाश्चिम विदेह संवंधी सूर्यनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ॥६॥ अर्घ ॥ विजय सुपश्चिमादिश गि-

नो, नाग नाम वक्षार । ताके ऊपर जिनभवन, पूजो अर्घ संवार ॥२६। ओंह्रींविजयमेरके पश्चिमविदेह संबंधी नागनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७॥ अर्घ ॥ देवनाम वक्षार है, बिजयके पश्चिम आन । तापर जिनवरभवन लख,अर्घ जजो तजमान ॥ २७ ॥ ओंह्रींविजयमेरके पश्चिम बिदेह संबंधी देव नाग वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल दोहा ।

विजय मेर पश्चिम दिशा, गिर वक्षार विशाल । तिनपर जिनमंदिरवने,तिनकी सुन जयमाल ॥ २८ ॥

॥ पद्धड़ी ॥

जे द्वीप धातुकी अति उदार । ताकी पूरव गिर विजय सार ॥ तिस गिर की पश्चिम दिश महान जे पोड़ेस देश विदेह थान ॥ २९ ॥ तहां तीर्थंकर राजैं सदीव । बल चक्री हरपति हर सुजीव ॥ जे पुन्य पुरुप भापैं प्रवीन । जिहं क्षेत्र सदा उपजे नवीन ॥ ३० ॥ तहां रिपभानन जिन विद्यमान । दूजे प्रभु वीर्य अनंत जान ॥ जै जिनवानी धुन खिरै सार । भविजीव सुनै आनंद अपार ॥ ३१ ॥ केइ वानी सुन वैराग होय । मुनि भार वहै भव तरैं सोय ॥ केइ श्रावक के वृत धरैं धीर । केइ सम्यकदर्शन लहैं वीर ॥३२ ॥ सब कर्म भूम रचनासुहाय । जहां चौथा काल सदा रहाय ॥ तिस क्षेत्र वीच वैताड़ आठ । गिरपरे महा सुंदरसुठाठ ॥ ३३ ॥ तिनपर जिन मंदिर हैं महान । सब समोसरण वरणन समान ॥ जे वेदी मध्य विराजमान । सिंहासन हेमवरण बखान ॥ ३४ ॥ जै सिंहासनपर कमल सार । वहुरत्न जड़ित नैननिहार ॥ तहां श्रीजिनके प्रतिबिंबदेख । अतिहर्ष किये सुरपति विशेख ॥ ३५ ॥ भामंडल की छवि रही छाय । भव सात दरश देखत जिनाय ॥ जै तीन छत्र सिरपर फिराय । जे चमर सचौंसठ ढरत जाय ॥ ३६ ॥ जे दुंदभि शब्द बजैं अकाश ।

जै कल्पवृक्ष सुंदर सुवाश ॥ जै पुष्पवृष्टि सुर करैं लाय । जै सभा जीव जैजै कराय ॥ ३७ ॥ जै वृक्ष अशोक सुलहलहाय । जिन पूजनको भविजन वुलाय ॥ जै चतुरनकाय देव आय । खेचर खेचरनी सीस नाय ॥ ३८ ॥ वहु नृत्य करैं वाजे वजाय । गुणपाठ पढैं आनंद बढ़ाय ॥ प्रभु तुम गुण बरणन है अपार । वरनत कवि कैसे लहे पार ॥ ३९ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

विजयमेर पश्चिम दिशा, आठोगिर सुरिशाल। तिनपर जिनग्रह पूजकै, लालनवावतभाल॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छन्द ।

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा वरणन को करसके वनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अर संपत वाढ़े अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदलहे शिवपुरजाय ॥ ४१ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति विजयमेर के पश्चिम विदेहसंवंधी आठ वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ विजयमेर के पूरब विदेह संवंधी षोड़स रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंवर ॥ १७ ॥

॥ अथस्थापना ॥ कुसुमलता छन्द ॥

विजयमेर के पूरव दिश में है रूपाचल गिर अभिराम । सोलह कूटन पर जिनमंदिर रत्नमई

जिनवर के धाम ॥ तिनमें जिनवर बिंब विराजत सुरखग मिल पूजत तिह ठाम । तिनकी आव्हानन विधकरके हम पूजत नित करत प्रणाम ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विजयमेर के पूरव विदेह संबंधी षोडस रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं ॥ अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ कुसुमलताछंद ॥

क्षीरोदधको उज्जल जल ले श्री जिन मंदिर आवतहैं । रत्नकटोरीमें धर करले श्रीजिनचरण चढावतहैं ॥ विजय मेरके पूरव दिशमें षोडश देश जु सोहत हैं । रूपाचलपर श्री जिन मंदिर सुरनरके मन मोहतहैं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं विजय मेरके पूरब विदेह संबंधी कक्षा ॥ १ ॥ सुकक्षा ॥ २ ॥ महाकक्षा ॥ ३ ॥ कक्षावती ॥ ४ ॥ आवर्ता ॥ ५ ॥ मंगलावती ॥ ६ ॥ पुष्कला ॥ ७ ॥ पुष्कलावती ॥ ८ ॥ वक्षा ॥ ९ ॥ सुवक्षा ॥ १० ॥ महावक्षा ॥ ११ ॥ वत्सकावती ॥ १२ ॥ रम्या ॥ १३ ॥ सुरम्या ॥ १४ ॥ रमणी ॥ १५ ॥ मंगलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥

मलयागिर चंदन अरु केसर ले दोऊ घसकर धारतहैं । तनमन भक्तिभाव उर धरकर जिन चरणन पर वारतहैं ॥ विजय मेर० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ चंदनं ॥ देव जीर सुखदासक मोदक अक्षत धोय बनावतहैं । मुक्ताफल समसार मनोहर श्रीजिनचरण चढावतहैं ॥ विजय मेर० ॥ ४ ॥ ॐह्रीं० । अक्षतं ॥ कल्पवृक्ष सुरतरु तें उपजत फूल सुगंध रही महकाय । सीस नाय भवि पूजत जिनको श्रीजिन गुण गावत हरषाय ॥ विजय मेर० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं पुष्पं ॥ फेनी गोंझा मोदक खाजे ताजे तुरत सुलेत

वनाय । क्षुधा रोग के दूर करनको श्री जिनवर पद पूजत जाय ॥ विजय मेर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोत होत दीपक का रत्नमई कंचन भर थार । श्रीजिन सन्मुखकरत आरती नाचत थेई थेई पद झुनकार ॥ विजय मेर० ॥७॥ ओंह्रीं० ॥दीपं॥ फैलै सरस सुगन्ध दसोंदिश दश विधधूप वनावत लाय । खेवत अगन मांहि जिन सन्मुख वसु विध कर्म जलावतजाय ॥ विजय मेर० ॥८॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग वदाम छुहारे पिस्ता किशमिश दाख मंगाय । रसना घ्राण नैन सुख उपजत जिनपद पूजत शिवपददाय ॥ विजय मेर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय गाय गुण जिन चरणाम्बुज मस्तकनाय । नरनारी निरजर निरजरनी जै जै शब्द करत हरपाय ॥ विजय मेर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ सोरठा ॥

कक्षा देश महान्, विजयमेर पूरब दिशा । तहां रूपाचल जान, जिनमंदिर पूजो सदा ॥ ११ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के पूरब विदेह संबधी कक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥१॥ । अर्घ ॥ देश सुकक्षासार, पूरब विजय सुमेर की । तहां जिन भवन निहार, रूपाचलपर पूजिये १८ ओं ह्रीं विजयमेर के पूरब विदेह संबंधी सुकक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: २ अर्घ । विजयसुपूरब ओर, महा सुकक्षादेश है । श्रीजिनमंदिर जोर, विजयारधपर पूजिये ॥ १३ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के पूरब विदेह संबधी महाकक्षा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ कक्षकावती देश, पूरब दिश गिर विजयतें । रूपाचलगिर वेश, तापर जिन मंदिर

जजो ॥ १४ ॥ ओंह्रीं विजय मेरके पूरब विदेह संबंधी कक्षकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ । अर्घ ॥ विजय के पूरब जान, देश नाम आवर्तहै । श्रीजिनभवन महान विजयारध गिरपै जजो ॥ १५ ॥ ओंह्रीं विजयमेर के पूरब विदेह संबंधी आवर्त देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ मंगलावती देश, विजयके पूरब दिश कहो विजयारध गिर वेश, श्रीजिनमंदिर पूजिये ।१६॥ ओंह्रीं विजयमेरके पूरब विदेह संबंधी मंगलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ देश पुष्कलासार, पूरब विजय के जानिये । जिन मंदिर सुखकार, पूजो गिर वैताड़के । १७॥ ओंह्रीं विजय मेरके पूरब विदेह संबंधी पुष्कलादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ॥७॥ अर्घ ॥ विजयपूरब दिश जान, पुष्कलावती देश है । रूपाचलाजिन थान, पूजो मन बच कायकर ॥ १८ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के पूरब विदेह संबंधी पुष्कलावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥ देश अधिक रमणीक, वक्षा पूरब विजय के । जिन मंदिर तहां ठीक, विजयारधपर पूजिये ॥ १९ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के पूरब विदेह संबधी वक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ९ ॥ अर्घ ॥ देश सुवक्षानाम, विजय पूरब दिश मैं सही । रूपाचलजिनधाम, पूजो भविमन हर्ष सों । २० ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के पूरब विदेह संबंधी सुवक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥१०॥ अर्घ ॥ विजयपूरब दिशसार, देश महा वक्षा गिनो । गिरवैताड़ निहार, पूजो जिनगृह भाव सों ॥२१। ओं ह्रीं विजयमेर के पूरब विदेह संबंधी महावक्षादेश संस्थित

रूपा चलपर सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ पूरव विजय विशाल, वत्सकावती देश है । पूजत भवि तिहुंकाल, रूपा चलपर जिन भवन॥२२॥ओं ह्रीं विजयमेरके पूरव विदेह संबंधी वत्सकावतीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो ॥ १२॥अर्घ॥विजय महागिर सार,पूरव रम्यादेश है अर्घ जजो भरथार, रूपाचल जिन भवनजूं॥ २३ ॥ओं ह्रीं विजय मेर के पूरव विदेह सम्बंधी रम्या देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ देश सुरम्याजान, पूरवदिश गिर विजय के । जिन मन्दिर धरध्यान, पूजो गिर वैताड़ के ॥ २४ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के पूरवविदेहसम्बन्धी सुरम्यादेश संस्थित रूपा चलपर सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो ॥ १४ ॥अर्घ ॥ रमणीदेश अनूप, विजय पूर्व दिश सोहनो । पूजत सुर खग भूप, जिन मन्दिर वैताड़के ॥ २५ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के पूरव विदेह संबंधी रमणीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो ॥ १५ ॥ अर्घ ॥ मङ्गलावतीनाम, देश विजय पूरव वसै । सिद्धकूट जिन धाम, पूजो गिर विजयार्धपर ॥ २६॥ ओं ह्रीं विजयमेरके पूरवविदेह संवन्धी मङ्गलावती देश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो॥१६॥अर्घ

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

विजयमेर पूरव दिशा, गिरवैताड़ विशाल । षोड़स जिन मंदिर जजो अबवरनूंजयमाल ॥ २७॥

॥ पद्धड़ी॥

जैविजयमेर सुन्दर सुजान। ताकी पूरव दिशमें बखान,जहां खोड़स देश विदेह सार । ताकोवरनत लागै अवार ॥ २८ ॥ तहां खोडस गिर वैताड़ नाम । ताके ऊपर जिनवर सुधाम । जै जिनमन्दिर

मैं देव आय । श्री जिनवर पूजैं प्रीत लाय ॥ २९ ॥ जै रचना समोसरण समान । बसुमङ्गल द्रव्य विराजमान । जै वेदीकी कटनी बिचित्र । जै सिंहासन सोहै पवित्र ॥ ३० ॥ जै तापर कमल रचो अनूप । तहांराजैं श्रीजिनराज भूप। सतेआठअधिक जिनबिंबसार[१०८]स्वरूप होत आनँद अपार॥३१॥ तहां खेचर खेचरनी सुआय। गुनगान करैं बाजे बजाय ॥ जैनृत्य करैं सङ्गीत सार । बिद्या बलरूप अनेक धार ॥ ३२ ॥ जिनबिंब सु निरखत नैन लाय । निज जन्म सुफल मानत बनाय॥ अति हर्ष सहित पूजत जिनेश। फुनि पाठ पढत बहु विध खगेश ॥ ३३ ॥ जै जै जै जिनवर परमदेव। तुम चरणन की हम करतसेव॥जै तुम गुण महिमा अगम सार। बरनत हम कैसे लहैं पार॥ ३४ ॥ परभक्तलनि तुमको सुध्याय । पूजत तुमपद आनंद वढाय॥ जग में जयबंते होय देव। हमकरैंसदा तुम चरण सेव ॥ ३५ ॥ भव जीवन की यह अरज जान। भवभव तुम सेवा मिले आन ॥ कीजैकिरपा हमपर दयाल। करजोर सीस नावत सुलाल ॥ ३६ ॥

घत्ता ॥ दोहा ॥

विजयमेरके पूर्वदिश,रूपाचल जिनथान।सुर खगपति पूजतसदा,लहत सुपदनिर्वाण।३७।इतिजयमाल॥

॥ अथाशीर्वादः कुसुमलताछन्द ।

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तिम ताको पाठ पढें मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसकै बनाय । ताके पुत्र पौत्र अरु सम्पत बाढे अधिक सरस सुखदाय। यहभवजसपरभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ ३८ ॥ इतिआशीर्वादः ॥

इति विजयमेर के पूरव विदेह संबंधी षोडस[१६] बिजयार्द्ध पर सिद्ध कूट जिन मन्दिरे पूजासम्पूर्णम् ॥

अथविजय मेर के पश्चिम विदेह सम्बंधीषोड़[१६]सरूपाचलपर

सिद्धकूट जिनमन्दिरे पूजाप्रारम्भः ॥ नम्बर ॥१८॥

अथस्थापना अडिलछंद ।

विजयमेर के पश्चिमदिशा वखानिये । तहां षोड़[१६]स वैताड़सरस उर आनिये॥ तिनपर श्रीजिन भवन विराजत सारजू । आव्हानन विध करत हरप उर धारजू॥१॥ ओंह्रीं बिजयमेरके पश्चिम विदेहसंबंधी षोड़स वेताड़ गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो । अत्रा वत्रा वत्र संवौ षटाव्हाननं ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ॥ अत्रमम सन्नहितो भवभव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं चाल कातकी की ।

प्राणी श्रीजिनवर पद पूजिये । इंद्रादिक पूजत पाय ॥ प्राणीश्रीजिनवर पद पूजिये ॥ टेक ॥ प्राणी उज्वल जलसु मंगायके, क्षीरोदधकी उनहार । प्राणी श्रीजिनवरपद पूजिये॥ प्राणीश्रीजिन चरण चढ़ाइये, दुख जनम जरा निरवार॥ प्राणीश्रीजिनवरपदपूजिये ॥ २ ॥ प्राणीविजय मेर पश्चिमादिशा, षोड़[१६]स रूपाचलजान । प्राणीतिनपरीजनमंदिर कहे, सुरखगामिलपूजत आन ॥ प्राणीश्रीजिन० ॥ ३ ॥ ओंह्रींविजयमेर के पश्चिम विदेहसंबंधी पद्मा ॥ १ ॥ सुपद्मा ॥ २ ॥ महापद्मा ॥ ३ ॥ पद्मकावती ॥ ४ ॥ सुसंखा ॥ ५ ॥ नलिना ॥ ६ ॥ कुमदा ॥ ७ ॥ सरिता ॥ ८ ॥ वप्रा ॥ ९ । सुवप्रा ॥ १० ॥ महावप्रा ॥ ११ ॥ वप्रकावती ॥ १२ ॥ गंधा । १३ ॥ सुगंधा ।१४। गंधला । १५ ॥ गंधमालनीदेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥ प्राणी

मलयागिर अतिसीयरो, चंदनकेसरमें गार। प्राणी श्रीजिनचरण चढ़ाइये, भवभव आताप निवार॥ प्राणी श्रीजिनवर० ॥ इंद्रादिक० ॥ ४ ॥ प्राणीविजयमेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ प्राणी अक्षत सरससुधोइये. मुक्ताफलकी उनहार। प्राणीश्रीजिनसन्मुखपुंजदे, लहै अक्षय पद सुखकार ॥ प्राणीश्रीजिन० ॥ ६ ॥ प्राणीविजयमेर० ॥ ७ । ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ प्राणीवेल चमेली केवड़ा, लेफूल अनेक प्रकार। प्राणीश्रीजिन चरण चढ़ाइये, कामादिकवाननिवार ॥ प्राणीश्री० ॥ ८ ॥ प्राणी विजयमेरके० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ प्राणीबावर घेवर आददे, नानाविधके पकवान। प्राणी श्रीजिनचरण चढ़ाइये. तवगहै क्षुधाभयमान। प्राणीश्री० ॥ १० ॥ प्राणीविजय० ॥ ११ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं। प्राणीजगमग जगमग होतहै, दीपककी जोत प्रकाश। प्राणी श्रीजिनआरतकीजिये, होमोह तिमरकोनाश ॥ प्राणीश्री० ॥ १२ ॥ प्राणीविजय०। १३ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ प्राणीकृश्नागर कर पूरले, दशविधकी धूप वनाय। प्राणीश्रीजिन आगेखेइये, सब कर्मपुंज जलजांय ॥ प्राणीश्री०।१४। प्राणीविजय० ॥ १५ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ प्राणीलौंग सुपारी लायची, बादाम सुपिस्तालाय। प्राणीश्रीजिन चरण चढ़ाइये, मनवांछित शिवफल पाय। प्राणीश्री० ॥ १६ ॥ प्राणी विजय० ॥ १७ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ प्राणीजलफल आठोंदर्वले, सुरखगमिल पूजतपाय। प्राणीश्रीजिन आगे अर्घ दो, भविलाल सुवल वलजाय ॥ प्राणीश्री० ॥ १८ ॥ प्राणीविजय० ॥ १९ ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्यकार्घ ॥ सोरठा ॥

विजयसुपश्चिमवोर, पद्मादेश सुहावनो। विजयारधगिरजोर, तापर जिन मंदिरजजो ॥ २० ॥

ओंह्रीं विजयमेरके पश्चिमविदेह संबंधी पद्मा देश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥१॥
॥ अर्घं ॥ नामसुपद्मादेश, विजयमेर पश्चिमदिशा । तहांरूपाचलवेश, पूजोजिनमंदिरसदा ॥ २१ ॥
ओंह्रींविजयमेरके पश्चिम विदेहसंबंधी सुपद्मादेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥२॥ अर्घं
विजयसु पश्चिमसार, महापद्माशुभदेशहै । तहां जिनभवन निहार, रूपाचलपर पूजिये ॥२२॥ ओं-
ह्रीं विजयमेरके पश्चिमविदेह संबंधीमहापद्मादेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥
अर्घं ॥ पद्मकावतीसार, विजयसुपश्चिमजानिये । जिनमंदिरसुखकार, विजयारधगिरपरजजो ॥ २३ ॥
ओंह्रींविजयमेरके पश्चिम विदेह संबंधी पद्मकावतीदेश संस्थितरूपाचलपरसिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ।४।
॥अर्घं ॥ देशसुसंखानाम, विजयके पश्चिमदिश कहो । रूपाचलजिनधाम, पूजोमनवचकायसों ।२४।
ओंह्रींविजयमेरके पश्चिम विदेहसंबंधी सुसंखा देश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥
अर्घं ॥ नलिनादेश उदार, विजयके पश्चिमदिशवसै । रूपाचलसुनिहार, श्रीजिनमंदिरपूजिये ॥ २५ ॥
ओंह्रीं विजयमेर के पश्चिमविदेहसंबंधी नलिनादेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥६॥
अर्घं ॥ कुमदादेश पवित्र, पश्चिम विजयसुमेरके । बिजयारधसुविचित्र, तहां जिनमंदिरनितजजो २६
ओंह्रीं विजयमेरके पश्चिम विदेहसंबंधी कुमदादेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥
सरिता देश सुजान, विजय के पश्चिम दिश गिनो। रूपाचल जिन थान, पूजो वसु विध दर्वले २७
ओंह्रीं विजय मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सरितादेश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ।८।
॥ अर्घं ॥वप्रादेश महान्, पश्चिम दिश गिर विजयके । जिन मंदिर सुख खान, पूजो गिर वैताड़पर ।

॥ २८ ॥ ओंह्रीं विजय मेर के पश्चिम विदेह संबंधी बप्रा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ९ ॥ अर्घं ॥ पश्चिम विजय विशाल, नाम सु बप्रादेश है। तहां जिन भवन रिशाल, बिजयारध परपूजिये ॥ २९ ॥ ओंह्रीं बिजय मेर के पश्चिम बिदेह संबंधी सुबप्रादेश संस्थित रूपाचल पर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घं ॥ विजय सुपाश्चिम देश, महाबप्रामन मोहनो। श्रीजिन मंदिर वेश गिर वैताड़विषे जजो ॥ ३० ॥ ओंह्रीं विजय मेर के पश्चिम विदेह संबंधी महाबप्रा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घं ॥ बप्रकावती देश, सोहै पश्चिम बिजयके। गिर वैताड विशेश, तापर जिन गृह नित जजो ॥ ३१ ॥ ओंह्रीं बिजय मेर के पश्चिम विदेह संबंधी बप्रकावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घं ॥ गंधा देश रिशाल, पश्चिम दिश गिर विजयके। श्री जिन भवन विशाल, अर्घ जजो वैताड़ पर ॥ ३२ ॥ ओंह्रीं विजय मेर के पश्चिम विदेह संबंधी गंधादेश संस्थित रूपाचल पर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घं ॥ पश्चिम विजय बखान, देश सुगंधा नामहै। विजया रधगिरजान, तापर जिनग्रहपूजिये ॥ ३३ ॥ ओंह्रीं विजय मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सुगंधा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घं ॥ विजयपाश्चिम दिश सोय, देश गंधलाहै भलो। तहां जिन मंदिर जोय, जजो सदा विजयार्ध मैं ॥ ३४ ॥ ओंह्रीं विजय मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी गंधला देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ॥ १५ ॥ अर्घं ॥ गंधमालनी देश, बसै बिजयपाश्चिम दिशा। श्रीजिनभवन विशेश रूपाचल पर पूजिये ॥ ३५ ॥ ओंह्रीं विजय मेर के पश्चिम विदेह संबंधी गंधमालनी देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घं ॥

अथ जय माल दोहा।

विजय मेर पश्चिम दिशा,रूपाचल सुविशाल। तिनपर जिनगृह पूजकै,अब वरनूं जयमाल॥३६॥

॥ पद्धडी छंद ॥

जै विजय मेर शोभै महान। ताकी पश्चिम सु विदेहजान॥ तहां पोड़स देश बसैं सुथान। रूपा गिर पोड़स हे सुजान॥ ३७॥ तिनपर जिनमंदिर हैं विशाल। पोड़स मन मोहत द्युति रिशाल॥ जै रत्न मई रचनाअपार। बनरहो सु अद्भुत हियेधार॥ जैजगमग जगमग जोति सार। जै तीन पीठ सोहै सिंगार॥ जै सिंहासन पर कमल देख। सुर खग मन हर्ष वढो विसेख॥३६॥ तहां राजै श्री जिनराज देव। सत इंद्र चरण की करत सेव॥ जैछत्र तीन सिरपर फिराय। भामंडल छवि बरणी न जाय॥ ४०॥ जै चौसैंठ चमर दुरैं विचित्र। सब मंगल दर्व धरैं पवित्र॥ तहां खेचर खेचरनी सु आय॥ पूजैं जिनवर अति प्रीतलाय॥ ४१॥ पुन करत आरती जुगल हाथ। जैजै धुन कर नावत सुमाथ॥ जैनृत्यकरत संगीत आय। गुणगानकरत बाजेबजाय॥ ४२॥ जिनराज सभी नैनन निहार। विद्याचल रूपअनेकधार॥ द्रुम द्रुम द्रम द्रुम बाजैं मृदंग। खेचर खेचरनी नचैंसंग॥ ४३॥ जैदुंधविनाद बजैं अकाश। जै गंधो दक बरसै सुबाश॥तहां श्रीमुनिराज धरैं सुध्यान। निजअनुभव रसको करतपान॥ ४४॥ यह विध बरननहै बहु अपार। बरनत कवि कैसे लहैपार॥ हम शक्ति हीनतुम भक्तधार। तुम गुण बरणन कीनो सवांर॥ ४५॥ तुम जग जयवंते होहु देव। हम करैं सदा तुम चरनसेव॥ हमपर किरपा कीजे दयाल। कर जोर सीस नावत सुलाल॥ ४६॥

घत्ता दोहा ॥

पश्चिम विजय सुमेरे के, षोडस क्षेत्र विशाल । श्रीजिनभवन अनादलख, लालरचाजिय माल ४७

इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद

मध्य लोक जिन भवन अकृतिम ताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा वरनन को करसकै वनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ैं अधिक सरससुखदाय । यह भव जस परभव सुख दाई सुरनर पद लहैं शिवपुर जाय ॥ ४८ ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति विजयमेर के पश्चिमविदेह संबंधी षोडस रूपाचलपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिर पूजा संपूर्णम् ॥

अथ विजयमेर के दक्षिणादिश भरतक्षेत्र संबंधी रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ १९ ॥

॥ अथस्थापना ॥ कुसुमलता छन्द ॥

विजयमेर की दक्षिणदिश मैं भरतक्षेत्र सुंदर सुविशाल । वीसचौंर तीर्थंकर निवसैं सुरनर खगपति नावत भाल ॥ रूपाचल तहां पडो मनोहर सिद्धकूट जिन भवन विशाल । तिनकी आव्हानन विध करके अपने घर पूजें तिहुं काल ॥ १ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के दक्षिण भरतक्षेत्र संबंधी रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरभ्योः ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥

अत्र मम सन्नाहितो भव भव बिपट संधी सकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चाल ॥

प्रभु पूजोरे भाई । भला प्रभु पूजोरे भाई॥तुम श्रावक कुलको पाय कै प्रभु पूजोरे भाई ॥ टेक ॥ पद्मद्रहको नीर सुलेकर कंचन झारी भरिये । श्रीजिन चरण चढ़ावत भाविजन तृपा रोग तब हरिये॥ प्रभु पूजो०॥विजय मेरकी दक्षिण दिशमैं भरत क्षेत्र अति सोहै । तहां पड़ो वैताड़ मनोहर जिन मंदिर मन मोहे ॥ प्रभु पूजो० ॥ २ ॥ ओंह्रीं विजय मेरके दक्षिण दिश भरत क्षेत्र संबधी रूपाचल पर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ जलं ॥ मलया गिर घससार सुचंदन केसर रंग सुगारो । श्री-जिन चरन चढ़ावो भविजन भव आताप निवारो ॥ प्रभु पूजो० ॥ विजय मेर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं०॥ ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत पुंज मनोहर दीजे । श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन तुरत अखै पद लीजै ॥ प्रभुपू० ॥ विजय मेर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमलकेतकी जुही चमेली श्रीगुलाव ले नीको । कामवान के नाशन कारन पूजो श्रीजिनजी को ॥ प्रभु० ॥ विजय मेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत वनावो । क्षुधा रोग के नाशन कारण श्रीजिन चरण चढ़ावो ॥ प्रभु० ॥ विजय मेर० ॥६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ मणमइ दीप अमोलिक लेकर कनक रकेबी धारो । मोह तिमर के नाशन कारण जिन चरणन पर वारो ॥ प्रभु० ॥ विजयमेर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ दस बिध धूप सुरंगी चंगी अगनी को सुपचाबो । खेवो धूप जिनेश्वर आगै वसु विध कर्म जलावो ॥ प्रभु० ॥ विजय मेर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल

लौंग सुपारी पिस्ता नैनन को सुखकारी। श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन शिवपद पावत भारी ॥ वि० प्रभु ० ॥ विजय मेर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ चढ़ाय गाय गुण नाचत दे दे तारी नरभव पाय जिनेश्वर पूजै लाल सदा बलहारी ॥ प्रभु० ॥ बिजय मेर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ कुसुमलता छंद ॥

विजय मेरके दक्षिण सोहे भरत क्षेत्र सुंदर अभिराम। ताके मध्य पड़ो रूपाचल स्वेत बरण मुनिजन विश्राम ॥ तहां श्री सिद्ध कूट जिन मंदिर श्रीजिनबिंब अकीर्तिम धाम। तिन के चरण कमल हम वसु विध अर्घ चढ़ाय जजैं निजठाम ॥ ११ ॥ ओंह्रीं बिजय मेरके दक्षिण दिश भरत क्षेत्र संबंधी संस्थित रूपाचल पर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

विजय मेर दक्षिण दिशा, भरत क्षेत्र सुविशाल। रूपाचलपर जिनभवन, पूजत सुरनर लाल ॥ १२ ॥

॥ पद्धड़ी छंद ॥

जे द्वीप धातुकी परम वेश। तहां दोय मेर भाषे जिनेश॥ पूरब दिश मेर बिजय महान् पश्चिमदिश दूजो अचल जान ॥ १३ ॥ जै दोऊ मेर महा उतंग। जोजन चौरासी सहस अंग ॥ जे पूरब बिजय सुमेर सार। ताकी दक्षिण दिश में निहार ॥ १४ ॥ जै भरत क्षेत्र सुंदर अनूप। जै छहो काल बरतै स्वरूप ॥ जे तीन काल में भोग भूम। दश कल्पबृक्ष तहां रहैं भूम ॥ १५ ॥ जहा जुगला धर्म रहैं सदीव। सुखमें बहु मगन रहैं सुजीव ॥ जे चौथो जब बरतै सुआय। तब कर्म भूम छबि रहै छाय

॥ १६ ॥ जै तीर्थंकर चौबीसजान । चक्री द्वादश भापे पुरान ॥ जै प्रति हरहर बलभद्र होय । जे त्रेसठ पुरुप पवित्र सोय ॥१७॥ जै मुनि व्रत धारैं भव्य जीव । श्रावक व्रत पालैहैं सदीव ॥ जे चार घातिया करैं नाश । जै केवल ज्ञान लहैं प्रकाश ॥ १८ ॥ यह चौथे काल तनी सुरीत । भाषी जिन आगम कही मीत ॥ जैं पंचम छट्टम दुःख रूप । दुख रूप सुकारज करैं भूप ॥ १९ ॥ ताक्षेत्र बीच वैताड़ लेख । तापरनव कूट रचे विशेष ॥ चारों दिश आठ कहैं सुजान । तिनपर विंतर देवन सुथान ॥२०॥ श्रीसिद्ध कूट तिस बीच जान । तापर जिन मंदिर शोभमान ॥ जैरत्न जटित वरनन अपार । बरणत सुरगुर पावैं न पार ॥ २१ ॥ सब समोसरण रचना रिशाल । वनरही परम सुंदर बिशाल ॥ वसुप्रात्य हार्य छ्यतरही छाय । जै मंगल द्रव्य रचे बनाय ॥२२॥ जै सिंहासनपर कमल सोय । जे जग मग जग मग जोति होय । ताऊपर श्रीजिन राज देव । सतआठ अधिक सुर करतसेव॥२३॥ शत पांच धनुप उन्नत सुकाय । पद्मासन छवि बरणी नजाय ॥ इंद्रादिक बसु विध दर्वलाय । जिन राज चरण पूजत बनाय ॥२४॥ खेचर खेचरनी सबै आय । गुण गान करत बाजे बजाय ॥ फुन नृत्य करत संगीत सार । निज जन्म सुफल मनमें विचार ॥ २५ ॥

घत्ता दोहा ॥

दर्श देख जिनराजको, सम्यक लहत सुजीव । यह पूजा वैताड़ की, बांचो भव्य सदीव॥ २६ ॥

॥ इतिजयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलताछन्द ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढै मन लाय । ताके पुन्यतनी अति महिमावरणनको

करसके वनाय। जाके पुत्र पौत्र अरु सम्पतवाढै अधिक सरस सुखदाय। यह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहै शिवपुरजाय॥ २७॥ इत्याशीर्वादः॥

इति विजय मेरके दक्षिणदिश भरतक्षेत्र सम्बन्धी रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम्॥

अथविजयमेरकेउत्तरदिशऐरावतक्षेत्रसम्बन्धीरूपाचलपर, सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजाप्रारम्भः॥ नम्बर॥ २०॥

अथस्थापना॥ मदअवलिप्त कपोलछन्द॥

बिजयमेर की उत्तरदिश मैं ऐरावत शुभ क्षेत्र महान। जहांहोत चौबिसैं तिर्थकर नितप्रतिनमें सची पति आन। तहां पड़ो बैताड़ मनोहर तापर सिद्धकूट जिनथान। तिनकी आह्वाननविध करके अपने घर पूजत सुखमान॥ १॥ ॐ ह्रीं बिजय मेरके उत्तरदिश ऐरावत क्षेत्रसंबन्धी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो। अत्रावत्रावत्र संबौषटाह्वाननं। अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं। अत्रममसन्निहितो भव भव विपट संधीसकरणं स्थापनं॥

॥ अथाष्टकं चाल॥

प्रभुपूजो रेभाई। भलाप्रभु पूजोरे भाई। यह श्रावक कुल को पायके प्रभुपूजोरेभाई॥ टेक॥ पुंडरीक द्रहको उज्जल जल कंचन झारी भरिये। श्रीजिन चरण चढावत भविजन जन्मजरा दुखहरिये॥ प्रभु०॥ विजयमेर उत्तर ऐरावत रूपाचलगिर सोहै। ताके ऊपर सिद्धकूट है जिन मन्दिर

मन मोहै ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ ओं ह्रीं विजयमेर के उत्तरदिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचल पर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ १ ॥ जलं ॥ मलियागिर घनसार सुचंदन केसर घिसकर लावो । भवआताप हरन जिनवर पद पूजत दाह मिटावो। भला जिन० ॥ विजयमेर० ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं ० ॥ चंदनं ॥ देवजीर सुखदासक मोदक सुन्दर धोय सु लीजो । स्वेतबरण मुक्तासम अक्षत पुंज मनोहर दीजो। ॥ भला० ॥ विजयमेर० ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं० ॥ अक्षतं॥ बेल चमेली कुन्द केतकी जल थल कमल मंगावो। काम बाण नाशन जिनवरपद सुन्दर फूल चढावो ॥ भला० ॥ विजयमेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं ॥ पुष्पं ॥ बावर घेवर मोदक खाजे ताज तुरत सुकरकै। क्षुधा हरण जिन चरण चढावो कञ्चनथाल सुभरकै ॥ भला० ॥ विजय० ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं० ॥ नैवेद्यं । जगमग जोत होत रतनन की मणमइदीप सुलावो । मोह तिमर के नाश करण को जिनवर चरण चढावो ॥ भला० ॥ विजयमेर० ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं० ॥ दीप ॥ कृश्नागरवर धूप मनोहर दशाबिध गन्ध मिलावो । आठकर्म जारन प्रभु सनमुख धूप खेय गुण गावो ॥ भला प्रभु० ॥विजयमेर० ॥ ८ ॥ ओं ह्रीं० ॥ धूपं ॥ दाख छुहारे श्रीफल पिस्ता किशमिश लौंग सुपारी । शिव रमणी बर पूजत भविजन पावैं शिवफल भारी । भलाप्रभु० ॥ विजयमेर० ॥ ९ ॥ ओं ह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफल अर्घ चढाय गाय गुण नाचत दे दे तारी । विघन हरन जिनराज चरन पर लाल सदा बलहारी ॥ भलाप्रभु० ॥ विजयमेर० ॥ १० ॥ ओं ह्रीं ॥ अर्घं ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ कुसुमलता छन्द ॥

विजयमेर उत्तर ऐरावत रूपाचल सोहै अभिराम। ताके सिखर कूट भव उन्नत रत्नमई बिंतर बिश्राम

सिद्धकूट तिसबीच मनोहर तहां जु श्रीजिनवरको धाम। तिन के चरण कमल बसुबिध हम अघ चढ़ाय जजत निजठाम॥ ११॥ ओंह्रीं बिजयमेर के उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्ध कूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १॥ अर्घ॥

अथ जयमाल॥ दोहा॥

बिजयमेर उत्तरादिशा, ऐरावत सुबिशाल। रूपाचलपर जिनभवन, सुनातिनकी जयमाल॥ १२॥

॥ पद्धड़ी॥

जैद्वीप धातु की अति उदार। जाकी पूरब गिर बिजयसार॥ तिस गिरकी उत्तरदिश महान। तहा ऐरावत बरक्षेत्र मान॥ १३॥ जहां छहोकाल की फिरन होय। निज पुन्य पाप फल लहैंसोय॥ जै तीनकाल में भोगभूम। दश कल्पवृक्ष तहां रहे भूम॥ १४॥ जै जुगलाधर्म चलैं सुरीत। सुखमें सबजीव करैं व्यतीत॥ जबचौथा काल लगैं सुआय। तब कर्म भूम बरतै सुभाय॥ १५॥ जहां तीर्थंकर चौवीस होंय। लख दरश सचीपति मोहिहोंय॥ चक्री बलहरप्रतिहर महान। यह त्रेसठपुरुष पवित्र जान॥ १६॥ केईमुनि ब्रत धारैं निकट भव्य। केई गहैं अणूव्रत लहैं द्रव्य॥ केईकेवल ज्ञान करै प्रकाश। पावैं शिवपुर अविचल अवाश॥ १७॥ यह चौथेकाल कहीसुरीत। पंचमषष्ठम दुखरूपमीत॥ तिस क्षेत्र बीच बैताड़ एक। गिरसिखर कूट नव हैं प्रत्येक॥ १८॥ वसुकूट आठ दिश कहै भेव तहां केल करैं बिंतर सुदेव॥ नवमो श्रीसिद्धसुकूटनाम। तहां स्वयं सिद्ध जिनवर सुधाम॥ १९॥ जैरत्नमई प्रतिमा पवित्र। सतआंठ अधिक छवि अतिबिचित्र॥ सब समोसरण रचना अनूप। सुर

नर मिल निरखैं जिन स्वरूप ॥२०॥ जै प्रातिहार्य मंगल सुदर्व। जै वर्णन कबलो करैं सर्व ॥ जै सिंहासनपरकमल सार। जै जगमग जोतलसै अपार ॥ २१ ॥ जैतापर श्रीजिनराजदेव। सत इंद्रचरन की करत सेव ॥ पद्मासन छबि बरणीनजाय। तनउचित पांचसे धनुष काय ॥ २२ ॥ खेचरखेचरनीसबै आय। जिनराज चरन पूजत सुभाय ॥ जैनृत्यकरत संगीतसार। विद्या बल रूप अनेक धार ॥२३॥ बहुविध कौतूहलकरतजाय। नर जन्म सुफल अपनो कराय ॥ जैजैजैजै जिनराजदेव। भाविलाल चरनकी करत सेव ॥ २४ ॥

घत्तादोहा।

पूजा श्री सर्वज्ञ की,जोबांचै मनलाय। नरसुरपति सुख भोगकै,निहचै शिवपुरजांय ॥ २५॥इति०

अथाशीर्वादः। कुसुमलताछंद।

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तमताको पाठ पढैं मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढैं अधिक सरस सुखदाय। यहभव जस परभव सुखदाई सुरनरपद लहै शिवपुरजाय ॥ २६ ॥ इतिआशीर्वादः ॥

इति विजयमेर के उत्तर ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ विजयमेर के उत्तर दक्षिण षट कुलाचलपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेपूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ २१ ॥

अथस्थापना अडिल छन्द।

विजयमेर के दक्षिण तीनै सुजानिये ॥ अरु उत्तर दिश तीन कुलाचल मानिये। तिनपरश्रीजिन

भवन बिराजत सारजू । आव्हानन बिध करो हरष उर धारजू ॥ १ ॥ ओं ह्रीं बिजयमेरके दक्षिण उत्तर षट कुलाचल पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटा व्हाननं ॥ अत्रतिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्रमम सन्नहितो भवभवबिषट संधीसकर्णं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं चालजोगीरासा ॥

उज्जलजल प्राशुक ले नीको कंचनझारी भरिये । पूजत श्रीजिन राज प्रभूको जनमजरा दुख हरिये ॥ विजयमेरके दक्षिण उत्तर षटकुल गिरपर सोहै । तहां जिनभवन अकीर्तम सुंदर सुरनर के मनमोहे ॥ २ ॥ ओंह्रीं बिजयमेर के दक्षिण दिश निषध ॥ १ ॥ महा हिमवन ॥ २ ॥ हिमवन ३ उत्तरदिश नील ॥ ४ ॥ रुक्म ॥ ५ ॥ सिखरन पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ६ ॥ जलं ॥ मलयागिर करपूर सुचंदन केसररंग सुनीको । भव आताप निवारनकारन पूजत जिनवरजी को बिजयमेर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ देवजीर सुखदास सुअक्षत उज्जलधोय सुलीजे । मनवच काय लाय जिनचरनन पुंज मनोहरदीजे ॥ बिजयमेर० ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ नाना बिधके फूल सुवासित सुरतरु के लेआवो । पूजो श्रीजिनराज प्रभूको हरष हरष गुणगावो ॥ बिज-यमेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं ॥ पुष्पं ॥ बहुबिधके पकवान मनोहर ले जिनपूजा करिये । क्षुधारोग के ना-शकरन को प्रभुसन्मुख ले धरिये ॥ बिजय० ॥६॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जगमग होतादिवालो दीपअमोलकलावो । मोह तिमरनाशक जिनवरपद आरति कर हरषावो ॥ बिजयमेर० ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं०॥ दीपं ॥ दसविध धूप सुगंधित लेकर पूजन भविजन भाई । ये कर्मादिक दहन हुताशन जिन

चरनन लौलाई ॥ विजयमेर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ लौंग लायची पिस्ता किसमिस अरु बादाम मंगावो । पूजत भविजन श्रीजिनवर पद मुक्त श्रीफलपावो ॥ बिजयमेर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफलअर्घ बनाय गाय गुण श्रीजिनचरन चढावो । भावभक्तिसों पूजो भविजन बसु विध कर्म नशावो ॥ विजय० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ मदअवलिप्त कपोलछंद ॥

विजयमेरके दक्षिणसोहै तस हेमद्युति निषध सुनाम । द्रहतिगंछ कमल पंकतिजुत जलज बीच धृत देवी धाम ॥ गिरके सिखर कूट नंव वरने तिस बिच सिद्धकूट अभिराम । तहां जिनभवन निहार धार उर अर्घ चढाय करत परणाम॥११॥ओंह्रीं बिजयमेर के दक्षिणदिश निषध पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ अर्घ ॥ विजयमेर दक्षिण दिशसोहै बिसद महा हिमवन गिरनाम । द्रहमहा पद्मकमल की पंकत नीरज विच ह्रिंदेवी धाम ॥ गिरके सिखरकूट बसुउन्नत तिह बिच सिद्धकूटअभिराम । तहां जिन०॥ओंह्रीं विजयमेरके दक्षिणदिश महाहिमवन परबतपरसिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ विजयमेर दक्षिणदिश सोहै सुवरणद्युति हिमवन गिरनाम । पद्म द्रह द्रहबीच कमल है कमल बीच श्रीदेवी धाम ॥ तागिरसिखरकूट ऐकादश सिद्धकूट सोहैतिहठाम । तहां जिन० ॥ १३ ॥ ओंह्रीं विजयमेरके दक्षिणदिश हिमवन पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ विजयमेर की उत्तरदिश में वैडूरज द्युतिनीलसुनाम । द्रहकससे जलज पंकतिजुत तहां कीर्ति देवी का धाम ॥ गिरके सिखर कूट नवं सोहैं तिह बिच सिद्धकूट अभिराम । तहां जिन० ॥ १४ ॥

ओं ह्रीं विजयमेर के उत्तरदिश नील पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥
॥ अर्घ ॥ विजयमेर उत्तरदिशसोहै रजित रुक्मगिर पर्वतनाम । द्रह महापुंडरीक पंकज जुत तापर बुधदेवी को धाम ॥ तहां गिर सिखर कूट वसु उन्नत ताबिच सिद्धकूट अभिराम। तहांजिन०।१५। ओंह्रीं विजयमेर के उत्तरादिश रुक्म पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ बिजयमेरकी उत्तरदिश में कनक वरण सिखरनीगिरनाम । पुंडरीक द्रहद्रहाबिच नीरज तहां लक्ष्मी देवी को धाम॥ तिहगिर सिखर कूट एकादश तिह बिच सिद्धकूट अभिराम । तहांजिन० ॥ १६ ॥ ओंह्रीं विजय मेरके उत्तरादिश सिखरन पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ बिजयमेरके भद्रशाल वन सीता तट दोनो दिश जान । पांचं पांचं हैं कुंड मनोहर तिह तट दसं दसं गिरपरमान ॥ तिसकंचन गिरपर जिनप्रतिमा एकएक सोहै जिनथान । सब मिल एकशतक नितप्रति हम जजत अर्घ उरमें धरध्यान ॥ १७ ॥ ओंह्रीं बिजयमेरके भद्र शाल वनसंबंधी सीतानदी के दोनों तट पांच२कुंड तिन कुंडनतट दसं दसं कंचन गिरपर एक एक जिनप्रतिमा अकीर्तम गंध कुटी साहित विराजमान तिन एकसौ प्रतिमाजी को ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ बिजयमेर के भद्रशाल बन सीतोदा दोनों तट जान । पांचं पांचं हैं कुंड मनोहर तिह तट दसं दसं गिरपरमान ॥ तिंह कंचन गिरपर जिन प्रतिमा एक एक सोहै जिनथान । सब मिल एकशतक नित प्रति हम जजत अर्घ उरमैं धर ध्यान ॥ १८ ॥ ओंह्रीं बिजयमेर के भद्रशाल बन संबंधी सीतोदा नदी के दोनो तट पांचं पांचं कुंड तिस कुंडन तट दसं दसं कंचन गिर तिस कंचन गिरपर एक एक जिन प्रतिमा अकीर्तम गंधकुटी साहित

विराजमान तिन सो प्रतिमाजी को ॥ ८ ॥ अर्घ ॥ विजयमेर पूरव कालोदध पश्चिम लवणो दध मरजाद। दक्षिण उत्तर इष्वाकार वीच क्षेत्र बहु कहे अवाद ॥ सिद्धभूम तह कही अनंती अर जिन मंदिर साद अनाद ॥ मन वच तन हम सीसनायकर अर्घ जजत तजकै परमाद ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं विजयमेरके दिशा विदिशा मध्ये लवण समुद्रआदि कालोदध परयंत जहां जहां कीर्तम अकीर्तम जिनमंदिर होंय अथवा सिद्ध भूमहोयँ तहां तहां ॥ ६ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

विजयमेर कुल गिर कहे, श्रीजिनभवन विशाल। तिन प्रति सीस निवाय कै, अब बरणूं जयमाल २०॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै दीप धातु की है उदार । ताकी पूरव दिश कही सार ॥ जै विजयमेर सोहै उतंग । जोजन चोरासी सहस अंग ॥ २१ ॥ जे ताकी दक्षिण दिश पवित्र । तहां कुलगिर तीन कहे विचित्र ॥ है पहिलो नाम निषधजान । दूजा महाहिमवन है प्रधान ॥ २२ ॥ जै तीजो हिमवन गिर विशाल । तिन पर जिनमंदिर है विशाल ॥ अब उत्तरदिश वरनूं सुतीन । गिरनील नाम पहिलो प्रवीन ॥ २३ ॥ दूजो गिर रुक्म सुजगमगाय । तीजो गिर सिखरन अति सुहाय ॥ येही षट कुल गिर हैं प्रसिद्ध । बहु रचित नाचित ज्ञुति स्वय सिद्ध ॥ २४ ॥ तिनपर द्रह सुंदर सजल थान । तिस वीच कमल पंकत महान ॥ तिनपर कुल देवी के अवास । बहु रत्न जड़ित सुंदर सुवास ॥ २५ ॥ गिर सिद्धकूट पंकति अपार । श्री सिद्धकूट तिनमें सिंगार ॥ तहां श्रीजिन मंदिर शोभमान । सतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ २६ ॥ जहां गंगन दग धरे बनाय । वसु प्रातय हार्य छवि रही छाय ॥ सव समव सरण विध कही

सोय। देखत भवि सम्यक दरश होय ॥ २७॥ जे सुर खग मिल पूजैं सदीव। जिन भक्ति हिये धारैं सुजीव ॥ नाचैं गावैं देदे सुताल। झुक झुक जिन मुखदेखैं संभाल ॥ २८ ॥ जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजैं मृदंग। इंद्रानी इंद्र नचैं सुसंग ॥ जै थेई थेई थेई धुन रही पूर। बनरहो सुझुरमट जिन हजूर ॥ २९ ॥ जिनराज सभी नैनन निहार। चित हर्ष बढ़ो सुरपति अपार ॥ जै जै जै जिनवर परमदेव। तुम चरणन की हम करत सेव ॥ ३० ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

पटं कुलगिर पूजा परम, बनी सु बहुत बिशाल। बांचत सुख उपजै घनो, वल वल जात सुलाल ॥ ३१ ॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छन्द ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय। जाके पुन्यतनी अतिमहिमा वरणन को करसकै बनाय ॥ जाके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ैं अधिक सरस सुखदाय। यह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ ३२ ॥ इत्याशीर्वादः-

इति विजयमेर के दक्षिण उत्तरदिश पटं कुलाचल पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम्.

इति धातुकी द्वीपमध्ये पूर्वदिश विजयमेर (दूजोमेर) संबंधी अठत्तर जिनमंदिर सास्वते विराजमान तिनकी पूजा पाठ संपूर्णम्

अथ धातुकी द्वीपमध्ये पश्चिमदिशअचलमेर (तीजोमेर) संबंधी षोडस जिनमंदिर पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर २२ ॥

अथस्थापना ॥ मद अवलिप्त कपोल छंद ।

दीप धातुकी पश्चिम दिश में अचल मेर बंदूं धरध्यान । भद्रशाल नंदन सोमनसवन अर पांडुक वन चारैं प्रधान ॥ चारों दिशा चारजिनमंदिर चारों बन षोडस जिनथान॥ तिनकी आव्हानन विध करकै अपने घर पूजत सुखमान ॥१॥ ॐह्रीं धातकी द्वीप के पश्चिम दिश अचल मेर पर चारों दिशा चारैं बन संबंधीषोड़स जिन मंदिरभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं॥ अत्र मम सन्नाहितो भव भव विषट संधी सकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं । त्रिभंगीछंद ।

क्षीरोदध नीरं अमल अभीरं मन वच धीरं भर लावो । कंचन भर झारी धार निकारी तृषा निवारी सुखपावो ॥ गिर अचल जो सोहै सुरनर मोहै अति छवि जोहै जिन भवन । कर पूजा सारी अष्ट प्रकारी शिव सुखकारी जिन चरनं ॥ २ ॥ ॐह्रीं धातुकी द्वीप के पश्चिम दिशा अचल मेर के भद्रशाल वन संबंधी पूर्व दिशा ॥ १ ॥ दक्षिण ॥ २ ॥ पश्चिम ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ ४ ॥ नंदन वनसंबंधी पूर्व ॥ ५ ॥ दक्षिण ॥ ६ ॥ पश्चिम ॥ ७ ॥ उत्तर ॥ ८ ॥ सौमनसबन संबंधी पूर्व ॥ ९ ॥ दक्षिण ॥ १० ॥ पश्चिम ॥ ११ ॥ उत्तर ॥ १२ ॥ पांडुक वन संबंधी पूर्व ॥ १३ ॥ दक्षिण ॥ १४ ॥ पश्चिम

॥ १५ ॥ उत्तर दिश सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥ मलया गिर बावन चंदन पावन निर्मल भावन घसलीवे। जिन चरण चढ़ावो दाह नशावो शिवपद पावो भवजीवे ॥ गिर अचल० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ अक्षत ले ताजे अति छवि छाजे कोमल साजे धोय धरो। अक्षय पद पावो मन हरषावो बलबल जावो दोष हरो। गिर अचल० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षत ॥ बहु फूल सुवाशी अमल विकाशी आनद राशी लायधरो। सुरतरु के लावो चरण चढ़ावो जिन गुण गावो काम हरो ॥ गिर अचल० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ पकवान सुनीको तुरत सुघीको सब विध ठीको मिष्ट महा। भर कंचन थारी नेवज सारी क्षुधा निवारी हर्ष लहा ॥ गिर अचल० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० नैवेद्यं ॥ दीपक की जोतं तम क्षय होतं जोत उद्योतं रत्नमई। मोहादिक नाशैं स्वपर प्रकाशैं हम घट भाशैं ज्ञान मई ॥ गिर अचल० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ बरधूप दशांगी परमल चांगी अगन सुरांगी धरखेवो। वसुकर्म जलावो मन हर्षावो पुन्य वढ़ावो जिन सेवो ॥ गिर अचल० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं० फल मधुर सुचोखे सुरतरु पोखे अमल अदोखे रितु रितु के। जिन चरण चढ़ावो मंगल गावो शिव फल पावो निज हित के ॥ गिर अचल० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल बसु लावो अर्घ बनावो पुज रचावो हितकारी। भविजन सब लावो कर चित चावो आन चढ़ावो भरथारी ॥ गिरअचल० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घं ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

अचल मेर पूरब दिशा, भद्रशाल वन जान। तहां जिन मंदिर सोहने, पूजो उर धर ध्यान ॥ ११ ॥

ओंह्रीं अचल मेर के भद्रशाल वन संबंधी पूर्व दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घं ॥ अचल मेर दक्षिण दिशा, भद्रशाल वन सोय। श्री जिन मंदिर पूजिये, मन वच तन मद खोय ॥ १२ ॥ ओंह्रीं अचल मेर के भद्रशाल वन संबंधी दक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः । २॥ अर्घं॥ अचल मेरते जानिये, पश्चिम दिश सुखकार। भद्रशाल वन जिन भवन, पूजत हरप अपार ॥ १३ ॥ ओंह्रीं अचल मेरके पश्चिम दिश भद्रशाल वन संबंधी सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥३॥ अर्घं॥ अचल मेरउत्तर दिशा, भद्रशाल वन सार। श्री जिन भवन सुपूजिये, जिनवर बिंब निहार॥ १४ ॥ ओंह्रीं अचल मेर के उत्तर दिश भद्रशाल वन संबंधी सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घं ॥

सोरठा।

अचल मेरते जान, पूरब नंदन वन विषै। जिन मंदिर धर ध्यान, पूजो अर्घ चढ़ाय के ॥१५॥ ओंह्रीं अचल मेरके नंदन वन संबंधी पूर्व दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घं ॥ अचलमेरहै नाम, दक्षिण दिशा सुजानिये। नंदनवन जिनधाम, मैंपूजूं मनलायकै॥१६॥ ओंह्रीं अचल मेर के नंदन वन संबंधी दक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घं ॥ अचल सुपश्चिम वोर, नंदन अति सोहनो। जिन मंदिर करजोर, पूजो वसु विध दर्वसों ॥१७॥ ओंह्रीं अचल मेरके नंदन वन संबंधी पश्चिम दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ७ ॥ अर्घं ॥ अचल मेर सुखकार, उत्तर नंदन वन कहो। जिन मंदिर सुनिहार, अर्थ जजो वसुदर्व ले ॥ १८ ॥ ओंह्रीं अचल मेरके उत्तर दिश नंदन वन संबंधी सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घं ॥

॥ चौपाई ।

अचल मेर सुंदर सुरिशाल। ताकी पूरब दिश सुविशाल॥ बन सौमनस सु अतिघनघोर। जिनमंदिर पूजो करजोर। १९ ॥ ॐह्रीं अचल मेरके पूरबदिश सौमनसवन संबंधी सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ९ ॥ अर्घ ॥ अचलमेर की दक्षिण दिशा। बनसौमनस सघन बहुलसा॥ तहां जिन मंदिर परम रिशाल। अर्घ चढ़ाय नमत तिहुंकाल॥ २० ॥ ॐह्रीं अचलमेर के दक्षिण दिश सौमनसवन संबंधी सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ॥ अचलमेर पश्चिम दिश जान। बनसौमनस बसै सुखखान॥ श्रीजिन मंदिर बने अनाद। अर्घ जजूं तजके परमाद॥ २१ ॥ ॐह्रीं अचलमेरके पश्चिमदिश सौमनसवन संबंधी सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ॥ अचलमेर उत्तरदिश जहां। वन सौमनस विराजै तहां॥ श्रीजिन मंदिर सुंदर जोय। अर्घ चढ़ाय नमूंमद खोय॥ २२ ॥ ॐह्रीं अचलमेरके उत्तरदिश सौमनसवन संबंधी सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १२ ॥ अर्घ ॥

॥ अडिल ॥

अचलमेरकी पूरब दिशा सुजानिये। तहां पांडुकबन सारसरस उर आनिये॥ तहां जिन भवन विशाल अमर खग नितरमैं। बसुविध अर्घ चढ़ाय गाय गुण हमनमैं॥२३॥ ॐह्रीं अचलमेर के पांडुकबन संबंधी पूर्वदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १३ ॥ अर्घ॥ अचलमेर सुंदर दक्षिण दिश मन हरैं। पांडुकबनजिनभवन अमर जै जै करैं॥ बसुबिध दर्बमिलाय अर्घ ले पूजिये। नर सुरकेसुख भोग सु निरभय हूजिये॥ २४॥ ॐह्रीं अचल मेरक पांडुक बन संबंधी दक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मं-

दिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घं ॥ अचलमेर की पश्चिम दिश शुभ लेखिये । पांडुकबन मन हरण सरस तहां देखिये ॥ सिद्धकूट जिन भवन परम सुविशालजू । जल फल अर्घ चढ़ाय नमत भावे लालजू ॥२५॥ ओंह्रीं अचलमेर के पांडुकवन सबंधी पश्चिमादिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १५॥ अर्घ ॥ अचलमेर उत्तर दिश अतिरमणीक है । तहां पांडुकबन सरस बिराजत ठीक है । जिनमंदिर धर ध्यान अमर खग नमत हैं । हाथ जोड़ नय माथ अरघ हम जजत हैं ॥ २६ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के उत्तर दिश पांडुकबन संबंधी सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घं ॥

॥ अथ जयमाल दोहा ॥

दीपधातुकी खंड में, पश्चिम दिश सुविशाल। अचलमेर तहां सोहनो, सुनो भविक जयमाल २७

॥ पद्धड़ी ॥

जै केवल ज्ञान बिराजमान । तिन मुखते जिन ध्वन खिरिजान ॥ सो गणधरदेव दई बताय । भविजीव सुनत आनंद पाय ॥ २८ ॥ जै दीप धातु की है महान । ताकी पश्चिम दिश मैं बखान । है अचलमेर महिमा अपार । जै कंचन वर्ण हिये सुधार ॥ २९ ॥ जै सहस असी अरु चारजान । जोजन ऊंचे भाषे पुरान ॥ जै चारों कटनी हैं विशाल । तहां चारों बन शोभैं विशाल ॥ ३० ॥ जै भद्रशाल पहिलो अनूप । मनमोहन नंदनबन स्वरूप ॥ सौमनस सुबनतीजो बताय । चौथो पांडुक छबि रही छाय ॥ ३१ ॥ जै चारोंबन दैदीप्यमान । फल फूल पत्र सुंदर सुजान ॥ जै पांडुकबन मैं सब सुरेश । जन्हवन करत अद्भुत जिनेश ॥ ३२ जै गावत जिनगुण हरष धार । सो बरणन करत

लगै अवार ॥ जे चारों दिशा मैं चार चार । षोडस जिम भवन बने निहार ॥ ३३ ॥ तहां श्रीजिन बिंब विराजमान । सतआठ अधिक सुखके निधान ॥ पद्मासन छवि बरणी न जाय । तन उचित पांच सै धनुष काय ॥ ३४ ॥ सुर विद्याधर पूजैं त्रकाल । गुण गान करैं अद्भुत विशाल ॥ जे जे जे शब्द करैं सुजान । खेचर खेचरनी नचैं आन ॥ ३५ ॥ जिन राजदरश नैनन निहार । यह अरज करत प्रभु तार तार ॥ तुम चरण कमल को सीस नाय । भवि लाल सदाबल बल सुजाय ॥ ३६ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

अचलमेर पर जिनभवन, षोडस बने विशाल । सुर खेचर पूजत चरन, लाल नवावत भाल ॥ ॥ ३७ ॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसकैं बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अर संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहैं शिवपुरजाय ॥ ३८ ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति अचलमेर संबंधी षोडस जिनमंदिर पूजा संपूर्णम् ॥

अथ अचलमेर के चार बिदिशा मध्ये चार गजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ २३ ॥

॥ अथस्थापना ॥ जोगीरासा ॥

अचलमेर गजदंत सुचारों विदिशा मांहिं बताए । तिनपर श्रीजिन भवन अनूपम बने सरसमन

भाए ॥ रत्नमई सुंदर छवि सोहत परम महा सुखदाई । पूजाकरत जहां सुरखग मिल हम पूजत यहां भाई ॥ १ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के चारों विदिशा मध्ये चौर गजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाऽह्वाननं ॥ अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र ममसन्निहितो भव भव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ चाल सुंदरी छन्द ॥

द्रह सुपद्म तनो जल लाइये ॥ जिन सु चरणन पूजन जाइये ॥ अचलमेर तने गजदंत जू । जहां जिनेश्वर पूजत संतजू ॥ ओंह्रीं अचलमेर के अग्नि दिश सौमनस ॥ १ ॥ नैरित्र दिश विद्युत्प्रभ ॥ २ ॥ बाईब दिश मालवान ॥ ३ ॥ ईशानदिश गंधमादन नाम गजदंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ जलं ॥ अगर चंदन केसर गारये । जिन चढाय सुजन्म सुधारये ॥ अचलमेर० ॥ ॥ २ ॥ ओंह्रीं ॥ चंदनं ॥ परम उज्जल अक्षत लीजिये । जिन सु आगै पुंज सुदीजिये ॥ अचलमेर० ॥ ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ फूल सरस सुगंधित ले घने । जिनसु पूजत काम विथाहने ॥ अचलमेर० ॥ ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ सरस विंजन मोदक लाइये । जिनसु पूजत मन हरपाइये ॥ अचलमेर० ॥ ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ दीप जगमग जोति सुहावनी । जिनसु पूजत तन मन भावनी ॥ अचलमेर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ अगर धूप सुगंध मंगाय कै । जिनसु आगै खेवत जायकै ॥ अचलमेर० ॥ ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ फल मनोहर सुंदर सारजू । जिन सुपूजत पुन्य अपारजू ॥ अचल मेर० ॥ ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फलादिक सुंदर धोयकै । अर्घ देत सुलाल संजोयकै ॥ अचल मेर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ सोरठा।

अचल दिशा अगनेह, नागदंत सौमनस है। तापर श्रीजिन गेह, पूजो वसु विध दर्वसों॥११॥ ओंह्रीं अचल मेरके अग्नि दिश सौमनसनाम गज दंत पर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्योः॥ १॥ अर्घ॥ अचल दिशा नैरित्र विद्युत प्रभ गज दंतहै। श्री जिन भवन विचित्र, अर्घ जजोबसु दर्व ले॥ १२॥ ओंह्रीं अचल मेरके नैरित्र दिश विद्युत प्रभनाम गज दंत पर सिद्धकूटजिन मंदिरेभ्यो॥ २॥ अर्घ॥ अचल पवन दिश सार, मालबान गज दंतहै। श्री जिन भवन निहार, मनबच तन पूजो सदा॥ १३॥ ओंह्रीं अचल मेरके बाइब दिश मालवान नाम गज दंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥॥ ३॥ अर्घ॥ गंध मादन गज दंत, अचल दिशा ईशानमें। जिन मंदिर शोभंत, आठ द्रव्य पूजा करो॥ १४॥ ओंह्रीं अचल मेरके ईशान दिश गंध मादन नाम गजदंत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ ४॥ अर्घ॥

अथ जयमाल॥ दोहा॥

अचल मेरतैं जानिये, विदिशा मांहि विशाल। गज दंतनपर जिन भवन, तिनकी सुन जयमाल १५

पद्धड़ी छंद॥

जै अचल मेर सोहै उदार। ताकी चारों विदिशा निहार॥ तहां नाग दंत सुंदर सुहाय। गिर नील निषध सो लगे जाय॥ १६॥ तिन के ऊपर जिन भवन सार॥ सब समोसरण रचना अपार॥ वेदी तसु मध्य विराज मान। कटनी तीनों सोहैं महान॥ १७॥ ताऊपर सिंहासन रिशाल। तिस वीच कमल अद्भुत विशाल॥ तहां श्री जिन विंब विराज मान। सैंतआठ अधिक भाषे पुरान॥ १८॥

जै सुर जिन गुण गावैं अपार। विद्याधर पूजैं हरषधार ॥ हम पूजत या तन मन लगाय। महिमा तिनकी बरणी न जाय ॥ १९ ॥ जै जै जिन देव सुगुण अनंत। तुम मांहि लपे जाको नअंत ॥ जै प्रातिहार्य सोहैं सुसार। तिनकर शोभित महिमा अपार ॥२०॥ जहां मंगल द्रव्य धरे पवित्र। सबरत्न मई सोहैं विचित्र ॥ सुरनर मिलकर तुम करैं सेव। जै जै जै जै देवन के देव ॥ २१ ॥ हैंअरु कुदेव जो जगत मांहि। तिनको नैनन देखैं सुनाहिं ॥ यहवान पड़ी तुम दरश पाय। जै लाल सदा बल बल सु जाय ॥ २२ ॥

घत्ता दोहा ॥

यह गज दंतन की बनी, पूजा सरस विशाल। जो बांचैं मनलाय कै, तिन के भाग विशाल ॥२३॥

इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरणन को कर सकै बनाय ॥ जाके पुत्र पौत्र अरु संपति बाढै अधिक सरससुखदाय। यह भव जसपरभव सुखदाई सुरनरपद लहै शिवपुर जाय ॥ २४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति अचल मेरुके चारौं विदिशा मध्ये चारौं गज दंत पर सिद्धकूट जिन मंदिर पूजा संपूर्णम् ॥

अथ अचल मेरके ईशान दिश जंबू वृक्ष अर नैरित्र दिश शालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिन मंदिर पूजाप्रारम्भः नम्बर ॥ २४ ॥

॥ अथस्थापना--अड़िल ॥

अचलमेर के उत्तर कौन ईशान जू। अर दक्षिण नैरित्रकौन धर ध्यान जू ॥ जंबू सालमली दोउ वृक्ष सुहावने। आव्हानन विधकौरे भवन जिनवर तने ॥ १ ॥ ॐह्रीं अचलमेर के उत्तर ईशान कौन जंबू वृक्ष अर दक्षिण नैरित्र कौन सालमली वृक्ष पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो। अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं॥ अत्र मम सन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥स्थापनं॥

॥ अथाष्टकं ॥ जोगीरासा ॥

सरसमनोहर उज्जल जल ले क्षीरोदध समलावो। जन्म जरा दुखनाशन कारन श्रीजिन चरनचढ़ावो॥ जंबू शालमली साखापर श्रीजिन मंदिर माहे। हम पूजत धर ध्यान जिनेश्वर सुरनर के मन मोहें ॥ २ ॥ ॐह्रीं अचलमेर के उत्तर ईशानकौन जंबूबृक्ष ॥ १ ॥ दक्षिण नैरित्र कौन सालमली बृक्षपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ जलं ॥ चंदन अर करकूर मिलेकर केसर जलसों गारो। श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन भव आताप निवारो ॥ जंबू शालमली० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत निर्मल धोयसुलीजो। श्रीजिनवर के सन्मुख होकर पुंज मनोहर दीजो ॥ जंबूशाल० ॥ ४ ॥ ॐह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी बेल चमेली फूल मनोहर लावो। श्रीजिन चरण चढ़ावो भविजन परम महासुख पावो ॥ जंबू शालमली० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ घेवर बावर मोदक खाजे ताजे तुरत बनावो। क्षुधा रोग के नाशन कारण श्रीजिन चरण चढ़ावो ॥ ॥ जंबूशाल० ॥ ६ ॐह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ मणमइ दीप अमोलिक लेकर जगमग जोति जगावो।

मोह अंध के नाशन कारण पूजन जिनवर आवो ॥ जंबूशाल० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ दश विधधूप सुगंधित लेकर श्रीजिन सन्मुख खेवो । अष्ट कर्म के नाशन कारण जिन चरणन को सेवो ॥ जंबूशालमली० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ दाख छुहारे पिस्ता किशमिश लौंगलायची लाई । पूजत श्रीजिन चरन मनोहर परमातम पद पाई ॥ जबूशाल० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं । जल फल अर्घ बनाय गाय गुण श्रीजिन चरण चढ़ावो । परमानन्द अखंड अनूपम ऐसी पदवी पावो ॥ ॥ जंबूशाल० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथमल्येकार्घ दोहा ॥

जंबूतरुसुंदरबनो, दिशासुपूरबजान । साखाऊपर जिनभवन, अर्घजजोधरध्यान ॥ ११ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के उत्तरदिश ईशानकौन संबंधी जंबू बृक्षकी पूर्वसाखापर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ शालमली द्रुमनिरखकै, पूरबसाखा सार । तापर जिनवर भवनलख, अर्घजजोभर थार ॥१२॥ ओंह्रीं अचलमेर के दक्षिणदिशनैरित्यकौन संबंधी सालमलीबृक्ष की पूर्वसाखापर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्योः ॥ २ ॥ अर्घ ॥

अथजयमाल ॥ दोहा ॥

जंबूसालमली जुगम, वृक्षसुपरम विशाल । तिनपर जिनमंदिरजजो, अववरणूजयमाल ॥१३॥

॥ पद्धड़ी ॥

जैअचलमेर तीजोमहान । ताकेउत्तर कौन इशान ॥ दूजो दक्षिणनैरित्यवोर । तहां वेदी इक

इक बनीजोर ॥ १४ ॥ बेदीकी कटनी तीनसार । कंचन मइत्ररणलखोनिहार ॥ तिसऊपरसोहै भूपवृक्ष ॥ जंबूअरसालमली प्रत्यक्ष ॥१५॥ दोऊतरु पृथ्वीकायसार। चारोंदिश साखाकहीचार॥ दक्षिण पश्चिम उत्तर किडार । बिंतरबाशीसुररहैलार ॥ १६॥ पूरव की साखापर पवित्र । श्रीसिद्धकूट मंदिर विचित्र ॥ सबसमोसरणरचना समान । बसुमंगल द्रव्य धरेसुजान ॥ १७ ॥ जैसिंहासनपर कमल ठान । तहांश्रीजिनबिंब विराजमान ॥ जे चौसठचंवर अमर ढुराय । भामंडल छविबरणी न जाय ॥१८॥ सब प्रात्यहार्यवर्णनबिशाल । सुरविद्याधर पूजत त्रिकाल ॥ गुणगानकरैं बहुबिधसुसार । फुनिनृत्य करैं अद्भुत अपार ॥ १९ ॥ जैदुंधभि बाजे बजैंघोर । सुर सप्तअरब बारह किरोर ॥ जै प्रभुदर्शन देखें निहार । मुखपाठपढैंप्रभुतारतार ॥ २० ॥ जैजै तुमपरमातमसुदेव । तुम चरणनकी हमकरैंसेव। हमपर किरपाकीजे दयाल । करजोर सीसनावतसुभाल ॥ २१ ॥ जैजैतुम परमातम सुदेव । जैजै जगतारनकीसुदेव ॥ जैजैजिनवरकरुणानिधान । जैतुमसमदेव न और आन ॥ २२ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

जंबूशालमली तनी, विविधवरण जयमाल। जोबाचै मनलायकै, तिनकै भाग विशाल २ ३ इति जयमाल

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढैं मनलाय । जाके पुन्य तनी अतिमहिमा वर्णन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढै अधिक सरस सुखदाय, यहभवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहैं शिवपुरजाय ॥ २४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति अचलमेर संबंधी जंबूशालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिनमंदिर पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ अचलमेर के पूर्व विदेह संबंधी आठवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः नंबर ॥ २५ ॥

॥ अथस्थापना ॥ मदअवलिप्तकपोल छंद ॥

अचलमेर पूरब दिश बरने गिरवक्षार आठ सुखकार । तिनपर श्रीजिन भवन अकीर्तम पूजत सुरपत हर्ष अपार ॥ विद्याधर भूपत सुर सब मिल आवत लेले सब परवार । हम पूजत निजघर जिनवरपद आव्हानन विध कर मनधार ॥ १ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूर्वविदेह संबंधी आठ वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो । अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं ॥ अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं अत्र ममसन्निहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ चाल ॥

सोगुणहम ध्यावैं । जे गनफनपति कथि पार न पावैं, सोगुणहम ध्यावैं ॥ टेक ॥ जै क्षीरोदध को नीर सुलीजे, सोगुण० ॥ जै सुवरण की झारी भर दीजे, सोगुण० ॥ जै ले श्रीजिनवर चर्ण चढ़ावो सोगुण० ॥ जै भव भव मांहि परम सुख पावो, सो० ॥ २ ॥ जै अचलमेर पूरब दिश जानो, सो० ॥ जै गिरवक्षार आठ उर आनो, सो० ॥ जै तिनपर जिनमंदिर छवि छाजैं, सो० ॥ जै तहां जिनेश्वर बिंब बिराजैं, सो० ॥ जैगण० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरब विदेह संबंधी पश्चारय ॥ १ ॥ चित्रकूट ॥ २ ॥ पद्मकूट ॥ ३ ॥ नलिन ॥ ४ ॥ त्रिकूट ॥ ५ ॥ प्राच्य ॥ ६ ॥ वैश्रवण ॥ ७ ॥ अंजन नाम

बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ जलं ॥ जै मलियागिर चंदन ले पीरो, सो० ॥ जै परम सुगंध सुगुण कर सीरो, सो० ॥ जैले श्री० सो० ॥ ४ ॥ जै अचलमेर० ॥ सो० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं०॥ ॥ चंदन ॥ जै मुक्ताफल सम अक्षत लीजे, सो० ॥ जै पुंज मनोहर प्रभु ढिग दीजे, सो० ॥ जै ले० सो० ॥ ६ ॥ जै अचल० ॥ ७ ॥ ॐह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ जै वेल चमेली चम्पा लावो, सो० ॥ जै कमल कमोदनि कर महकावो, सो० ॥ जैले श्री० ॥ सो० ॥ ८ ॥ जै अचलमेर० ॥ सो० ॥ ९ ॥ ॐह्रीं० ॥ ॥ पुष्पं ॥ जै फेनी घेवर मोदक खाजे, सो० ॥ जै तुरत बनावत सुंदर ताजे, ॥ सो० ॥ जैलेश्री० ॥ ॥ सो० ॥१०॥ जै अचलमेर०॥११॥ॐह्रीं॥॥नैवेद्यं॥जै मणमईदीपक जोत प्रजालो, सो०॥ जै जगमग जगमग होत दिवालो, सोगुण ॥ जै लेश्री० ॥ सो० ॥ १२ ॥ जै अचलमेर० ॥ सो० ॥ १३ ॥ ॐह्रीं॥ ॥ दीपं ॥ जै दसविध धूप सुगंध बनावो, सो० ॥ जै धूपायन धर अगन खिवावो, सो० ॥ जै लेश्री०॥ ॥ १४ ॥ जै अचलमेर० ॥ सो० ॥ १५ ॥ ॐह्रीं० ॥ धूपं ॥ जै कोमल मधुर सुरस गुण भारी, सो० ॥ जै फल बहुविध सुंदर भरथारी, सो० ॥ जै लेश्री० ॥ सो० ॥ १६ ॥ जै अचलमेर० ॥ सो० ॥ ॥ १७ ॥ ॐह्रीं० ॥ फलं ॥ जै जलफल अर्घ बनाय चढ़ावो, सो० ॥ जै जिनगुण गाय अक्षय पद पावो, सो० ॥ जै लेश्री० ॥ सो० ॥ १८ ॥ जै अचलमेर० ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॐह्रीं० ॥ अर्घं ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

प्रथम सुगिरपश्चात्यहै, तापर जिनबर धाम। तहां जिनबिंब निहारके, अर्घ जजूं तज काम ॥ २० ॥

ॐह्रीं अचलमेरके पूर्व विदेह संबंधी पश्चात्यनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥

॥ अर्घ ॥ चित्रकूट दूजो कहो, तापर श्रीजिन गेह। वसुविध अर्घ संजोयके, पूजो मन धरनेह ॥२१॥ ओं ह्रीं अचलमेर के पूर्व विदेह संबंधी चित्रकूट नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥

॥ अर्घ ॥ पद्मनाम तीजो सुगिर, तहां जिनभवन विशाल । श्रीजिनवर पद पूजके, धोक देत नामिभाल ॥ २२॥ ओं ह्रीं अचलमेरके पूर्व विदेह संबंधी पद्मनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ नलिन नाम वक्षार गिर, तापर श्रीजिन थान। वसु विध पूजत भविकजन, हम पूजत धरध्यान ॥ २३ ॥ ओं ह्रीं अचलमेरके पूर्व विदेह संबंधी नलिन नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ॥ ४ ॥ अर्घ ॥ नाम त्रिकूट सुहावने, पंचम गिर वक्षार। तहां जिन बिंब निहारके, अर्घ जजूं हित धार ॥ २४ ॥ ओं ह्रीं अचलमेर के पूर्व विदेह संबंधी त्रिकूट नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ छट्ठम प्राच्य सुगिर बनो, जिनमंदिररमणीक। तहां श्रीजिनवर बिंब लख, अर्घ जजों शुभ टीक ॥ २५ ॥ ओं ह्रीं अचलमेरके पूर्व विदेह संबंधी प्राच्य नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ नाम वैश्रवण गिरमहा, जिनमंदिर सुविशाल। अर्घ जजो वसुद्रव्यले, मन बचतन भरथाल ॥ २६ ॥ ओं ह्रीं अचलमेरके पूर्व विदेह संबंधी वैश्रवण नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ अंजनगिरपर जिनभवन, श्रीजिनभवन विशाल । वसुविध अर्घ चढायके, लाल नवावत भाल ॥ २७ ॥ ओं ह्रीं अचलमेरके पूर्व विदेह संबंधी अजनगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ॥ ८ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल दोहा ॥

अचल मेर पूरब दिशा, वसु वक्षार विशाल । तिनपर जिन मंदिर जजो, अब वरणूं जयमाल ॥ २८ ॥

पद्धडी ॥

जै द्वीप धातुकी है खन्य । ताकी पश्चिम गिर अचल धन्य॥जै गिरकी पूरब दिश विशाल । जहां तीर्थंकर राजैं त्रकाल॥२६॥जे सूर प्रभु जिनगुणविशेष॥जे विशाल कीर्त वंदत सुरेश॥जै सुर खग मुनि धावत सुरेश । मुख पाठ पढ़ै जैजै जिनेश ॥ ३० ॥ जे जिन बानी ध्वनि खिरै सार । भवि जीव सुनैं आनंद अपार ॥ केइ जीव धरैं चारित्र भार । केइ श्रावक बृत पालें विचार ॥३१॥ केइ सहैं परीषह बीसदोय । केइ केवल लह शिव कंथ होय ॥ केइ सम्यक ज्ञान करैं प्रकाश । निज आतम रस अनुभव बिलाश॥३२॥यह अतिशय श्रीजिनराजदेव । शतइन्द्र चरणकी करत सेव ॥ जहां चौथोकाल रहै सदीव । तहां कर्म भूम जानो सुजीव ॥ ३३ ॥ तहां गिरबक्षार सुआठ जान । तिनपर जिन मंदिरहैं महान ॥ श्रीसिद्धकूट है नाम सार । बरणत सुरगुरु पावैं न पार ॥३४ सब समो सरण रचनाविशाल । वैदीपर सिंहासन रिशाल ॥ जै सिंहासन पर कमल जान । तापर जिन बिंब विराजमान ॥ ३५ ॥ बसु मंगल द्रव्य धरैं विचित्र । सब प्रातिहार्य सोहै पवित्र ॥ जै इन्द्र शकल पूजत सुपाय । सुरनृत्य करत बाजे बजाय ॥ ३६ ॥ खेचर खेचरनी सबैं धाय । निज निज कौतूहल करत आय ॥ हम करत बीनती सीस नाय । जैवंत होहु प्रभु तुम सुगाय ॥ ३७ ॥

॥ घत्ता ॥ दोहा ॥

अचल मेर पूरब दिशा, गिर बक्षार सुआठ । तिनकी यह जयमालहै. कीजे निश दिन पाठ ॥३८

इति जयमाल ॥ अथाशीर्वादः ॥

कुसुमलताछंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताकोपाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा वरननको करसकै बनाय ॥ जाके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदलहै शिवपुरजाय ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति अचलमेरके पूरवदिश आठ वक्षार गिरपर सिद्धकूटाजिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ अचल मेरके पश्चिम विदेह संबंधी आठ वक्षार गिर पर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंवर ॥ २६ ॥

अथस्थापना ॥ चालछंद ॥

है अचलमेर बरतीजो । ताकी पश्चिम दिशलीजो॥वक्षार आठ गिर हूजो । तापर जिनमंदिरपूजो ॥ १ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके पश्चिम विदेह संबंधी आठ वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ।अत्रावत्रावत्र संवोषटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठःठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्नाहितो भवभव विषट संधीसकरणं ॥ ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ कुसुमलता छंद ॥

सरस मनोहर उज्जल जलले क्षीरोदध ले लावत जाय । रत्नकटोरी मैं सो धरकै पूजत श्रीजिनवरके पाय ॥ अचलमेरके पश्चिम दिशमैं गिरवक्षार आठ भविजान । तिनपर श्रीजिनभवन अकीर्तम

तहां विराजैं श्रीभगवान ।२॥ ओंह्री अचलमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी शब्दवान ॥ १ ॥ विजय
वान ।२॥ आसीविष ॥ ३ ॥ सुखावह ॥ ४ ॥ चंद्र ॥ ५ ॥ सूर्य ।६॥ नाग ॥ ७ ॥ देवनाम वक्षार
गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो । ८ ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन दाह निकंदन केसर डारी रंग
भरी। श्रीजिनचरण सुपूजत भविजन भवआतपसुदूरकरी ॥ अचलमेर० । ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥
देवजीर सुखदास सुअक्षत मुक्ताफल समलीजै। मनबच कायलाय जिनचरणन पुंज मनोहर दीजै॥
अचल मेर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं । कमल केतकी वेल चमेली फैले गंध दसोदिश आय।
अमर समूह जजैं जिनवरपद हम पूजैं मन बचतन लाय ॥ अचलमेरके ०॥ ५॥ ओंह्रीं ० । पुष्पं ।
पूरी पुवा अंदरसा लाडू फेनी खाजे तुरत बनाय । क्षुधा रोग निर्वारण कारण श्रीजिनवरपद पू-
जत जाय ॥ अचल मेर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोत होत दसहु दिश मणमइ दी-
प अमोलकलाय । करत आरती श्रीजिन आगे नित्य प्रभुगुण मंगल गाय ॥ अचल मेर० ॥७॥
ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ अगर कपूर सुगंध सुदस बिध फैली परम लता सुअपार। खेवत धूप जिनेश्वर आ-
गे कर्म जलै चहुं गत दातार॥ अचलमेर ०॥ ८ ॥ ओंह्रीं ०॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग सुपारी पिस्ता-
किसमिस दाख छुहारे लाय। पूजत फल जिन चर्ण मनोहर शिवफल पावत कर्म पिपाय । अचल
मेर ० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं ० ॥ फलं ॥ जलचंदन अक्षतप्रसून ले नेवज दीप धूपफलसार । अर्घबनायजजो
श्रीजिनवर लाल सदा तिनपर बलहार ॥ अचलमेर ० ॥१०॥ ओंह्रीं ० ॥ अर्घं ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ दोहा ॥

शब्दवान बक्षार गिर, अचल की पश्चिम वोर । तहां जिन मंदिर निरख कें, अर्घ जजो कर जो। ६३

॥ ११ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम विदेह संबंधी शब्दवाननाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ अचलमेर पश्चिमदिशा, विजयवान बक्षार। तापर श्रीजिनभवन लख, अर्घ जजो भरथार ॥ १२ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिमविदेह संबंधी विजयवान दान बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ आसीविपवक्षार है, पश्चिम अचलसुमेर।तहां जिनमंदिर सोहनो,जिनपद पूजो हेर ॥ १३ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिमबिदेह संबंधी आसीविषनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ । अर्घ ॥ पश्चिम अचल सुमेर की नाम सुखावह जान । श्रीजिनमंदिर तासपर, अर्घ जजो धर ध्यान ॥ १४ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम विदेह संबंधी सुखावह नाम बक्षारगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥ पश्चिम दिशा सुअचलकी, चंद्रनाम बक्षार । तापर जिन मंदिर जजो, बसुविध अर्घ समार ॥ १५ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिमविदेह संबंधी चंद्रनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ सूर्य नाम बक्षार गिर, तहां जिनमंदिरदेख । अचलमेर पश्चिमदिशा, पूजत अर्घ विशेख ॥ १६ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम विदेह संबंधी सूर्यनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ अचलमेर पश्चिमगिनो, गिरबक्षार सुनाग ॥ तहां श्रीजिनवरधाम हैं, अर्घ जजो मदत्याग ॥ १७ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम विदेहसंबंधी नाग नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ देवनाम बक्षारपर,स्वयं सिद्ध जिनधाम। पश्चिम अचल सुमेर तें, पूजो भवितज काम । १८ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी देव नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

अचलमेर पश्चिमदिशा, गिरवक्षार विशाल। तहां जिनमंदिर पूजके, अब बरनूं जयमाल ॥१९॥

॥ पद्धडी ॥

जैद्वीप धातुकी दुतियमेर। ताकीपश्चिम दिश अचलमेर॥जैगिरकी पश्चिम दिश विदेह। तहांचौथो काल सदा गनेह॥ २० ॥ जैतीर्थंकर निवसैं सदीव। जैबज्राधर जिनगुण अतीव॥ जैचंद्रानन दूजो जिनंद। मुख चंद्रबरण आनंदकंद॥ ॥ २१॥ जिनमुखतेंदिव्या धुन खिरंत। भविजीव सुनत भवजल तरंत॥ केइ मुनिवृत धारैं तज अवास। केइश्रावक वृत पालैं उदास॥ २२ ॥ केइ सम्यक दर्शन लहैं जीव। यह अतिशय श्रीजिनवर सदीव॥ जहां कर्म भूमि है तिहूं काल। शिव मारग की जहां चलै चाल॥ २३ ॥ ऐसो शुभक्षेत्र बनो रिशाल। तहां गिरवक्षार पड़े बिशाल॥ जै गिरऊपर जिन भवन ठाठ। जिन विंब लषैं शतअधिकआठ॥ २४ ॥ सब समो सरण रचना समान। वसु मंगल दर्ब विराज मान॥सत इंद्र चरनकी करत सेव। जै नंद वृद्धि भाषत सुदेव॥ २५ ॥ जै नृत्य करत संगीतसार। बाजे बाजत अनहद अपार॥ निरजर निरजरनी करतगान। भूचर भूचरनी धरत ध्यान॥ २६ ॥ खेचर खेचरनी सवै आय। मुख पाठ पढ़त अति मुदित काय॥ हम पूजत जिन मंदिर सुआय। निजचरण कमल पर सीस नाय॥ २७ ॥ जैजै जै जिनवर परम देव। तुम चरणन की हम करत सेव॥ यह अरज हमारी सुनो सार। संसार जलध ते करो पार॥ २८ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

अचलमेर पश्चिमादिशा, गिरवक्षार विशाल। तिनपर जिनमंदिर निरष, लाल नवावत भाल ॥२९॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमावरनन को करसके बनाय ॥ ताकें पुत्र पौत्र अरु संपत बाढै अधिक सरससुखदाय। यह भवजस पर भव सुखदाई सुरनर पदलहैं शिवपुरजाय ॥ ३० ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति अचलमेर के पश्चिम विदेह संबंधी आठ वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ अचलमेर के पूर्वबिदेह संबंधी षोडस रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ २७ ॥

॥ अथस्थापना ॥ चौपाई ॥

पूरब अचलमेर ते कहिये। रूपाचल षोडस तहां लहिये ॥ तिनऊपर मंदिर जिन जीके। आव्हानन करपूजतनीके ॥ १ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूर्वबिदेह संबंधी षोडस विजयार्द्ध पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्रममसन्नहितो भव भव विषट संधीस करणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ जोगीरासा ॥

परम मनोहर उज्जल जल ले श्रीजिन सनमुख जावो। पूज जिनेश्वर के पद पंकज आनंद मंगल गावो ॥ अचलमेर के पूरब षोडस रूपाचलगिर सोहै। तहां षोडस जिन भवन सुपूजो जगजीवन मन

मोहै ॥ २ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरब बिदेह संबंधी कक्षा ॥ १ ॥ सुकक्षा ॥ २ ॥ महाकक्षा ॥ ३ ॥ कक्षकावती ॥ ४ ॥ आवर्ता ॥ ५ ॥ मंगलावती ॥ ६ ॥ पुष्कला ॥ ७ ॥ पुष्कलावती ॥ ८ ॥ वक्षा ॥ ९ ॥ सुबक्षा ॥ १० ॥ महाबक्षा ॥ ११ ॥ बत्सकावती ॥ १२ ॥ रम्या ॥ १३ ॥ सुरम्या ॥ १४ ॥ रमणी ॥ १५ ॥ मंगलावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥ मलयागिर करपूर मिलकर केसर रंग बनावो । रत्नकटोरी मैं सो धरके श्रीजिन चरण चढ़ावो ॥ अचलमेर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत सुंदर धोय धरीजे । परम प्रीत उरलाय गाय गुण पुंज मनोहर दीजे ॥ अचलमेर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं ॥ अक्षतं ॥ नानाविध के फूल मनोहर सुर तरु सम ले आवो । श्रीगुण गावत ताल बजावत श्रीजिन चर्ण चढ़ावो ॥ अचलमेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ सरस मनोहर नेवज नीको तुरत सुधीको कीजे । सुबरण थाल बीच सो धरके श्रीजिन पूजा कीजे ॥ अचलमेर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोति होत दीपक की ले जिनमंदिर जावो । करत आरती श्रीजिनवर की रहस रहस गुण गावो ॥ अचलमेर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर वरधूप दशांगी खेवो अतिबिहसाई । फैली सरस सुगंध दसोंदिश पूजत जिनवर भाई ॥ अचलमेर० ॥ ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ लौंगसुपारी पिस्ता चोखे अरु बादाम मंगावो । शिवफल पावन कर्म नसावन श्रीजिन चरण चढ़ावो । अचलमेर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय गाय गुण जिनचरणन लौ लावो । लाल सदा बल जात प्रभूकी जिनपूजत सुखपावो ॥ अचलमेर० ॥ १० ॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ चौपाई ॥

अचलमेर की पूरब दिशा । कक्षा नाम देश शुभ बसा ॥ तहां रूपाचल पर जिन धाम । अर्घ जजो तजकै सब काम ॥ ११ ॥ ओंह्रीं अचल मेरके पूर्व विदेह संबंधी कक्षा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिर भ्यो: ॥ ॥ १ ॥ अर्घ ॥ देश सुकक्षा नाम प्रधान । अचल मेरतैं पूरब जान ॥ श्रीवैताड सिखर जिनभौन । अर्घ जजो करकै चितौन ॥ १२ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरब विदेह संबंधी सुकक्षा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिर भ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ अचलमेर पूरब दिशसार । देश महाकक्षा सुखकार ॥ गिरविजयारधपर जिनथान । अर्घ जजो तजके अभिमान ॥ १३ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके पूर्व विदेह संबंधी महाकक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिर भ्यो ॥ ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ कक्षकावती देश सुवसै । अचलमेरतै पूरब लसै ॥ रूपाचल पर श्रीजिनधाम । अर्घचढाय करू परणाम ॥ १४ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके पूर्व विदेह संबंधी कक्षकावतीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥ अचलमेर के पूरब जान । आवर्ता शुभ देश महान ॥ जिन मंदिर में अर्घ चढाय । विजयारधपर पूजो जाय ॥ १५ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरबविदेह संबंधी आवर्तादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ देशमंगलावती सुसार । अचलमेर तें पूरब द्वार ॥ वसुविध अर्घ जजो धरध्यान । गिरवैताड़ सिखर उद्यान ॥ १६ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरब विदेह संबंधी मंगलावतीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ ॥ अर्घ ॥ अचलमेरतें पूरब गाय । देश पुष्कला सुवस बसाय ॥ रूपाचलपर जिन थल जोग । अर्घ

जजो वसुदर्व संजोय ॥ १७ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूर्वविदेह संबंधी पुष्कलादेश संस्थित रूपाचलपर
सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घं ॥ पुष्कलावती है सुखरास । अचलमेर तें पूरब वास ॥ श्री-
जिनमंदिर अर्घ संजोय । रूपाचलपर पूजो जोय ॥ १८ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरबविदेह संबंधी
पुष्कलावतीदेश संस्थित रूपालपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घं ॥ अचलमेर के पूरब ठीक ।
वक्षादेश वसै रमणीक ॥ जिनवर भवन जजो हरषाय । रूपाचलपर अर्घ चढ़ाय ॥ १९ ॥ ओंह्रीं
अचलमेर के पूर्वविदेह संबंधी वक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ९ ॥ अर्घं ॥
देश सुवक्षा है घनघोर । अचलमेर के पूरब वोर ॥ गिरबैताड़ सिखर जिनथान । अर्घ जजो बसुबिध
सुखमान ॥ २० ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरबविदेह संबंधी सुवक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट
जिनमंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ ॥ अचलमेरते पूरब कहो । देश महा वक्षा निरवहो ॥ रूपाचल जिन
भवन विशाल । अर्घ जजो वसु दर्ब संभाल ॥ २१ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूर्व विदेह संबंधी महा-
वक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ देश बत्सकावति जो सही ।
अचलमेर के पूरबकही ॥ गिरबैताड़ सिखरपर जोय । श्रीजिनभवन जजो मद खोय ॥ २२ ॥ ओंह्रीं
अचलमेर के पूरबविदेह संबंधी वत्सकावतीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥१२॥
॥ अर्घ ॥ पूरब अचलमेर की दिशा । रम्यादेश अधिकशुभवसा ॥ विजयारधगिर सिखर विशेख ।
अर्घ जजो जिनमंदिर देख ॥ २३ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरब विदेह संबंधी रम्यादेश संस्थित रूपा-
चलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ पूरब अचलसुरम्यादेश । विजयारध तिह बीच

विशेश ॥ श्रीजिनभवन अकीर्तम जाय । अर्घ जजो बसुर्दव मिलाय ॥ २४ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूरव विदेह संबंधी सुरम्यादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घं ॥ पूरब अचलमेर अभिराम । रमणीदेश रमनको ठाम ॥ तहां बिजयारध गिरके सीस । अर्घ जजो जिनमंदिर दीस ॥ २५ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके पूर्वविदेह संबंधी रमणीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥१५॥ अर्घं ॥ मंगलावतीदेश प्रधान । अचलमेरते पूरब जान ॥ रूपाचलपर श्रीजिनधाम । अर्घ जजो तजके सब काम ॥ २६ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पूर्व बिदेह संबंधी मंगलावतीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घं ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

अचल मेर पूरब दिशा, गिर वैताड़ विशाल । तिनपर जिन मंदिर जजो, अब बरनूं जयमाल ॥२७॥

पद्धड़ी ॥

जै अचल मेरते पूर्व जान । जै पोड़स क्षेत्र विदेह मान ॥ जै तीर्थकर राजैं सदीव । चक्रीवल हर प्रति हर सुजीव ॥ २८ ॥ जहां मुकत पंथ की चलै चाल । सब जीव सुखी नहीं फिर नकाल ॥ जहां पोडस बिजयारध बिचित्र । तहां जिन मंदिर पोड़स पवित्र ॥ २९ ॥ जै वेदी तीन वनी सुठार । जै सिंहासन पर कमलसार ॥ जै श्रीजिन बिंब विराजमान । सतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ ३० ॥ जै मंगल द्रव्य रचे वनाय । वसु प्रात्य हार वरनी नजाय ॥ सुर विद्याधर पूजत सुआय । वहु नृत्य करत बाजे वजाय ॥ ३१ ॥ गुण गान करत चित धरत ध्यान । जै जै जिनवर करुणा निधान ॥ तुम रूप

अतुल नैनन सुदेख। अति हरप बढ़ो सुरपति विशेख ॥ ३२ ॥ जै जै प्रभु परम दयाल देव। तुम चरणनको हम करत सेव ॥ हमहू को दीजै अभय दान। हम जाचक तुम दाता निधान ॥ ३३॥

घत्तादोहा ॥

पोडैसगिर बैताडपर, श्रीजिनभवन विशाल। जिनप्रति सीस निवायकैं, लालभनी जयमाल ॥ ३४ ॥ इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलताछंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढै मनलाय। जाके पुन्यतनी अतिमहिमा वरणन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भव जस परभव सुख दाई सुरनर पदलहे शिवपुरजाय ॥ ३५ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति अचल मेरके पूर्व विदह संबंधी पोडैस रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ अचल मेरके पश्चिम विदेह संबंधी पोडैस रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नम्बर० ॥ २८ ॥

॥ अथस्थापना ॥ अड़िल ॥

अचलमेरके पश्चिमदिशमैं जानिये। पोडैसगिर वैताड सरस उर आनिये ॥ तिनपर श्रीजिनभवन विराजत सारजू। आव्हानन बिधकरत हरप उरधारजू ॥ १ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके पश्चिमविदेह

संबंधी षोडसरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो:॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं । अत्रतिष्ट तिष्ट ठःठः स्थापनं । अत्रमम सन्नाहितो भवभव विषट संधीस करणं॥अस्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ कुसुमलताछंद ॥

क्षीरोदध सम उज्जल लेकर रतन कटोरी मैं धरसार । श्रीजिनचरण चढावत भविजन जन्मजरा मृत रोगनिवार ॥ अचलमेर पश्चिमदिशवंदू तहां विजयारध षोडस गाय । तिनपर श्रीजिनभवन अकीर्तिम पूजत सुरनर हर्ष बढाय ॥ २ ॥ ओंह्रीं अचल मेरके पश्चिम विदेह संबंधी पद्मा ॥ १ ॥ सुपद्मा ॥ २ ॥ महापद्मा ॥ ३ ॥ वप्रकावती ॥ ४ ॥ सुसंखा ॥ ५ ॥ नलिना ॥ ६ ॥ कुमदा ॥ ७ ॥ सरिता ॥ ८ ॥ वप्रा ॥ ९ ॥ सुवप्रा ॥ १० ॥ महावप्रा ॥ ११ ॥ वप्रकावती ॥ १२ ॥ गंधा ॥ १३ ॥ सुगन्धा ॥ १४ ॥ ॥ गन्धला ॥ १५ ॥ गन्धमालनी देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकुटाजिन मंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥ मलयागिर करपूर सुचन्दन केसर घसके देत मिलाय । भवआताप हरन जिन चरनन धारदेत उर दाह बुझाय ॥ अचल मेर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ देवजीर सुख दासक अक्षत सुंदर मुक्ताफल उनहार ॥ पुंज देत भवि जीव मनोहर श्रीजिन चरण हृदे अवधार ॥ अचल मेर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी जुही चमेली बेला सरस गुलाव सुलाय । फैली सर्व सुगन्ध दसोंदिश देत श्रीजिन चरण चढ़ाय ॥ अचल मेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ वावर घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत सुलेत वनाय । नैन घ्राण रसना सुख उपजत चरु ले पूजत श्रीजिनराय ॥ अचल मेर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जगमग होत दसों दिश जोत रही मंदिरमैं छाय । श्रीजिन सन्मुख करत आ-

रती भवि मन वच तन प्रीत लगाय ॥ अचल मेर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ अगर कपूर सुगन्ध मनोहर चंदन कूट सुदेत मिलाय । जिन सन्मुख खेवत धूपायन कर्म जलावत मन हरषाय ॥ अचलमेर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ नैनन को सुंदर सुखकारी मीठेसरस सुगंधित लाय । षटरितुके ले फल जिन पूजो शिवफल पावो चेतनराय ॥ अचलमेर ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ चढ़ाय गायगुण नाचत थेई थेई देदेताल ॥ धन्यभाग उनही जीवन के जिनपदधोक देत भविलाल ॥ अचलमेर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथप्रत्येकार्घ ॥ चौपाई ॥

अचलमेरते पश्चिम वोर । पद्मादेशबसै घनघोर॥तहां रूपाचलपर जिन धाम । अर्घ जजो तजकै सवकाम ॥ ११ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके पश्चिम बिदेह संबंधी पद्मादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो ॥ १ ॥ अर्घ । देश सुपद्मा सुबस बसै । अचलमेरते पश्चिम लसै ॥ श्रीजिनमंदिर अर्घ चढाय । विजयारधपर पूजो जाय ॥ १२ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके पश्चिम बिदेह संबंधी सुपद्मादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ २ ॥ अर्घ ॥ अचलमेरके पश्चिम द्वार । देशमहापद्मासुखकार ॥ गिरबैताड़ सिखर जिनगेह । अर्घ जजो धर परम सनेह॥ १३॥ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी महापद्मादेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥३॥अर्घ॥ देशपद्मकावती बसाय अचलमेर के पश्चिम गाय ॥ गिरबिजयारधपर जिनथान।अर्घ जजो तजकै अभिमान १४ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिमबिदेह संबंधी पद्मकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ॥

अचलमेरके पश्चिम जोय। देशसुसंखा नाम सुहोय ॥ वसु विध अर्घ जजो भरथार । रूपाचल जिनभवन निहार ॥ १५ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम विदेह संबंधा सु संखादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ नलिनादेश कहारमणीक। अचलमेर ते पश्चिम ठीक ॥विजयारध गिरपर जिन भौन। अर्घ जजो करकै चिंतौन ॥ १६ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम विदेह संबंधी नलिनादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ अचलमेर पश्चिम सुखकार। कुमदादेश बसै निरधार । जिनमंदिर तहां पूजो जाय। रूपाचलपर अर्घ चढ़ाय ॥ १७ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिमविदेह संबंधी कुमदादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥७॥ अर्घ॥ सरितादेश बसै शुभथान। अचलमेर पश्चिमदिश जान ॥ जिनमंदिर बिजयारध सीस। बसुविध अर्घ जजो जिन ईस ॥ १८ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी सरितादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥ पश्चिम अचलमेर की कही। बप्रादेश विराजै सही ॥ जिनमंदिर बसुद्रव्य मिलाय। अर्घ जजो रूपाचल जाय ॥ १९ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी बप्रादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ९ ॥ अर्घ ॥ देश सुबप्रा अतिसुखरास। अचलमेर ते पश्चिम बास ॥ विजयारधपर जिन थल देख। अर्घ जजो उरहर्ष बिशेख ॥ २० ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिमबिदेह संबंधी सुबप्रादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ ॥ अर्घ ॥ अचलमेर ते पश्चिम सुनो। देश महाबप्रा तहां मुनो। बसुबिध अर्घ जजो धरध्यान। गिरवैताड़ सिखर जिनथान ॥ २१ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी महाबप्रादेश संस्थित रूपा-

चलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घं ॥ बप्रकावतीदेश महान। पश्चिम अचलमेर ते जान॥ जिनमंदिर पूजो बिहसाय। विजयारधपर अर्घ चढ़ाय॥२२॥ ॐह्रीं अचलमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी बप्रकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १२॥ अर्घं॥ पश्चिम अचलमेर ते लेह। गंधादेश परम सुखगेह॥ रूपाचलपर भवन विचित्र। अर्घ जजो बसुदर्ब पवित्र॥ २३॥ ॐह्रीं अचलमेर के पश्चिम विदेह संबंधी गंधादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो। १३। ॥ अर्घ ॥ देश सुगंधावसे सुथान। अचलमेर पश्चिम दिशजान॥ रूपाचल जिनमंदिर जोय। बसु-बिध अर्घ जजो मद खोय॥२४॥ॐह्रीं अचलमेरके पश्चिम बिदेह संबंधी सुगंधादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १४॥ अर्घं॥ अचलमेर के पश्चिमभाग। देशगंधलावसै सुभाग॥ निरस जिनालय अर्घ चढ़ाय। बिजयारध पर्वतपर जाय॥ २५॥ ॐह्रीं अचलमेर के पश्चिमबिदेह संबंधी गंधलादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १५॥ अर्घं॥ गंधमालनीदेश रवन्य। अचलमेर के पश्चिम धन्य॥ रूपाचलपर हरप बढ़ाय। अर्घ जजो जिनमंदिर जाय॥ २६॥ ॐह्रीं अचलमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी गंधमालनीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १६॥ अर्घं॥

॥ अथ जयमाल दोहा॥

अचलमेर पश्चिमदिशा, रूपाचल सुबिशाल। तिनपर जिनमंदिर जजो, अब बरनूं जयमाल।२७।

॥ पद्धड़ी॥

जे अचलमेर तीजो विशाल। जे जयवंतो जगमें त्रिकाल॥ ताकी पश्चिमदिशमें सुजान।

षोडस विदेह उरमैं सुआन ॥ २८ ॥ जहां चोथौ काल रहै सदीव । तहां कर्म भूम बरतै सुजीव ॥ जहां तीर्थंकर को जन्म होय । चक्री प्रतिहर बलभद्र सोय ॥ २९ ॥ प्रतिवासदेव उत्कृष्ट जीव । निज निज करनी भोगैं सदीव ॥ जहां श्रीमुनिराज करैं विहार । आइल छुल्लक श्रावक निहार ३० सम्यक दृष्टी दोविध सुजान । भवदेत चतुरविध को सुदान ॥ जै ऐसे षोडस देश सार । बन रहें परम आनंदकार ॥ ३१ ॥ तहां रूपाचल षोडस सुजान । एक एक गिरपर नवं कूट मान ॥ श्री-सिद्धकूट तिसबीचसार । तहां श्रीजिनमंदिर को निहार ॥ ३२ ॥ जै सिंहासन तीनो रिशाल । झलकैं मोती अर रतन माल ॥ कमलासन पर सुविराजमान । सिर तीनछत्र धारैं सुजान ॥३३॥ जै प्रतिमा श्रीजिनवर सुदेव । सतआठ अधिक भविकरत सेव ॥ सब मंगल दर्ब धरैं सुआद । बन-रही सुरचना यह अनाद ॥ ३४ ॥ सुरपति सुरखेचर सबै आय । जिनराज चरण पूजत बनाय ॥ बहुभक्ति करैं अति प्रीत लाय । जिनगुण गावैं मन वचन काय ॥ ३५ । नाचत थेई थेई देदसुताल । बाजे बाजैं बहुविध रिशाल ॥ जै जग जयवंतो होय देव । तुम चरनन की हम करत सेव॥३६॥ हम को बांछा कुछ और नांहि । तुम भक्ति रहै हम हिये मांहि ॥ तुम गुण महिमा बरणन अपार । यह करो भक्त उरमैं सुधार ॥ ३७ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

अचलमेर पश्चिमदिशा, पूजा परम विशाल । पढ़त सुनत सुख पाइये । लाल भनी जयमाल ॥
॥ ३८ ॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरणन को कम्मके बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भनजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ ३६ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति अचलमेर के पश्चिम विदेह संबंधी षोडश रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ अचलमेरके दक्षिण दिशभरतक्षेत्रसंबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ २९ ॥

॥ अथस्थापना ॥ अड़िल ॥

अचल मेरके दक्षिण भरत सुजानिये । तहां सुगिर वैताड़ स्वेत उर आनिये॥ सिद्धकूट जिनधाम विराजत सारजू । आव्हानन बिध करूं हरष उर धारजू ॥ १ ॥ ओंह्रीं अचल मेरके दक्षिण दिश भरत क्षेत्र संबंधी रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ अत्रावतरावतर संबौषटाव्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ॥ अत्र मम सान्निहितो भव भव बिषट संधी सकरणं ॥ स्थापन ॥

अथाष्टकं-जोगी रासा ॥

पद्मद्रहको उज्जल जलले कंचन झारी भरिये। श्री जिन चरण चढ़ावत भविजन जन्मजरा दुख हरिये॥ अचल मेरके दक्षिण दिश में भरत क्षेत्र सुखकारी । तहां रूपाचल पर जिन मंदिर तिन प्रत धोक हमारी ॥ २ ॥ ओंह्रीं अचल मेरकी दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मं-

दिरेभ्यो ॥ जलं ॥ मलया गिर करपूर सुचंदन केसर रंग सुर्नाको । भव आताप सुदूर करनको पूजत जिनवर जीको ॥ अचल मेर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ देव जीर सुखदास सुअक्षत सुंदर धोय सलीजे। मन बच काय लाय जिन चरणन पुंज मनोहर दीजे ॥ अचल मेर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ नाना विध के फूल मनोहर सुरतरु सम के लावो । पूजो श्रीजिनराज प्रभुको हरप हरप गुण गावो ॥ अचल मेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ बहु बिध के पकवान मनोहर सुवरन थारी भरिये । क्षुधा रोग के नाश करनको प्रभु सन्मुख ले धरिये ॥ अचल मेर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जगमग होत दिवालो दीप अमोलिक लावो । मोह तिमर के नाश करनको श्रीजिन चरन चढ़ावो ॥ अचलमेर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ दस बिध धूप सुगंधित लेकर पूजो भविजन भाई । कर्म महा रिपु दूर करनको खेवत जिन ढिग जाई ॥ अचलमेर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ ॥धूपं॥ लौंग लाइचो पिस्ता नीके किश मिश दाख मंगावो फलसे पूजो श्रीजिनवर पद याते शिव फल पावो ॥ अचलमेर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं॥जल फल अर्घ बनाय गाय गुण श्रीजिन चरण चढ़ावो भाव भगतसो पूज जिनेश्वर लाल सदा बल जावो ॥ अचलमेर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ गीताछंद ॥

अचल गिर की दिशा दक्षिण भरत क्षेत्र सुहावनो । तसु बीच रूपाचल मनोहर कूटनवं मन भावनो ॥ तहां सिद्धकूट सिखर विराजैं जिनभवन अति मन हरैं । वसुदर्व ले हम जजैं नित प्रत परम आनंद उर धरैं ॥ ११ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

अचलमेर दक्षिण दिशा, भरत क्षेत्र सुबिशाल। रूपाचलपर जिन भवन, तिनकी सुन जयमाल ॥१२॥

पद्धरी ॥

जै द्वीप धातु की मैं निहार। गिर अचल तनो वरनन अपार॥ जै ताकी दक्षिण दिश अनूप। तहां भरत क्षेत्र सुंदर स्वरूप ॥ १३ ॥ जहां छहो कालकी फिरनहोय । कोड़ा कोड़ी दंश उदध सोय। जै भोग भूम पहिले सुतीन। तहां जुगला धर्म चलै प्रवीन ॥ १४ ॥ दस कल्प बृक्ष तहां रहे छाय। मन वांक्षित सुख सब नर कराय॥जब चौथा काल लगै सुआय। तब कर्म भूम बरतै बनाय ॥ १५ ॥ जे तीर्थंकर चौबीस होय। द्वादसै चक्री जानो सुलोय ॥ बल नारायण प्रतिहर प्रमान। नवे नवे नवे सब जानो सुजान ॥ १६ ॥ यह त्रसठ पदवी पुरुष जोय। अरु बहुतजीव उत्कृष्टहोय॥ तिनको कहांलो करिये बखान। बिध सहित कहो उत्तर पुरान ॥ १७ ॥ केई मुनि व्रत धारैं तज अवास। केई श्रावग व्रत पालैं उदास ॥ केई चार घातिया कर्म नाश। केवल पद लहि अवचल अवाश ॥ १८ ॥ केई सम्यक दृष्टी जीवजान। बिधचार संग को देतदान ॥ यह विध बरतै सो चतुर काल। पंचम छट्टम दुख को महाल ॥ १९ ॥ तिस क्षेत्र विषै बैताढ नाग। द्युति स्वेत वरण सोहैं सुहाग॥तसु सिखर विराजैं सिद्धकूट। तापर जिन मंदिरहैं अटूट॥२०॥सब समोसरण रचना समान सतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ सब मंगल दर्व धरें विचित्र। बसु प्रात्यहार्य सोहैंपवित्र ॥ २१ ॥ सुर विद्याधर के भूपआय। जिनराज चरन पूजत बनाय ॥ नाचत गावत देदे सुताल। निज जन्म सुफल मानत सुलाल ॥ २२ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

अचलमेर दक्षिण दिशा, गिरबैताड़ विशाल। तिनकी यह जयमाल है, बांचत भविजनलाल॥ ॥ २३ ॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसके बनाय॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनरपद लहे शिवपुरजाय॥ २४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति अचल मेरके दक्षिण दिश भरत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ अचल मेरके उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा प्रारम्भः॥नम्बर ॥ ३० ॥

॥ अथस्थापना-अड़िल ॥

अचलमेर उत्तर ऐरावत खेतहै। तहां पड़ो बैताड बरण अति स्वेतहै॥ ताके सिखर निहार जिनेश्वर धामजू। आव्हानन विध करो छोड सब कामजू ॥ १ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौ षटा व्हाननं। अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं। अत्रमम सन्नाहितो भवभव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चालजोगीरासा ॥

पुंडरीक द्रहको जल निर्मल रतन कटोरी भरिये । धारदेत श्री जिनवर आगे जन्म जरा दुख हरिये ॥ अचलमेर उत्तर ऐरावत रूपाचल सुखकारी । सिद्धकूट तापर जिनमंदिर तिनप्रति धोक हमारी ॥ २ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्र संबंधो रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो ॥ जलं ॥ मलयागिर करपूर सुचंदन केसर परमल धारी । जजत जिनेश्वर के पद पंकज भव आताप निवारी ॥ अचलमेर ० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं ० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत सुंदर धोय सुलीजे । मन बच तन जिनवरपद आगे पुंज मनोहर दीजे ॥ अचलमेर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥अक्षतं॥ सुरतरु समके फूल सुगंधित वरनबरन के लीजे । पूजत श्रीजिनवर चरणांबुज मदन जलांजुल दीजे ॥ अचलमेर ० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं ० ॥ पुष्पं ॥ नाना विध पकवान मनोहर चक्षु घ्राण सुखकारी । श्रीजिनचरण कमल नित पूजो भरभर कंचन थारी ॥ अचलमेर ० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जगमग होत दसोंदिश दीपक जोत जगावो । आरति करत जिनेश्वर आगे हरष हरष गुण गावो ॥ अचलमेर ० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं ० ॥ दीपं ॥ दस विधकी बहुधूप सुगंधित अगन बीच ले खेवो । अष्ट करम नाशक जिनवरपद भविजन निसदिन सेवो ॥ अचलमेर ० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं ० ॥ धूपं ॥ फल अति मिष्ट बदाम छुहारे किश मिश दाख सुपारी । फलले पूजो जिनपद पंकज पावो शिवफल भारी ॥ अचलमेर ० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं ० ॥ फलं ॥ जल चंदन अर फूल मनोहर अक्षत नेवज नीको । दीप धूप फल अर्घ सुलेकर पूजत श्रीजिन जीको ॥ अचलमेर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं ० ॥ अर्घं ॥

अथप्रत्येकार्घ ॥ गीताछंद ॥

गिर अचल उत्तरदिश मनोहर क्षेत्र ऐरावत सुनो । तिस बीच गिर विजयार्ध उज्जल कूट नव तापर मुनो ॥ गिर सिखर श्रीजिनभवन सुंदर सिद्धकूटसुहावनो । वसुदर्बलेहम जजत जिनपद अर्घ अतिमन भावनो ॥ ११ ॥ ओंह्रीं अचलमेरकी उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ ॥ १ ॥ अर्घ ॥

अथजयमाल ॥ दोहा ॥

अचलमेर उत्तर दिशा ऐरावत सुविशाल । रूपाचलपर जिनभवन सुनातिनकी जयमाल । १२ ।

॥ पद्धड़ी ॥

जे द्वीप धातुकीहै प्रसिद्ध । पश्चिम गिर अचल सुस्वयंसिद्ध ॥ ताकी उत्तर दिश क्षेत्र थान । ऐरावत नामपडो महान ॥ १३ ॥ पट काल फिरें आगम प्रमान । अंबुध दस कोड़ा कोड़ि जान ॥ है जुगला धर्म सुकाल तीन । तहां भोग भूम जानो प्रवीन ॥ १४ ॥ दस कल्प तरोवर लह लहाय । सुख सहित भोग सब जन कराय ॥ जब चौथो काल करै प्रवेश । तब कर्म भूम लागै असेश । १५ ॥ जब चौवीसों जिनराज होय । बलहर प्रतिहर चक्री सुजोय ॥ नव नव नव द्वादश है प्रमान । सब त्रेसठ पुरुष कहे पुरान ॥ १६ ॥ केइ धरैं दिगंबर भेस भार । केइ श्रावक व्रत पालैं सँभार ॥ केइ सम्यक दृष्टी शुद्ध भाव । केइ पूजा दान करैं उपाव ॥ १७ ॥ केइ कर्म नाश केवल लहंत । भए सिद्ध निरंजन गुण अनंत ॥ यहचौथे काल कही सुरीत । पंचम छट्टम दुख की प्रतीत । १८ । यह विध ऐरावत क्षेत्रसार । खटखंड सहित सोहैं सिंगार ॥ तिस बीच पडो अतिस्वेत रंग । विज-

यारध गिर सोहै उतंग ॥ १६ ॥ गिर सिखर श्रीजिनभवन सार। सब समोसरण रचना निहार ॥ वेदीपर सिंहासन सुहाय। तापर सुकमल द्युति जग मगाय ॥ २० ॥ तिस ऊपर श्रीजिनराज भूप। सतआठ अधिक प्रतिमा अनूप ॥ सब मंगल दर्ब रचेबनाय। छवि प्रातिहार्य वरनी नजाय- ॥ २१ ॥ सुर विद्याधर पूजैं त्रिकाल। गुण गान करत अदभुत विशाल ॥ जैनृत्य करत संगती सार। बाजे बाजैं अनहद अपार ॥ २२ ॥ जैसोकौतूहल रहो छाय। तैसो मोपे वरनो न जाय ॥ जिनराज चरन पर सीस नाय। भवि लाल सदा वल वल सुजाय ॥ २३ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

उत्तर अचल सुमेर की, गिर बैताड़ बिशाल। श्रीजिनवर पद पूज कै,लाल भनी जयमाल ॥२४॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्यतनी अति महिमा वरननको करसकैं बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भव जस परभव सुख दाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ २५ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति अचल मेरके उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेपूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ अचल मेरके दक्षिण उत्तर दिश षटकुलाचल पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारभ्यते ॥ नम्बर ॥ ३१ ॥

अथस्थापना, कुसुमलता छंद ॥

अचल मेरके दक्षिण उत्तर षटकुलगिर भाषे जिनराय। तिनके सिखर कूट पंकातिके बिच बिच सि-

द्धकूट सुखदाय ॥ तहां जिन मंदिर बने अकीर्तम सुर विद्याधर पूजन जांय ॥ आव्हानन विधकर अपनेघर हम पूजतहैं मंगल गाय ॥ १ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके दक्षिण उत्तर षट कुलाचल पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः अत्रावत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठःठः स्थापनं अत्रमम सन्नाहितो भव भव विपट संधी सकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ कुसुमलता छंद ॥

क्षीरोदधि को उज्जलजलले श्रीजिन चरण चढ़ावतहैं।जन्म जरामृत नाशन कारण जिनगुण मंगल गावतहैं ॥ अचलमेरके दक्षिण उत्तर षट कुल गिरपर जिन भवनं। सुरखग मिल ध्यावैं पुन्य-वढ़ावैं हम पूजत यां जिन चरनं ॥ २ ॥ ओंह्रीं अचलमेरके दक्षिण दिश निषध० ॥१॥ महाहिमवन ॥ २ ॥ हिमवन ॥ ३ ॥ उत्तर दिश नील ॥ ४ ॥ रुक्मनी ॥ ५ ॥ सिखरनी पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥६॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन दाह निकंदन केसर डारी रंगभरी । जिनवरपद ध्यावैं शिवफल पावैं पूजत भव आताप हरी ॥ अचलमेर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ सुख दासक मोदं धार प्रमोदं अति मन मोदं धोयधरो । जिन चर्ण चढ़ावो मन हर्षावो शिवसुख पावो पुंजकरो ॥ अचल० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी वेल चमेली श्री गुलाव धर जिन आगैं । भवि जन मन भावत फूल चढ़ावत कामवान ततक्षण भागैं ॥ अचलमेर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं॥ नेवज ले नीको तुरत सुघीको श्रीजिनवर आगे धरिये । भरथाल चढ़ावो क्षुधा नसावो जिन गुण गावो शिववरिये ॥ अचलमेर० ॥ ओंह्रीं० ॥ ६ ॥ नैवेद्यं ॥ मणमई दीप अमोलक लेकर जगम-

ग जोत सुद्योत खरी। मोहांध बिनाशक सुख परकाशक श्रीजिन आगै भेट धरी॥ अचलमेर० ॥ उँह्रीं० ॥ ७ ॥ दीपं ॥ कृश्नागर धूपं जजि जिन भूपं लख जिनरूपं खेवतहैं। सब पाप जलावै पुन्य बढ़ावै दास कहावै सेवतहैं॥ अचलमेर० ॥ ८ ॥ उँह्रीं० ॥ धूपं ॥ बादाम छुहारे लौंग सुपारी-श्रीफल भारी करधरकै। जिनराज चढ़ावै मनहर्षावै शिवफल पावै अघहरकै॥ अचल० ॥ ९ ॥ उँह्रीं०॥फलं॥वसुदर्व मिलावै अर्घ बनावै जिनवर पगतल धारतहैं। भव भव सुख पावै शुभगति जावै कर्म पुंज निरवारतहैं॥ अचल० ॥ १० ॥ उँह्रीं० ॥ अर्घं ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ मदअवलिप्त कपोल छंद ॥

दक्षिण अचलमेर के शोभै तप्त हेमद्युति निषध सुनाम। द्रहतिगंछ बिचकमल अनूपम तापर धृत देवी को धाम॥ पर्वत सिखरकूट नव पंकत तिस बिच सिद्धकूट अभिराम। तहां जिनभवन निहार धार उर अरघ जजत तजके सबकाम॥ ११ ॥ उँह्रीं अचलमेर के दक्षिणदिश निषधपर्वत पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १॥ अर्घ ॥ दक्षिण अचलमेरते गिनये स्वेत महा हिमवनगिरनाम। महापद्मद्रह द्रह बिच पंकज जल बिच ह्रीं देवी को धाम॥ आठकूट गिरसिखर बिराजत तिसबिच सिद्धकूट अभिराम। तहां जिन भवन०॥ १२ ॥उँह्रीं अचलमेर के दक्षिणदिश महा हिमवन पर्वत पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घं ॥२॥ दक्षिण अचलमेर के सोहै कनकबरण हिमवन गिरनाम। पद्मद्रह द्रह बीच कमल हैं अंबुज बिच श्रीदेवीधाम॥ गिरके सिखर कूट एकादस सिद्धकूट तिस-बीच सुठाम॥ तहां जिनभवन० ॥ १३ ॥ उँह्रीं अचलमेरके दक्षिणदिश हिमवन पर्वतपर सिद्धकूट

जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ॥ ३ ॥ उत्तर अचलमेर ते कहिए वेडूरजवंत् नीलसुनाम । द्रह केसरी कमल की पंकत तहां कीर्ति देवीको धाम ॥ मूभ्रत सिखर कूट नव उन्नत तिसविच सिद्धकूट अभिराम । तहां जिन० ॥ १४ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के उत्तरदिश नील पर्बतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः॥४ ॥ ॥ अर्घ ॥ उत्तरदिशा अचलगिर केरी बिपद रुक्मगिर पर्वतनाम । द्रह महापुंडरीक पंकज जुत जलज बीच बुध देवीधाम ॥ गिरके सिखरकूट वसु बरने तिसबिच सिद्धकूट अभिराम । तहां जिनभवन०॥ ॥ १५ ॥ ओंह्रीं ॥ अचलमेर के उत्तर दिश रुक्मपर्बतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ॥ ५ ॥ उत्तर अचलमेर ते लखिये हेमबरण सिखरन गिरनाम । कमल पुंज जुत पुंडरीक द्रह तहां लक्ष्मी देवी को धाम ॥ एकादसवर कूट सिखरगिर तिसविच सिद्धकूट अभिराम । तहां जिन० ॥ १६ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के उत्तरदिश सिखरनपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ भद्रशालबन अचलमेर के सीतानदी दोनो तट जान । कुंड मनोहर पांचें पांचें हैं तिहतट दसं दसं गिरपरमान ॥ तिस कंचन गिरपर जिन प्रतिमा एक एक सोहै जिनथान । सब मिल एक शतक नित प्रतिहम अरघ जजत उरमें धरध्यान ॥ १७ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के भद्रशालबन संबधी सीतानदी के दोनो तट पांचें पांचें कुंड तिस एक एक कुंड तट दसं दसं कंचनगिर तिस कंचन गिरपर एक एक जिन प्रतिमा अकीर्तम गंधकुटी सहित बिराजमान तिन सौ प्रतिमाजीको॥ ७ ॥ अर्घ ॥ भद्रशालबन अचलमेर के सीतोदा दोनो तटजान । कुंड मनोहर पांचें पांचें हैं तिसतट गिर दसं दसं परमान ॥ तिस कंचन गिरपर जिन प्रतिमा एक एक सोहै जिनथान । सब मिल एकशतक नित प्रतिहम

अघ जजत उर मैं धरध्यान ॥ १८ ॥ ओंह्रीं अचलमेर के भद्रसालबन संबंधी सीतोदा नदी के दोनोतट पांचैं पांचैं कुंड तिस एके एके कुंड तट दसैं दसैं कंचन गिर तिन कंचन गिरपर एके एके जिनप्रतिमा अकीर्तम गंधकुटी सहित विराजमान तिन एकसौ[१००] प्रतिमा जी को ॥ अर्घ ॥ ८ ॥ अचलमेरवन चार मनोहर चारों दिश पोड़स[१६] जिनथान । षोड़स[१६] गिरवक्षार सिखरपर चौतिसैं[३४] विजयारध गिरजान ॥ पट[६] कुलगिर के कुरु द्रुम के दुई हस्थीदंत चारैं[४] परमान । आठ अधिकसँत्तर[७८] जिनमंदिर अर्घ जजो उरमैं धरध्यान ॥ १६ ॥ ओंह्रीं अचलमेर संबंधी चारों दिशा अठत्तर जिनमंदिर सिद्धकूट तिनको ॥ अर्घ ॥ ६॥ अचलमेर पूरब लवनोदध पश्चिम कालोदधमरजाद। दक्षिण उत्तर इष्वाकार वीचक्षेत्र बहुकहे आवाद ॥ सिद्धभूम तहां कही अनंती अरु जिनमंदिर साद अनादि। मनवचतन हम सीस नायकै अरघ जजत तजके परमाद ॥ २० ॥ ओंह्रीं अचलमेर संबंधी दिशा विदशा मध्ये लवन समुद्र आदि कालोदधपर्यंत जहां जहां सिद्धभूम होंय अथवा कीर्तम अकीर्तम जिनमंदिर होंय तहां तहां अर्घ ॥ १० ॥

॥ अथ जयमाल दोहा ॥

अचलमेर कुल गिर सिखर, जिनमंदिर सुविशाल। जिनपद पूज रचायकै अब बरनूं जयमाल ॥२१॥

॥ पद्धड़ीछंद ॥

जैद्वीप धातकी है विचित्र ! पश्चिम गिर अचलमहापवित्रं ॥ जैताकी दक्षिण दिसविशाल। तहां कुलगिर तीन कहैंरिशाल ॥ २२ ॥ गिरानिषध नाम पहिलो सुजान । दूजो महाहिमवन है प्रधान ॥ तीजो हिमैवन जानो प्रवीन । अव उत्तर दिशके सुनोतीन ॥ २३ ॥ गिर नीलै रुक्म

सिखरन प्रसिद्ध । येछहो कुलाचल स्वयं सिद्ध ॥ गिर पीठ सरोवर सजल थान । द्रहवीच पद्म पंकत महान ॥ २४ ॥ अंबुज विच कुलदेवी निवाश । सबरत्नमई सुंदर अवाश ॥ गिर सिखर कूटबहु है रवन्न । तहां सिद्धकूट सोहैं सुधन्न ॥ २५ ॥ तापर जिनमंदिर जगमगाय । सब समोसरण रचना बनाय ॥ वेदीपर सिंहासन सुहाय । तिसवीच कमल अति लहलहाय ॥ २६ ॥ तिहि ऊपर श्रीजिनराजभूप । सतंआठ अधिक प्रतिमा अनूप ॥ सब मंगल दर्व धरे बनाय । छवि प्रातिहार्य वर्णी न जाय ॥ २७ ॥ सुरविद्याधर के ईश आय । जिनराज चरन पूजत बनाय ॥ निरजर निरजरनी करत गान । खेचर खेचरनी हरष मान ॥ २८ ॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम बाजत म्रदंग । इंद्रानी इंद्र नचैं जुसंग ॥ जिनराज सभी नैनन निहार । हरलोचनद्वार किये हज़ार ॥ २९ ॥ झुक झुक झुक झुक जिन दरश पाय । फिर फिर फिर फिरकी लेतजाय ॥ टम टम टम टमक जोपगधरंत । छम छम छम छम घुंगरूबजत ॥ ॥ ३० ॥ सब सभा जीव जय जय करंत । जै नंद वृद्धि सुरपति भनंत ॥ जिनचरन कमल तलसीस नाय । भव लाल जीत बलबल सुजाय ॥ ३१ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

पट कुल गिर पूजा परम, बनी सुबहुत बिशाल । बांचत सुख उपजै घनो, लाल नबावत भाल ॥ १२

॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा बरननको

कर सकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपति बाढै अधिक सरस सुखदाय। यह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहै शिवपुरजाय ॥ २३ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति अचल मेरके दक्षिण उत्तर दिश षट् कुलाचल पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

इतिश्री धातुकी द्वीपमध्ये पश्चिमदिश अचलमेर संबंधी अठत्तर जिनमंदिर सास्वते विराजमान तिनकी पूजा पाठ संपूर्ण ॥

अथ धातुकी द्वीपमध्ये विजय अचलमेर के दक्षिणदिश दोनों भरथक्षेत्र के बीच इष्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजाप्रारभ्यते॥

अथस्थापना ॥ मदअवलिप्त कपोल छंद ॥

दीप धातुकी युगम मेरुके दक्षिण दिश हैं इष्वाकार। दोउ भरत के बीच विराजत दक्षिण उत्तर दंडाकार ॥ तिस गिरसिखर एक जिनमंदिर स्वयं सिद्धरचना अविकार। तिनको आह्वानन विधकरके जजत जिनेश्वर अष्टप्रकार ॥ १ ॥ ओंह्रीं धातकी दीप मध्ये विजय अचल मेरके दक्षिण दिश इष्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषट। आह्वाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं। अत्रमम सन्नहितो भवभव विपट संधीस करणं। स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चालशेलीकी ॥

आछी प्रीत लगाई ॥ टेक ॥ सुरपति पूजत फनपति पूजत पूजत खेचरराई। श्रीजिनचरण चढावत

विजय अचलकी दक्षिणदिश में इष्वाकार
भविजन जन्म जरा दुख जाई ॥ अच्छी प्रीत लगाई ॥ विजय अचलकी दक्षिणदिश में इष्वाकार
भविजन जन्म जरा दुख जाई ॥ अच्छी प्रीत लगाई ॥ पूजत श्रीजिन-
बताई । तापर श्रीजिन भवन अनूपम जगजीवन सुखदाई॥ आच्छी प्रीत लगाई ॥ पूजत श्रीजिन-
राई॥आछी प्रीतलगाई॥२॥ओंह्रीं धातुकी दीपमध्ये विजयअचलमेरके दक्षिण दिश इष्वाकार पर्वतपर
सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ १ ॥ ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन केसर घस दोऊ देत मिलाई । भव-
आताप सुदूर करनको जजत जिनेश्वर पाई ॥ आछी ॥ विजय अचल० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥
मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत सुंदर धोय बनाई । पुंजदेत जिनराज प्रभूढिग अक्षय पदको पाई
॥ आछी ॥ विजयअचल० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥बेला कमल केतकी महके अरु गुलाब सुखदाई।
काम रोग के दूर करन को जजत जिनेश्वर जाई ॥ आछी० ॥ विजय अचल० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥
॥ पुष्पं ॥ फेनी घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत बनाई ॥ श्रीजिन चरण चढ़ाय गाय गुण क्षुधा रोग
न रहाई ॥ आछी० ॥ विजयअचल० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं०॥नैवेद्यं ॥ मणमई दीप थार मैं धरके जगमग
जोत सुहाई । मोह कर्म के दूर करन को श्रीजिन चरन चढ़ाई ॥ आछी० ॥ विजयअचल० ॥ ७ ॥
॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृष्णागर वरधूपदसांगी खेवत जिन ढिग जाई । मन वचकाय लाय चरणन
चित करमन देतजलाई ॥ आछी० ॥ विजय० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग सुपारी पिस्ता
अरु बादाम मंगाई । श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन शिवफल पावत जाई ॥ आछी० ॥ विजय
अचल० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफल अरघ चढ़ाय गाय गुण नाचत दे दे ताल । इष्वाकार
तनी यह पूजा बांचें सुरपति लाल ॥ आछी० ॥ विजयअचल० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथप्रत्येकार्घ ॥ सुंदरीछंद ॥

धातुकी दक्षिण दिश मैं कहो । मेर इष्वाकार सुबनरहो ॥ गिर सिखर जिनधाम विशालजू । अरघले पूजत भवि लालजू ॥ ११ ॥ ओंह्रीं धातुकी दीप मध्ये बिजय अचलमेरके दक्षिण दिश दोनो भरतक्षेत्र के वीच इष्वाकारपर्बतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ अर्घ ॥ १ ॥

अथजयमाल ॥ दोहा ॥

विजय अचल दक्षिण दिशा, इष्वाकार बिशाल। तिनपर जिनमंदिर जजूं, अबबरनूं जयमाल ॥ १२ ॥

॥ पद्धडी छंद ॥

जैदुतिय धातुकी दीपजान । तहां विजय अचल गिरवरमहान ॥ जैताकी दक्षिण दिश रवन्न । जुग भरत क्षेत्रसोहैं सुवन्न ॥ १३ ॥ जैदोउ भरत के वीचसार । उत्तर दक्षिण लांबो निहार ॥ इक इष्वाकार परो पवित्र । तिस ऊपर जिनमंदिरबिचित्र ॥ १४ ॥ जय समोसरण रचना समान । वेदी पर कटनी तीन जान ॥ जै सिंहासन पर कमलसार । सबमंगल दर्व धरेसमार ॥ १५ ॥ भामंडल भवदेखे जुसांत । जैचमर जुचौसठ ढुरत जात ॥ जै क्षत्र तीनैं सिरपर फिरात। जैसुर बरषावत कुसुम पात ॥ १६ ॥ जैवृक्ष असोक जुलह लहाय । जैदुंदभी बाजे बजत आय । तहां श्रीजिनबिंव विराजमान । शतआंठ अधिक प्रतिमाप्रमान ॥ १७ ॥ लख दरश भविक पावैं अनंद । मुख जयजय शब्द करैं सुछंद ॥ जैचतुरन काय जुदेवआय । जिनचरण कमल पूजत बनाय ॥ १८ ॥ जैनृत्य करैंसंगीत सार । विद्याबलरूप अनेक धार ॥ जैगावैं किन्नर देव गान । बाजे बाजैं अनहद निशान ॥

॥ १९ ॥ जै खेचर खेचरनी सुआय । जिनराज दरश देखे अघाय ॥ जिन चरण कमल पर सीस नाय । भवि लाल सदा वल बल सुजाय ॥ २० ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

इष्वाकार तनी कही, पूजा सरस विशाल । पढतसुनत सुख ऊपजै, लाल नवावत भाल ॥ २१ ॥

॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताकोपाठ पढैं मनलाय । जाके पुन्यतनी अति महिमा वरणन को करसकैबनाय ॥ ताकेपुत्र पौत्र अरु संपत वाढै अधिक सरस सुख दाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लह शिवपुर जाय ॥ २२ ॥ । इत्याशीर्वादः ॥

इति धातुकी द्वीपमध्ये विजय अचलमेरके दक्षिण दिश दोनो भरत क्षेत्र वीच ईष्वाकारपर्वतपर सिद्धकूटजिन मंदिरपूजा संपूर्णं

अथधातुकी द्वीपमध्ये विजय अचलमेर के उत्तर दिश दोनों ऐरावत क्षेत्रके बीच इष्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजाप्रारम्भः ॥ नम्बर ॥ ३३ ॥

अथस्थापना कुसुमलता छंद ॥

विजय अचलकी उत्तर दिश गिन द्वीप धातुकी मांहि सुजान । ऐरावत जुगक्षेत्र मनोहर तिस

विच इष्वाकार महान ॥ सिद्धकूट तापर जिन मंदिर स्वयं सिद्ध रचना उर आन । तिनकी आव्हानन विध करकै जजत जिनेश्वर मंगल ठान ॥ १ ॥ ओंह्रीं धातुकी द्वीप मध्ये विजय अचलमेरके उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्र दोनोंके बीच इष्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरभ्यो । अत्रा वत्रा वत्र संवोपटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापन अत्रमम सन्निहितो भव भव्र विषट संधी सकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चांद्धदीप चंदी छंद ॥

सुरपति पूजन आवैं ॥ तनमन प्रीत लगावैं ॥ सुरपति पूजन आवैं ॥टेक॥ क्षीरो दधिको नीर जो लावैं कंचन कलस भरावैं ॥ इष्वाकार सिखर जिन मंदिर श्रीजिन चरण चढ़ावैं ॥ सुरपति ॥ २ ॥ ओंह्रीं धातुकी द्वीप मध्ये विजय अचलमेरके उत्तर दिश दोनों ऐरावत क्षेत्र के वीच इष्वाकार पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरभ्यो ॥ जलं ॥ परमलता गुण शीतल चंदन केसर रंग मिलावै। इष्वाकार॰ ॥ सुरपति॰ ॥ ३ ॥ ओंह्रीं ॥ चंदनं॥अमल अदोखे उज्जल चोखे तंदुल पुंजदिवावै । इष्वाकार॰॥ सुरपति॰ ॥ ४ ॥ ओंह्रीं ॥ अक्षतं ॥ फूले फूल विकाश सुवाशी सबरितु के चुनलावै । इष्वाकार॰ ॥ सुरपति ॥ ५ ॥ ओंह्रीं ॥ पुष्पं ॥ नाना बिध नेवज भरथारी ताजे तुरत वनावै। इष्वाकार ॥ सुरपति॰ ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं॥ रतनमई दीपक द्युति धारा जग मग जोत जगावै । इष्वाकार ॥ सुरपति॰ ॥ ७ ॥ ओंह्रीं॰ ॥ दीपं ॥ अगर सुगंध दसौं दिश महकै दस बिध धूप खिवावै। इष्वाकार ॥ सुरपति॰ ॥ ८ ॥ ओंह्रीं ॥ धूपं ॥ फल उत्कृष्ट मधुर गुन भारी कोमल सरस मँगावै ॥ इष्वाकार ॥ सुरप-

ति० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय गाय गुण लाल सदा सिरनावे ॥ इष्वाकार ॥ सुरपति० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ चौपाई ॥

धातुकी उत्तरदिश जानिये । मेरइष्वाकार बखानिये ॥ तासु सिखर श्रीजिन धामजू । अरघ जजत तज सबकामजू ॥ ११ ॥ ओंह्रीं धातु की दीपमध्ये बिजय अचलमेर के उत्तरदिश दोनों ऐरावत क्षेत्र के बीच इष्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥ १ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

दीपधात की मैं कही, उत्तरदिशा विशाल । इष्वागिरपर जिनभवन, सुन तिनकी जयमाल॥१२॥

॥ पद्धड़ी छंद ॥

जै दीपधातकी है अभंग । गिरविजय अचल सोहै उतंग ॥ जै गिरकी उत्तरदिश निहार । ऐरावत क्षेत्र बसै अपार ॥ १३ ॥ जै दोनों ऐरावत सुबीच । जै इष्वाकार पड़ोनगीच ॥ जै गिर ऊपर जिनवर सुधाम । सब समोसरण रचनाभिराम ॥ १४ ॥ जै बंदी कटनी तीन उक्त। सिंहासन सोहै कमलयुक्त ॥ जै तीन छत्र सोहैं बिख्यात । भामंडल भवदेखे जुसात ॥ १५ ॥ जै बृक्ष असोक जुलहलहाय । सुरपुष्प बृष्टि नभसों कराय ॥ जै दुंदभिबाजे बजैं जोर । अनहद सादेबारह करोर ॥ ॥ १६ ॥ सिरचमर जुढोरत असुर आय । सब देव बृंद जै जै कराय ॥ इमप्रात्यहार्य सोहै विचित्र । सब मंगल दर्व धरे पवित्र ॥ १७ ॥ तहां श्रीजिन बिंब बिराजमान । सतआंठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ सुरविद्याधर के ईश आय । जिनराज चरण पूजत बनाय ॥ १८ ॥ जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजत

मृदंग। इंद्रानी इंद्र नचैं जुसंग॥जै थेई थेई थेई धुनि रही पूर । है रहो सुभुरमट जिनहजूर ॥ ॥ १६ ॥ निरजर निर जरनी करत गान। खेचर खेचरनी तजत मान ॥ हम नमत धरा सों सीस नाय। जेजे जेजे त्रिभुवन के राय ॥ २० ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

इष्वाकार तनीरची, पूजा सरस विशाल। जो भवि वाचैं भाव सों, तिन के भाग विशाल॥ २१ ॥

इति जयमालसमाप्तम्॥

अथाशीर्वादः॥ कुसुमलताछंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीतम ताको पाठ पढे मनलाय। जाके पुन्य तनी अतिमाहिमा वरणन को करसके बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरुसंपति बाढे अधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहि शिवपुर जाय ॥ २२ ॥ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इतिधातुकी दीपमध्ये विजय अचलमेरके उत्तरदिश दोनों अैरावतक्षेत्रके बीच इष्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेपूजासंपूर्णम्

इति धातु की दीपमध्ये विजयमेर संबंधी अठैत्तर और अचलमेर संबंधी अंस्सी सर्वमिळ एकसौ अठावन जिनमंदिर सास्वते विराजमान तिनकी पूजा पाठ संपूर्ण ॥

अथ पुष्कार्ध द्वीपके पूर्वदिश मंदिरमेर संबंधी षोडस[१६] जिनमंदिरे पूजा प्रारभ्यते ॥ (नं० ३४)

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

पुष्कार्द्ध वर दीप मनोहर ताकी पूरबदिशा बताय। मंदिर मेर परमसुंदर छबि कंचनवरन रही

द्युति छाय ॥ ताकी चारोंदिश वन चारो षोडश जिनमंदिर सुखदाय । तिनकी आव्हानन विधकरके हम पूजत हैं मंगल गाय ॥ १ ॥ ओंह्रीं पुष्कार्द्ध द्वीपमध्ये पूर्वदिश मंदिरमेर संबंधी षोडस जिनमंदिरेभ्यो । अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव विषट संधीसकरणं स्थापनं ॥

अथाष्टकं चाल छंद ॥

उज्जल जल सरस मंगाय जिनवर पूजीजै । तिहुधार देत मनलाय सन्मुख हू जीजै ॥ हैमंदिर मेर सुनाम महिमा को वरनै । जहां षोडस जिन के धाम सुरनर मन हरनै ॥ २ ॥ ओंह्रीं पुष्कार्द्ध द्वीप के पूर्व दिश मंदिर मेर के भद्रशाल वन संबंधी पूर्व ॥ १ ॥ दक्षिण ॥ २ ॥ पश्चिम ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ ४ ॥ नन्दन वन संबंधी पूर्व ॥ ५ ॥ दक्षिण ॥६ ॥ पश्चिम ॥७ ॥ उत्तर ॥ ८ ॥ सोमनस वन संबंधी पूर्व ॥ ९ ॥ दक्षिण ॥१० ॥ पश्चिम ॥ ११ ॥ उत्तर ॥ १२ ॥ पांडुकवन संबंधी पूर्व ॥ १३ ॥ दक्षिण ॥ १४ ॥ पश्चिम ॥ १५ ॥ उत्तरदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १६ ॥ जलं ॥ मलयागिर चन्दन लाय केसर रंग भरी । पूजत श्रीजिनवर जाय भवदुखदाह हरी ॥ हैमंदिर० ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं० ॥ चंदनं॥मुक्ताफल की उनहार अक्षत धोय धरो। पूजो जिनचरण निहार सन्मुख पुंज करो ॥ है मंदिर०॥४॥ ओंह्रीं ० ॥ ॥ अक्षतं ॥ सुरगन के फून सुलाय वास सुमहक रही । भव पूजो मनहरपाय जिनवर चरण सही ॥ हैमंदिर ०॥ ५ ॥ ओंह्रीं ॥ पुष्पं ॥ फेनी गोझा सुवनाय नैनन सुखकारी । पूजत जिनचरण सुजाय सुंदर भरथारी ॥ ॥ हैमंदिर ० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ० ॥ नैवेद्यं ॥ मणमई दीपक सुविशाल जगमग जोत जगी । पूजो जिन चरणत्रिकाल तनमनप्रीत लगी ॥ हैमंदिर ० ॥ ७ ॥

॥ ओंह्रीं ० ॥ दीपं ॥ लेदस बिधधूपवनाय सरस सुगंध भरी । खेवत जिनसन्मुख जाय सुंदरले सुथरी ॥ हैमंदिर ० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं ॥ धूपं ॥ नाना विध फल भरथाल आंनद राचतहैं । तुमशिव फलदेहु दयाल तो हम जांचत हैं ॥ हैमंदिर ० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं ० ॥ फलं ॥ जलफल वसु दर्बमिलाय अर्घ सुदीजीजे । तहां लाल सुवलवल जाय निजरस पीजीजे ॥ हैमंदिर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥अर्घ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ चौपाई छंद ॥

मंदिरमेर पूर्बदिशसार । भद्रमालबन भूँपरधार ॥ तहां जिनभवन अकीर्तम जोय । अर्घ जजूं वसुदर्ब सजोय ॥ ११ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के भद्रसालबन संबंधी पूर्बदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ अर्घ ॥ १ । मंदिर गिरकी दक्षिण बोर । भद्रसालबन भूंपर जोर ॥ सिद्धकूट जिनमंदिरताम । अर्घ जजो तजके सबकाम ॥ १२ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेरके भद्रसालबन संबंधी दक्षिणदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ मंदिर गिरकी दिशा विशेख । पश्चिम भद्रमालबन देख ॥ स्वयं सिद्ध जिनभवन निहार । अर्घ जजो भर कंचन थार ॥ १३ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के भद्रसालबन संबंधी पाश्चिमदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ उत्तर दिश मंदिर गिरकंठो । भद्रसाल वन भूपर ठहो ॥ देख अकीर्तम श्रीजिन गेह । अर्घ जजो उर मैं धरनेह ॥ १४ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेर के भद्रसालवन संबंधी उत्तर दिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥

॥ सुंदरी छंद ॥

मेर मंदिर की पूरबदिशा । बन सुनन्दन अति सुंदर लशा ॥ तहा मनोहर श्रीजिनधामजु । जजत अर्घ करत परिणामजू ॥ १५ ॥ ओंह्री मंदिर मेरके नंदनबनसंबंधी पूरबदिश सिद्धकूट जिन-

मंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घं ॥ मेर मंदिर दक्षिण दिश भली । वन सु नंदन लख पूजैं रली ॥ जिन-भवन जिनबिंब विशाल जू । अर्घ ले पूजत भरथाल जू ॥ १६ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेरके नंदन वनसंबंधी दक्षिणदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ दिश सुपश्चिम मंदिरकी कही । वनसुनंदन बहुशोभा लही ॥ जिनभवन तहां देखो चावसों । अर्घ ले भविपूजो भावसों ॥ १७ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिमदिश नंदनवन संबंधी सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ मेरमंदिर दिशउत्तरजहां । वनसुनंदन सघन लसै तहां ॥ मणमई जिनमंदिर सोहने । अरघ ले पूजत मनमोहने ॥ १८ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके नंदनवनसंबंधी उत्तर दिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

॥ सोरठा ॥

मेरसुमंदिर जान, पूरब वनसौमनसमें । स्वयं सिद्ध जिन थान, पूजो अर्घचढाय कें ॥ १९ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेरके पूरबदिश सौमनसवन संबंधी सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ ९ ॥ अर्घं ॥ मंदिर द-क्षिणद्वार, वन सोमनस विषे कहो । जिनमंदिर सुखकार, अर्घ जजो वसुदर्व ले ॥ २० ॥ ओंह्रीं मंदिरमेरके सौमनसवन संबंधी दाक्षिण दिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो: ॥ १० ॥ अर्घ ॥ पश्चिम मंदिरमेर, वनसौमनस सुहावनो । जिनमंदिर छबिहेर, अर्घदरबपूजा करो ॥ २१ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेरके सौमनसवन संबंधी पश्चिम दिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ वन सौमनस विशाल, गिरमंदिर उत्तरादिशा । जिन मंदिर सुविशाल, अर्घ जजो अति भावसों ॥ २२ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके सौमनसवन संबंधी उत्तर दिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घ ॥

॥ दोहा छंद ॥

मंदिर गिर पूरबदिशा, पांडुक बन सुखकार। तहां जिन भवन निहारके, अर्घ जजो भर थार॥२३॥ ॐह्रीं मंदिर मेरके पांडुक वन संबंधी पूरब दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ दक्षिण मंदिर मेरके, पांडुक बन जिन गेह। बसु विध अरघ संजोय के, जिन पूजो धर नेह ॥ २४ ॥ ॐह्रीं मंदिर मेरके पांडुक बन संबंधी दक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घ ॥ पश्चिम मंदिर मेरके, पांडुक बन जिनथान। मन बच तन लव लाय के, अर्घ जजो धर ध्यान॥२५॥ ॐह्रीं मंदिर मेरके पांडुक वन संबंधी पश्चिम दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥१५॥ अर्घ॥ मंदिर गिर उत्तर दिशा, पांडुक बन सुखदाय। श्री जिन भवन विलोक के, अर्घ जजो चितलाय ॥ २६ ॥ ॐह्रीं मंदिर मेरके पांडुक बन संबंधी उत्तर दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा छंद ॥

मंदिर गिर चारों दिशा, चारों बन सुविशाल। षोडस मंदिर पूजके, अब वरनूं जयमाल ॥२७॥

॥ पद्धड़ी छंद ॥

जै पुष्कार्द्ध वर द्वीप जान। ताकी पूरब दिश है महान॥ सोहै श्री मंदिर मेरसार। कल धोत बरण द्युतिहै अपार ॥ २८ ॥ जोजन चौरासीसहस जान। उन्नत गिर बर भाषे पुरान ॥ बन भद्रसाल नंदन रिशाल। सौमनस और पांडुक विशाल ॥ २९ ॥ जहां तीर्थंकर को न्हवन होय। फल फूल पत्र युत सघन सोय ॥ जै चारों दिश चहुँ बन मझार। षोडस जिन मंदिर हैं निहार ॥ ३० ॥ जै तीन

पीठपर कमल जान। तापर जिन विंब बिराज मान ॥ सतआंठ अधिक प्रतिमा पवित्र। सब मंगल दर्व धरे विचित्र ॥ ३१ ॥ वसु प्रात्य हार्य वर्णन अपार। लख दरश भविक समकित सुधार॥ वसु अंग धरा सो सीस लाय। कर जोर सचीपति नमत आय ॥ ३२ ॥ जिन चरण कमल पूजत सुरेश। मुखपाठ पढ़त जै जै जिनेश ॥ जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजैं मृदंग। खेचर खेचरनी नचैं संग ॥३३॥ जै छम छम छम घुंघरू वजंत ॥ जै ठम ठम ठमक सुपग धरंत ॥ जै थेई थेई थेई धुन रही पूर। व्है रहो सुभ्फुरमट जिन हजूर॥ ३४ ॥ निरजर निरजरनी सीस नाय। जिनराज छवि निरखे बनाय॥ जै सुर नाचत ददे सुताल। पहरैं गलैंमें मोतिन की माल ॥३५॥ जै जै जै फिर फिरकी सुलेय। जिन सन्मुख सीस नवाय देय ॥ जै जै जग जीवन के दयाल। मन वच तन गुण गावत सुलाल॥३६॥

॥ घत्ता दोहा ॥

श्री जिन महिमा अगम है, कोई न पावै पार। पूजा मंदिर मेरकी, पूरन भई निहार ॥ ३७ ॥

इति जयमाल समाप्तम् ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तिम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा वर्णन को कर सकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढै अधिक सरस सुखदाय। यह भव जस परभव सुखदाई सुरनरपद लहै शिवपुर जाय ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति पुष्कार्द्ध द्वीपमध्ये पूर्वदिश मंदिरमेरु संबंधी षोडस जिनमंदिर पूजा संपूर्णम् ॥

अथ मंदिरमेर के चारों विदिशा मध्ये चार गजदंतपर चार जिनमंदिर पूजा प्रारम्भः ॥ नं० ३५ ॥

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

श्रीमंदिर गिर की कनकबरण छबि ताकी चारों विदिशा जान । तहां चार गजदंत मनोहर कहे केवली श्रीभगवान ॥ तिनपर श्रीजिन भवन अनूपम रतनमई जिनबिंब महान । तिनकी आऽहानन बिध करके हम पूजत हैं आनंद मान ॥ १ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के चारोंविदिशा मध्ये चार गजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो । अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाऽहाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्नाहितो भव भव विपट संधीसकरणं स्थापनं ।

॥ अथाष्टकं ॥ सुंदरीछंद ॥

परम पावन नीर सुलायके । पूजिये जिनचरन चढ़ायके ॥ मेरमंदिर के गजदंत जू । तहां जिन पूजत भविसंत जू ॥ २ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के अग्निदिश सोमनस ॥ १ ॥ नैरित्र दिश विद्युत प्रभ ॥ २ ॥ वाइवादिश मालवान ॥ ३ ॥ ईसान दिश गंधमादन नाम गजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ जलं ॥ ले सुगंध सुगंध अपार जू । जिनसुपूजत चंदन गारजू ॥ मेरमंदिर० ॥३॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ परम उज्जल अक्षत लीजिये । पुंज श्रीजिन सन्मुख दीजिये ॥ मेरमंदिर० ॥ ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ सरस सुंदर फूल मंगायके । जिनसुपूजत चरण चढ़ायके ॥ मेरमंदिर० ॥ ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ मनहरण नैवेद्य बनायके । जिन चरण भविपूजो जायके ॥ मेरमंदिर० ॥

॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ दीपमणमई जोत जगायके। जिनचरण भविपूजो जायके॥ मेरमं० ॥
॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ अगर धूपमनोहर खेयिये। मन लगाय सुजिनपद सेयिये॥ मेरमं० ॥
॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ फल मनोहर उत्तम लाइये। जिनसुपूजत शिव फल पाइये॥ मेरमंदिर० ॥
॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल सुफल बसुदर्व मिलाय के। अर्घ देत सुजिनगुण गायके॥ मेरमं० ॥
॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घं ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ अड़िल ॥

मंदिरमेर विशाल अग्निदिश में कहा। नागदंत सौमनस महा छवि है तहा॥ तापर श्रीजिन धाम विराजत सारजू। पूजो अर्घ चढ़ाय हरप उरधारजू॥ ११ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेरके अग्निदिश सोमनस नाम गजदंत पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ १ ॥ अर्घं ॥ मंदिरदिश नैरित्र सकल सुख ठाम है। विद्युतप्रभ गजदंत तासको नाम है॥ ताके सिखर बिराजत श्रीजिन धामजू। बसुबिध अर्घ चढ़ाय करत परणाम जू॥ १२ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के नैरित्रदिश विद्युतप्रभनाम गजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ मंदिरमेर महान दिशाबाइब कही। मालवान गजदंत तहां सोहै सही॥ तिस ऊपर जिन भवन सुपरम विशाल जू। बसुबिध अर्घ बनाय जजत नम भालजू ॥ १३ ॥ ओंह्रीं ॥ मंदिरमेर के बाइब दिश मालवान नाम गजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ ॥ अर्घ ॥ मंदिरदिशा इसान अधिक शोभा जहां। धरे सुगंध अपार गंधमादन तहां॥ है गजदंत सुनाम सिखर जिन धाम जू। पूजो अर्घ चढ़ाय छोड़ सब काम जू॥ १४ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के ईसानादिश गंध मादन नाम गजदंत पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥

नैऋत्र कौन सालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो: ॥ २ ॥ जलं ॥ मलया गिर चंदन केसर ले दोऊ एक मिलावो। श्रीजिनवरपद पूजत भविजन भव आताप मिटावो॥ जंबू सालमली० ॥३॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ देवजीर सुख दास मनोहर उज्जल अक्षतलीजे। देख जिनेश्वर के पद पंकज-पुंज मनोहर दीजे॥ जंबूसाल० ॥४॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमलकेतकी बेल चमेली फूल सुगंधित लइये। श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन आनंद मंगल गइये॥ जंबूसाल० ॥५॥ ओंह्रीं०॥ पुष्पं ॥ फेनी घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत बनइये। क्षुधा रोग के नाशन कारण श्री जिन चरण चढ़इये॥ जंबू० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं ॥ कनकथालमैं मण मई दीपक जग मग जोत प्रजारो। जाय जिनेश्वर-सन्मुख लेके चरण कमल पर बारो॥ जंबूसा० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं ॥ दीपं ॥ दस विध धूप सुगंधित लेके जिनवर आगे खेवो। जनम जनम अघ नाशन कारण श्रीजिनवर पद सेवो। जंबूसाल ॥ ८॥ ओंह्रीं ॥ ॥ धूपं ॥ श्रीफल अरु बादाम छुहारे पिस्ता लौंग मिलावो। शिवफल पावन दुःख नशावन श्री जिन चरण चढ़ावो॥ जंबू सालमली०॥९॥ओंह्रीं० ॥ फलं॥वसु विध दर्ब मिलाय मनोहर अर्घ बनाय चढ़ावो। ताल मृदंग साज सब बाजत सुरनर मिल गुण गावो जंबू सा०॥१०॥ओंह्रीं०॥अर्घं॥

अथप्रत्ये कार्घ ॥ दोहा ॥

मंदिर गिरते जानिये, उत्तर कौनइसान। जंबू तरु पर जिनभवन, अर्घजजो धरध्यान ॥ ११ ॥

ओंह्रीं मंदिरमेरके उत्तर दिश ईशान कौन संबंधी जंबूवृक्षकी पूर्व सासापर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो।

अर्घ ॥ १ ॥ मंदिर गिरदक्षिण दिशा, नैरित कौन विशाल। सालमली द्रुमपर जजो श्रीजिनभवन रिशाल ॥ १२ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके दक्षिणदिश नैरित्र कौनसंबंधी सालमली वृक्षकी पूर्वसाखापर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥ २ ॥

अथजयमाल॥ दोहा ॥

जंबूसालमली तनी, साखा सरसविशाल। श्रीजिनमंदिरपूजकै, अबवरनूं जयमाल॥ १३ ॥

॥ पद्धडी ॥

जै जै श्रीमंदिरमेर जान। जै कंचनमइ सुंदर महान ॥ जै ताकी उत्तरदिश इसान। तहाँ जंबू वृक्ष कहो पुरान ॥ १४ ॥ जै दूजो दक्षिण दिश निहार। नैरित्रकौन सोहै सिंगार॥जै सालमली तरु तहां सार। चहुँदिश चारों साखा मँझार ॥ १५ ॥ जै पूरब की साखा रिशाल। तापर जिनमंदिर हैं विशाल ॥ कंचन मइ रत्नलगे अमोल। जै स्वयंसिद्ध रचना अडोल ॥ १६ ॥ तिन में श्रीजिनवर बिंब जान। जै सुरपति पूजत भक्ति ठान ॥ हम पूजत निजगृह प्रीत लाय। जिनराज दरश देखत अघाय ॥ १७ ॥ जै हमपर करुणाकर दयाल। चहुगत के दुखते वेग टाल ॥ यह अरज़ हमारी सुनो देव। तुम चरणन की हम कौं सेव ॥ १८ ॥ जग जाल महा बिकरालरूप। याते न्यारो कर जगत भूप ॥ तुम तारण समरथ हो सुजान। कोउ देव न दूजो और आन॥१९॥ हम सीस नवावत वार वार। करुणा कीजे उर धार धार ॥ जै ताते हम को तारतार। जै कीजे जगते पार पार ॥ २० ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

श्री मंदिरगिर मेर ढिग, जुगम वृक्ष सुविशाल । सुरखग मिल पूजत सदा, लाल नवानत भाल॥२१॥

इति जयमाल ॥

॥ अथाशीरवादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाकी पुन्य तनी अति महिमा वरणन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहि शिवपुरजाय ॥ २२ ॥ इत्याशीर्वादः—

इति मंदिरमेर संबंधी जंबूसालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा समाप्तम् ॥

अथ मंदिरमेर के पूरवबिदेह संबंधी आंठ बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नं० ३७ ॥

॥ अथ स्थापना ॥कुसुमलता छंद ॥

श्री मंदिर गिरकी पूरव दिशमें है वक्षार सुवसु गिर जान । कंचन वरण रतन मई कलशा रतन जटित जिन भवन बखान ॥ तहां श्रीजिनवर बिंब बिराजैं सुर विद्याधरपूजैं आन । हम तिन की आव्हानन करकै पूजत निज घर आनँद मान ॥ १ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पूरब विदेह संबंधी आठ वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्रा बत्रा बत्र संवौषटा व्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्नाहितो भव भव विषट संधीसकरणं स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चाल छंद ॥

वोजिन पूजोरे भाई ॥ भला जिन पूजोरे भाई ॥ यह उत्तम नर भव पायके ॥ जिन पूजोरे भाई ॥ ॥ टेक ॥ सरस मनोहर उज्जल जल ले रतन कटोरी धारो । श्रीजिनवर के सन्मुख होके चरण कमल परवारो ॥ जिन पूजोरे भाई ॥ मंदिर गिरकी पूरव दिशमैं वर्सु बक्षार बताए । तिनके सिखरजु श्री जिन मंदिर पूजत मन हरपाए ॥ वो जिन पूजोर भाई ॥ २ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पूरव विदेह संबंधी पश्चात्य ॥ १ ॥ चित्रकूट ॥ २ ॥ पद्मकूट ॥ ३ ॥ नालिन ॥ ४ ॥ त्रिकूट ॥ ५ ॥ प्राच्य ॥ ६ ॥ वैश्रवण ॥ ७ ॥ अंजन नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्योः ॥ ८ ॥ जलं ॥ मलयागिरचंदन केसर घसकर श्री जिन चरण चढ़ावो । भाव भक्ति सों पूजाकीजै हरप हरष गुण गावो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर गिरकी० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत मल मल धोय धरीजें । परम महा उत्तम जिनवर ढिग पुंज मनोहर दीजे ॥ वोजिन०॥ मंदिर० वो जिन० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी जुही चमेली श्री गुलाब ले आवो ॥ सुरतरु वरके फूल सुबासी श्री जिन चरण चढावो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर गिर० ॥ वो जिन० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत बनावो । हाथ जोड़ श्रीजिनवर आगे पूजत मन हरषावो ॥ वोजिन ॥ मंदिर० ॥ वो जिन० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जग मग जोत होत दीपककी रतन कटोरी धरकै । श्री जिनवरको पूजत भविजन मोह तिमर को हरकै ॥ वो जिन० ॥ मंदिर० ॥ वो जिन० ॥ ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर करपूर मिलके दंस विध धूप सुलेवो । श्री जिन चरण कमल

ढिग लेके धूपायन धर खेवो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर० ॥ वो जिन० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्री-
फल लौंग वदाम छुहारे पिस्ता दाख सुलावो । कोमल मधुर सुरस सुन्दर फल श्री जिन चरण च-
ढ़ावो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर० ॥ वो जिन० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल अरघ बनाय गाय
गुण श्री जिनवर पद पूजो । नल वल जात लाल चरणन पर जिन सम देव न दूजो ॥ वोजिन०॥
मंदिर० ॥ वो जिन० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ चौपाई ॥

मंदिरगिर पूरब दिशसार । गिरपश्चात्यनामबक्षार ॥ ताके सिखर जिनेश्वरधाम । बसुविधअर्घजजो
तज काम॥११॥ओंह्रीं मंदिर मेर के पूरब बिदेह संबंधी पश्चात्य नाम वक्षारगिर पर सिद्ध कूट जिनमंदि
रेभ्यो ॥ अर्घ॥ १ ॥ चित्रकूटवक्षार निहार ॥ मंदिर गिर के पूरवद्वार॥ तापर श्री जिनभवन विशाल ।
अर्घ जजो वसुदर्वसंभाल ॥ १२ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पूरव विदेह संबंधी चित्रकूट नाम बक्षार गिरपर
सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ मंदिर पूरब दिशा पवित्र । पद्मनामवक्षार विचित्र॥ श्री जिन
मंदिर गिरके सीस । अर्घ चढाय नमो निसदीस॥१३॥ओंह्रीं मंदिरमेरे के पूर्ब विदेह संबंधी पद्मनाम
बक्षार गिर पर सिद्ध कूट जिनमंदिरे भ्यो ॥ अर्घ ॥ ३॥ नलिन नाम बक्षारमहान । मंदिरगिरते पूरब
जान तहां जिन मंदिर सुंदर जोय । अर्घ जजो उरसों मद खोय ॥ १४ ॥ ओं ह्रीं मंदिर
मेरके पूर्ब विदेह संबंधी नलिन नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे भ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥
मंदिर पूरब बक्षार । नाम त्रिकूट कहो श्रुतधार॥ताऊपर श्री जिनवरधाम । अर्घ जजो बसुविध धर ध्यान

॥ १५ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेर के पूर्वविदेह संबंधी त्रिकूट नाम बक्षार गिर पर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो॥५॥ अर्घ ॥ प्राच्य नाम वक्षार सुदेख। मंदिर गिर ते पूरव लेख॥ ताके ऊपर जिनवर गेह ।अर्घ जजो उरमें धरनेह॥ १६ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेर के पूर्वविदेह संबंधी प्राच्यनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ६ अर्घ ॥ मंदिर मेर पूर्व दिश बोर। गिरबक्षार बैश्रवणजोर॥जिनमंदिर तिस ऊपर साद। अर्घ जजो तजके परमाद ॥ १७ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेर के पूर्व विदेह संबंधी वैश्रवण नाम वक्षार गिरपर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥

॥ दोहा ॥

मंदिर माली मेरके पूरव दिशा रिशाल। अंजन गिरपर जिनभवन,अर्घजजत भविलाल॥ १८ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पूर्व विदेह संबंधी अंजनागिर नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥८॥ अर्घ

अथ जयमाल दोहा ॥

मंदिर गिर पूरब दिशा, वसुवक्षार विशाल। तिन पर जिनमंदिर जजो अबबरनूं जयमाल ॥ १९ ॥

पद्धडी ॥

जैजै श्री मंदिर मेरसार। जैपीत बरन सुंदर निहार॥नाना विध रतनन की सुखान॥जे जगमग जगमग होत जान ॥ २० ॥ जैताकी पूरव दिशबखान। जहां षोडस देश विदेह जान॥ तहां तीर्थंकर का जन्महोय। सतइंद्र महोत्सवकरैं सोय ॥ २१ ॥जैचन्द्र बाहु जिनविहरमान। जिनवर भुजंग प्रभु हैमहान ॥ जैसुरखग मुनिध्यावैं त्रिकाल। भवि जीव निरख नावत सुभाल ॥ २२ ॥ चक्री हलधर प्रतिहरसुरार। सब पुन्यपुरुष उपजैं अपार॥ जैचौथोकाल रहै अतीव। तहां कर्म भूमवरतेसदीव २३॥

जै दिव्याध्वन जिनमुखखिरंत । सबजीव सुनत आनंद लहंत ॥ जहां श्री मुनिराज करैं विहार । तहां श्रावग श्रावगनी अपार ॥ २४ ॥ समदृष्टी जीव कहे विसेप । व्रत शील दया पाले असेष जहां चारों विधको होत दान । लख पात्र देत श्रावक सुजान ॥ २५ ॥ तहां गिर वक्षार पडे सुआठ तिनपर जिन मंदिर के सुठाठ ॥ सब समोसरण रचना विशाल । वेदीपरलटके रतनमाल ॥ २६ ॥ जै सिंहासन पर कमल जान । तापर जिन बिंब विराजमान ॥ सतआँठ अधिक रचना प्रसिद्ध । यहरचना जानो स्वयंसिद्ध ॥ २७ ॥ सुर विद्याधर के ईशआय । जिनराज चरन पूजतवनाय ॥ जुगहाथ जोर भुवि माथ लाय । भविलाल सदा बलबल सुजाय ॥ २८ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

मंदिरगिर पूरब दिशा, गिरवक्षार विशाल । तिन जिनमंदिर की सुयह, पूरनहै जयमाल ॥२९॥
इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा बरणन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहैं शिवपुर जाय ॥ ३० ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति मंदिरमेर के पूर्व विदेह संबंधी आठवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ मंदिरमेर के पश्चिमविदेह संबंधी आठबक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ३८ ॥

अथ स्थापना ॥ अडिल छंद ॥

कंचन वरन सुमंदिर मेर प्रमानिये । ताकी पश्चिमदिश में सुरपुर जानिये ॥ आठ महा बक्षार सुगिर सोहैं तहां । तिनपर कूट विशाल सुजिनमंदिर जहाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुर विद्याधर हरष धर, श्रीजिन पूजन जाय । हम आव्हानन विध साहित, निज घर पूजत पाय । ॥ २ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के पश्चिम विदेह संबंधी आठबक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्नहितो. भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ कुसुमलता छंद ॥

परम सुपावन उज्जल जल ले श्रीजिन चरन चढ़ावत हैं । ताल मृदंग बजावत सब मिल जिनगुण मंगल गावत हैं ॥ श्रीमंदिरगिर की पश्चिमदिश में वसु बक्षार सुराजत हैं । तिनपर कूट तहां जिन मंदिर तहां जिनराज विराजत हैं ॥ २ ॥ ओंह्रीं मंदिरमर के पश्चिमविदेह संबंधी शब्दवान ॥ १ ॥ विजयवान ॥ २ ॥ आसीविप ॥ ३ ॥ सुखावर ॥ ४ ॥ चंद्र ॥ ५ ॥ सूर्य ॥ ६ ॥ नाग ७ देवनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ जलं ॥ मलयागिर करपूर सुचंदन डारत

केसर रंगभरी। श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन भव आताप सु दूरकरी॥श्रीमंदिर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ देवजीर सुखदास सुअक्षत प्राशुक जल सैं धोय धरे । श्री सर्वज्ञ देवके सनमुख पुंज देत सुंदर सुथरे ॥ श्रीमंदिर०॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतुकी जुही चमेली श्रीगुलाब के फूल हरे। पूजत श्रीजिनराज चरन को यातें भवदध पार तरे ॥ श्रीमंदिर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ ॥ पुष्पं ॥ बावर घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत बनावत हैं। क्षुधारोग के दूर करन को श्रीजिन चरन चढ़ावत हैं ॥ श्रीमंदिर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ मणमइ दीप अमोलक लेकर जगमग जोत सुहोत खरी। करत आरती श्रीजिन सनमुख मंगल दर्व जहां सुधरी ॥ श्रीमंदिर० ॥ ८ ॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ अगर कपूर सुगंध सुदसविध श्रीजिन चरण सुखेवत हैं। श्री अरहंत जिनेश्वर के पद भविजन निशादिन सेवत हैं ॥ श्रीमंदिर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग छुहार पिस्ता दाख मनोहर लावत हैं। श्रीजिन पूजा करत सुभविजन मोक्ष महाफल पावत हैं। श्रीमंदिर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल वसुविध दर्व सुलेकर सुंदर अर्घ बनावत हैं। श्रीजिन चरण चढ़ाय लायमन लाल सुमंगल गावत हैं ॥ श्रीमंदिर० ॥ ११ ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घं ॥

अथ प्रत्येकार्घं ॥ छंद चाल ॥

मंदिर गिर पश्चिम द्वारा। तहां शब्दवान् वक्षारा ॥ तिस ऊपर श्री जिन गेहा। नित अर्घ जजो धर नेहा ॥ १२ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी शब्दवान् नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घं ॥ जहां विजय वान गिर कहिये। मंदिरते पश्चिम लहिये ॥ तहां

श्री जिन भवन सुहाई । नित अर्घ जजोरे भाई ॥१३॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी विजयवान नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अर्घं ॥ २ ॥ गिर मंदिर पश्चिम जानो । आसीविख नाम प्रवानो ॥ तापर जिन मंदिर ध्यावो । ले बसु विध अर्घ चढ़ावो ॥ १४॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी आसीविखनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥अर्घं॥३॥ गिरनाम सुखावह देखो । मंदिर ते पश्चिम लेखो ॥ जिनमंदिर तापर हूजो । ले अर्घ जिनेश्वरपूजो॥१५॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के पश्चिम विदेह संबंधी सुखावह नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥ ॥ ४ ॥ मंदिर के पश्चिम द्वारा । गिरचन्द्रनाम बक्षारा ॥ तहां पर जिन भवन लखाई । पूजो भवि अर्घ चढ़ाई ॥ १६ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के पश्चिम विदेह संबंधी चंद्रनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥ ५ ॥ है सूर्य नाम गिर छट्ठा । मंदिरते पश्चिम दिट्ठा । तापर जिन भवन विशाला पूजो जिन अर्घ रिशाला ॥ १७ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी सूर्य नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥ ६ ॥ मंदिर ते पश्चिम लीजे । गिरनाम जुनाग कहीजे ॥ जिन मंदिर तापर सोहै । जिन पूजत सुरनर मोहै ॥ १८ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेर के पश्चिम बिदेह संबंधी नाग नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ७ ॥ गिरदेव नाम सुखकारी । मंदिर पश्चिम दिश भारी । जिन भवन महा सुखदाई । भवि अर्घ जजो हरषाई ॥ १९ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के पश्चिम बिदेह संबंधी देव नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ८ ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

मंदिरगिर पश्चिम दिशा, बसु बक्षार विशाल, तिनपर सोहै जिनभवन, तिनकी सुन जयमाल॥२०॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै जै श्रीमंदिरमेर सार। जै ताकी पश्चिम दिश बिचार ॥ तहां है बिदेह सुंदर सुजान। मानों उतरो सुरलोक आन ॥ २१ ॥ जहां चौथो काल रहै सदीव। जिन धर्म सदा धारैं सुजीव ॥ जहां हों तिर्थंकर विद्यमान। जै इश्वर नेमीश्वर महान ॥ २२ ॥ जहां श्रीमुनिराज करैं बिहार। हलधर प्रतिहर चक्री मुरार ॥ सब पुन्य पुरुष उपजैं असेष। श्रावक सम्यक द्दष्टी विसेष ॥ २३ ॥ तहां चारों विधके देत दान। भवि नित्य निपुन भाषें पुरान ॥ जै जै जहां सुंदर हैं बिशाल। बक्षार सुवसु सोहैं रिशाल ॥ २४ ॥ जै तिन गिरपर हैं कूट सार। जै तापर जिनमंदिर निहार ॥ सब समोसरण रचना सुधार। बनरहो परम आनंदकार ॥ २५ ॥ जै तहां जिन बिंब बिराजमान। प्रतिमा सतआँठ अधिक प्रमान ॥ जै सुर सुरपति पूजा करांहि। बसु दर्ब लिये करके सुमांहि ॥ २६ ॥ जै विद्याधर सब भूप आय। जिनराज चरन पूजत बनाय ॥ जै जिनगुण गावैं भक्त लीन। त्रिनचरण कमल सेवैं प्रवीन ॥२७॥ जै जग जैवंते होय देव। भवि जीव सदा तुम करैं सेव ॥ यह अर्ज़ हमारी सुनो सार। संसार समुद्र ते करो पार ॥ २८ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

पश्चिम दिश बक्षार गिर,पूजा बनी बिशाल। तहां जिन भवन निहारकै,लाल नवावत भाल॥२९॥

इति जयमाल ॥

॥ अथाशींर्वादः कुसुमलता छंद।

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा

बरनन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहै शिवपुर जाय ॥ ३० ॥ इत्याशीर्बादः ॥

इति मंदिरमेर के पश्चिम विदेह संबंधी आठवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिर पूजा संपूर्णम्—

अथ मंदिरमेर के पूरवबिदेह संबंधी षोड़स[16] रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः नंबर ॥ ३९ ॥

अथ स्थापना ॥ कुसुमलताछंद ॥

मंदिरमेर तनी पूरब दिश षोड़स[16] रूपाचल तहां जान । तिसपर जिनवर भवन अनूपम रतन मई सुंदर सुख खान ॥ तिनमैं श्रीजिनबिंब बिराजत जिनपद पूजत सुरपति आन । हम तिनकी आव्हानन विधकर जजत जिनेश्वर श्रीभगवान ॥ १ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के पूरवबिदेह संबंधी षोड़स[16] रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव विपट संधीसकरणं । स्थापनं ॥

अथाष्टकं छंद ॥

वो जिन पूजोरे भाई । भला प्रभु पूजोरे भाई । यह श्रावक कुलको पाय के प्रभु पूजोरे भाई- भला प्रभु पूजोरे भाई ॥ टेक ॥ सरस मनोहर उज्जल जल ले रतन कटोरी भरके । जन्म जरा दुख नाशन कारण श्री जिन सन्मुख धर कै ॥ जिन पूजोरे० ॥ मंदिर मेर तनी पूरब दिश रूपाचल

गिर जानो ॥ तिन पर षोडश भवन जिनेश्वर पूजा कर सुख मानो ॥ वो जिन पूजो० ॥२॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पूर्वविदेह सम्बन्धी कक्षा ॥१॥ सुकक्षा॥२॥महाकक्षा ॥ ३ ॥ कक्षकावती ॥४॥ आवर्ता५॥ मंगलावती ॥ ६ ॥पुष्कला ॥ ७ ॥ पुष्कलावती ॥ ८ ॥ वक्षा ॥ ९ ॥ सुवक्षा ॥१०॥ महावक्षा॥११॥ ॥ वत्सकावती ॥ १२ ॥ रम्या ॥ १३ ॥ सुरम्या ॥ १४ ॥ रमणी ॥ १५ ॥ मंगलावतीदेशसंस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥१६॥जलं॥ केसर अरु करपूर मिलेकर चंदन घसकर लावो । भव आताप निवारन कारण श्री जिन पूजन जावो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर मेर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ ॥ चंदनं ॥ देव जीर सुख दास सुअक्षत सुंदर धोय धरीजे । षोडस पुंज देत जिन सन्मुख परम अपेपद लीजे ॥ वो जिन०॥मंदिर मेर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी जुही चमेली श्रीगुलाब लेआवो ॥ मदन बानके नाशन कारण श्री जिन चरण चढ़ावो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर मेर ॥ ॥५॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फनी घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत बनावो ॥ क्षुधा रोग निरवारन कारण श्री जिन चरण चढ़ावो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर मेर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ मण मई दीप अमोलिक लेकर कनक रकाबी डालो । मोह तिमर के नाशन कारण जग मग जोत दिवालो ॥ वो-जिन० ॥ मंदिर मेर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर करपूर मिलेकर धूपाइन धर खेवो । अष्टकर्म इंधन जारनको श्रीजिनवर पद सेवो ॥ वो जिन० ॥ मंदर मेर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग सुपारी पिस्ता दाख बदाम सुलावो । श्रीजिन चर्ण चढ़ावत भविजन मोक्ष महाफल पावो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर मेर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय गाय गुण श्री-

जिन सन्मुख हूजो ॥ बल वल जात लाल चरणन पर निज अनुभव रस पीजो ॥ वो जिन० ॥ मंदिर मेर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

कक्षादेश बिशाल है, मंदिर पूरव वोर। रूपागिर पर जिनभवन, अर्घ जजोकर जोर ॥ ११ ॥ ओं ह्रीं मंदिरमेर के पूर्व बिदेहसंबंधी कक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ ॥ अर्घ ॥ मंदिर गिर पूरबदिशा, देश सुकक्षासार। बिजयारधपर जिनभवन, अर्घ जजो भरथार ॥ १२ ॥ ओं ह्रीं मंदिरमेर के पूर्वबिदेह संबंधी सुकक्षा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ ॥ अर्घ ॥ देश महाकक्षा बनो, पूरब मंदिर द्वार । जिनमंदिर बैताड़पर, अर्घ जजो भरथार ॥ १३ ॥ ओं ह्रीं मंदिर मेर के पूर्वबिदेह संबंधी महाकक्षा देश संस्थितरूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ ॥ अर्घ ॥ पूरब मंदिर मेरके, कक्षकावतीदेश । रूपाचल जिन भवन लख, पूजो अर्घ बिशेश ॥ १४ ॥ ओं ह्रीं मंदिरमेर के पूर्वबिदेहसंबंधी कक्षकावती देश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ४ अर्घ ॥

॥ सोरठा ॥

देश आवर्तासार, गिर मंदिर पूरबदिशा। पूजो अर्घ संवार, जिनमंदिर बैताड़ के ॥ १५ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के पूर्व बिदेह संबंधी आवर्तादेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ रूपाचल जिनगेह, गिर मंदिर पूरबदिशा । अर्घजजो धरदेह, देश मंगलावर्त में ॥ १६ ॥ ओं ह्रीं मंदिर मेर के पूर्वविदेह संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो

। ६ ॥ अर्घ ॥ देश पुष्कलाजान, मंदिरगिरते पूर्वादिश । अर्घ जजो धर ध्यान, जिन मंदिर विजयार्ध के ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं मंदिरमेरके पूर्वविदेह संबंधी पुष्कलादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ मंदिर पूरवदेख, पुष्कलावती देश है, पूजो अर्घविशेष, रूपाचल जिनभवन में ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं मंदिरमेर के पूर्वविदेह संवंधी पुष्कलावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

चालछंद ॥

मंदिर पूरवदिश जानो। तहां वक्षादेश प्रमानो॥ बिजयारधपर जिनगेहा। भविअर्घजजो धरनेहा॥१९॥ ॐ ह्रीं मंदिरमेर के पूर्वविदेह संवंधी वक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ९ ॥ ॥ अर्घ ॥ जहांदश सुवक्षादेखो । मंदिरतेपूरव लेखो ॥ रूपाचलपर जिनथाना । पूजो भवि अर्घ महाना ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं मंदिर मेरके पूर्व विदेह संवंधी सुवक्षादेश संस्थितरूपा चलपरसिद्धकूट जि-नमंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ॥ पूरवदिश मंदिर सोई । महावक्षादेश जु होई॥ बैताड़ सिखरजिन धामा। भवि अर्घ जजो तजकामा ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं मंदिर मेरके पूर्वविदेह संबंधी महावक्षादेश संस्थित रू-पाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ है वत्सकावती देशा । मंदिरतेपूरव लेशा ॥ रूपागिर सिखर विशाला । जिनमंदिरजजो त्रिकाला ॥ २२ ॥ ॐह्रीं मंदिरमेरके पूर्वविदेह संवन्धी वत्सकावतीदेश संस्थितरूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घ ।

॥ पद्धडीछंद ॥

मंदिर गिर पुरवदिशा सार । तहां रम्यदेश सोहै निहार ॥ बैताड़सिखर जिन भवनदेख । पूजत

भवि अर्घ सुआति विशेख ॥ २३ ॥ ऊँ ह्रीं मंदिर मेरके पूरब विदेह संबंधी रम्यदेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ बरदेश सुरम्य बसै बिशाल । गिर मंदिर के पूरब रिशाल ॥ जिनभवनकहो वैताड़ शीस । भवि अर्घ चढावत नमतशीस ।। २४ ॥ ऊँह्रीं मंदिर मेर के पूर्व दिश सुरम्यदेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो। १४ ॥अर्घ॥ गिरमंदिरदिश पूरबपवित्र । तहां रमणीदेश बसै विचित्र ॥ बिजयारध पर जिन भवन सार। भवि अर्घ जजो बसु दर्व धार ॥ २५ ॥ ऊँह्रीं मंदिर मेरके पूरवविदेह संबंधी रमणी देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १५ ॥ अर्घ ॥ हैमंगलावती देश नाम। मंदिर गिरके पूरब सुठाम ॥ जिन गेह सिखर रूपा विशाल । जिन चरन अर्घ ले जजत लाल ॥ २६ ॥ ऊँह्रीं मंदिर मेरके पूर्व बिदेह संबंधी मंगलावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

मंदिर गिर पूरब दिशा, रूपाचलसुबिशाल। तिनपर पोड़ंस जिनभवन, तिनकी यह जयमाल ॥२७॥

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

जै जै श्रीमंदिर गिर महान । बर पुष्कार्ध में पूर्बजान ॥ जै गिरकी पूरब दिश बिचार । तहां पोड़ंस देश बिदेह सार ॥ २८ ॥ जै बरतै चौथो काल रीत । जहां शिवमारग चालैं पुनीत ॥ तहां तीर्थंकर चक्रीश होय । बलहर प्रतिहर मकरंद सोय ॥ २९ ॥ जै पुन्यपुरुष उपजैं अपार। मुनिराज वहैं चारित्र भार ॥ श्रावक सम्यक दृष्टी सुजान । ते देत चतुर्बिध को सुदान ॥ ३० ॥ जै कर्म भूमि

विध रही छाय ॥ भविजीव तिरैं केवल उपाय ॥ तिसबीच पडो बेताड़ नाग । द्युति स्वेत बरण सुंदर सुहाग ॥ ३१ ॥ षोड़ंस गिर षोड़ंस देश माहि । तिस ऊपर विद्याधर रहांहि ॥ गिर सिखर कूट पंकतरवन्य । तहां सिद्धकूट सोहै सुधन्य ॥ ३२ ॥ जै तहां जिनमंदिर हैं उतंग । जै कलश धुजा सोहै अभंग ॥ जै सिंहासनपर कमल सार । जै जगमग जगमग द्युति अपार ॥ ३३ ॥ जै तापर श्रीजिनराज देव । सतआँठ अधिक प्रतिमा गनेव ॥ जै सुर विद्याधर दरब लाय । जिनराज चरण पूजत बनाय ॥ ३४ ॥ जै करत जु स्तुति प्रीत धार । जिनराज सबै नैनन निहार ॥ जै निरजर निरजरनी सु आय ॥ जै नृत्य करत बाजे बजाय ॥ ३५ ॥ जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग । जै बीन बांसरी और मुचंग ॥ जै थेई थेई थेई धुन रही पूर । जै खेलैं झुरमट जिन हजूर ॥ ३६ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

मेर सुमंदिर पूर्वदिश, रूपागिर सुविशाल । तिनपर षोड़ंस जिनभवन, वल बल जात सुलाल ।३७।

इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः॥कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़े मनलाय । जाके पुन्यतनी अति महिमा बरनन को करसके बनाय । ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहैं शिवपुर जाय ॥ ३८ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति मंदरमेर के पूर्वविदेह संबंधी षोड़ंस रूपाचलपर सिद्धकूट श्रीजिनमंदिरे पूजा संपूर्णम्.

अथ मंदिरमेरके पश्चिमाबिदेह संबंधी षोड़स रूपाचलपर

सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर॥ ४० ॥

॥ अथ स्थापना ॥ चाल योगीरासा ॥

मंदिरमेर तनो पश्चिमादिश है बिदेह सुखकारी । तहां पढ़ो बैताड़ मनोहर षोड़स गिर मनहारी॥ ताके ऊपर श्रीजिन मंदिर बिंब जिनेश्वर सोहैं। तिनकी आव्हानन विध करके पूजत सुरनर मोहैं॥१॥ ओंह्रीं मंदिर मेर के पश्चिमबिदेह संबंधी षोड़स रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।अत्र मम सन्निहितो भवभव विषट संधीसकरणं स्थापनं॥

॥ अथाष्टकं । कुसुमलता छंद ॥

कंचन झारी मैं उज्जल जल क्षीर बरन मनहरन सुआन । पूजत श्रीजिनराज चरन को प्रभु गुण गावत मधुरी तान ॥ मंदिरगिरकी पश्चिमदिश मैं षोड़स गिर रूपाचल जान । तापर श्रीजिन भवन अनूपम जजत जिनेश्वर श्रीभगवान ॥ २ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के पश्चिमविदेह संबंधी पद्मा ॥ १ ॥ सुपद्मा ॥ २ ॥ महापद्मा ॥ ३ ॥ पद्मकावती ॥ ४ ॥ सुसंखा ॥ ५ ॥ नलिना ॥ ६ ॥ कुमदा ॥ ७ ॥ सरिता ॥ ८ ॥ वप्रा ॥ ९ ॥ सुवप्रा ॥ १० ॥ महावप्रा ॥ ११ ॥ वप्रकावती ॥ १२॥ गंधा ॥ १३ ॥ सुगंधा ॥ १४ ॥ गंधला ॥ १५ ॥ गंधमालनी देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥ केसर अर करपूर सुचंदन परम सुगंधित लावत हैं । भव आतापसु दूर करन को श्रीजिन चरन चढ़ावत हैं ॥ मंदिर गिर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदन ॥ सरस सुउज्जल

चंद किरन सम अक्षत धोय सुलावत हैं। पुंज देत जिनराज सुआगे अक्षय पदको पावत हैं ॥ मंदिरगिर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ केसर फूल सुबासित लेकर श्रीजिन चरन चढ़ावत हैं। भाव भक्ति सों पूजा करकै जिनगुण मंगल गावत हैं ॥ मंदिर गिर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ नाना विध पकवान मनोहर ताजे तुरत संवारत हैं। क्षुधा रोग निरवारन कारन जिन चरनन पर वारत हैं ॥ मंदिरगिर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ मणमइ दीप अमोलिक लेकर जिन मंदिर मैं आवत हैं। करत आरती श्रीजिन आगे झांझर ताल वजावत हैं ॥ मंदिरगिर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ दस विध धूप दसों दिश महकै खेवत जिन आगे धरके। पूजत श्रीजिनराज प्रभु को जांय कर्म सबही जरके ॥ मंदिर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग छुहारे पिस्ता दाख बादाम सुलावत हैं। श्रीजिन चरन चढ़ावत भविजन मनवांछित फल पावत हैं ॥ मंदिरगिर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ वसुविध दर्व मिलाय मनोहर अर्घ वनावत भरथारी। जजत जिनेश्वर के पद पंकज लाल चरण पर बलहारी ॥ मंदिरगिर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ चाल छंद ॥

मंदिर पश्चिम दिश कहिये। तहां पद्मा देश जु लहिये ॥ रूपाचलपर जिन गेहा। भवि अर्घ जजो धर नेहा ॥ ११ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी पद्मा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ जहां देश सुपद्मा होई। पश्चिम दिश मंदिर सोई ॥ वैताड़ सिखर जिन धामा। ले पूजो भवि तज कामा ॥ १२ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सु-

पद्मा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ मंदिर गिर पश्चिम जानो महापद्मा देश प्रमानो ॥ रूपाचल जिन गृह सोहै । पूजत सुरनर मन मोहै ॥ १३ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी महापद्मा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥३॥ अर्घ ॥ शुभ पद्मकावती देशा । मंदिरते पश्चिम वेशा ॥ तहां गिर वैताड़ सुहाई । जिन मंदिर पूजो भाई॥१४॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी पद्मकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥

दोहा ॥

मंदिर गिर पश्चिम दिशा, देश सुसंखा सार । रूपाचलपर जिन भवन, पूजैं अर्घ संवार ॥१५॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सुसङ्खा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ ॥५॥अर्घ॥नलिना देश सुहावनो,मंदिर पश्चिम द्वार।विजयारधपर जिन भवन,अर्घ जजो भरथार॥१६॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी नलिना देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ गिर मंदिर पश्चिम गिनो, कुमुदा देश विचित्र । जिन मंदिर वैताड़ पर, पूजो अर्घ पवित्र ॥ १७ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी कुमुदा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ सरिता देश बसे जहां, मंदिर पश्चिम जान । रूपाचल जिन भवन लख, पूजो अर्घ महान ॥ १८ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सरिता देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

सुंदरी छंद।

मेर मंदिर की पश्चिम दिशा। देशवप्रमांहे सुंदर लशा॥ जिन भवन वैताढ़ महानजू। अर्घ सों पूजत धर ध्यानजू॥ १९॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी वप्रा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥९॥ अर्घ॥ देश नाम सुवप्रा अति बनो। मेरमंदिरते पश्चिम गिनो॥ रूपागिर जिन भवन विशालजू। अर्घ ले पूजत भवि लालजू॥ २०॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सुवप्रादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ १०॥ अर्घ॥ गिर सुमंदिर दिश पश्चिम कहो। महा वप्रा देश सुलहलहो। गिर सिखर विजयारध के भले। जिन भवन पूजो भवि अर्घले॥ २१॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी महावप्रा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ ११॥ अर्घ॥ वप्रकावती देश सुजानिये। मेर मंदिर पश्चिम मानिये॥ जिन भवन रूपाचलहै जहां। अर्घ ले पूजत भविजन तहां॥ २२॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी वप्रकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ १२॥ अर्घ॥

चौपाई।

गंधादेश वसे घनघोर। मंदिर गिरकी पश्चिमवोर॥ बिजयारधपर जिनवरभौन। अर्घ जजो करकै चितोन॥ २३॥ ओं ह्रीं मंदिरमेर के पश्चिम विदेह संबंधी गंधादेशसंस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १३॥ अर्घ॥ देशसुगंधानाम महान। गिर मंदिर के पश्चिमजान॥ जिनमंदिर में अर्घचढ़ाय। विजयारधपर पूजो जाय॥ २४॥ ओं ह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सुगंधा

देश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घ ॥ मेर सु मंदिर पश्चिम बसै । देश गंधलाभूपरलसै ॥ तहां रूपाचलपर जिनथान । बसुविधपूजो तज अभिमान ॥ २५ ॥ ओं ह्रीं मंदिर मेरके पश्चिम विदेह संबंधी गंधलादेश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १५ ॥ अर्घ ॥ गंधमालनी देशरवन्य । मंदिर गिरत पश्चिम धन्य ॥ गिरबैताड़ सिखरपर जाय । जिन मंदिर पूजो हरषाय ॥ २६ ॥ ओं ह्रीं मंदिरमेरके पश्चिम बिदेह संबंधी गंधमालनीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

मंदिर गिरपश्चिमदिशा, षोडेसदेश विशाल ॥ रूपाचलपर जिनभवन, सुनतिनकी जयमाल ॥२७॥

पद्धड़ी ।

जैपुष्करार्ध वर द्वीपसार। जै मंदिरगिर पूरवनिहार॥जै गिरके पश्चिम दिश बिदेह । तहां षोड़स देश भले सुनेह ॥ २८ ॥ जहां काल चतुर्थ सदा रहाय । तहां कर्मभूम विधरहीछाय ॥ जै मुक्त पंथ को चलै चाल । भविजीवलहैं चारित्र बिशाल ॥ २९ ॥ जै तीर्थंकर को जन्म होय । सतइंद्रमहोत्सवकरैं सोय॥ जहां पदवीधार क्रमनुपहोय । निजपुन्यपाप फललहैंसोय ॥ ३० ॥ जहां श्री मुनिराजकरैं बिहार । धर्मोपदेश भाषैं विचार ॥ श्रावक अइल छुल्लक प्रवीन । सम्यक द्रष्टी जिनभक्तलीन ॥ ३१ ॥ षट खंड सहित सोहैं सुदेश । इकजैनधर्म दूजो न लेश॥ तिसक्षेत्रबीच बैताड़जान । द्युति स्वेतवरन षोडस महान ॥ ३२ गिर सिखर बिराजत सिद्धकूट । तिन मैं जिनमंदिर हैं अटूट ॥ तहा श्रीजिन बिंब बिराजमान । सवसमोसरन रचना समान ॥ ३३ ॥ सतअैठ अधिक प्रतिमा प्रसिद्ध । यह वरनन जानो

स्वयं सिद्ध ॥ जै प्रातिहार्य मंगल सुदर्व । सुर विद्याधर पूजैं जुसर्व ॥३४॥ जै नृत्यकरैंसंगीतसार । बाजे बाजैं अनहद अपार ॥ जै छम छम छम घुंघरू बजंत । जै ठम ठम ठमक सुपग धरंत ॥३५॥ जैं फिर फिर फिर फिरकी सुलेय । जै जिनगुण गावत तालदेय ॥ यह अदभुत समै बनो विशाल । जै बल बलजात सुदेख लाल ॥ ३६ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

मंदिरगिर पश्चिम दिशा, गिरबैताड़ विशाल । पूजा सरस सुहावनी, सुरधर बांचत लाल॥३७॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसके बनाय ॥ जाके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ ३८ ॥ इत्याशीर्वादः—

इति मंदिरमेर के पश्चिमविदेह संबंधी षोडस रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम्—

अथ मंदिरमेर के दक्षिणदिश भरतक्षेत्रसंबंधी रूपाचल-पर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ४१ ॥

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

श्रीमंदिरगिर की दक्षिणदिश मैं भरतक्षेत्र सोहै उर आन । छहो काल की फिरन जहां है

तहां पड़ो वैताड़ महान ॥ ताके सिखर श्रीजिनमंदिर सुर विद्याधर पूजत आन । हम तिनकी आव्हानन करके जजत जिनेश्वर मंगल ठान ॥ १ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेरके दक्षिणदिश भरतक्षेत्रसंबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौपटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्नहितो भव भव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं चाल ॥

वो जिन पूजोरे भाई । भला जिन पूजोरे भाई ॥ यह उत्तम नरभव पायके जिन पूजोरे भाई । ॥ टेक ॥ स्वेत वरन मनहरन सुउज्जल जल लीजै भरथारी । धारदेत श्री जिनवर आगे प्रभु चरननपर वारी ॥ वो जिन० ॥ मंदिर गिरकी दक्षिण दिश में रूपाचल गिर सोहै । तापर श्री जिनभवन अनूपम सुरनरके मन मोहै ॥ वो जिन० ॥ २ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके दक्षिण दिश भरत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ जलं ॥ मलया गिर करपूर मिलेकर केसर रंग भरीजे चरनपूज जिनराज प्रभु के भव आताप हरीजे ॥ वो जिन० ॥ मंदिर गिर० ॥३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं शसिकी किरण समान सुउज्जल अक्षत धोय धरीजे । श्री जिन राज चरनके आगै पुंज मनोहर दीजे ॥ वो जिन० ॥ मंदिर गिर ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी जुही चमेली सुंदर फूल मंगाये । पूजा कर सर्वज्ञ प्रभुकी हरष हरष गुण गाये ॥ वो जिन० ॥ मंदिर गिर० ॥५॥ ओंह्रीं ॥ पुष्पं॥ लाडू वरफी खुरमा ताजे रसना को सुखकारी । पूजत श्री जिनराज प्रभुपद रोग क्षुधा सबटारी॥ वो जिन०॥ मंदिर गिर०॥ ६ ॥ ओं ह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ रतनअमोलिक कनक थाल मैं लेकर आरतकीजे । जगमग

जगमग होत दिवालो प्रभुदर्शन करजीजे ॥ वोजिन० ॥ मंदिरगिर० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ दीपं ॥ दसविधधूप बनाय गायगुण श्रीजिन आगे खेवो । इन कर्मन के दूरकरन को प्रभु चरनन को सेवो॥ वोजिन० ॥ मंदिर गिर० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ धूपं ॥ सुंदर सरस मनोहर मीठे, फल उत्तम धरलावो। भवि जन पूजाकरत जिनेश्वर मन वांछित फल पावो । वोजिन० ॥ मंदिरगिर० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं० फलं ॥ जलफल अर्घबनाय थालभर नाचत ताल बजावो ॥ पूजाकराजिनराज चरनकी नरनारी गुण गावो ॥ वोजिन०॥ मंदिर गिर० । १० ॥ ॐ ह्रीं० ॥ अर्घ० ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

मंदिरगिर दक्षिण दिशा, भरतक्षेत्र सुखकार । रूपाचलपर जिनभवन, पूजो अर्घ संवार ॥ ११ ॥
ॐह्रीं मंदिरमेर के दक्षिण दिश भरतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घं ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

मंदिरमेर सुहावनो, भरतक्षेत्र सुविशाल । विजयारधपर जिनभवन । सुन तिनकी जयमाल ॥१२॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै जै श्रीमंदिरमेर चंग । चौरासि सहस जोजन उतंग ॥ जै ताकी दक्षिणदिश निहार। तहां भरतक्षेत्र षट खंड धार ॥ १३ ॥ जहां छहो काल बरतै प्रमान । सागर दसकोड़ा कोड़ जान ॥ जै भोग भूम है तीन काल । जहां कल्पवृक्ष सोहैं बिशाल ॥ १४ ॥ जब चौथो काल करै प्रवेश । तब कर्म भूमि लागी असेश ॥ जै तीर्थंकर उपजैं महान । चक्री बलहर प्रतिहर सुजान ॥ १५ ॥

सव त्रेसठ पदवी पुरुष होंय । निज पुन्य उदय फल होय सोय ॥ केई मुनि व्रत धारैं भविक जीव। केई श्रावक व्रत पालैं सदीव ॥ १६ ॥ केई कर्म नाश केवल उपाय । जे सिद्ध भये त्रय जगत राय ॥ इम बरतै चौथा काल रूप । पंचम छट्टम दुख को स्वरूप ॥ १७ ॥ तहां स्वेत वरन बैताड़ जान । जे तापर जिनमंदिर प्रमान ॥ जे समोसरण रचना बिशाल । जै सिंहासन पंकज रिशाल ॥ १८ ॥ जे सोहै श्रीजिनराज भूप । सतआँठ अधिक प्रतिमा अनूप ॥ जै सुर सुरपति खेचर जु सर्व । पूजत जिनपद ले ले सुदर्व ॥ १६ ॥ बहुभक्त करैं जिनगुण सुगाय । जै नृत्य करैं बाजे वजाय ॥ मनहरष बढ़ै जिनदरश पाय । भविलाल सदा बल बल सुजाय ॥ २० ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

रूपाचलपर जिनभवन, ताकी यह जयमाल। मन बच काय लगायकै,लाल नमत तिहुँ काल॥२१॥
इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसकै बनाय॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ २२ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति मंदिरमेर के दक्षिणादिश भरथक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ मंदिरमेर के उत्तरदिश ऐरावतक्षेत्रसंबंधी रूपाचल-पर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः नंबर ॥ ४२ ॥

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

मंदिरगिर की उत्तरदिश मैं ऐरावत शुभ क्षेत्र महान । तहां रूपाचल चंद्रकिरन सम उज्जल वरन पड़ो उर आन ॥ तापर श्रीजिन भवन अनूपम कनक रतन मई बनो सुजान । समोसरन रचना को धारैं तहां बिराजैं श्रीभगवान ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुरखेचर पूजा करैं, हमे शक्ति सों नांहि । आव्हानन तिनको करैं, पूजो निज घर मांहि ॥२॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के उत्तर ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संबौपटाव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्नहितो भव भव विपट संधीसकरणं । स्थापनं।

॥ अथाष्टकं ॥ कुसुमलता छंद ॥

क्षीर बरन क्षीरोदध के सम उज्जल जल ले परम सुजान । श्रीजिन चरन चढ़ावत भविजन बाढ़ै पुन्य होय अघ हान ॥ मंदिरगिर की उत्तरदिश में क्षेत्र सुऐरावत शुभ थान। तहां रूपाचलपर जिन मंदिर जजत जिनेश्वर श्रीभगवान ॥ ३ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के उत्तर ऐरावतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ जलं ॥ परम सुगंधित चंदन लेकर तामैं केसर डारत हैं। श्रीसर्वज्ञ जिनेश्वर के पद पूजा कर निजतारत हैं ॥ मंदिरगिर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ सरस

सुउज्जल चंद्र किरन सम अक्षत धोय सुलावत हैं। पुंज देत जिनराज सुआगे अक्षय पद को पावत हैं॥ मंदिरगिर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी फूल मनोहर बरन बरन के लावत हैं। काम बान के नाश करन को श्रीजिन पूजन आवत हैं॥ मंदिर गिर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ गोझा फेनी मोदक खाजे ताजे तुरत बनावत हैं। क्षुधारोग के दूर करन को श्रीजिन चरण चढ़ावत हैं॥ मंदिरगिर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं ॥ जग मग जोत होत दीपक की रतन अमोलक द्युति भारी। पूजत श्रीसर्वज्ञ प्रभु को मोह तिमर को क्षयकारी ॥ मंदिरगिर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ महके धूप दसोदिश परिमल खेवत श्रीजिनवर आगे। नाश होय बसुबिध कर्मादिक ज्ञानकला तब ही जागे ॥ मंदिरगिर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ लौंग छुहारे पिस्ता किशमिश सुंदर फल भविलावत हैं॥ पूजत श्रीजिनराजचरन को मन बांछित फल पावतहैं ॥ मंदिरगिर०॥ १० ॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ बसुबिध दर्ब मिलाय गाय गुण अर्घ बनावत भरथारी। पूजत चरनकमल जिनवर के है सब को मंगलकारी ॥ मंदिरगिर० ॥ ११ ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घं ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

मंदिरगिर उत्तर दिशा, ऐरावत सुविशाल। रूपाचल जिनभवन लख, पूजो अर्घ त्रिकाल।१२।

ओंह्रीं मंदिरमेर के उत्तरदिश ऐरावत क्षेत्रसंबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घं ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

ऐरावत वर क्षेत्र में, गिर बैताड़ विशाल। मंदिर ते उत्तर दिशा, तिनकी यह जयमाल।।१३।।

पद्धड़ी ।

जै जै श्री मंदिर मेर सार । उत्तर ऐरावत क्षेत्र धार ॥ जहां छहो काल वर्तैं अशेश । षट खंडस हित भाषैं जिनेश ॥ २४ ॥ जहां भोग भूम है तीन काल । दस कल्प बृक्ष शोभै विशाल ॥ जब लागे चोथा काल आय । तब कर्म भूम विध रही छाय ॥ १५ ॥ जै जब तीर्थंकर जन्म लेंय । तब मात पिता बहु दान देंय ॥ चक्री बलहर प्रति बासदेव । पदवी धारक त्रेसठ गिनेव ॥ १६ ॥ तहां स्वेत वरन वैताड़ जान । जै तापर जिन मंदिर महान ॥ सब समोसरण रचना बिचित्र । वेदीपर सिंहासन पवित्र ॥ १७ ॥ जै तहां जिन विंब विराजमान । सतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ जै प्रात्य हार्य मंगल सुदर्व । विध यथा योग्न लहिये सुसर्व ॥ १८ ॥ सुर विद्याधर पूजैं त्रिकाल । मुख पाठ पढ़ैं जिन गुण विशाल ॥ जै नृत्य करैं संगीत सार । विद्या बल रूप अनेकधार ॥ १६ ॥ दुंदुभि बाजे बाजैं सुजोर । अनहद साढ़े बारह करोर ॥ जै जै जु करैं सब जीव आय । भवि लाल जीत बल बल सुजाय ॥ २० ॥

घत्ता दोहा ॥

विजयारधपर जिन भवन, ताकी यह जयमाल । भविजन कंठ सुहावनी, लाल नवावत भाल।
॥ इति जयमाल ॥ २१ ॥

अथाशीर्वादः कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा वर-

नन को करसकै बनाय॥ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भव जस परभव सुखदाई सुरनरपद लहै शिवपुर जाय ॥ २२ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति मंदिर मेरके उत्तर ऐरावतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजासम्पूर्णम् ॥

अथ मंदिर मेरके दक्षिण उत्तर षट कुलाचल पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ४३ ॥

अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

मंदिर गिरकी दक्षिण उत्तर षटकुल गिर सोहै सुरिशाल। तिनपर श्री जिन भवन अनूपम कनक रतन मई परम बिशाल ॥ सुर सुरपति विद्याधर सब मिल पूजत जिनपद तीनों काल। हम तिनकी आह्वानन विधकर निजघर पूज नवावैं भाल ॥ १ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके दक्षिण उत्तर षट कुलाचल पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्रा बत्रा बत्र संवौषटाह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्नहितो भव भव बिपट संधी सकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ कुसुमलताछंद ॥

उज्जल जल निर्मल अति शीतल रतन सुभारी ले भर आन। श्री सर्वज्ञ जिनेश्वर के पद पूजें भविजन उरधर ध्यान ॥ मंदिर गिरकी दक्षिण उत्तर षट कुलगिर जिनभवन महान। सुरविद्याधर करत महोत्सव जजत जिनेश्वर श्रीभगवान ॥ २ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेरके दक्षिण दिश निषध ॥१॥

महाहिमवन ॥ २ ॥ हिमवन ॥ ३ ॥ उत्तरदिश नील ॥ ४॥ रुक्म ॥ ५ ॥ सिखरनपर्वतपर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ जलं॥मलयागिरकरपूर सुचंदन अर केसर लेघरकर मांहि । भव आताप सु दूरकरन को श्रीजिनवरपद पूजन जांहि ॥ मंदिरगिर० ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं॥चंदनं ॥ अक्षत चंद्रकिरन सम उज्जल मुक्ताफल की है उनहार । पूजत श्रीजिनराज प्रभु को पुंज देत मनहरष अपार ॥ मंदिर गिर० ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ बरन बरन के फूल सुगंधित ले जिन मंदिर आवत हैं ॥ भाव भगत सों पूजा करकै जिनगुन मंगल गावत हैं॥ मंदिरगिर० ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ षट्रस पूरित रसना रंजन विंजन तुरत बनावत हैं । क्षुधारोग के दूरकरन को श्रीजिन चरन चढ़ावत हैं । मंदिर गिर० ॥६ ॥ ओं ह्रीं॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोति होत मंदिर मैं रतन अमोलिक आनधरे दीपक सों पूजैं जिनवरपद भवसागर ते पार तरे॥मंदिरगिर०॥ ७ ॥ ओं ह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृस्नागरकी धूपसुदसाविध जिनचरनन ढिग खेवत जाय । इन कर्मन के नाश करनको जिनपद पूजत मनहरषाय मंदिरगिर० ॥८॥ ओं ह्रीं॥ धूपं॥ श्रीफलदाख छुहारे पिस्ता लौंग लायची लावत हैं॥भविजन पूजतजिन चरनन को मन वांछित फल पावत हैं ॥ मंदिरगिर० ॥ ९ ॥ ओं ह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफल आठों दर्वसुलेकर अर्घ बनावत भरथारी । श्रीजिन चरनचढ़ाय गायगुण लाल सदा तिनपर वारी ॥ मंदिरगिर० ॥ १० ॥ ओं ह्रीं० ॥ अर्घं ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

मंदिरगिर दक्षिण दिशा, कुलगिर निषध सुजान । तापर जिन मंदिरबनो, पूजो अर्घ महान ॥११॥

ऊं ह्रीं मंदिर मेरके दक्षिणदिश निषधपर्वतपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घं ॥

॥ चालजोगीरासा ॥

मंदिर गिरकी दक्षिणदिश मैं कुलगिर दूजा भाई। नाममहाहिमवनता ऊपर जिन मंदिर सुखदाई॥ जजताजिनेश्वर के पद पंकज तनमन प्रीत लगाई। भावभगत सों करत महोत्सव भविजन मिल हरपाई ॥ १२॥ ऊं ह्रीं मंदिर मेरके दक्षिण दिश महाहिमवन पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घं ॥

॥ छंद ॥

मंदिरगिर दक्षिण ओर। हिमवनकुलगिर तहां जोर॥ जापर जिनमंदिर सोहै। पूजत भविजन मन मोहै ॥ १३ ॥ ऊं ह्रीं मंदिरमेर के दक्षिणदिश हिमवनपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥

॥ पद्धडी ॥

मंदिर गिर उत्तरदिश सुआन। तहांनीलनाम कुलगिर बखान॥ तापरजिनमंदिर हैं विचित्र। भवि अर्घ जजो बसु विध पवित्र ॥ १४ ॥ ऊं ह्रीं मंदिर मेर के उत्तरदिश नीलपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घं ॥

॥ अडिल ॥

मंदिर गिर की उत्तरदिश उर आनिये। कनक रतन कर जड़ित सुपरम प्रमानिये ॥ रुक्म

नाम । रपर जिनमंदिर सोहनो । पूजत अर्घ चढ़ाय भविक मन मोहनो ॥ १५ ॥ ओंह्रीं मंदिरमेर के उत्तरदिश रुक्मपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥

॥ चाल नंदीश्वर के अष्टक की ॥

मंदिरगिर उत्तर वोर,कुलगिर हैं भाई । गिर सिखरन नाम सुजोर, देखत सुखपाई ॥ तापर जिन-मंदिर जाय,पूजत सुरखगहैं । हम बसुविध अर्घ चढ़ाय, ध्यावत जिनपग हैं ॥ १६ ॥ ओंह्रीं मंदिर-मेर के उत्तरदिश सिखरनगिर नाम पर्वत पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥

॥ गीता छंद ॥

वन भद्रशाल सुमेर मंदिरनदी सीता तट मही।द्रह पांचे पांचे कहे दोऊ दिशमेर दसैं दसैं वनरही ॥ कंचन सुगिर तसु नाम जानो एकइक प्रतिमा जहां।सब एकसतजिन प्रतिजजत हम अरघ धर करमैं तहां ॥ १७ ॥ ओंह्रीं मंदिर के भद्रशालबन संबंधी सीतानदी के दोनों तट पांचे पांचे कुंड तिनके समीप दसैं दसैं कंचन गिर तिसपर एक एक जिन प्रतिमा ऐसे सर्बमिल एकसौ प्रतिमा गंध कुटी सहित सास्वती बिराजमान तिनको ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ बनभद्रशाल सुमेर मंदिर नदी सीतोदा महा । द्रह पांचे पांचे कहे दोऊ दिशमेर दसैं दसैं वनरहा ॥ कंचन सुगिर तसु नाम जानो एक-एक प्रतिमा जहां । सब एकसंत जिन प्रति जजत हम अर्घ धर कर मैं तहां ॥ १८ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके भद्रशाल वन संबंधी सीतोदा नदीके दोनों किनारे पांचे पांचे कुंड तिनके समीप दसैं दसैं कंचन गिर तिसपर एक एक जिन प्रतिमा अकीर्तम गंध कुटी सहित विराजमान तिन एकसौ प्र-

तिमा जी को ॥ ८ ॥ अर्घ ॥ मंदिर सुगिर जिन भवन सोलह वहु कुलाचल सीसहैं। पोड़स सुगिरै वक्षार ऊपर रुचिक गिर चौंतीसहैं ॥ गजदंत चार सुकूरद्रुम द्रह आठसत्तर सव जहां। नितप्रति जजो भवि भाव सेती अर्घ धर कर मैं तहां ॥ १९ ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके संबंधी अठत्तर जिनमंदिर सिद्धकूट बिराजमान तिनको पूर्णार्घ ॥ ९ ॥ मंदिर सुपूरव मानपोत्तर परे कालोदध कहा। दक्षिण सुउत्तर कारइष्वा वीच क्षेत्र सुअति लहा ॥ जिस वीच साद अनाद जिन गृह सिद्धभूम जहां जहां ॥ तिनप्रति जजो भव भाव सेती अर्घ ले करमैं तहां ॥ २० ॥ ओंह्रीं मंदिर मेरके दिशा विदिशा मध्ये कालोदध समुद्रादि मानपोत्र पर्वतपरयंत जहां जहां कीर्तम अकीर्तम जिनमंदिर होंय अथवा सिद्धभूमि होयँ तहां तहां अर्घ ॥ १० ॥

॥ अथ जयमाल दोहा ॥

मंदिरगिर के जानिये, षटकुल गिर सुविशाल। पूजा कर मनलाय कै, अब वरनूं जयमाल ॥२१॥

॥ चाल छंद ॥

पुष्कार्धवर द्वीप मैं जग सार हो, पूरव दिशा सुमहान। मंदिरमेर सुहावनो जगसार हो, कंचन वरन सुजान ॥ जान कंचन वरन गिरपर चार वन चहुंदिश कहे। जिनभवन सोलह स्वयम् सिद्ध अनादि रचना बनरहे ॥ जोजन चौरासी सहस उन्नत सिखर वन पांडुक जहां। जिनराज जन्माभिषेश मंगल अमर खगपूजैं तहां ॥ २२ ॥ ताकी दक्षिण दिश कही जगसारहो, तीन कुलाचल सार। निषध जहां हिमवन पड़ो जगसार हो, है हिमवन सुखकार ॥ सुखकार उत्तरदिश कुलाचल तीन

गिरनर सोहनो। वरनील दूजो रुक्म तीजो सिखर नौं मन मोहनो॥ तसु सीस जिनमंदिर मनोहर रतन
जडित सुराजहीं। तहां रत्नबिंब जिनेश की सतआठ अधिक बिराजहीं ॥ २३ ॥ समोसरन रचना
रची जगसारहो, मंगल दर्व विशाल। प्रात्यहार्य बसु सोहनो जगसारहो, सुरपूजैं तिहुंकाल॥ तिहुं-
काल सुरखग जजत हरषित इंद्रसहित उछाहसों। देवी सची खेचर तिया, मिल गीत गावैं भावसों॥
जहां करत नृत सांगीत सुरपति हाव भाव विचित्रता। लखिलाल भाल नवाय भविजन होय निज
सुख भोगता ॥ २४ ॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै सुरविद्याधर सवै आय। जिनराज सुपूजा करत जाय॥ जिनगुण गावैं मन हरष लाय।
जै नृत्य करैं बाजे बजाय ॥ २५ ॥ जै थेई थेई थेई धुन रही पूर। जग तारन जिनवर के हजूर॥
जै करत वीनती वार वार। जै जै प्रभु हमको तार तार॥ २६ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

षट कुलगिर पर जिनभवन, तहां श्रीजिनवर देव। जो पूजैं मन लाय कै, सुख पावैं स्वयमेव ॥२७॥
॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा वरनन

को करसकैं बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ २८ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति मंदिरमेर के दक्षिण उत्तर षट्[६] कुलाचल पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम्

इति पुष्कार्द्ध द्वीपमध्ये पूर्वदिश मंदिरमेर के संबंधी अठत्तैर जिनमंदिर सास्वते विराजमान तिनकी पूजा पाठ सम्पूर्ण ॥

अथ पुष्कार्ध द्वीपमध्ये पश्चिमादिश विद्युतमालीमेर संबंधी षोड़स[१६] जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ४४ ॥

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

विद्युत माली मेर पंचमो पुष्कार्ध वर द्वीप मझार । कंचन बरन लसै पश्चिम दिश ताऊपर सोहै वन चौंर[४] ॥ तहां श्री जिनवर बिंब विराजैं चार वरन षोडस[१६] सुखकार । तिनकी आव्हानन विध करकै हम पूजत जिन पद उरधार ॥ १ ॥ ॐह्रीं विद्युतमाली मेरके चारों वन संबंधी चौंर दिश षोडस[१६] जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटा व्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव विषट संधी सकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ कुसुमलता छंद ॥

सरस मनोहर उज्ज्वल जल ले क्षीरोदध सम लेत मँगाय । श्री जिन चरण चढ़वत भविजन जन्म अर मरन जरा दुख जाय ॥ विद्युतमाली मेर पंचमो ताके चारों वन दिश चार । तिनमैं षोडस[१६]

भवन अनूपम जजत जिनेश्वर नैन निहार ॥२॥ ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके भद्रशाल बन संबंधी पूर्व ॥१॥ दक्षिण ॥ २ ॥ पश्चिम ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ ४ ॥ नंदन बन संबंधी पूरब ॥ ५ ॥ दक्षिण ॥ ६ ॥ पश्चिम ॥ ७ ॥ उत्तर ॥ ८ ॥ सौमनस बन संबंधी पूरब ॥ ९ ॥ दक्षिण ॥ १० ॥ पश्चिम ॥ ११ ॥ उत्तर ॥ ॥ १२ ॥ पांडुक वन संबंधी पूरब ॥ १३ ॥ दक्षिण ॥ १४ ॥ पश्चिम ॥ १५ ॥ उत्तर दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥ मलया गिर करपूर सुचंदन केसर रंग भरी तहां लाय । भव आताप सुदूर करन को श्रीजिन चरनन देत चढ़ाय ॥ विद्युत्माली० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं ॥ चंदनं ॥ देवजीर सुखदास सुअक्षत उज्वल जल सों धोय बनाय । हाथ जोड़ श्रीजिनवर आगे पुंज मनोहर दीजोजाय ॥ विद्युत्माली० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतकी जुही चमेली श्रीगुलाव सुंदर महकाय । श्रीजिनबरके सन्मुख लेकर पूजत भविजन भक्त बढ़ाय ॥ विद्युत्माली० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० पुष्पं ॥ बावर घेवर मोदक खाजे ताजे गोझा तुरत बनाय क्षुधा निवारन शिवसुख कारण श्रीजिन चरन चढ़ावत आय । विद्युत्माली० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोति होत दीपककी ऐसे मणमई जोत जगाय । जिनवर चरन हरन दुख संकट तिनको पूजत सीस निवाय ॥ विद्युत्माली ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ अगर कपूर धूप दस बिध की खेवत जिन आगे हरषाय । फैली सरस सुगंध दसों दिश कर्मन पुंज सुदेत जलाय ॥ विद्युत्माली० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल अर बादाम छुहारे पिस्ता लौंग लायची लाय । चरनकमल पूजत जिनवर के शिवफल पावत कर्मखिपाय ॥ विद्युत्माली० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय गाय गुण श्रीजिनवर पद

पूजत आय। ताल मृदंग साज सब बाजत लाल सदा तिनकी बल जाय ॥ विद्युतमाली ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ अडिल ॥

विद्युतमाली मेरतनी पूरव जहां। भद्रशाल बन भूप है जिनमंदिर तहां ॥ सुर खग पूजन जांहि सुमन के चावसों। हम पूजत जिन चरन अर्घ धर भावसों ॥ ११ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमाली मेरके भद्रशालवन संबंधी पूर्वदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ दक्षिण दिश सु विशाल मेर पंचमतनी। भद्रशाल बन सघन सरस उपजावनी ॥ तहां जिनभवन निहार जजत सुरजाय के। हम पूजत जिन चरन सुअरघ चढायकै ॥ १२ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके भद्रशाल वन संबंधी दक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमाली मेरदिशा पश्चिमभनो। भद्रशालवन वीच भवन जिनवर तनो ॥ विद्याधर सुर जजत दरबबसुलाय के। हम पूजत ले अर्घ सुमन हरपाय के ॥ १३ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमाली मेरके भद्रशाल बन संबंधी पश्चिम दिशा सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमालीमेर उत्तरदिश भावनो। भद्रशाल वन भूप सरस सुहावनो ॥ जिनमंदिर सुरजाय जजत वसु दर्बले। हम पूजत जिनराय आठ विध दर्बले ॥ १४ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेर के भद्रशाल बन संबंधी उत्तरादिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ

॥ छंद ॥

विद्युतमालीमन मोहे। पूरव नंदनबन सोहे ॥ तहां श्रीजिन भवन सुहाई। नित अर्घ जजोरेभाई ॥ १५ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेर के नंदन बन संबंधी पूरब दिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ

विद्युतमाली गिरदेखो । दक्षिण नंदनवन पेखो॥जिनभवन सरस सुखदाई।पूजो भवि अर्घ चढाई॥१६॥ ओं ह्रीं विद्युतमालीमेर के नंदनवनसंबंधी दक्षिणदिश सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥अर्घं॥ विद्युतमालीगिर कहिये । पश्चिम नंदनवन लहिये ॥ जिन मंदिर की छवि भारी । भवि अर्घ जजो भरथारी ॥ १७ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके नंदनबनसंबंधी पश्चिमदिशासिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७॥ अर्घं॥ विद्युतमाली गिरजाना । नंदन वन उत्तर मानो ॥ जिनराज भवन द्युतिजोई । पूजो भविअर्घ संजोई ॥ १८ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके नंदन वन संबंधी उत्तरदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥८ अर्घं॥

॥ दोहा ॥

विद्युत माली पूर्बदिश, बनसोमनस बिशाल । जिनमंदिर मैं जाय के, पूजो अर्घ त्रिकाल ॥१९॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके सौमनसबन संबंधी पूर्बदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ ९ ॥ अर्घं ॥ दक्षिण दिश सौमनस है, विद्युतमाली तह । बसुविध अर्घ संजायके, पूजो जिनवर एह ॥ २० ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेर के सौमनसबन संबंधी दक्षिणदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ । विद्युतमाली मेरके, पश्चिम दिश जिनधाम । वनसौमनसबिपै कहो, अर्घ जजा तज काम ॥ २१ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके सौमनसबन संबंधी पश्चिमदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ ११ ॥ अर्घ॥ उत्तर बन सौमनस मैं, जिनमंदिर सुखकार । विद्युतमाली मेर ढिग, पूजो अर्घ सँवार ॥ २२ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके सौमनसबन संबंधी उत्तरदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घ ॥

॥ सुंदरी छद ॥

मेरविद्युतमाली जानिये । पूर्व पांडुकबन उर आनिये ॥ जिनभवन द्युति परम बिशाल जू । अर्घ

ले पूजत भरथाल जू ॥ २३ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पांडुकवन संबंधी पूर्वदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ मेर विद्युतमाली द्युतिघनी । दिश सुदक्षिण पांडुकबन तनी ॥ सरस जिनमंदिर तहां सोहनो । अर्घ ले पूजत मनमोहनो ॥ २४ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पांडुकवन संबंधी दक्षिणदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घ ॥ मेरविद्युतमाली मनहरे । बनसपांडुक दिशपश्चिम धरै पूजिये जिनभवन निहारके । अरघ ले सुंदर बरधार के ॥ २५ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पांडुक वन संबंधी पश्चिमादिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १५ ॥ अर्घ ॥ मेरविद्युतमाली सोहनो । वनसु पांडुक उत्तरादिश बनो ॥ सरस जिनमंदिर सुरिशाल जू । अर्घ ले पूजत भरथालजू ॥ २६ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पांडुकबन संबधी उत्तरदिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

श्री जिन वर पद वंद के, मनवच सीस निवाय । विद्युतमाली मेरकी, कहूं आरती गाय ॥ २७॥

पद्धड़ी ॥

जै विद्युतमाली मेर सार । मन हरन सुकञ्चन बरनधार ॥ जै सुंदर शोभितहै महान । नाना विध रतनन की सुखान ॥ २८ ॥ जै ताकी चारों दिश सुजान । बन चार कहे आगम प्रमान ॥ बन भद्रशाल पहलो अनूप । नंदनबन सब बनको सुभूप ॥ २९ ॥ सौमनस नाम तीजो विशाल । पांडुक चौथो सुंदर विशाल॥ जै चारों बनमें चार चार । बनरहे सुजिनमंदिर निहार ॥ ३० ॥ सब पांडस जिनवर भवन जान । चारों दिश के भाषे पुरान ॥ जै रत्नमई जगमग प्रकाश । चारन मुनि आन करैं निवास ॥ ३१ ॥ जै कनक मई कलशा सुरंग । ध्वज पंकत सोहै अति उतंग ॥ वेदीपर सिंहासन विचित्र ।

तापर सो कमल सोहै पवित्र ॥ ३२॥ जै तिनमें श्री जिन बिंब जान। सतआँठ अधिक प्रतिमा प्रमान। सिर तीनं छत्र धारैं जिनेश। चौसठ सुचमर धारैं सुरेश ॥ ३३ ॥ जै वृक्ष अशोक सोलह लहात भा मंडल भव दरशै सुसात ॥ जै सुर वरसावैं फूल आय। दुंदुभि वाजे अनहद बजाय ॥ ३४ ॥ इम प्रात्यहार्य विधरही छाय। सब मंगल दर्व रचे बनाय ॥ मनमोहन मूरत हैं जिनेंद्र । लखलोचन सहस किये सुरेंद्र ॥ ३५ ॥ जैसुरविद्याधर सबै आय । जिनचरन कमल पूजैं वनाय ॥ नाचत सुरपति अति मुदितकाय । गुणगानकरत श्रवनन सुहाय ॥ ३६ जै जै जै जै ध्वनरही पूर। जगतारनजिनवरके हजूर ॥ निजथान गये खेचर सुदेव। भविलालचरनकी करत सेव ॥

॥ घत्तादोहा ॥

विद्युतमाली मेरपर,हैं षोडँस जिनधाम। पूजासरस सुहावनी,बांचैंभवितजकाम ॥३८॥इतिजयमाल॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलताछंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताकोपाठ पढै मनलाय । जाके पुन्यतनी अतिमहिमा बरनन को करसकै वनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजसपरभव सुखदाई सुरनरपद लह शिवपुरजाय ॥ ३९ ॥इति आशीर्वादः ॥

इति विद्युतमाली मेरके चारोंदिश चारवन सबंधी षोडँस जिनमंदिर पूजा संपूर्णम्-

अथ विद्युतमालीमेरके चारोंविदिशा मध्ये चारगजदंतपर सिद्धकूट चार जिनमंदिर पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ४५ ॥

|| अथस्थापना || कुसुमलताछंद ||

विद्युत्मालीमेर पांचमो ताकी विदिशा मैं पहचान । कंचन बरन रतनमई सुंदर कहेचार गजदंत वखान ॥ तिनपर श्रीजिन भवन अनूपम तहां बिराजैं श्रीभगवान । तिनकी आव्हानन विधकरके हम पूजत हैं अति सुखमान ॥ १ ॥ ओं ह्रीं विद्युत्माली मेरके चारों विदिशामध्ये चारगजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रा वत्र संवौषटा व्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्नहितो भव भव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं योगीरासा ॥

उज्जल जल ले क्षीरोदधको रतन कटोरी धारो । सरस मनोहर चरण जिनेश्वर तिनपर लेकर ढारो ॥ विद्युत्माली मेर पांचमो ताकी विदिशा चारो । गज दंतनपर श्रीजिन मंदिर पूजत भवि अघ टारो ॥ २ ॥ ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके अग्नि दिश सौमनस ॥ १ ॥ नैऋत दिश विद्युत्प्रभ ॥ २ ॥ वाईव दिश मालवान ॥ ३ ॥ ईशान दिश गंधमादन नाम गजदंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥४॥ ॥ जलं ॥ मलया गिर करपूर सुचंदन केसर रंग सुगारो । जजत जिनेश्वर के पद पंकज भव आताप निवारो ॥ विद्युत्माली० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत सुंदर धोय धरीजे । श्री जिनवरके सन्मुख लेकर पुंज मनोहर दीजै ॥ विद्युत्माली० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कल्पवृक्ष के फूल मनोहर वरन वरन के लावो । श्रीजिन चरनकमल तिन पूजो हरष हरप गुण गावो ॥ विद्युत्माली० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ बावर घेबर मोदक खाजे ताजे तुरत बनावो । क्षुधा-

हरन रसना सुखदाई श्रीजिनचरन चढ़ावो ॥ विद्युतमाली० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं ॥ मणमई दीप अमोलिक लेकर जिन मंदिरमैं आवो । आरतिकर जिनराज चरनकी जगमग जोति जगावो ॥ विद्युतमाली०॥७॥ओंह्रीं॥ दीपं॥ अगर कपूर सुगंध दसौं दिश फैलै बास सुनीको खेवत भविजन लेधूपायन सनमुख जिनवर जीके ॥ विद्युतमाली० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग सुपारी पिस्ता किशमिश दाख मँगावो । मीठे सरस सचिक्वन फल ले जिनपद आन चढ़ावो ॥ विद्युतमाली०९ ॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय गाय गुण श्रीजिन मंदिर जाइये । भावभगत सों पूजा करके बहु विध पुन्य उपजाइये ॥ विद्युतमाली० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ

अथ प्रत्येकार्घ ॥ सुंदरी छंद ॥

मेर विद्युतमाली जानिये। अग्नि दिश सौमनस वखानिये॥ नागदंत सिखर जिन धामजू । अर्घ ले-पूजत तज कामजू ॥ ११ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके अग्नि दिश सौमनस नाम गज दंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ॥ मेर विद्युतमालीते गिनो । है दिशा नैरित्र सुहावनो ॥ नाग दंत सुविद्युत्प्रभ जहां । जिन भवन ले अर्घ जजो तहां ॥ १२ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके नैरित्रदिशा विद्युत्प्रभ नाम गज दंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ मेर विद्युत्माली भावनो पवन दिश गज दंत सुहावनो॥ मालवान सिखर जिन गेहजू । अर्घसों पूजत धर नेहजू ॥ १३ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके बाइव दिशमालवान नाम गज दंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ मेर-विद्युतमाली सोहनो दिश ईसान सरसमन मोहनो ॥ गंधमादन है गजदंतज ! जिन भवन पूजैं भवि

संतजू ॥ १ ॥ ॐह्रीं विद्युतमाली मेरके ईसान दिश गंधमादन नाम गज दंतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घं ॥

॥ अथजयमाल ॥ दोहा ॥

विद्युतमाली मेरकी, विदिशा मांहिबिशाल । गजदंतन पर जिन भवन, तिनकीसुन जयमाल १५

॥ पद्धड़ी ॥

जै पुष्कार्ध वर दीपसार। ताकी पश्चिम दिश मैं निहार ॥ जै विद्युतमाली मेरजान। कंचन द्युति मई शोभै महान ॥ १६ ॥ उन्नतजोजन अस्सी हज़ार। अर चारसहस अधिके बिचार ॥ जैताकी विदिशा चारजान। चारों गजदंत कहेपुरान ॥ १७ ॥ जै तापर जिन मंदिर रिशाल। तहांरतन मई प्रतिमा बिशाल। सतऑठ अधिक सुरनमत आय ॥ पद्मासन छवि वरनी नजाय ॥ १८ ॥ सवजुदे जुदे दरशैं जिनेश। यह आतिशय लख हरषैं सुरेश॥तब सुरपति नैन किये हजार। नहितृप्त होंय फिर फिर निहार ॥ १९ ॥ जै वसुविधदर्ब लिये बिशाल । जिनराज चरन पूजत त्रिकाल ॥ सब बिद्याधर के ईश आय। जिन चरन कमल परसीस नाय ॥ २०॥ सुर नृत्यकरत संगीत सार। जै नंद वृद्ध भापत संभार ॥ जै सुर खेचर तिय करत गान । इंद्रानी हंस तोरत जुतान ॥ २१ ॥ यहविध सुरखग कौतुक कराय। हम शक्ति हीन पहुंचो नजाय ॥ अपने घर पूजत श्रीजिनंद। लख दर्श लाल पायो अनंद ॥ २२ ॥

॥ घत्ता ॥ दोहा ॥

विद्युतमाली मेरके, कहे चारगजदंत। तिनकी यह पूजा भई, बांचत भविजन संत २३ इति जयमाल

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय । जाके पुन्य तनी अतिमहिमा बरनन को करसके वनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़े अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ २४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति विद्युत्माली मेरकी विदिशामध्ये चारगजदंतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ विद्युत्मालीमेरके उत्तरदिश ईसानकौन संबंधी जंबूवृक्षपर अर दक्षिणदिश नैरित्रकौन संबंधी सालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ४६ ॥

अथस्थापना ॥ कुसुमलताछंद॥

विद्युत्मालीमेर पांचमो ताकी उत्तरदिश ईसान । अर दक्षिण नैरित्रकौण दिग जंबूशालमली तरु जान॥तिनपर श्रीजिन भवन अकीर्तम पूजत सुर विद्याधर आन । हम तिनकी आव्हानन करके जिनपद पूजत आनंदमान॥ १ ॥ओं ह्रीं विद्युत्माली मेरके उत्तरदिश ईशानकौन संबंधी जंबूबृक्ष अर दक्षिणनैरित्र कौन सालमली वृक्षकी पूर्व शाखापर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रा वत्र संवोषटा व्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चालछंद ॥

सुकारन पूजत हैं । भवि श्रीजिनवरजी के पाय सुकारन पूजत हैं ॥ टेक ॥ सरस मनोहर उज्जलजल ले रतन कटोरी भरकै । जन्मजरा दुख दूर करनको श्रीजिन सन्मुख धरकै ॥ सुकारन० ॥ विद्युतमाली गिर उत्तरदिश अर दक्षिणदिश सोहै । जंबू सालमली शाखापर जिनमंदिर मनमोहै ॥ सुकारन० ॥ २ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके उत्तरदिश ईसानकौन संबंधी जंबूवृक्ष ॥ १ ॥ नैरित्रकौन संबंधी साल्मली वृक्ष की पूर्व शाखापर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन अरु केसर घस कर्पूर मिलावो । भवआताप निवारन कारन श्रीजिन चरन चढ़ावो ॥ सुकारन० ॥ विद्युतमाली० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ ॥ चंदनं ॥ मुक्ताफल सम उज्जल अक्षत मलमल धोय धरीजे । श्रीजिन सन्मुख हाथ जोड़कर पुंज मनोहर दीजे ॥ सुकारन० ॥ विद्युतमाली० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतुकी जुही चमेली श्रीगुलाब सुखदाई।श्रीजिन चरन चढ़ावत भविजन परम महा सुखपाई॥सुकारन०॥विद्युतमाली० ॥५॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत बनावो । क्षुधा विनाशक रुचिपरकाशक श्रीजिन चरन चढ़ावो ॥ सुकारन० ॥ विद्युतमाली० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ मणमई दीप अमोलिक लेकर कनक रकावी धारो । श्रीजिन मंदिर पूजन जाइये जगमग होत दिवालो ॥ सुकारन०॥ विद्युतमाली० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर करपूर मिलकर दसविध धूप बनावो । श्रीजिन-चरके आगे धरके खेवत पुन्य बढ़ावो ॥ सुकारन० ॥ विद्युतमाली० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल

अर बादाम छुहारे पिस्ता लौंग सुपारी । जजत जिनेश्वर मन वच तन भवि पावैं शिवफल भारी । ॥ सुकारन० ॥ विद्युतमाली० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय गायगुण नाचत ताल वजावैं । वल वल जात लाल चरननपर पूजत मनहरषावैं ॥ सुकारन० ॥ विद्युतमाली० ॥ १० ॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घं ॥

॥ अथप्रत्येकार्घ ॥ सोरठा ॥

उत्तरकौन इसान विद्युतमाली मेरते । जिन मंदिर धरध्यान, जंबूतरुपर नितजजो ॥ ११॥ ओं ह्रीं विद्युतमाली मेरके उत्तर दिश ईसानकौन जंबू बृक्षकी पूर्व शाखापर सिद्धकूट जिन मंदिरभ्यो ॥ १ ॥ अर्घं ॥ दक्षिण कौन नैरित्र, विद्युतमाली से गिनो । जिन मंदिर सु पवित्र, सालमली द्रुमपरजजो ॥ १२॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके दक्षिण नैरित्र कौन सालमली वृक्षकी पूर्वशाखापर संस्थित सिद्धकूट जिन मंदिरभ्यो ॥ २ ॥ अर्घं ॥

अथ जयमाल दोहा ॥

विद्युतमाली मेरढिग, जुगमवृक्ष सुविशाल । तिनपर जिन मंदिर वने, तिनकी सुन जयमाल १३

पद्धड़ी ॥

जै विद्युतमाली मेरसार । जै कंचन बरन सुरंगधार ॥ जै ताकी उत्तर दिश इसान । तरु जंबूतरु सोहै महान ॥ १४ ॥ नैरित्र कौन दक्षिण विशाल । तहां सालमली द्रुम है रिशाल ॥ जैजुगमबृक्ष पिरथी जुकाय । रचना अनादि बरनी न जाय ॥ १५ ॥ जै चारों दिश शाखा जुचार । फल फूल पत्रयुत सघनडार ॥ पूरब दिश शाखा पर सुजान । जै श्रीजिन भवन विराजमान ॥ १६ ॥ जैसमो-

सरण रचना प्रमान । सतँआठ अधिक प्रतिमा प्रमान॥जै रतन मई द्युति है विशाल। सुर विद्याधर पूजैं त्रिकाल । १७ ॥ बसुप्रात्य हार्य मंगल सुदर्व। है यथा योग्य थानक जुसर्व ॥ प्रभु तुम गुण महिमा अगम अपार । वरनत सुरगुरु पावैं नपार ॥ १८ ॥ हम पूजत यां निज सीस नाय । वसुदर्व सरस-सुंदर बनाय ॥ श्रावक श्रावकनी हर्ष धार । जिनराज दरश नैनन निहार ॥ १९ ॥ मुख पाठपढैं जैजै जिनेंद्र । तुम चरन कमल बंदत सुरेंद्र । करजोर शीसनावत सुलाल । भव सिंधपारकीजे दयाल॥२०॥

॥घत्तादोहा ॥

जंबूसालमलीतनी,पूजा सरस विशाल जोंरचैं मनलायके,तिनके भागविशाल२१इतिजयमाल॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढैं मनलाय।जाके पुन्यतनीअतिमहिमा बरनन को कर सकै वनाय॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढै अधि सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लह शिवपुर जाय ॥ २२॥ इत्याशीर्वादः॥

इति विद्युत्माली मेरके जम्बूसालमली वृक्षपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ विद्युत्माली मेर के पूर्वविदेह संबंधी आठवक्षारगिर पर सिद्धकूट जिन मंदिरपूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ४७ ॥

अथस्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

विद्युत्माली मेर पंचमो ताकी पूरबदिशा बताय। गिरबक्षार आठ सुखकारी कंचन बरन कहे जिन

राय ॥ तिनपर रत्नमई जिन मंदिरबने परम सुंदर सुखदाय । जिनकी आव्हानन विधकरके हमपूजतहैं मंगलगाय ॥ १ ॥ ओंह्रीं बिद्युतमाली मेरके पूरब विदेह संबंधी आठवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरे भ्यो ॥ अत्रावत्रा वत्र संवोषटा व्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं अत्रमम सन्निहितो भवभव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ योगीरासा ॥

क्षीरोदधसम उज्जल जल लेरत्न सुभारी भरिये।धारदेत श्री जिनवर आगे जन्म जरादख हरिये॥ पंचम मेरतनी पूरवदिश बसु बक्षार जु सोहै।तिनपर श्रीजिनभवन अनूपम सुरनरके मनमोहै॥२॥ओंह्रीं विद्युतमालीमेरके पूरब बिदेह संबधीपश्चात्य ॥१॥चित्रकूट॥२॥पद्म॥३ नाबिन॥४॥त्रिकूट॥५॥प्राच्य॥६॥ बैश्रवण ॥ ७ ॥ अंजन नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ जलं ॥ मलियागिर करपूर सुचंदन अरुकेसर घस नीकी। पूजाकरत हरषउर धरके श्री जिनबर प्रभुजीकी ॥ पंचम मेर० ॥ ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० । चंदनं ॥ देवजीर सुखदास सुअक्षत मुक्ताफल समलीजे । जजत जिनेश्वर के पद पंकज पुंज मनोहर दीजे ॥ पंचममेर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० । अक्षतं ॥ कमल केतकी जुही चमेली श्री-गुलाव तहां महकै। पूजत चरन कमल जिनवर के परम सुगंधित लहकै॥ पंचममेर०॥ओंह्रीं०॥पुष्पं॥नाना बिधके बिंजन ताजे खाजे तुरत बनावो। हाथजोर श्रीजिनवर आगे पूजत मनहरपावो ॥ पंचममेर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं०॥ नैवेद्यं॥मणमई दीप अमोलिक लेकर श्रीजिनचरन चढावै। मोह तिमरके दूरकरनको और उपाव न पावै॥पंचममेर० ॥७॥ ओं ह्रीं ॥ दीपं ॥ कृश्नागर करपूर मिलाकर धूपदसाङ्गीखेवो । अष्टकर्म

के जारन कारन श्रीजिनवरपदसेवो ॥ पंचममेर० । ८ ॥ ॐ ह्रीं० । धूपं । लौंग छुहारे पिस्ता नीके अखादाम सुलावो ॥ श्रीजिनचरण चढावत भविजन मोक्षमहाफल पावो ॥ पंचममेर० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं ॥ फलं ॥ जलफल अर्घवनाय गायगुण पूजत श्रीजिनजीको । वलवलजात लालचरननपर यह कारज है नीको ॥ पंचममेर० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं० अर्घं ॥

॥ अथ प्रत्येक घं ॥ अडिल ॥

विद्युतमाली मेर दिशा पूरब कहा । गिर पश्चात्य सुनाम सरस सुंदर जहां ॥ तापर श्रीजिन भवन रतनमई मनहरैं । वसुविध अर्घ सँजोय भविक पूजाकरैं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं विद्युतमाली मेरके पूरब विदेह संबंधी पश्चात्य नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घं ॥ विद्युतमाली मेर दिशा पूरव लई । चित्रकूट वक्षार सुगिर कंचन मई । जिनमंदिर गिरसीस विराजत सोहनो । पूजो अर्घ चढाय भविक मनमोहनो ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं विद्युतमाली मेरके पूरब विदेह संबंधी चित्रकूट नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ २ अर्घ ॥ विद्युतमाली मेर नाम पूरब कहो । पद्मनाम बक्षार अधिक उपमा कहो ॥ तापर जिनवर धाम अमर खग नित जजैं । हम पूजत तजकाम अर्घ ले गुण भजैं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं विद्युतमाली मेरके पूरबविदेह संबंधी पद्मनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन-मंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमाली मेर दिशा पूरव बनी । नलिन नाम बक्षार विराजत द्युतिघनी ॥ स्वयमसिद्ध जिनधाम रतन प्रतिमा जहां । पूजैं मनवचकाय भविक वसुविध तहां ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं विद्युतमाली मेर के पूरव विदेह संबंधी नलिन नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घं ॥

॥ दोहा ॥

विद्युतगिर पूरबदिशा, गिर त्रिकूट बक्षार । तापर जिनमंदिर बने, अर्घ जजो भरथार ॥ १५ ॥
ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके पूरब बिदेह संबंधी त्रिकूट नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥
॥ अर्घ ॥ पूरब पंचममेर के. प्राच्यनाम बक्षार । तहां जिनमंदिर निरखकै, पूजो अर्घ संभार ॥ १६ ॥
ओंह्रीं विद्युत्मालीमेर के पूरब बिदेह संबंधी प्राच्यनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥
॥ अर्घ ॥ पंचममेर सुहावनो, पूरबदिश अभिराम । नाम वैश्रवण सिखरपर, पूजो जिनवरधाम ॥ १७ ॥
ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके पूरबविदह संबंधी वैश्रवण नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥
॥ अर्घ ॥ विद्युत्माली मेरके, पूरबदिशा रिशाल । अंजनगिरपर जिनभवन, अर्घ जजत भविलाल
॥ १८ ॥ ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके पूरबबिदेह संबंधी अंजन नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥
॥ ८ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

विद्युत्माली पूर्बदिश, गिरवक्षार बिशाल । तिनपर जिनमंदिर जजो, अबबरनूं जयमाल ॥ १९ ॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै विद्युत्माली मेर सार । जै ताकी पूरबदिश निहार ॥ जहां षोडस[१६] देश बिदेह थान । तहां चौथो-काल बिराजमान ॥ २० ॥ जै तीर्थंकर दोय विरहमान । श्रीबीरसैन महाभद्रजान ॥ उत्कृष्ट जीव उपजैं अपार । चक्री हलधर प्रतिहर मुरार ॥ २१ ॥ जैश्रीमुनिराज करैं विहार । धर्मोपदेश भाषैं विचार ॥ श्रावक सम्यक् दृष्टी अशेष । व्रत शील दया पालैं विशेष ॥ २२ ॥ बक्षार आठ गिरपरो

आय । तिसपर जिनमंदिर जगमगाय ॥ जे रतन जड़ित कंचन सुरंग। बेदीपर कलसा अति उतंग ॥ २३ ॥ मणमई प्रतिमा सुबिराजमान । सतआंठ अधिक जिनवर वखान ॥ तिंह काल सचीपति नमत आय । वसुदर्व सहित पूजत सुपाय ॥ २४ ॥ खेचर खेचरनी लख स्वरूप । निज जन्म सफल मानत सुभूप ॥ निरजर निरजरनी करत गान। सौधर्म सची तोरत जुतान ॥ २५ ॥ सुरनृत्य करैं बाजे बजाय । जिनराज सभी निरखैं अघाय ॥ जिनचरन कमलपर सीस नाय । भविलाल सदा बल-बल सुजाय ॥ २६ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

धन्य धन्य जिनके चरन, जे पूजत सुबिशाल। तिनपर बल बल जात हैं, भक्ति भाव धर लाल २७
इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा वर्णन को करसकैं बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुख-दाई सुरनर पदलहै शिवपुरजाय ॥ २८ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति विद्युतमाली मेरके पूरवविदेह संबंधी आंठबक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ विद्युतमाली मेरके पश्चिमविदेह संबंधी आंठ बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ४८ ॥

॥ कुसुमलता छंद ॥

विद्युतमाली मेरपंचमें ताकी पश्चिमदिशा विचार। गिरवक्षार आठ तहां राजैं कंचन बरन सुनैन निहार ॥ तिनपर श्रीजिन मंदिर जानो समोसरन रचना सुखकार। पूजा करत तहां सुरखेचर हम पूजत निजघर हितधार ॥ १ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिमबिदेह संबंधी आठ बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं। अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चाल कातकी की ॥

प्रानी श्रीजिनबर पद पूजिये॥ प्रानी उज्जल जल आतिसीयरो मानो मुक्ताफल उनहार। प्रानी श्री सर्वज्ञ जिनेश के, पद पूजत पुन्य अपार ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली मेरके, पश्चिम दिश वसु बक्षार। प्रानी तहां जिन मंदिर सोहनो, भवि पूजत अष्ट प्रकार ॥ प्रानी श्रीजिन० ॥ २ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी शब्दवान ॥ १ ॥ बिजयवान ॥ २ ॥ आसीविख ॥ ॥ ३ ॥ सुखावह ॥ ४ ॥ चंद्र ॥५॥ सूर्य ॥ ६ ॥ देव ॥७॥ नाग नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ जलं ॥ प्रानी चंदन केसर गारकै, पूजत पद श्रीभगवान। प्रानी भव आताप निवारकै, भवि पावत अविचल थान ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं॥ प्रानी अक्षत सरस सुहावने,ले उज्जल वरन बिशाल। प्रानी श्रीजिन सन्मुख पुंजदे,पावत अक्षय पद हाल ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ प्रानी परम सुगंधित फूलले

जिन मंदिर भीतर जाय। प्रानी मन वच काय लगायकै, जिनराज सुचरण चढ़ाय ॥ प्रानी श्री० प्रानी विद्युतमाली० ॥ ५ ॥ ऊँह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ प्रानी फेनी मोदक आददे, बहु भांतन के पकवान प्रानी कंचन थाल भरायके, पूजत जिन चरण महान ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ ६ ॥ ऊँह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ प्रानी रत्न अमोलिक थालमैं, धर पूजत प्रीत लगाय। प्रानी जगमग जोत सु होतहै, ले श्रीजिनचरण चढ़ाय ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ ७ ॥ ऊँह्रीं० ॥ दीपं ॥ प्रानी अगर कपूर मिलाय कै, ले दस विध धूप बनाय। प्रानी श्रीजिन आगै खेयिये, सब कर्म पुंज जर जाय ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ ८ ॥ ऊँह्रीं० ॥ धूपं ॥ प्रानी लौंग छुहारे आदिदे, फलले उत्कृष्टमहान। प्रानी पूजत श्रीजिनराजको, फल पावै मुक्ति निदान ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली ॥ ९ ॥ ऊँह्रीं० ॥ फलं ॥ प्रानी जल फल आठोदर्वले, भवि अर्घ बनावत लाय। प्रानी प्रभु पद पूजत भावसों, भवि लाल सुमंगल गाय ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ १० ॥ ऊँह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथप्रत्येकार्घ ॥ अडिल ॥

विद्युतमाली मेर दिशा पश्चिम जहां। शब्द वान वक्षार बिराजत हैं तहां ॥ तागिर ऊपर धाम सरस सुखदायजू। पूजो अर्घ त्रिकाल सुमन बचकायजू ॥ ११ ॥ ऊँ ह्रीं बिद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी शब्दवान नाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ बिद्युतमालीते पश्चिम दिश मानिये। विजयवान वक्षार सरस उर आनिये। तहां जिनभवन विशाल रतन द्युत सोहनो।

वसु विध अर्घ चढाय देत मन मोहनो ॥ १२ ॥ उँ ह्रीं बिद्युतमाली मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी विजयवाननाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ बिद्युतमाली मेरतनी पश्चिमदिशा। आसी विख बक्षार सिखर सुंदर लसा ॥ तापर श्रीजिन गेह रतन प्रतिमा तहां । नितप्रतिअर्घ संजोय भविक पूजैं जहां ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं बिद्युतमाली मेरके पश्चिमविदेहसंबंधी आसीविखनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ॥बिद्युतमाली के पश्चिम दिश सारहै। नाम सुखावहतासपड़ों वक्षार है ॥ जिनमंदिरगिर सीस विराजत सारजू । पूजो भविक त्रिकाललहै भवि पारजू ॥ १४ ॥ उँ ह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी सुखावह नाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ४अर्घ

॥ दोहा ॥

विद्युत गिर पश्चिमदिशा, चंद्रनाम बक्षार। जिनमंदिर सुंदर तहां, पूजो अर्घ संवार॥ १५। उँ ह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी चंद्रनाम वक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ पश्चिम पंचम मेरते, सूर्यनाम गिरसोय । श्रीजिन भवन निहारकै, अर्घ जजूं मदखोय ॥ १६ ॥ उँ ह्रीं बिद्युतमाली मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी सूर्यनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ पंचम गिर पश्चिम गिनो, नागनाम बक्षार। श्रीजिनमंदिर जायकै, अर्घजजूं भरथार ॥ १७ ॥ उँ ह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिमबिदेह संबंधी नागनाम वक्षारगिरपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥अर्घ ॥ पश्चिम बिद्युतमेरके, देवनाम बक्षार । तापर जिनवर भवन लख, पूजो भव उरधार ॥ १८॥ उँ ह्रीं बिद्युतमाली मेरके पश्चिमबिदेह संबंधी देवनाम बक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥

॥ अथजयमाल ॥ दोहा ॥

पंचमगिर पश्चिमदिशा,वसु वक्षार विशाल।तिनपर जिनमंदिर जजो,अववरनूं जयमाल॥ १९॥

पद्धडी ॥

जै जै श्री पंचम मेर सार। जै ताकी पश्चिम दिश विचार॥ जै षोडस देश विदेह जान। जै तीर्थंकर दोय विरहमान॥ २०॥ जै जै जिन देव सुजस जिनेन्द्र। जै अजित बीर्य मुख पूर्न चंद॥ जै तिहूं काल वानी खिरंत। जग जीव सुनत आनँद लहंत॥ २१॥ जहां चौथो काल रहै सदीव। तहां कर्म भूम वरतैं सुजीव॥ सब पदवी धारक पुरुप जान। बलहर प्रतिहर चक्री महान॥ २२॥ जै श्रीमुनिराज करैं विहार। धर्मोपदेश भाषैं विचार॥ जै ताको भविजन सुनैं कान। जै जिन आतम को धरैं ध्यान॥ २३॥ जै शिव मारग बरतै प्रसिद्ध।भविकर्म नाशगत लहैं सिद्ध॥गिर आठ पड़ो वक्षारसार। तिनपर जिन मंदिर द्युति अपार।२४॥जै रत्नमई प्रतिमाजिनेश। सतआँठअधिक पूजत सुरेश॥ जै चतुरन काय देवआय। निज निज नियोग कौतुक कराय॥ २५॥ सब विद्याधरके ईश जाय। जिन चर्न कमल पर सीसनाय॥ मुख पाठ पढैं जय जय त्रिकाल। लखजन्म सफल मानत सुलाल॥ २६॥

॥ घत्तादोहा ॥

यह जयमाल विशाल है, जिनगुण गही बनाय। धन्यभाग वह पुरुप के, जो बाँचै मनलाय२७

इतिजयमाल॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिनभवन अकीर्तम ताकोपाठ पढै मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा वरनन को करसकै वनाय॥ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढै अधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुर जाय ॥ २८ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी आठवक्षार गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिर पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ विद्युत्माली मेरके पूर्वविदेह संबंधी षोडस विजयार्ध पर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः नंबर ॥ ४९ ॥

अथस्थापना ॥ चालछंद ॥

विद्युतमाली गिरजानो । दिशपूरव परम प्रवानो ॥ षोडस रूपाचल राजें । जिनमंदिरतहां विराजें ॥१॥ सुर विद्याधरतहां आवैं। पुजाकर पुन्य बढावैं ॥ हमशक्ति हीनहैं भाई।पूजा निजघर जिनराई ॥२॥ ऊं ह्रीं विद्युतमाली मेरके पूर्वविदेह संबंधी षोडस रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटा व्हाननं । अत्रातिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ अडिल ॥

क्षीरोदध सम उज्जल जल ले चावसों । पूजत श्री जिन चरन सुसुंदर भावसों ॥ विद्युतगिर पूरवदिश रूपाचल जहां । षोडस मंदिर मांहि सुजिन पूजो तहां ॥ ३ ॥ ऊंह्रीं विद्युत्माली मेरके

पूर्वविदेह संबंधी कक्षा ॥ १ ॥ सुकक्षा ॥ २ ॥ महाकक्षा ॥ ३ ॥ कक्षकावती ॥ ४ ॥ आवर्ता ॥ ५ ॥ मंगलावती ॥ ६ ॥ पुष्कला ॥ ७ ॥ पुष्कलावती ॥ ८ ॥ वक्षा ॥ ९ ॥ सुवक्षा ॥ १० ॥ महावक्षा ॥ ११ ॥ वत्सकावती ॥ १२ ॥ रम्य ॥ १३ ॥ सुरम्य ॥ १४ ॥ रमणी ॥ १५ ॥ मंगलावतीदेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन केसर जुमिलायकै । जजन जिनेश्वर चरन सुप्रीत लगायकै ॥ विद्युतगिर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ चंद्रकिरन सम उज्जल अक्षत लीजिये । श्रीजिन आगे पुंज मनोहर दीजिये ॥ विद्युतगिर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ नानाविध के फूल सुगंधित लाय कै । पूजत जिनवर चरन सुमन हरषाय कै ॥ विद्युतगिर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ ॥ पुष्पं ॥ बावर घेवर मोदक तुरत बनाय कै । श्रीसर्वज्ञ चरन को पूजत जायकै ॥ विद्युतगिर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ ॥ नैवेद्यं ॥ जगमग जोत प्रकाश सुदीपक धर तहां । जजत जिनेश्वर चरन बिराजत हैं तहां ॥ ॥ विद्युतगिर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ परमलता गुण धूप मनोहर लेय कै । ले श्रीजिन वर आगे देत सुखेय कै ॥ विद्युतगिर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ फल अतिमिष्ट सुइष्ट सरस रस सोंभरे । ले सुंदर भरथार सुजिन आगै धरे ॥ विद्युतगिर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ आठों दरब मिलाय सुअर्घ बनायकै । श्रीजिन चरन चढ़ावो भविमन लायकै ॥ विद्युतगिर० ॥ ११ ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

विद्युतगिर पूरवदिशा, कक्षा देश महान । रूपाचलपर जिन भवन, अर्घ जजो धरध्यान ॥ १२ ॥

ओंह्रीं विद्युतमाली मेरुके पूरव बिदेह संबंधी कक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥

॥ १ ॥ अर्घ॥ पूरव विद्युतमेरते, देश सुकक्षा सार । जिनमंदिर बैताड़पर, पूजो अर्घ संभार ॥१३॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पूर्वबिदेह संबंधी सुकक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ ॥ २ ॥ अर्घ ॥ देश महा कक्षा लसै, मेरपूर्बदिश ओर । बिजयारध जिनगेह लख, अर्घ जजो कर-जोर ॥ १४ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पूरवबिदेह संबंधी महाकक्षादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ पूरब पंचममेर के, कक्षकावती देश । बिजयारधपर जिनसुगृह, पूजा अर्घ विशेश ॥ १५ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पूरबबिदेहसंबंधी कक्षकावती देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ । पंचम गिर पूरब लसै, देश अवर्तानाम । बिजयारधके सिखर पर, पूजो जिन वर धाम ॥ १६ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमाली मेरके पूरब विदेह संबंधी आवर्ता देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ ५॥ अर्घ ॥ मेर सुविद्युत पूर्वदिश, रूपाचल गिर सीश मंगलावती देश मैं, पूजों पद जगदीश ॥ १७ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमाली मेरके पूर्व विदेह संबंधी मंगलावती देश संस्थितरूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो । ६ ॥ अर्घ ॥ विद्युतगिरते पूर्व है, देश पुष्कला जान । गिरबैताडसु सिखर चढ, पूजो श्रीजिन थान ॥ १८ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमाला मेरके पूर्व विदेह संबंधी पुष्कला देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥७॥ अर्घ ॥ पुष्कलावती देश में । रूपाचल गिर जोय । मेर पूर्व मंदिर सुजिन, जजो अष्ट मद खोय ॥ १९ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमाली मेर के पूर्व विदेह संबंधी पुष्कलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥८॥ अर्घ ॥

॥ सोरठा ॥

विद्युतमाली नाम, पूरब नक्षादेश हे । जिन मंदिर अभिराम, विजयारध गिरपर जजो ॥ २० ॥ओं-

ह्रीं विद्युत्माली मेर के पूर्व विदेह संबंधी वक्षादेश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥६॥ अर्घ ॥ देश सुवक्षा सार, पूरब विद्युत मेरते । श्रीजिन भवन निहार, पूजो गिर बैताड पर ॥ २१ ॥ ओं ह्रीं विद्युत्माली मेरके पूर्व बिदेह संबंधी सुवक्षादेश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ ॥ विद्युत पूरब द्वार, देश महावक्षा बसै । जिन मंदिर सुखकार, रूपाचल पर पूजिये ॥ २२ ॥ ओं ह्रीं विद्युत्माली मेरके पूर्व बिदेह संबंधी महावक्षा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घं । वत्सकावती देश, पूरब पंचम मेरके । रूपाचल गिर वेश, तापर जिन मंदिर जजो ॥ २३ ॥ ओं ह्रीं विद्युत्माली मेरके पूर्व विदेह संबधी वत्सकावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घ ॥ विद्युत पूरब जान, रम्यादेश सुहावनो । रूपाचल जिनथान, वसु विध पूजो भावसों ॥ २४ ॥ ओं ह्रीं विद्युत्माली मेरके पूर्व विदेह संबंधी रम्यादेश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ पंचम गिर सुखकार, पूरब देश सुरम्य है । अर्घ जजूं भरथार जिन मंदिर विजयार्ध के ॥ २५ ॥ ओं ह्रीं विद्युत्मालो मेरके पूर्व विदेह संबंधी सुरम्या देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥१४॥अर्घ॥ विद्युतमालीमेर पूरब रमणी देश मैं । विजयारध गिरहेर, श्रीजिन मंदिर नित जजो ॥ २६ ॥ ओं ह्रीं विद्युत्माली मेरके पूर्व विदेह संबंधी रमणी देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १५ ॥ अर्घ ॥

सुन्दरी छंद ॥

मेरविद्युत्माली जानिये । मंगलावती देश बखानिये ॥ रूपागिर जिन भवन विशालजू । अर्घ

ले पूजत भविलालजू ॥ २७ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पूरब बिदेह संबंधी मंगलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घ ॥

अथजयमाल ॥ दोहा ॥

स्वेतवरन [१६]पोडसलसैं, रूपाचलसु विशाल। तिनपर श्रीजिनभवनहैं, तिनकी यह जयमाल ॥२८॥

पद्धड़ी ॥

जै विद्युतमाली मेरजान । जै कनक बरन सुंदर महान ॥ जै ताकी पूरब दिश मंझार । जै [१६]पोडस देश विदेह सार ॥ २९ ॥ जै चौथाकाल रहैसदीव । सब पुन्य पुरुष उपजैं सुजीव ॥ जै कर्म भूम वरतै सुरीत । भविजीवतरैं बसु कर्म जीत ॥ ३० ॥ जै क्षेत्र वीच सुंदर स्वरूप । बैताड़ पड़ो [१६]पोडस अनूप ॥ जै स्वेत वरन शशिकिरण जान । मानोचंद्र क्रांति मणिगिर प्रमान ॥ ३१ ॥ जै तापर जिन मंदिर विशाल । जै कनक वरन मणि जड़ितलाल ॥ जै ध्वज पंकत सोहै उतंग । मन हरन कलश कंचन सुरंग ॥ ३२ ॥ जै प्रात्य हार्य मंगल सुदर्व । जै समोसरन रचना सुसर्व ॥ जै सिंहासन पर कमल जान । [१०८]संतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ ३३ ॥ जै सुरपति विद्याधर महान॥ जे पूजत श्री जिनचरण आन ॥ इंद्रानी निरजरनी सुआय । जिनराज दरश देखैं बनाय ॥३४॥जै जिनगुण गावैं मधुर गान । इंद्रादिक नाचैं तार तान ॥ सुरताल मृदंग सवै समाज । बाजे बाजत मीठी अवाज ॥ ३५ ॥ जै चतुरन काय देव आय । निज निज नियोग कौतुक कराय ॥ जै पूजा कर निज थान जाय । भविलाल जात वलवल सुजाय ॥ ३६ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

पूरवदिश बैताड़ की, पूजा पूरन जान। जो बांचैं मनलाय कै, पावैं अविचल थान॥३७॥इति जयमाल॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसकैं बनाय॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ैं अधिक सरससुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लह शिवपुरजाय॥ ३८ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति विद्युतमालीमेर के पूरवविदेह संबंधी षोडस रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ विद्युतमाली मेरके पश्चिमविदेह संबंधी षोडस रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥नंबर॥५०॥

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

विद्युतमालीमेर पंचमो ताते पश्चिमदिश उर आन। तहां षोडस बैताड़ मनोहर स्वेत बरन मन हरन सुजान॥ तापर श्रीजिनभवन अनूपम जहां विराजैं श्रीभगवान। सुरविद्याधर पूजैं तिनको पावतमोक्ष परमसुख थान॥ १ ॥

सोरठा।

हमैं शक्ति सो नाहिं, आह्वानन तिनको करैं। पूजैं निज घरमाहिं, भक्तिभाव उरमैं धरैं॥ २ ॥

ॐ ह्रीं विद्युतमालीमेरके पश्चिमविदेह संबंधी षोडसरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ अत्रावत्रावत्र

संवौपटाऽह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ अत्र ममसन्निहितो भव भव विषट संधीसकरणं॥स्थापनं॥

॥ अथाष्टकं जोगीरासा छन्द ॥

भला जिन पूजोरे भाई। यह उत्तम नरभव पायके जिन पूजोरे भाई॥ टेक॥ क्षीरबरन मन हरन सु उज्ज्वल झारी भरभर लावो। श्रीजिनराज चरनको पूजो जन्म जनम सुखपावो॥ भला जिन०॥ विद्युतगिर पश्चिम विजयारध षोड़सहैं सुखदाई। तिनपर षोड़स श्रीजिनमन्दिर पूजो भविजनभाई॥ ३॥ ओंह्रीं विद्युतमालीमेरके पश्चिमविदेह संबंधी पद्मा॥ १॥ सुपद्मा॥२॥ महापद्मा ३॥ पद्मकावती॥४॥ सुसंखा॥ ५॥ नलिना॥ ६ कुमुदा॥ ७॥ सरिता॥ ८॥ वप्रा॥ ९॥ सुवप्रा॥ १०॥ महावप्रा॥ ११॥ वप्रकावती॥ १२॥ गंधा॥ १३॥ सुगधा॥ १४॥ गंधला॥ १५॥ गंधमालनी देश संस्थितरूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ १६॥ जलं॥ चंदनसरस सुगंधित लेकर ताभैं केसर गारो। भव आताप निवारन कारन श्रीजिन आगैं धारो॥ भला जिन०॥ विद्युतगिर० ॥४॥ ओं ह्रीं०॥ चंदनं॥ देवजीर सुखदास सु अक्षत उज्ज्वल धोय धरीजै। श्रीजिनराज चरनके आगे पुंज मनोहर दीजे॥ भलाजिन०॥ विद्युतगिर०॥ ५॥ ओंह्रीं०॥ अक्षतं॥ बरन बरनके फूल सुबासी ले जिन मंदिर आवो। कामवानके दूर करनको श्रीजिन चरण चढावो।॥ भलाजिन०॥ विद्युतगिर०॥ ६॥ ओंह्रीं०॥ पुष्पं॥ नेवजनीको तुरत सुधीकोरसना रंजन भाई। कनकथारभर ऊंचे करकर पूजत श्रीजिनराई॥ भलाजिन०॥ विद्युतगिर०॥ ७॥ ओंह्रीं०॥ नैवेद्य॥ रत्नअमोलिक कनक रकावी मैं धर दीप बनावो। करत आरती श्रीजिनवर

की परमप्रीत उरलावो ॥ भलाजिन० ॥ विद्युतगिर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ दसविधधूप सुबास सरलले श्रीजिन आगे खेवो । कर्म महारिपु दूर करन को श्रीजिनवर पद सेवो ॥ भलाजिन० ॥ विद्युतागिर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग छुहारेपिस्ता अरुवादाम मंगावो । श्रीसर्वज्ञ जिनेश्वर पूजो मनवांछित फल पावो । भलाजिन० ॥ विद्युतागिर० ॥ १० ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफल आठो दर्व मिलकर अर्घ वनाय सुलावो । भावभक्तसों श्रीजिन पूजो हरपहरष गुण गावो ॥ भलाजिन० ॥ विद्युतागिर० ॥ ११ ॥ ओंह्रीं ॥ अर्घ ॥

अथप्रत्येकार्घ ॥ अडिल ॥

विद्युतमाली मेरतनी पश्चिम दिशा । पद्मादेश महानतहां सूवसवशा ॥ स्वेतबरन वैताड़ सिखरजिनधामजू । पूजो अष्टप्रकार तजो सब कामजू ॥ १२ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी पद्मादेशसंस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमेर विशालदिशापश्चिम जहां । देशसुपद्मानामवसैं वहुजनतहां । विजयारध गिरशीरा श्रीजिनगेहजू । वसुविधअर्घवनायजजोधरनेहजू ॥ १३ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमालीमेरके पश्चिमविदेहसंवंधी सुपद्मादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमाली मेरससुन्दरलसे । पश्चिमदिश शुभदेश महापद्मावसे ॥ रूपाचल के शिखर सुजिन मंदिरभलो । मनवचतन लौंलायभविक पूजनचलो ॥ १४ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमालीमेरके पश्चिमविदेह संवन्धी महापद्मादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ पश्चिमदिश सुखकारमेरपश्चमतनी । पद्मकावती देश नामउपमाघनी । श्रीजिन

भवन विशालसरससुन्दरजहां, आठोदर्वसंजोथभविकपूजोतहां ॥१५॥ओंह्रीं विद्युत्मालीमेरकेपश्चिमविदेहसंबंधीपद्मकावतीदेशसंस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो । ४ ॥ अर्घ ॥

दोहा ।

पश्चिम विद्युतमेरके. देश सुसंखा सार । जिनमंदिर वैताड़के , पूजो अर्घ सँवार ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं विद्युतमालीमेर के पश्चिमविदेह संबधी सुसंखादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमालीमेरते, पश्चिम नलिनादेश।विजयारधपर जिनभवन, पूजो अर्घ विशेष ॥ १७ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेर के पश्चिम विदेह संबंधी नलिना देश संस्थितरूपाचलपरसिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो । ६ ॥ अर्घ ॥ विद्युतगिर पश्चिम दिशा कुमुदादेश विशाल । रूपाचलपर जिन सुगृह अर्घजजोभर थाल ॥ १८ । ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी कुमुदा देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ७ अर्घ ॥ पश्चिम पंचम मेरके, सरितादेश महान विजयारध की सिखरपर पूजोजिनवरथान ॥१९ । ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सरिता देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ८ । अर्घ ॥

छंद ॥

विद्युतगिरपश्चिमकहिये । तहांवप्रादेश जुलहिये । बिजयारधगिर परजाइये । जिनभवनजजतसुखपाइये ॥ २० ॥ ओंह्रीं विद्युतमालीमेरकेपश्चिम विदेह संबन्धी रूपाचलपर सिद्धकूटजिनमन्दिरेभ्यो ॥९॥ अर्घ ॥ गिरविद्युत पश्चिमसोहै । तहांदेश सुवप्रामोहै । वैताड़सिखरपरजाई । पूजोजिनमंदिरभाई

॥ २१ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी सुवप्रादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूटजिन मंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ ॥ पंचमागिर पश्चिम गाए। महावप्रादेश बताए ॥ रूपाचल शिखरसुहाए। जिनगेह जजो हरषाए॥ २२ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी महावप्रादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥

॥ चौपाई ॥

विद्युतगिर पश्चिम दिशजान। देशवप्रकावती महान। विजयारध गिरपर जिनधाम। वसुविधपूजों शीश नमाम ॥ २३ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी बप्रकावतीदेश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमाली मेररवन्न। पश्चिम गंधादेश सुधन्न ॥ गिर बैताड़ शिखर जिनथान। अर्घ चढ़ाय जजोधर ध्यान ॥ २४ ॥ ओं ह्रीं विद्युतमालीमेरके पश्चिम बिदेह संबंधी गंधादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥ विद्युतगिर पश्चिम दिशतहां। नाम सुगंधा देश है जहां। जिन मंदिर रूपाचल शीश। बसुबिध पूजो पद जगदीश। ॥ २५ ॥ ओंह्रीं बिद्युतमाली मेरके पश्चिम बिदेह संबंधी सुगंधादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूटजिन मंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ अर्घ ॥ पंचमगिर पश्चिम दिशसोय। तहां गंधलादेश जुहोय। बिजयारध गिरऊपर जाय। श्रीजिन भवनजजोमन लाय ॥ २६ ॥ ओंह्रीं बिद्युत्माली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी गंधलादेश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १५ ॥ अर्घ ॥ पंचम गिरते पश्चिम वोर। देश गंध मालन है जोर। रूपागिर जिन भवन विशाल। मनबचतन पूजत भविलाल ॥ २७ ॥

ॐ ह्रीं विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी गंध मालनी देश संस्थित रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १६ ॥ अर्घ ॥

अथजयमाल ॥ दोहा ॥

विद्युतमाली मेरते, पश्चिम दिशा विशाल । रूपाचलपर जिनभवन, सुन तिनकी जयमाल ॥ २८ ॥

॥ छन्द ॥

पुष्कार्ध वरदीप मैं जगसारहो, पश्चिम दिशामहान । विद्युतमाली मेरहै जगसारहो, कंचनबरन सुजान ॥ जान कंचन वरन गिरवर तासु पश्चिम दिशजहां । वरदेश बसत विदेह षोडस काल चौथा है जहां । जहां मोक्ष मारग सदां चालैं कर्म भूमवनीरहैं । तिर्थेश वलि चक्रीशहर प्रतिहर सदाउत-पतिलहैं ॥ २६ ॥ तिसवीच रूपाचलपड़े जगसारहो, स्वेतबरन अभिराम । षोडस सरस सुहावने जगसारहो, तापर श्रीजिनधाम । धामश्रीजिनवर अकीर्तम रतनजड़ित सुजगमगै । तसुमध्यवेदी फटकमणमई जासुदेखत मनलसै ॥ कटनी सुतीन कही अनूपम सिंह पीठ सुहावनी । वसुप्रात्यहार्य सुदर्वमङ्गल यथायोग्य सुहावनी ॥ ३० ॥ सिंहासनपर कमल है जगसार हो, तापर श्रीजिनदेव । आठअधिकऔरएकसौ जगसारहो, इन्द्रकरैं शतसेव ॥ शतइन्द्रसेवाकरैं सुजिनकी अमर खगजयजय करें । निरजर त्रिदश खेचर तियामिल परम आनँद उरधरैं ॥ ले आठदर्व त्रिकाल सुरपतिजिनचरन पूजतभए । विंतरभवन जोतिप भवन सबकरत कौतुक नितनये ॥ ३१ ॥

पद्धड़ी ।

जै जै जगतारन परम देव । तुम चरननकी हम करत सेव ॥ जै तुम जगनायक हो प्रधान । यातें

तुम शरन गहीसुजान ॥ ३२ ॥ जै जै तुम तारक सुनो कान । तब उपजोहमउर में सुज्ञान॥हम करत विनती वार वार । करुनानिध हमको तार तार । ३३ ॥

घत्ता ॥ दोहा ॥

विद्युतगिर पश्चिम दिशा,रूपाचल सुबिशाल । तहां जिनभवन निहारकै, लालनवावत भाल ॥३४॥

इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठपढें मनलाय । जाके पुन्यतनी अतिमहिमा बरनन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरुसंपत बाढै अधिक सरससुखदाय । यह भवजस परभव सुख दाई सुरनर पदलहै शिवपुर जाय ॥ ३५ ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति विद्युतमाली मेरके पश्चिम विदेह संबंधी षोड़स बिजयार्धपर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ विद्युतमाली मेरके दक्षिण भरत क्षेत्र संबंधी ।
रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजाप्रारम्भः नंबर ॥ ५१ ॥

अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छद ॥

विद्युतमाली मेरपंचमोताकी दक्षिण दिशा निहार । भरतक्षेत्र सुंदर तहां राजैं छहोकालकी फिरन विचार ॥ गिरबिजयारधपर जिनमंदिर सुरखेचर पूजत सुखकार । शक्तहीन हम निजघर पूजत करआ-

व्हानन उरमेंधार ॥ १ ॥ ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके दक्षिण दिश भरतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रा बत्र संवौषटाव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्नहितो भवभव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ कुसुमलता छंद ॥

स्वेतबरन उज्जल जलसीयर चंद्रकला सम लेकर मांहि । परमपूज्य सरबज्ञ जिनेश्वर तिनके चरनन पूजन जांहि ॥ पंचम गिरकी दक्षिन दिशमें भरतक्षेत्र रूपाचल जान । तापर श्रीजिन भवनअनूपमसुरखग मिल पूजैं भगवान ॥ २ । ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके दक्षिण दिश भरतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपरासिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ जलं ॥ चंदन केसर परम सुगंधित रतनकटोरी में धरलाय । सबदेवनके देव जिनेश्वर पूजत चरन कमल सिरनाय ॥ पंचमगिर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं ॥ चंदनं ॥ उज्जल अक्षत सरसमनोहर साजे धोय धरोभरथार।श्री जिनराजचरन के आगे पुंजदेत मन हर्षअपार। पंचमगिर० ॥४॥ ओंह्रीं०। अक्षतं ॥ बरन बरनके फूलसुबासी दस दिश बासरहा महकाय । श्रीजिन मंदिर जाय सुभविजन जजत जिनेश्वरजी के पाय ॥ पंचमगिर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं ० ॥ पुष्पं ॥ बावर घेवर मोदक खाजे ताजे तुरत बनाय सुलाय । रसनारंजन सरसकपूरे श्री जिन चरनन देत चढ़ाय ॥ पंचमगिर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ कनक थालमैं रतनदीपधर जगमग जोतहोत सुखकार । जजतजिनेश्वर के पदपंकज हे करुणानिध हमकूतार ॥ पंचममेर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर बरधूप सुदसविध खेवत श्रीजिन सन्मुख जाय । नयेकरमन के नाश करन को पूजत भविजन मन वचकाय ॥ पंचम-

गिर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग छुहारे पिस्ता अति सुंदर फल लेतमंगाय । श्रीसर्वज्ञ प्रभुकों पूजत मन वांछित फल पावत जाय ॥ पंचमागिर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ अर्घ बनाय गाय गुण प्रभुके आठो दर्व सुदेत मिलाय । भाव भक्त सों पूजाकरके लाल सुजिन पर बलबल जाय ॥ पंचमगिर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ अडिल ॥

दक्षिण भरत सुक्षेत्र मेर पंचम तनो । स्वेत बरन बैताड़ कूट नौसोहनो ॥ सिद्धकूट तिसबीच सुजिनमंदिर जहां । पूजो भविक त्रिकाल अर्घ बसुबिध तहां ॥ ११ ॥ ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके दक्षिणदिश भरतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

विद्युतगिर दक्षिणदिशा, भरतक्षेत्र सुविशाल । रूपाचलपर जिनभवन, सुन तिनकी जयमाल ॥ १२ ॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै पुष्कार्धवर दीप जान । जै ताकी पश्चिमदिश महान ॥ जै विद्युतमाली मेर सार । कंचन मणमई बरनन अपार ॥ १३ ॥ जै ताकी दक्षिणदिश मंझार । तहां भरतक्षेत्र सुंदर निहार ॥ जहां छहोकाल की फिरन होय । कोडाकोड़ी दस उदधसोय ॥ १४ ॥ जै तीन काल मैं भोग भूम । तहां कल्पवृक्ष अति रहै झूम ॥ जै जुगला धर्म रहै सदीव । सुखसहित रहैं सब ही सुजीव ॥ १५ ॥ जब वरतै चौथोकाल आय । तब कर्म भूम विध रही छाय ॥ जै तीर्थंकर जब जन्म लेंय । जै मात तात बहुदान देंय

॥ १६ ॥ सब पुन्य पुरुष उपजैं बिशेश । चक्री बलहर प्रतिहर नरेश ॥ तहां विजयारध गिरपरो आय । द्युति स्वेत वरन मनहरन गाय ॥ १७ ॥ जै तापर जिनमंदिर अनूप । सब समोसरन रचना स्वरूप ॥ जे श्रीजिन विंब विराजमान । सतआँठ अधिक प्रतिमा प्रमान॥१८॥जै सुरविद्याधर जजत आय । जे नृत्यकरत वाजे बजाय॥ जै भक्त लीन दर्शन निहार। यह अरज़ करत प्रभुहमैं तार॥१६॥

॥ घत्ता दोहा ॥

श्रीजिन महिमा अगम है, को कवि वरनै ताय। देख छवि भगवान की, लाल सुबलबल जाय॥२०॥

॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय । जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसके बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लह शिवपुर जाय ॥ २१ ॥ इति आशीर्वादः ॥

इति विद्युतमाली मेरके दक्षिणदिश भरतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ विद्युतमाली मेरके उत्तरदिश ऐरावतक्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ५२ ॥

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

पंचममेर तनी उत्तरदिश क्षेत्र सुऐरावत सुखदाय । तहां रूपाचलपर जिनमंदिर जजत जिने-

श्वर सुरपति आय ॥ सब विद्याधर निजगुण गावैं हरप हरप प्रभु परसों पाय। हम तिनकी आह्वानन
विधकर पूजैं निजघर मंगल गाय ॥ १ ॥ ओंह्रीं विद्युत्माली मेरके उत्तरदिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी
रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाह्वाननं । अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः ।
स्थापनं । अत्र मम सन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ जोगीरासा ॥

स्वेतवरन मनहरन सुउज्जल जल ले झारी भरकै । जजत जिनेश्वर के पद पंकज सब दुख
जात सुदरकै ॥ पंचमगिर की उत्तरदिश मैं ऐरावत है भाई । तहां रूपाचलपर जिनमंदिर पूजत मन
हरपाई ॥ २ ॥ ओंह्रीं विद्युत्माली मेर के उत्तरादिश ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिन-
मंदिरेभ्यो ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन अर केसर दोनो घसकर लावो । भव आतापनिवारन
कारन श्रीजिन चरन चढावो ॥ पंचमगिर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ मनमोहन मनहरन
सुअक्षत मुक्ताफल समलीजे । श्रीसर्वज्ञ प्रभु के आगै पुंज मनोहर दीजे ॥ पंचमगिर० ॥
॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ सरससुगंधित फूल सुलेकर श्रीजिनमंदिर जावो । श्रीजिन
चरन कमल की पूजा करकै आनंद पावो ॥ पंचमगिर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ नानाविध-
पकवान मनोहर ताजे तुरत वनावो । रसना रंजन सुरस सुविंजन श्रीजिन चरन चढ़ावो ॥
पंचमगिर० ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ जगमगजोति होत दीपककी रत्नअमोलिकलावो । आरति
करजिनराजप्रभु की हरपहरप गुणगावो ॥ पंचमगिर० ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं ॥ दीपं ॥ चन्दन अगरसुगन्ध

सुदसविधश्रीजिन आगेखेवो। ज्ञानावरनादिक कर्मन के नाशकरन प्रभुसेवो ॥ पंचमागिर० ॥ ८ ॥ उोंह्रीं० ॥ धूपं ॥ लौंगछुहारे पिस्ता आदिक फल लावत बहुनीके। मन बांछित फल पावत भवि जनपूजतपद जिनजीके ॥ पंचमागिर० ॥ ६ ॥ उोंह्रीं० ॥ फलं ॥ जलफल आठोंदर्व मिलेकरअर्घ बनाय सुलावो। श्रीजिन चरनचढाय सुभविजन लालसदाबलजावो॥पंचमागिर०॥१०॥उोंह्रीं अर्घं॥

अथप्रत्येकार्घं॥ अडिल ॥

विद्युतगिर उत्तर ऐरावत क्षेत्रहै। रूपाचलपरकूट सुनव छविदेतहै ॥ सिद्धकूट तिसबीच सुजिन मंदिर जहां। पूजोभविक त्रिकाल अर्घ वसुविधतहां ॥ ११ ॥ उोंह्रीं विद्युतमाली मेरके उत्तर ऐरावत क्षेत्र संबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो। अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल दोहा ॥

विद्युतगिर उत्तरदिशा.ऐरावत सुबिशाल। विजयारधपर जिनभवन सुन तिनकी जयमाल ॥ १२ ॥

पद्धड़ी ॥

जै विद्युतमाली मेरसार। शोभावरनत पावैनपार ॥ जैताकी उत्तरदिश मंझार। बरक्षेत्रसुऐरावत निहार ॥ १३ ॥ जहांछहोकालकी फिरनहोय। पहिलेसोतिनमैं भूमभोय॥जब चौथाकाललगैसुआय। तबकर्मभूमबरतै सुभाय ॥ १४ ॥ जब तीर्थंकर को जन्म होय। शैंतइंद्र महोत्सव करैं सोय ॥ सज ऐरावत जोजन सुलाख। शत बदन बदन बसुदंत भाख ॥ १५ ॥ प्रतिदंत सरोवर सजल थान। शैंतबीसैं पांचै कमलन बखान ॥कमलनपरकमल पचीसैं सार।शतआंठै अधिकदल अति उदार१६॥

दलदलें अपछरानचें सात । सववीसकोड़ और कोड़िसात ॥ सौधर्मइन्द्र तापर सुआय ॥ जिनगोद लिये गिर शिखर जाय ॥ १७ ॥ कर जन्ममहोत्सव देसुमात । निजथान गए हर्षित सुगात ॥ तिस क्षेत्र बीच बेताड़ सार । द्युतिस्वेत वरन मनहरन हार ॥ १८ ॥ तापर नवकूट कहे उतंग । बिच सिद्धकूट कंचन सुरंग ॥ तहां श्रीजिन मंदिर जगमगाय । सवसमोसरन रचना लखाय ॥ १९ ॥ जे श्रीजिन बिंबविराजमान । सतऔर्ठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ सुरखगइंद्रादिक जजत पाय । भविलाल सदा वन्दत सुजाय ॥ २० ॥

घत्तादोहा ॥

तिजयारथपर जिनभवन,पूजावनी विशालामन वचतनलो लायकै,लालनवावतभाल २१ इतिजयमाल॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तमताको पाठपढ़ें मनलाय । जाके पुन्यतनी अतिमहिमा वरनन को कवनके वनाय ॥ ताके पुत्रपोत्र और संपत बाढ़े अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनरपद लह शिवपुरजाय ॥ २२ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इतिविद्युन्माली मेरके उत्तरदिश ऐरावतक्षेत्रसंबंधी रूपाचलपर सिद्धकूट जिनमंदिरेपूजासम्पूर्णम् ॥

अथ विद्युन्मालीमेरके दक्षिणउत्तरदिशषट्कुलाचल पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजाप्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ५३ ॥

॥ अथ स्थापना कुसुमलता छंद ॥

षटमागिर दक्षिण अरुउत्तर षटकुलागिर भाषे जिनराय। तिनपर श्रीजिनभवन अकीर्त्तम कंचनवरन

रहीछवि छाय ॥ सुरसुरपति विद्याधर भूपसपूजाकरत सुमनहरषाय । हम आव्हानन करत सुतिनको निजघर पूजत मङ्गलगाय ॥ १ ॥ ॐह्रीं विद्युतमाली मेरकेदक्षिणउत्तर षट कुलाचल पर्वतपरसिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ अत्रावत्रावत्रसंबौषटाव्हाननं ॥ अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्रममसन्नाहितोभवभव विषटसंधीसकरणं स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं चाल कातकीकी ॥

प्रानी श्रीजिनवर पद पूजिये । जाके पूजत पुन्य अपार ॥ प्रानी श्रीजिनवर पद पूजिये ॥ टेक ॥ प्रानीउज्जलजल अतिसीयरो, क्षीरो दधकी उनहार । प्रानी श्रीजिन चरन चढाइये, भवसागर तेहोपार ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमालीमेरके, दक्षिणअरुउत्तर आन। प्रानीषटकुल गिरअति सोहनो,तिनपर जिनमंदिरजान ॥ प्रानीश्री० ॥ २ ॥ ॐह्रीं विद्युतमाली मेरके दक्षिणदिश निषध ॥१॥ महाहिमवन ॥ २ ॥ हिमवन ॥ ३ ॥ उत्तरदिश नील ॥ ४ ॥ रुक्म ॥ ५ ॥ सिखरनगिर पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ जलं ॥ प्रानीचन्दन केसर गारकै,जिनचरननपूजतजाय । प्रानीमनवचकाय लगायकै, बहुभक्तकरोमनलाय ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानीविद्युतमाली० ॥३॥ ॐह्रीं० ॥ चन्दनं॥प्रानी मुक्ताफलसमसोहनो, अक्षतले मंदिरजाय । प्रानी पुंज मनोहरदीजिये, जिनचरनन सीसानिवाय ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ ४ ॥ ॐह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ प्रानी बेलचमेली केवड़ा, इनआदिक फूलमगाय । प्रानीले जिनमंदिरजाइये, तहांजजत जिनेश्वरपाय ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ प्रानी बावर घेवर आदिदे, नाना

विधके पकवान। प्रानी कनकथालभरलायकै, पूजोतुमश्रीभगवान॥ प्रानी श्री०॥ प्रानीविद्युतमाली०॥ ॥ ६ ॥ उोंह्रीं०।, नैवेद्यं ॥ प्रानीमणमईदीप बनायकै, ताकी जगमग जोतप्रकाश, प्रानीमनवचतन करआरती, जिनराज चरनके पास ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानीविद्युतमाली० ॥ ७ ॥ उोंह्रीं० ॥ दीपं ॥ प्रानीधूपसुगंधी खेयिये, श्रीजिनवर आगैजाय। प्रानीइनकर्मनके नाशको, जिनराजसुसरनैआय। ॥ प्रानीश्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ ८ ॥ उोंह्रीं० ॥ धूपं ॥ प्रानीफलले लौंग सुलायची, बादामसु पिस्तालाय। प्रानीजजत जिनेश्वरदेव को, मनबांछितके फलपाय॥ प्रानीश्री०॥ प्रानीविद्युतमाली० ॥ ॥९॥उोंह्रीं० ॥ फलं ॥ प्रानीबसु बिधदर्बमिलायके, ले सुन्दरअर्घ विशाल। प्रानी श्रीजिनसन्मुखजायकै प्रभुपूजत है भविलाल ॥ प्रानी श्री० ॥ प्रानी विद्युतमाली० ॥ १० ॥ उोंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ मत्यकार्घ दोहा ॥

विद्युतमाली मेरते, दक्षिण दिशसुखकार। निषधनाम गिरपरजजो, श्रीजिन भवन निहार। ११ ॥ उोंह्रीं विद्युतमाली मेरकेदक्षिण दिश निषद्धनाम पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥

॥ चौपाई ॥

विद्युतमाली गिरसोहनो। दक्षिण महाहिमवनगिरबनो। ताके सिखर जिनेश्वरथान।पूजो भविजनपद उरआन॥१२॥ उोंह्रीं विद्युतमालीमेरके दक्षिणदिशमहाहिमवनपर्वतपरसिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥अर्घ॥२।

॥ छंद ॥

विद्युतमाली गिरसोहै। दक्षिणहिमवन मनमोहै। तहां जिनमंदिर सुखकारी। भविअर्घ जजोभ- रथारी॥१३॥उोंह्रीं विद्युतमाली मेरके दक्षिण दिशाहिमवन पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥अर्घ॥३॥

॥ मदअवलिप्त कपोलछन्द ॥

विद्युतमालीमेरतनी उत्तरदिश जानो । मनमोहनमनहरन नीलगिर मनमैं आनो ॥ तापरश्रीजिन भवन अकीर्तमसुन्दर सोहै। पूजतभविक त्रिकाल सवनके मनकोमोहै।१४।ओंह्रीं विद्युतमाली मेरकेउत्तर दिशा नीलपर्वतपर सिद्धकूट निजमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥

॥ अड़िल ॥

पंचमगिर की उत्तरदिश मैं जानिये। रुक्मनाम गिरसुंदर परम प्रमानिये ॥ तापरश्रीजिन मंदिर परम विशालजू । पूजत पुन्यअपारकटैं अघजालजू ॥ १५ ॥ ओंह्रीं विद्युतमालोमेरके उत्तरदिशरुक्म पर्वतपरसिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥

॥ पद्धड़ी ॥

पंचमगिर सुंदर शोभमान। ताकी उत्तर दिशमैं बखान । तहां सिखरन गिरपर जिन सुथान॥जहां जजत जिनेश्वर को सुजान ॥ १६ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके उत्तर दिश सिखरन गिर पर्वतपर सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥

॥ चौपाई ॥

विद्युतमाली मेर महान। ताके भद्रशाल वनजान ॥ सीतानदी दोऊ तट सार। पांचें पांचें तहां कुंड निहार ॥ १७ ॥ कुंड निकट दसैं दसैंगिर सोय। तापर इकं इकं प्रतिमा होय ॥ सब मिल एकंशतंकं जिनराय। मन वच तन पूजो लवलाय ॥ १८ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके भद्रशाल वन संबंधी सीता नदी के दोनों किनारें पांचें पांचें कुंड तिन एकं एकं कुंड के समीप दसैं दसैं कंचन गिर तिन कंचन

गिरपर एक एक जिन प्रतिमा सबमिल एकसौ जिन प्रतिमा गंधकुटी सहितसास्वते विराजमान तिनको ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमाली मेर उतंग । भद्रशाल बन कंचन रंग ॥ सीतोदा तटनी दोय ओर । पांच पांच तहां कुंड सुजोर ॥ १६ ॥ दस कंचन गिर इक इक पास । एक शतक सब जिनवर भास॥तापर श्रीजिनबिंब विशाल । रत्नमई पूजत भविलाल ॥ २० ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके भद्रशाल बन संबंधी सीतोदा नदी के दोनो किनारे पांचे पांचे कुंड तिनके समीप दस दस कंचन गिर तिसपर एक एक जिन प्रतिमा ऐसे सब मिल एकसौ जिन प्रतिमा गंध कुटी सहित सास्वते विराजमान तिनको ॥ ८ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमाली मेर सुजान । चारोंवन पोडस जिन थान ॥ पोडस गिर वक्षार सुसीस । गिर वैताड़ सिखर चौंतीस ॥ २१ ॥ षटकुलगिर कुरुभु द्रुमदोय । हस्तीदंत चार फुनिहोय ॥ आठअधिक सत्तर जिन धाम । अर्घ चढाय करूं परणाम ॥ २२ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके दिशा बिदिशामध्ये अठत्तर जिनमंदिर सिद्धकूट सास्वते बिराजमान तिनको ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ विद्युतमाली पूरब वोर । कालोदध सागर घनघोर ॥ पश्चिम मान पोत्र गिरसार । दक्षिण उत्तर इष्वाकार ॥ २३ ॥ बीच जिते जिन मंदिर होंय । किर्तम और अकिर्तम सोय ॥ अथवा सिद्धभूम है जहां । अर्घ चढाय नमूनित तहां ॥ २४ ॥ ओंह्रीं विद्युतमाली मेरके दिशा बिदिशामध्ये कालोदध समुद्रादि मान पोत्र पर्वत पर्यंत जहां जहां कीर्तम अकीर्तम जिन मंदिर होंय अथवा सिद्धभूम होंय तहां तहां ॥ १० ॥ अर्घ

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

विद्युतमाली मेरके, पटकुलगिर सुविशाल । दक्षिण उत्तर दोयदिश, तिनकी सुन जयमाल ॥ २५ ॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै विद्युत्माली मेरजान । जै कंचन वरन हिये सुआन ॥ जहां सोलह जिन मंदिर विशाल । भवि जीव सुपूजत हैं त्रिकाल ॥ २६ ॥ जै ताकी दक्षिणदिश निहार । तहां तीन कुलाचल पड़ेसार गिर निषध महाहिमवन महान । हिमवन गिर हेमवरन बखान ॥ २७ ॥ लखताके उत्तर दिश प्रवीन गिरनील रुक्म सिखरन सुतीन ॥ येही षटकुल गिर हैं प्रसिद्ध । सब बरनन जानो स्वयं सिद्ध ॥२८॥ जै तिनपर जिन मंदिर अनूप । जैपूजाकरत सुअमर भूप ॥ जै समोसरन रचना समान । वन रहै तहां अद्भुत भुजान ॥ २९ ॥ जै रत्नमई प्रतिमा जिनेंद्र । शतआंठ अधिक भोपजिनेंद्र ॥ जै सुर विद्या धर भक्तलान । जिनराज सुगुण गावैं नवीन॥३०॥जै नृत्य करत बाजे बजाय । जै थेई थेई थेई धुनरही छाय ॥ यह अद्भुत ठाठ बनो विशाल । मुन श्रवण माथ नावत सुलाल ॥ ३१ ॥

॥ घत्तादोहा ॥

पट कुलगिरकी आरती,पूरनभई विशाल । जोबांचैं मनलायकै.तिनके भाग विशाल३२इति जयमाल॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलताछंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय । जाके पुन्यतनी अति महिमा बरनन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्रपौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भव जसपर भव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुर जाय ॥ ३३ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति विद्युत्माली मेरके संबंधी षट्कुलाचल पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

इति पुष्कार्ध द्वीप मध्य पश्चिमदिश विद्युत्माली मेर संबंधी अठत्तर जिनमंदिर सास्वते विराजमान तिनका पूजनपाठ सं०

अथ पुष्कार्ध द्वीपमध्ये मंदिर विद्युत्मालीमेरके दक्षिणदिश दोनों भरतक्षेत्रके बीच इष्काकार पर्वतपर सिद्धकूटजिनमंदिरे पूजाप्रारम्भः नं. ५४

अथ स्थापना ॥ कुंडलिया छंद ॥

मंदिर विद्युत्मेरके दक्षिणदिश सुखकार । भरतक्षेत्र दोय बीच में, सोहै इष्काकार॥ सोहै इष्क्वाकार सिखर जिनभवन विराजैं । पंच वरन मणि जडित देख द्युति रवि शशि लाजैं ॥ रतनमई जिन विंब नमत खग अमर पुरंदर । आऽह्वानन विधकरत जजत हम श्रीजिन मंदिर ॥१॥ ओंह्रीं पुष्कार्ध द्वीप मध्ये मंदिर विद्युत्माली मेरके दक्षिणदिश दोनों भरत क्षेत्र के बीच इष्क्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥अत्रावत्रा वत्र संवौपटाऽह्वाननं॥अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं । अत्रमम सन्नहितो भव भव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं चालछंद ॥

क्षीरोदधिसम उज्जल नीर । पूजो जिनवर गुण गंभीर ॥ परम सुखहो । देखे दरश महासुखहो इष्काकार सिखर जिन धाम । जिन प्रतिमाजीको करूं परणाम ॥ महासुखहो । देखे दरश महासुख हो ॥ २ ॥ ओंह्रीं पुष्कार्ध द्वीप मध्ये मंदिर विद्युत्माली मेरके दक्षिण दिश दोनों भरतक्षेत्र के बीच इष्काकार पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ जलं ॥ चंदन केसर घसतामिलाय । श्रीजिनचरनन देत चढाय॥परम०॥ इष्क्वाकार० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ उज्जल अक्षत ले सुखदास । अक्षयपद को पावत वास॥परम० ॥ इष्क्वाकार० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमलकेतकी अतिमहकाय । जिन

पद पूजो प्रीत लगाय ॥ परम० ॥ इष्क्वाकार ॥५॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ नाना बिधपकवान बनाय। ले जिन चरनन पूजत जाय॥परम० ॥ इष्क्वाकार० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० नैवेद्यं ॥ मणमई दीपकजोतजगाय। जजत जिनेश्वर मंगल गाय ॥ परम० ॥ इष्क्वाकार०॥७॥ ओंह्रीं० दीपं ॥ दस बिधधूप सुगंधित लाय। खेवत भवि जिनमंदिर जाय॥परम० ॥ इष्क्वाकार० ॥८॥ ओंह्रीं० धूपं॥फल सुंदर नैनन सुखदाय। जिनपद पूजत शिवपद पाय॥परम०॥इष्क्वाकार० ॥ ९॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ आठदर्व मिल अर्घ चढ़ाय। बलबल जातलाल सिरनाय॥परम०। इष्क्वाकार०॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ ॥ दोहा ॥

पुष्कार्ध जुगमेरके, दक्षिण दिश सुखकार। इष्क्वागिरपर जिन भवन, अर्घजजो भरथार ॥ ११ ॥

ओंह्रीं पुष्कार्ध द्वीपमध्ये मंदिर विद्युत्माली मेरके दक्षिण दिश दोनों भरतक्षेत्र के बीच इष्क्वाकार पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल दोहा ॥

पुष्कार्धवर दीप में, दक्षिणदिश सुविशाल। इष्क्वागिरपर जिनभवन, सुनातिनकी जयमाल॥१२॥

पद्धड़ी ॥

जै पुष्कार्घ वर दीपजान। जै जुगममेरआगम प्रमान ॥ जै ताकी दक्षिण दिश निहार। दोयभरतक्षेत्र सोहैसिंगार ॥ १३ ॥ ज दोउ भरतके बीच सार। गिरइष्क्वाकार परो निहार ॥ लंबाई जोजन दोहजार। चौरासी आठशतक बिचार ॥१४॥ जै कनक बरन सुंदर स्वरूप। जै तापर जिन मंदिर अनूप ॥ मनशचित खचित द्युतिजग मगाय। ध्वजपंकत छबि वरनी न जाय ॥ १५ ॥ जैवेदी

पर कलशा उतंग। सिंहासन हेम बरन सुरंग॥ जै श्रीजिनबिंब विराजमान। शतंआठ अधिक भाषे पुरान ॥ १६ ॥ जै समोसरन रचना विचित्र। सब मंगल दर्ब धरे पवित्र ॥ सुरविद्याधर पूजैं त्रिकाल। धरभक्त हिये नावत सुभाल ॥ १७ ॥ प्रभु तुम गुण बरनन अगम सार। धर और ज्ञान पावैं न पार मन बच तन जिनपद शीस नाय। भविलाल सदा बलबल सुजाय ॥ १८ ॥

घत्ता दोहा ॥

यह जिनपूजनकी सुबिध, जो बांचेमनलाय। महिमा ताके पुन्यकी, रहीतिहूं जग छाय ॥१९॥ इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः कुसुमलताछंद ॥

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठपढैमनलाय। जाके पुन्यतनी अति महिमा बरनन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढैअधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदलहै शिवपुरजाय ॥ २० ॥ इति आशीर्वादः ॥

इतिपुष्करार्धद्वीपमध्येमंदिरविद्युत्मालीमेरके दक्षिणदिश दोनों भरतक्षेत्र के बीचइष्काकारपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरपूजासंपूर्ण॥

अथपुष्करार्धद्वीपमध्ये मंदिरविद्युत्माली मेरके उत्तरदिश दोनों ऐरावतक्षेत्रके बीचइष्क्वाकार पर्वतपरसिद्धकूट जिनमंदिरपूजाप्रारंभः नं.५५

अथस्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

मंदिर विद्युतमाली गिरकी उत्तरदिश ऐरावतदोय। ताके बीच परो गिरसुंदर इष्क्वाकार नामहै

सोय ॥ तापर श्री जिन भवन अनूपम पूजत सुरनर भविजन लोय। हम तिनकी आव्हानन बिध कर निजघर पूजत हर्षित होय ॥ १ ॥ ओंह्रीं पुष्कार्ध द्वीपमध्ये मंदिर विद्युतमाली मेरके उत्तरदिश दोनोंऐरावतक्षेत्रके वीच इष्क्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रावत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ॥ अत्रमम सन्नाहितो भवभव बिपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकम्। चालभाषा नंदीश्वरपूजा द्यानतरायजी कृत की।

उज्जल जल शीतल छान,प्राशुककर लीजे।जिन राज चरनाढिग आन, धारसुदीजीजे॥गिरइष्क्वकार महान उत्तरदिश सोहै।तापर जिनराज सुजान पूजत मन मोहै ॥२॥ ओंह्रीं पुष्कार्ध द्वीपमध्ये उत्तरदिश दोनों ऐरावतक्षेत्रकेवीच इष्क्वाकार पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ जलं॥चंदनकेसर सुमिलाय. घसकर एककरो।पूजत श्रीजिनवर पाय,भवआतापहरो॥गिरइष्क्वाकार०॥३॥ ओंह्रीं ०॥चंदनं॥सुखदाससु अक्षतलाय, उज्जल भरथारी। जिन चरन सुपूजतजाय, अक्षयपदधारी॥ गिरइष्क्वाकार० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं०॥अक्षतं ॥ वहुफूल अनेक प्रकार, भविजनलावत हैं। जिनराज जजैं हितधार.अभुगुण गावत हैं ॥ गिरइष्क्वाकार ॥ ५ ॥ ओंह्रीं ॥ पुष्पं ॥ नानाविध के पक्वान, सरस वनावतहैं। ले पूजत श्री भगवान. क्षुधा नशावतहैं ॥ गिरइष्क्वाकार० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ॥ नैवेद्यं ॥ दीपककी जोत बिशाल, जग मग मांहिलसे। पूजत जिनचरण त्रिकाल, मोह बिथा जुनसे ॥ गिरइष्क्वाकार॥ ७ ॥ ओंह्रीं ॥ दीपं॥ कृष्नागर धूप वनाय, खेवत जिन आगै। वसुकर्मन देतजलाय, ज्ञानकला जागै ॥ गिरइष्क्वाकार ॥ ८ ॥ ओंह्रीं ॥ धूपं ॥ वादाम सुलौंग मंगाय. पिस्ताधोयधरो। जिनचरन सुपूजत जाय, शिवसु-

दर जुवेरा ॥ गिरइष्क्वाकार ॥ ६ ॥ ओंह्रीं ॥ फलं ॥ जल फल वसुदर्व मिलाय, अर्घ बनावतहैं। जिनचरनन देत चढाय, मन हरषावतहैं ॥ गिरइष्क्वाकार ॥ १० ॥ ओंह्रीं ॥ अर्घ ॥

अथ मत्यकार्घ ॥ दोहा ॥

मंदिर विद्युत मेरके, उत्तर दिश सुखदाय। इष्क्वा गिर पर जिन भवन, पूजो अर्घ चढाय॥११॥

ओंह्रीं पुष्कार्ध द्वीप मध्ये मंदिर विद्युतमाली मेरके उत्तर दिश ऐरावत क्षेत्र दोनों के बीच इष्क्वाकार पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

श्री जिनवर पद पूजकै, बाढ़ो पुन्य विशाल। मनबच सीस निवाय कै, अब बरनू जयमाल१२॥

पद्धडी ॥

जै पुष्कार्धवर दीप जान। तामैं दो गिर जिनवर बखान॥ पूरब दिश मंदिर नाम सार। पश्चिम विद्युतमाली निहार॥ १३ ॥ जै ताकी उत्तर दिश बिचार। सोहै सुंदर महिमा अपार ॥ जै ऐरावत वर क्षेत्र दोय। तहां पुन्यवान उपजैं सुलोय॥ १४ ॥ ताबीच पड़ो गिरवर महान। जोजन दुइ सहस कहे प्रमाण ॥ चौड़ाई आठशैतक सुहोय। जै इष्क्वाकार सुनाम सोय ॥ १५ ॥ जै तापर जिन मंदिर रिशाल। कंचन मंइ रत्न जड़ सुलाल ॥ जै तहां जिन बिंब विराजमान। शतआंठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ १६ ॥ जै धनुप पांचसे तन उतंग। शसि सूर कोट छवि होय भंग ॥ जैप्रातय हार्य मंगल सुदर्व। जै राजैं तहां अद्भुत जुसर्व ॥ १७ ॥ सुर विद्याधर के भूप आय। जिनराज चरन को सीस नाय॥ वसु दर्व लियें अद्भुत विशाल। प्रभु चरन कमल पूजत त्रिकाल॥ १८ ॥ हम पू-

जत निजघर शक्ति हीन । मंगल गावैं जिनभक्ति लीन ॥ सब समोसरण रचना निहार। सुरगुरु बरनत पावैं नपार ॥ १६ ॥

घत्ता दोहा ।

इष्क्वाकार शिखर कहे, श्रीजिन भवन रिशाल। तिनकी यह जयमाल है, सुरधरगावत लाल॥२०॥
॥ इति जयमाल ॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यहभवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लह शिवपुरजाय ॥ २१ ॥ इति आशीर्वादः ॥

इतिपुष्कार्ध द्वीपमध्ये मंदिरविद्युत्माली मेरके उत्तरदिश दोनोंऐरावतक्षेत्रके वीचइष्क्वाकारपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरे पूजासंपूर्ण
इति पुष्कार्ध द्वीपमध्ये मंदिर विद्युत्माली मेरके संबंधी एकसौअठावन जिनमंदिर सास्वते विराजमान तिनका पूजन पाठ संपूर्णम्॥
इति अढ़ाई द्वीपमध्य तीनसौचारोंनवै जिनमंदिर सास्वते विराजमान तिनका पूजन पाठ संपूर्णम् ॥

अथ मानषोत्र पर्वतपर चारोंदिश संबंधी चार सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ५६ ॥

अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

दीप अढ़ाई रहो घेरके मानषोत्र पर्वत सुखदाय । ताके चारोंदिश मैं इक इक जिनमंदिर भाषे

जिनराय ॥ तहां जिन बिंब अकीर्तम सोहैं सुर सुरपति पूजत तहां जाय। हमैं शक्त सोनाहि जानिये आव्हानन कर पूजत पाय ॥ १ ॥ ओंह्रीं मानपोत्र पर्वतपर चारोंदिशा चार जिनमंदिर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्योः ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्नहितो भव भव विपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं चाल छंद ॥

सोगुण हम ध्यावैं,सोगुण हम ध्यावैं॥ जै पूजत जिनबर शिवपद पावैं। सोगुण हमध्यावैं॥टेक॥ जै उज्जल जल सुंदर सुखदाई। सो गुण० ॥ जै जजत जिनेश्वर भविजन भाई ॥ सो गुण० ॥ जै मानपोत्र चारों दिश सोहै। सोगुण० ॥ जै जिन मंदिर पूजत मन मोहै ॥ सोगुण० ॥ २ ॥ ओं ह्रीं मानपोत्र पर्वत के पूर्व ॥ १ ॥ दक्षिण ॥ २ ॥ पश्चिम ॥ ३ ॥ उत्तर दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ जलं ॥ जै मलया गिर चंदन घसलावो। सो गुण० ॥ जै श्रीजिन चरणन को सुचढ़ावो ॥ सो गुण० ॥ जै मानपोत्र० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ जै मुक्ताफल सम अक्षत लीजे ॥ सोगु० ॥ जै श्री जिन सन्मुख पुंज सुदीजे ॥ सोगु०॥जै मानपोत्र० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं ॥ अक्षतं ॥ जै नाना विध के फूल मंगावो। सोगु० ॥ जै श्रीजिन चरनन भेट चढ़ावो॥सोगुण०॥जै मानपोत्र० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ जै फेनी घेवर मोदक खाजे। सो गुण० ॥ जै जजत जिनेश्वर लेकर ताजे ॥ सोगुण० ॥ जै मानपोत्र० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥नैवेद्यं ॥ जय मणि मई दीपक जोत सुनीकी ॥ सोगुण० ॥ जैकरत आरती जिनवरजीकी ॥ सो गुण० ॥ जै मानपोत्र० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ जै दस विध धूप सुगं-

धित खेवो। सोगुण० ॥ जै श्री जिनवर पदको नित सेवो ॥ सो गुण० ॥ जै मानषोत्र० ॥ ८ ॥ओंह्रीं० ॥धूपं ॥ जे लौंग लायची श्रीफल भारी । सोगुण० ॥ जै जिनवर पूजवरो शिवनारी ॥ सोगुण० ॥ जै-मानपोत्र० ॥ ९ ॥ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जे जल फल आठोदर्व मिलावो। सो गुण० ॥ जै पूजत जिनवर शिवपद पावो ॥ सोगुण० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ मत्यकार्घ ॥ दोहा ॥

मानपोत्र पूरव दिशा, श्रीजिनवरके धाम। सुरसुरपति पूजत सदा, हम पूजत यहठाम ॥ ११ ॥ ओंह्रीं मानपोत्र पर्वत के पूरव दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ १ ॥ अर्घ ॥ मानषोत्र दक्षिण दिशा, श्रीजिन मंदिर जान। अमर सचीपति नित जजैं, हम पूजत धर ध्यान। १२ ॥ ओंह्रीं मानपोत्र पर्वत के दक्षिण दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ मानपोत्र पर जिन भवन, पश्चिम दिश सुखदाय। देव त्रिदश नित प्रति नमैं, हम पूजत सखपाय ॥ १३ ॥ ओंह्रीं मानपोत्र पर्वतपर पश्चिम दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥३॥ अर्घ ॥ मानषोत्र उत्तर दिशा, श्रीजिनभवन बिशाल पूजत शक्र सुजाय के, अर्घ चढ़ावत लाल ॥ १४ ॥ ओंह्रीं मानपोत्र पर्वत के उत्तर दिश सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ । अर्घ ॥

अथ जयमाल दोहा ॥

मानपोत्र पर जिन भवन, कहे जिनेश्वर देव। निश दिन शीश निवायकै कीजै तिनकी सेव १५

॥ छंद ॥

जंबूद्वीप सुहावनो जगसारहो, जोजन लाख विशाल। ताके मध्य सुजानियो जगसारहो, मेरे

सुदर्शनलाल॥ लाल कुंदन वरन सोहै परमछवि मनमोहनो॥तिर्थेश श्रीजिन न्हवन करत सुरेश मन आनद घनो ॥ तहां अमर अपछरा गीत गावैं हाव भाव उछावसों । जै जै करैं सुर सवै मुखसों परम सुंदर भावसों ॥ १६ ॥ जंबू द्वीप सुघेर कै जगसारहो,पाईवत परमान । दोयलाख जोजन कहा जगसार हो. लवन उदध उर आन ॥ उर आनलवनोदधि सुआगै दीप दूजो जानिये । जोजन सुचार कहो जिनेश्वर लाख को परमानिये ॥ ता मध्य विजय अचल मनोहर दोय मेर सुजिनकहो । कालोसुदधि वसुलाख जोजन अमल जल कर भररहो ॥ १७ ॥ जोजन सोलहलाख को जगसार हो, पुष्कार दीप महान । तामैं मंदिर मेर है जगसार हो, विद्युतमाली मान ॥ मान आधो द्वीप इतगिन ओर आधो उतगिनो । तिस वीच गिरवर मानपोत्र सुतासु वरनन अव भनो ॥ चारसैअरतीस जोजन कंद जाको जानिये । जोजन सुसत्रह से अधिक इक्कीस ऊंचो मानिये ॥ १८ ॥ ताकी चारोंदिश कहै जगसार हो, सोलहकूट महान । चार चार चारोंदिशा जगसार हो, कंचन वरन सुजान ॥ जान कंचन वरन सुंदर मनहरन सुरगन तने । तामैं जु इक इक सिद्धकूट अनूप उपमा को भने ॥ फुन तीन तीन सुओर दोयदिश अगन ओर ईशान मैं। सब वीस कूट सुदोय ऊपर कहे जैनपुरानमैं॥१६॥

॥ पद्धड़ी ॥

जे सिद्धकूट रचना विचित्र । जै तापर जिनमंदिर पवित्र ॥ जे लंवेहैं जोजन पचास । ताते आधे चौडे प्रकाश ॥ २० ॥ जै उन्नत साढे सात तीस । जोजन महान भाप गनीस ॥ जे सिंहासन अद्भुत अनूप । तापर सुविराजत जगत भूप ॥ २१ ॥ जिनविंव एकसौ आंठ सार । सव समोसरन रचन॥निहार ॥ जिनचरन कमल पूजत सुरेश । मुखजयजय भापत सुर अशेश ॥ २२ ॥

घत्ता दोहा ॥

मानपोत्र जिनभवनकी,पूजाबनी विशाल।श्रीजिन भवन निहारके,लाल नवावतभाल२३इतिजयमाल॥

अथाशीर्वादः कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठपढै मनलाय । जाके पुन्यतनी अतिमहिमा बरनन को करसके बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरुसंपत बाढै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुखदाई सुरनरपदलहै ।शिवपुरजाय ॥ २४ । इतिआशीर्वादः ॥

इति पुष्कार्घ दीप वीचमानषोत्रपर्वत के चारोंदिश चार सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजासंपूर्णम् ॥

अथ नंदीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व दिशात्रयोदश-पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजाप्रारम्भः ॥ नंबर ॥५७॥

अथस्थापना ॥ दोहा ॥

नंदीश्वर पूरब दिशा, तेरह श्री जिनगेह । आन्हाननातिनकी करो,मन बच तन धरनेह ॥ १ ॥

ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पूर्वदिश एकअंजनागिर चारदधिमुखगिर आठरतकरागिर पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ अत्रावत्रावत्र संवौषटाव्हाननं । अत्रतिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्नहितो भवभव बिपट संधासकरणं ॥ स्थापनं ॥

अथाष्टकं जोगीरासा ।

रतनकटोरी उज्जल जलले श्रीजिन चरण चढावो । जन्ममरणके दूरकरनको यहकारन मनलावो॥

नंदीश्वर की पूरवदिश मैं तेरहै मंदिर सोहैं । सुरसुरपति मिल पूजत जिनको प्रभुदर्शन मनमोहै॥२॥
ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीप के पूर्वदिश संबंधी अंजनगिर ॥ १ ॥ नंदीवापी बीच दधमुख गिर ॥ २ ॥ नंदी वापी मुख कौन प्रथमरतकर गिर ॥ ३ ॥ नंदी वापी मुख कौन दुतीयरतकर गिर ॥ ४ ॥ नन्दवती वापी बीच दधमुख गिर ॥ ५ ॥ नंदवती वापी मुख कौन प्रथम रतकर गिर ॥ ६ ॥ नंदवती वापी मुख कौन दुतीय रतकर गिर ॥ ७ ॥ नंदोतरा वापी बीच दधमुख गिर ॥ ८ ॥ नंदोतरा वापी मुख कौन प्रथमरतकर गिर ॥ ९ ॥ नंदोतरा वापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिर ॥१०॥ नंदषेनावापी बीच दधमुखगिर ॥ ११ ॥ नंदषेनावापी मुख कौन प्रथमरतकर गिर ॥ १२ ॥ नंदषेना वापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ जलं ॥ मलयागिर शीतल ले चंदन तामैं केसर डारी । भवआताप निवारन कारन श्रीजिन पगतलधारी ॥ नंदीश्वर० ॥ ३ ॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ उज्जल ते उज्जल अक्षत ले पुंज मनोहर दीजे । भाव भक्तिसों पूजा करकै निज भव अनुरस पीजे ॥ नंदीश्वर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल केतुकी वेल चमेली श्रीगुलाव ले प्यारो । श्रीजिन चरन चढ़ाय गाय गुण हेप्रभु अब मोहे तारो ॥ नंदीश्वर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥पुष्पं॥ फेनी खाजा तुरत सुताजा नैनन को सुखदाई । क्षुधा राग के दूरकरन को श्रीजिन चरन चढ़ाई ॥ नंदीश्वर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ मणमइ दीप अमोलिक लेकर रतनरकावी धरिये । जगमग जगमग होत दिवालो मोह तिमर को हरिये ॥ नंदीश्वर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ कृश्नागर वर धूप दसांगी प्रभु आगे धरषेवो । अष्ट कर्म के नाश करनको श्रीजिनवर पद सेवो ॥ नंदीश्वर० ॥ ८ ॥

॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ श्रीफल लौंग छुहारे पिस्ता किशमिश दाख मिलावो । श्रीजिन चरण चढ़ावत भविजन मनवांछित फल पावो ॥ नंदीश्वर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल आठों दर्ब मिलकर अर्घ बनावत भाई। जिन गुण गावत ताल बजावत पूजत श्रीजिन राई ॥ नंदीश्वर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घं ॥

अथ प्रत्येकार्घ अडिल ॥

है नंदीश्वर दीप दिशा पूरब जहां। अंजन गिर के सिखर भवन जिनवर तहां ॥ सुरपति पूजन जांहि हरष मनमें धरैं। हमैं शक्ति सो नांहि यहां पूजन करैं ॥ ११ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर दीपके पूरब दिश अंजन गिर पर्बतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ नंदी वापी बीच सुदध मुख गिर कहो । तापर श्रीजिनभवन सरस उपमा लहो ॥ सुरपति० ॥ १२ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर दीपके पूर्व दिश नंदी वापी बीच दध मुख गिर परबतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घं ॥ नंदी वापी कौन प्रथम रतकर परो । ता ऊपर जिनधाम बिराजतहै खरो ॥ सुरपति० ॥ १३ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वरद्वीप के पूर्व दिश नंदी वापी मुख कौन प्रथमरतकर पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ नंदीवापी कौन दुतिय रतकर महा । मंदिर श्रीजिनराज तनो तापर कहा ॥ सुरपति० ॥ १४ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीप के पूर्व दिश नंदी बापी मुख कौन दुतिय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ॥ ४ ॥ अर्घं ॥ नंदवती वापी बिच दध मुख देखिये । तापर जिनवर भवन सुअद्भुत पेखिये ॥ सुरपति० ॥ १५ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीप के पूर्व दिश नंदवती बापी बीच दध मुख पर्बतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ नंदवतीवापी मुखकौन सुपातिकरा । प्रथम तहां जिनगेह अधिक उपमा

धरा ॥ सुरपति० ॥ १६ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पूर्वदिश नंदवतीवापी मुख कौन प्रथमरतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ नंदवतीवापी मुखकौन सुजानिये । दूजेरतकर पर जिनभवनव खानिये ॥ सुरपति० ॥ १७ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वरद्वीपके पूर्वदिश नंदवतीवापी मुखकौन द्वतियरतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ नंदोत्रावापी सुबीचताके भनो । दधमुख गिरके सीसभवन जि नवरतनो ॥ सुरपति० ॥ १८ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पूर्वदिश नंदोत्रावापी बीचदधमुख गिरपर सिद्ध कूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥अर्घ॥ नंदोत्राबापी सुकौनरतकरदिपै । आदि श्रीजिनधाम देखदिनकरछिपै॥ सुरपति० ॥ १६ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पूर्वदिश नंदोतरावापी मुखकौन प्रथमरतकरगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥६॥अर्घ॥ बाहरकौन सुजानबापी नंदोतरा । रतकरगिरके सीसभवन जिनदूसरा । सुर पति० ॥ २० ॥ ओंह्रीं नंदीश्वरद्वीप के पूर्वदिश नंदोतरावापी मुखकौन द्वतियरतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ ॥ वापिनंदपेना तसुबीच निहारिये । दधमुखपर जिनभवन सरसउरधा- रिये ॥ सुरपति० ॥ २१ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पूर्वदिश नंदपेनावापीबीचदधमुख गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ पहलो कौन सुजान नंदपेनातनो । रतकरपर जिनधाम बहुत अद्भुत वनो ॥ सुरपति० ॥ २२ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वरद्वीपके पूर्वदिश नंदपैनावापीमुखकौन प्रथमरतकर गिरपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घ ॥ नंदपेना वापीमुखकौन सुदूसरो । रतकरपर जिनधामलालपाइन परो ॥ सुरपति० ॥ २३ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पूर्व दिशनंदपेना बापी मुखकौनेद्वतीय रतकर गिर पर सिद्धकूटजिन मंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥

अथ जयमाल दोहा ॥

श्रीनंदीश्वर द्वीप के, पूरब दिश सुविशाल । तेरह श्री जिन भवन हैं, जय जय जयजयमाल॥२४॥

पद्धड़ी ॥

जय जय श्रीअष्टम दीप सार । सब दीपन में महिमा अपार ॥ जै ताकी पूरब दिश मँझार ॥ जे तेरह जिन मंदिर निहार ॥ २५ ॥ जै प्रथम सुअंजन गिर महान । जै श्याम वरन वरनै पुरान॥ जे उन्नत चौरासी हजार । जोजन जिन भवन तहां निहार ॥२६॥ ता गिरकी चारों दिश सुजान । जे इक इक वापी सजल थान ॥तावीच सुदध मुख गिर बिशाल । दध बरन सुउज्जल है रिशाल ॥ ॥ २७ ॥जे जोजन उन्नत दसहजार । जैतापर श्री जिन भवनसार ॥ जैवापिनकी विदिशा जुहोय तहां इकइक रतकर गिर जुसोय ॥ २८ ॥ जै अहन वरन जोजन हजार । उन्नत भाष जिनवर बि-चार ॥ तापर जिनमंदिर है अनूप । जै पूजाकरत सुअमर भूप ॥ २९ ॥ जै वने अकीर्तम स्वयं सि-द्व ॥ जिन भवन विराजत हैं प्रसिद्ध ॥ नाना विध रतन लगे अपार । महिमा को वरनत लहैंपार ॥ ३० ॥ जे समोसरन रचना समान । सब मंगल दर्व धरे प्रमान ॥ जै जै श्री जिनवर देव सोय ॥ तुम सम नाहि दूजो देव कोय ॥ ३१ ॥

घत्ता दोहा ॥

नंदीश्वर पूरब दिशा, वरनी यह जयमाल । मनवच सीस निवाय कै, लाल नवावत भाल॥३२॥
इति जयमाल ॥

अथाशीवार्दः ॥ कुसुमलताछंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा वरनन

को करसके बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढै अधिक सरस सुखदाय । यह भवजस परभव सुख दाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ २३ ॥ इति आशीर्वादः

इति नंदीश्वर द्वीप के पूर्व दिश संबंधी तेरह[१३] जिन मंदिर सिद्धकूट विराजमान तिनकी पूजन संपूर्णम् ॥

अथ नंदीश्वरद्वीपके दक्षिणादिश त्रियोदश[१३] पर्वतपरत्रियोदश[१३] सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः नंबर ॥ ५८ ॥

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

है नंदीश्वर द्वीप आठमो ताकी दक्षिणादिश सुखदाय । इक अंजन गिर दधमुख चार रतकर आठ कहें जिनराय ॥ ताके सिखर श्रीजिनमंदिर स्वयं सिद्ध पूजत सुरराय । हमैं शक्ति नाहीं पहुंचन की जिनपद जजत सुमंगल गाय ॥ १ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीप के दक्षिणादिश एक अंजनगिर चार दधमुख आठ रतकर पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संबौषठाव्हाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र ममसन्निहितो भव भव बिपट संधीसकरणं ॥ स्थापनं ॥

॥ अथाष्टकं ॥ सुंदरीछंद ॥

जलसुपावन प्राशुक लीजिये । धार जिनपद आगै दीजिये ॥ दीप नंदीश्वर सुरजायकैजजत जिन दक्षिणादिश आयकै॥१॥ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिणादिश सबंधी अंजनगिर ॥१॥ अरजा बापी बीच दधमुख गिर ॥ २ ॥ अरजा बापी मुखकौन प्रथमरतकर गिर॥३॥अरजाबापी मुखकौन द्वतीय. रतकर

गिर॥४॥विरजावापी बीच दधमुख गिर॥५॥बिरजाबापी मुख कौन प्रथमरतकर गिर॥६॥ बिरजाबापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिर ॥ ७ ॥ आशोक बापी बीच दधमुख गिर ॥ ८ ॥ आशोक बापी मुख कौन प्रथमरतकर गिर ॥ ९ ॥ आशोकबापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिर ॥ १० ॥ वीत शोकाबापी बीच दधमुख गिर ॥ ११ ॥ वीत शोकाबापी मुख कौन प्रथमरतकरगिर ॥ १२ ॥ बीत शोकाबापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥१३॥ जलं ॥ परम चंदन केसर गारकै। पूजिये जिनचरण निहार के ॥ दीप नंदीश्वर० ॥३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ लेय उज्जल अक्षत सोहनो। देत पुंज सुभविजन मोहनो ॥ दीप नंदीश्वर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ फूल सार सुगंधित लावनो। जिनसु चरनन भेट चढावनो ॥ दीपनंदीश्वर० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्प ॥ सरस मोदक बहु पकवान जू । पूजिये ले श्रीभगवान जू ॥ दीपनंदीश्वर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ दीप मणमई कर विचधारता । करत भव्य सुजिनवर आरता ॥ दीपनंदीश्वर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ धूप दसबिध पर्मल खेयिये । परम पावन जिनपद सेयिये ॥ दीपनंदीश्वर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ फल मनोहर सुंदर धोय के । जजत जिनपद हर्षित होय के ॥ दीप नन्दीश्वर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल सुफल वसुदर्व मिलाय कै । अर्घ देत सुलाल बनायकै ॥ दीपनंदीश्वर० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ चौपाई ॥

नंदीश्वर दक्षिणदिश नाम। अंजन गिरपर श्रीजिनधाम ॥ सुरसुरपति नित जजत सुजाय । हम निजघर पूजत जिनपाय ॥ ११ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिणदिश अजनागिर पर्वतपर सिद्ध

कूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ अरजावापीबीच सुनेह। दधमुखगिरपर श्रीजिनगेह॥ सुरसुरपति० ॥ १२ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिणदिश अरजाबापी बीच दधमुख गिरपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ अरजाबापी कौनसुआदि। रतकर पर जिनभवन अनादि ॥ सुरसुरपति० ॥ १३ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिणदिश अरजाबापी मुखकौन प्रथमरतकर गिरपरसिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ अरजाबापीदूजेकौन । रतकरगिरपर श्रीजिनभौन ॥ सुरसुरपति० ॥ १४ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिण दिश अरजावापीमुख कौन द्वतीयरतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥४॥ अर्घ ॥ बिरजाबापी बीच निहार । दधमुख गिरपर जिनगृह सार ॥ सुरसुरपति० ॥ १५ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिणदिश बिरजावापी बीचदधमुख गिरपरसिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ विरजा पहिले कौनबिचित्र । रतकरपर जिनभवन विचित्र ॥ सुर सुरपति० ॥ १६ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीप के दक्षिण दिश विरजा वापी मुखकौन प्रथमरतकर गिर पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घ ॥ विरजा दूजे कौन सुजान । रतकर गिरपर श्री जिनथान ॥सुरसुरपति०॥१७॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिण दिश विरजा वापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ वापी अशोकबीच जू वनो । दध मुखपर मंदिर जिन तनो ॥ सुरसुरपति० ॥ १८ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिण दिश अशोक बापी बीच दध मुख गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥ पाहिलो कौन अशोका दीश । जिन मंदिर रतकर गिर शीश ॥ सुरसुरपति० ॥ १९ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीप के दक्षिण दिश अशोका बापी मुख कौन प्रथमरतकर गिरपर

सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ९ ॥ अर्घं ॥ बापी अशोका कौन दूसरे । धाम जिनेश्वर रतिकर सिरे ॥ सुरसुरपति०॥२०॥ओंह्रीं नंदीश्वर दीपके दक्षिण दिश अशोका वापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १०॥अर्घं॥ वापि वीतशोका विच सोय। दधि मुख पर जिन मंदिर होय ॥ सुरसुरपति० ॥ २१ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके दक्षिण दिश वीत शोका वापी वीच दधमुख गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ वीत सुशोका कौन गनेह। पाहिले रतकर पर जिनगेह । सुरसुरपति०। २२। ओंह्रीं नंदीश्वर दीपके दक्षिणदिश बीत शोकावापी मुख कौन प्रथमरतकरगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घं ॥ कौन बीतशोका कोपेख । दूजे रतकर जिनग्रह देख ॥ सुरसुरपति० ॥ २३ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीप के दक्षिणदिश बीतशोकाबापी मुखकौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

नंदीश्वर दक्षिणदिशा, तेरह भवन रिशाल । जिनपद सीस निवाय कै,सरस भनी जयमाल ॥२४॥

॥ पद्धड़ी ॥

जै नंदीश्वरवर द्वीपसार । जैताकी दक्षिणदिश निहार ॥इकै अंजनगिर दाधिमुख सुचार । रतकर गिर आठ कहे बिचार ॥ २५ ॥ जै येही तेरहै गिर प्रसिद्ध । तापर जिनमंदिर स्वयं सिद्ध ॥ जै सौजोजन आयाम जान । जै व्यासतास आधो प्रमान ॥ २६ ॥ जै पचहत्तर जोजन उतंग । मणि जड़ित बरन कंचन सुरंग ॥ जै चारों दिश सोहै दुवार । जै मानुष थंभ तहां निहार ॥ २७ ॥

जै प्रातिहार्य बरनन विचित्र। जै मंगल दर्व धरे पवित्र॥ शतेंआठ अधिक प्रतिमा विशाल। जै जुदे जुदे दरशैं त्रिकाल॥ २८॥ जै धनुष पांचसै उचित काय। पद्मासन छवि बरनी न जाय॥ जहां चतुरन काय देवआय। जिन चरणकमल पूजत बनाय॥ २९॥ गुणगानकरत अतिमुदित अंग। इंद्रानी इंद्र नचैं जुसंग॥ जै दुंदभि बाजे बजत जोर। अनहद सादेबारह किरोर॥ ३०॥ हम शक्ति हीन पहुंचो न जाय। निजघर पूजत जिनराज पाय॥ मन बचनकाय भुविशीश लाय। भविलाल सदा बल बल सुजाय॥ ३१॥

॥ घत्ता दोहा ॥

जिनगुण गूंथी माल यह, अक्षत पहुप विशाल। भविजन कंठ लगाय कैं, सुरधर बांचैं लाल। ३२। इति जयमाल॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसकै बनाय॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुर जाय॥ ३३॥ इत्याशीर्वादः॥

इति नंदीश्वर द्वीप के दक्षिणदिश त्रियोदश जिनमंदिर सिद्धकूट बिराजमान तिनकी पूजन पाठ संपूर्णम्॥

अथ नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमादिशसंबंधी त्रियोदश[13] जिनमंदिर सिद्धकूट तिनकी पूजन प्रारम्भः॥ नंबर॥ ५९॥

॥ अथ स्थापना ॥ कुसुमलता छंद ॥

श्रीनंदीश्वर द्वीप आठमो ताकी उपमा कौन करे। पश्चिमदिश तेरहैं जिनमंदिर दर्शन देखत पाप हरै॥ तहां सुरसुरपति नितप्रति पूजत परम भाव उर मांहि धरे। आव्हानन तिनकी हम करके पूजत पुन्य भंडार भरे॥ १॥ ॐह्रीं नंदीश्वर द्वीप के पश्चिमदिश एक अंजनगिर चार दधमुखगिर आठ रतकर पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं अत्र ममसन्नहितो भव भव विषट संधीसकरणं॥ स्थापनं॥

अथाष्टकं॥ जंगला॥

कंचन भृंगार भराय, तीरथ जल लेकै। भवि पूजत प्रीति लगाय, जिनपद मन देकै।नंदीश्वर द्वीप महान, पश्चिम दिश सोहै। तेरह जिन मंदिर जान सुर नर मन मोहै॥ २॥ ॐह्रीं नंदीश्वर द्वीप के पश्चिम दिश संबधी अंजन गिर॥ १॥ बिजया बापी वीच दधमुख॥२॥विजया बापी मुख कौन प्रथमरतकर॥ ३॥ बिजया बापी मुख कौन द्वतीय रतकर॥ ४॥ वैजयन्ता बापी वीच दधमुख॥॥ ५॥ बैजयंता बापी मुख कौन प्रथमरतकर॥ ६॥ बैजयंता बापी मुख कौन द्वतीयरतकर॥७॥ जयंता बापी वीच दधमुख॥ ८॥ जयंता बापी मुख कौन प्रथमरतकर॥ ९॥ जयंता बापी मुख कौन द्वतीय रतकर॥ १०॥ अपराजिता बापी वीच दधमुख॥ ११॥ अपराजिता बापी मुख कौन प्रथमरतकर॥ १२॥ अपराजिता बापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो॥ १३॥ जलं॥ केसर चंदन घसलाय, गंध सुगधं भरी। पूजत श्री जिनवर पाय भव आताप हरी॥

नंदीश्वर ॥ ३ ॥ ओंह्रीं ॥ चंदनं ॥ उज्जल शशिकिरण समान,अक्षत ले सुथरे । पूजत जिनचरण महान, पाप समूह हरे ॥ नंदीश्वर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ नाना बिध फूल सुबास, सव रितु के लीजे । जिन चरण महासुख रास,तिनको पूजीजे ॥ नंदीश्वर० ॥ ५ ॥ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी गोझा पकवान, नैनन को प्यारो । धर कनक रकाबी आन, जिन चरनन बारो ॥ नंदीश्वर०॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ बर दीप अमोलिक लाय, भविजन ध्यावतहैं । प्रभ चरनन को सुचढ़ाय, जिन गुण गावत हैं ॥ नंदीश्वर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं ॥ ले दसविध धूप बनाय, खेवत प्रभु आगे। सब कर्मन देत जलाय, ज्ञान कला जागे ॥ नंदीश्वर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ फल सुरस सुगंधित देख, जिनआगे धरिये । कर भक्त भाव सुविशेख,शिव सुंदर बरिये॥ नंदीश्वर०॥९॥ ओंह्रीं०॥फलं॥बसु विध सब दर्ब मिलाय, अर्घ सुदीजीजे । जिनराज सुचरण चढ़ाय निजरस पीजीजे॥नंदीश्वर०॥१०॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ दोहा ॥

नंदीश्वर पश्चिमदिशा, अंजनगिरपर जाय । सुरपति जिनमंदिर जजैं, हमपूजत जिनपाय॥११॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश अंजनगिर पर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घं ॥ बिजयावापी बीचमैं, दधमुखगिर सुखदाय । सुरपति ॥ १२ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश बिजयावापीबीच दधमुख गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ बिजयाबापी कौनलख, प्रथमसुरत कर पाय । सुरपति ॥ १३॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश बिजयाबापी मुखकौन प्रथमरतकर गिर

परसिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥ कौनाबिजयावापी तनो, दोयरतकर मन लाय । सुरपति० ॥ ॥ १४ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश बिजयाबापी मुखकौन द्वतीयरतकर गिरपरसिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥ बापिवैजयंताबिषै, दधमुख गिरबतलाय । सुरपति० ॥ १५ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश वैजयंताबापी बीचदधमुख गिरपर सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ कौनवै-जयंता जहां, रतकर प्रथम लखाय । सुरपति० ॥ १६ ॥ ओंह्रीं० नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश बैजयं-ताबापी मुखकौन प्रथमरतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥६॥अर्घ॥ कौनवैजयंता द्वतिय, रतका सीस सुहाय । सुरपति० ॥ १७ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश वैजयंताबापी मुखकौन द्वतिय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घ ॥ बापिजयंता बीचगिन, दधमुखगिर चितलाय सुरपति० ॥ १८ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश जयंताबापीबीच दधमुख गिरपर सिद्धकूटजिन मंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घ ॥ प्रथमजयंता कौनमैं, रतकर सिखर सुगाय । सुरपति०॥ १९ ॥ ओंह्रीं नंदी-श्वर दीपके पश्चिमदिश जयंतावापी मुखकौन प्रथमरतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ९ ॥ अर्घ ॥ कौनजयंतावापिका, रतकरद्वतिय दिपाय । सुरपति० ॥ २० ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चि-मदिश जयंताबापी मुखकौन द्वतीयरतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घ ॥ बीचवा पिअपराजिता, दधमुखपर हरषाय । सुरपतिजिन० ॥ २१ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश अप-राजितावपि बीच दधमुख गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घ ॥ अपराजिता सुकौनमैं, रतकर प्रथम बताय । सुरपति० ॥ २२ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश अपराजिता वापीमुख

कौन प्रथमरतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घं ॥ कौनदुतिय अपराजिता, रतकर लाल सुधाय । सुरपति० ॥ २३ ॥ ओंह्रीं नदीश्वर द्वीपके पश्चिमदिश अपराजितावापी मुखकौन द्वतीय रतकरगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घं ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

पश्चिमदिशा सुहावनी, अष्ट द्वीप सुरिशाल । जिनमंदिर तेरह[13] जहां. तिनकी सुन जयमाल ॥२४॥
एकसौत्रेसठ[163] कोड़ गिन, लाख चौरासी जान । जोजन चौड़ा द्वीप है, इक इक दिशपरमान॥२५॥

॥ चाल छंद ॥

नंदीश्वर पश्चिमदिशा जगसार हो, तेरहगिर[13] सुमहान । गोल ढोल सब बनरहो जगसार हो ऊपर तल समजान ॥ जान अंजनगिर मनोहर द्वीप बीच बिराजही । लख लाख जोजन दिशा चारों ओर वापीराजही। बापी प्रमान सुलाख जोजन गोल रतनन सों जड़ी।जोजन हजार कही सुगहरी अमल मीठे जलभरी॥२६॥चारों वापी बाच मैं जगसार हो. दधमुख गिर दीपत। बापी विदिशा भैं भली जगसार हो, दोयरतकर शोभत ॥ शोभतं उपवन दिशा चारों एक एक बापी परै । जोजन प्रमान सुलाख कानन देवनित क्रीड़ा करै ॥ यह भांत तेरहगिर कहे तिस सिखर मंदिर जिनतनो । सब समोसरन समान रचना स्वयं सिद्ध सुहावनो ॥ २७ ॥ सिंहासनपर कमल है जगसार हो, तापर श्रीजिनराय । मंगल दर्व सबै धरे जगसार हो, प्रातयहार्य सुखदाय ॥ सुखदाय रत्नमई सुप्रतिमा आठ अधिक सुएकसै[108] । आसन कमल वराज्ञ भाव सुदेव दर्शन अघनसै ॥ सौपांच धनुष उतंग सोहै इंद्र नित पूजा करैं । हम शक्ति हीन सुदीन है जिनभक्तिवस पायन परैं ॥ २८ ॥

॥ घत्ता दोहा ॥

पश्चिमदिश तेरह भवन, जिनवर बिंब विशाल। तिनकी बर जयमाल यह, बांचत भविक सुलाल २९

॥ इति जयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय। जाके पुन्य तनी अतिमहिमा बरनन को करसके बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ ३० ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति नंदीश्वर द्वीप के पश्चिमदिश तेरह जिनमंदिर सिद्धकूट विराजमान ताकी पूजन संपूर्णम् ॥

अथ नंदीश्वर द्वीप के उत्तरदिश संबंधी त्रियोदश[13] सिद्धकूट जिनमंदिर विराजमान ताकी पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ६० ॥

अथस्थापना ॥ अडिल ॥

अष्टम द्वीप तनी उत्तर दिश जाय जी। तेरह श्रीजिनभवन जजत सुररायजी ॥ हमैं शक्ति सो नांहि करैं यहां थापना। पूजत निजघर प्रतिमाहैं हित आपना ॥ १ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीप के उत्तर दिश संबंधी एक अंजन गिर चार दधमुख गिर आठ रतकर गिर पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो !! अत्रा वत्रा वत्र संवौपटाव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्नहितो भव भव विषट संधी सकरणं। स्थापनं

अथाष्टकं ॥ जंगला ॥

उज्जल जल निर्मल लाय,शीतल सुखकारी। पूजत श्री जिनवर पाय,कंचन भर झारी॥नंदीश्वर द्वीप महान,उत्तर दिश सोहै।तेरहैं जिन मंदिर जान सुरगण मन मोहै॥२॥ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तर दिश संबंधी अंजन गिर॥१॥रम्याबापी बीच दधमुखगिर॥२॥रम्या बापीमुख कौन प्रथम रतिकर॥३। रम्या वापी मुख कौन द्वितीय रतकर॥४॥रमनी वापीवीच दधमुख॥५॥रमनी वापीमुख कौनप्रथमरतकर॥६॥रमनी वापी मुख कौन द्वतीय रतकर ॥ ७ ॥ सुप्रभा वापी वीच दधमुख ॥ ८ ॥ सुप्रभा वापी मुख कौन प्रथम रतकर ॥९॥ सुप्रभा वापी मुख कान द्वतीय रतकर॥ १०॥सर्वतो भद्र वापी बीच दधमुख।११। सर्वतो भद्रबापी मुखकौन प्रथमरतकर ॥ १२ ॥ सर्वतो भद्रबापी मुखकौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ जलं ॥ मलयागिर चंदन सार केसर रंगभरी। जिनराज चरनपरवार. भवआताप हरी ॥ नंदीश्वर० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ अक्षत शशिकिरन समान, पुंजसुदीजाजे । धर कनकथार भर आन, जिनपद पूजी जे ॥ नंदीश्वर० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं०। अक्षतं ॥ वहु फूल सुगंधित लाय, जिनमंदिर जाइये । प्रभु चरनन भेट चढ़ाय, श्रीजिन गुण गाइये ॥ नंदीश्वर० ॥ ५॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ फेनी गोझा सुबनाय, रसना को प्यारे। जिन सनमुख देत चढ़ाय, हर्ष हिये धारे ॥ नंदीश्वर० ॥ ६॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ ले दीप अमोलिक सार, जगमग जोति जगी। ले कनकरकाबी धार, प्रभुसों प्रीत लगी ॥ नंदीश्वर० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥दीपं॥ दसविधि की धूप बनाय, प्रभु आगे खेवो। कर्मादिक रोग नशाय, श्रीजिनपदसेवो ॥ नंदीश्वर० ॥

॥ ८ ॥ ॐह्रीं० ॥ धूपं ॥ फल परम मनोहर लाय, नैनन सुखकारी । जिनचरन सुपूजत जाय, पावो शिवप्यारी ॥ नंदीश्वर० ॥ ९ ॥ ॐह्रीं० ॥ फलं ॥ जल फल वसुदर्व मिलाय, अर्घ बनावतहैं । जिनराज सुपूजतजाय, प्रभु गुण गावत हैं ॥ नंदीश्वर० ॥ १० ॥ ॐह्रीं० ॥ अर्घं ॥

अथप्रत्येकार्घ पद्धड़ी ॥

नंदीश्वरअष्टमद्वीपसार । उत्तरदिश अंजनगिरनिहार॥ जिनमंदिर सुरपूजत सुजाय । हमजजत सुजिनपद शीशनाय ॥ ११ ॥ ॐह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश अंजनगिरपर्वतपर सिद्धकूटजिन मंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ रम्यावापी विच जगमगाय । दधमुख गिरसिखरविषै सुहाय॥ जिनमंदिर०॥ ॥ १२ ॥ ॐह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश रम्यावापीवीचदधमुखगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥२॥ ॥ अर्घ ॥ रम्यावापीमुखकौन जान । रतकरगिर प्रथमसिखर महान ॥ जिनमंदिर० ॥ १३ ॥ ॐह्रींनंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश रम्यावापी मुखकौन प्रथमरतकरगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥अर्घ ॥ रम्याबापी विदिशा विशाल । दूजे रतकरगिर द्युति रिशाल ॥ जिनमंदिर० ॥ १४ ॥ ॐह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश रम्या वापी मुख कौन द्वतीय रतकरगिर पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥ रमणी बापी बिचहै पवित्र । दधमुख गिर सिखर बनो विचित्र ॥ जिन मंदिर० ॥ १५ ॥ ॐह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तर दिश रमणी वापी बीच दधमुख गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ५ ॥ अर्घ ॥ रमणी वापी मुख कौन जास । रतकर गिर शिखर प्रथम प्रकाश । जिन मंदिर०॥१६॥ॐह्रीं नंदीश्वर द्वीप के उत्तर दिश रमणी वापी मुख कौनप्रथम रतकर गिर पर सि

द्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ६ ॥ अर्घं ॥ रमणी वापी विदिशा विचार । रतकर गिर दूजो शिखर धार ॥ जिन मंदिर० ॥ १७ ॥ ओंह्रींनंदीश्वर द्वीप के उत्तर दिश रमणी वापी मुख कौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ७ ॥ अर्घं ॥ वापी सुप्रभाविचहै अनूप । दधमुख गिरस्वेत बरन स्वरूप ॥ जिनमंदिर० ॥ १८ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश सुप्रभावापीबीच दधमुख गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ८ ॥ अर्घं ॥ वापीसुप्रभा बिदिशा सुआदि । रतकर गिर सिखर बनोंअनादि ॥ जिनमंदिर० ॥ १९ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश सुप्रभावापी मुखकौन प्रथमरतकरगिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ९ ॥ अर्घं ॥ वापीसुप्रभा मुखकौन देख । दूज रतकर गिरपरसुलेख ॥ जिनमंदिर०॥ ॥ २० ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश सुप्रभावापी मुखकौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १० ॥ अर्घं ॥ सर्वतोभद्रवापी सुजान । तिसबीच सुदधमुख सिखर आन ॥ जिनमंदिर० ॥ २१ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश सर्वतोभद्र वापीबीचदधमुख गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ११ ॥ अर्घं ॥ सर्वतोभद्र वापी मुखकौन वेश । रतकरगिरप्रथम कहो जिनेश । जिनमंदिर० ॥ ॥ २२ ॥ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश सर्वतोभद्र वापीमुखकौन प्रथमरतकर गिरपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १२ ॥ अर्घं ॥ सर्वतोभद्र वापीविदिशा सुलाल । रतकरगिरदूजेपर त्रिकाल ॥ जिनमंदिर० ॥ २३ ॥ ओंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके उत्तरदिश सर्वतोभद्र वापी मुखकौन द्वतीय रतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १३ ॥ अर्घं ॥

सोरठा ॥

अष्टम द्वीप निहार, चारोंदिश बावन कहे । जिनमंदिर सुखकार, पूजोवसुविधअर्घसों ॥ २४ ॥

ऊंह्रीं नंदीश्वर द्वीपके चारों दिशा संबंधीचार अंजनगिर सोलह दधमुख बत्तीस रतकर गिरपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ १४ ॥ पूर्णार्घं ॥ वि०

अथ जयमाल दोहा ॥

नंदीश्वर उत्तरदिशा, जिनमंदिर सुबिशाल । बने अकीर्त्तमसास्वते, तिनकी यह जयमाल ॥२५॥

पद्धडी ॥

जै जै श्रीअष्टम द्वीप जान । जै ताकी उत्तरदिश बखान ॥ जै तेरहबिच अंजन सुनाम । तागिर पर श्री जिनवर सुधाम ॥ २६ ॥ जै श्यामबरन सोहैसरंग । जै सहसचार अस्सी उतंग ॥ जै ताकीचारोंदिश रिशाल । इकइक बापीसोहै बिशाल ॥ २७ ॥ जै एकलाख जोजन प्रमान । जै निर्मल जल भररहो जान ॥ जै ताबिच दधमुख गिर लसंत । दधवरन सुउज्जल शोभवंत ॥ २८ ॥ जै उन्नत जोजन सोहजार । जै ता गिर ऊपर भवन सार ॥ जै एकवाबरी कौन दोय । जै बिदिशा मैं रतकर जुहोय ॥ २९ ॥ रतकर गिर उन्नत इक हजार । तागिर पर जिन मंदिर निहार ॥ सब समोसरन रचनाअनूप । तहां पूजा करतसु अमर भूप ॥ ३० ॥ कर पूजा भक्तहिये सुआन । जिन बिंबनिहारत हरष ठान ॥ सुर नाचत जिनबरके हजूर । ताथेई थेई थेईधुन रहीपूर ॥३१॥ बहु पुन्य उपार्जन देव आय । नाना विधकर जिन गुण सुगाय ॥ जै तुच्छ बुद्धि भविलाल पाय । जिन चरण सुसेवत प्रीतलाय ॥ ३२ ॥

घत्ता दोहा ॥

नंदीश्वर उत्तरदिशा, बरनी यह जयमाल । जोबांचै भवि भावसों, तिनके भाग विशाल ॥३३॥

इतिजयमाल ॥

॥ अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ैं मनलाय ॥ जाके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करसकैं बनाय। ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़े अधिक सरस सुखदाय। यह भवजस परभव सुखदाई सुरनर पदलहै शिवपुरजाय॥ २४ ॥ इत्याशीर्वादः॥

इति नंदीश्वर द्वीप के उत्तरदिश त्रियोदश सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा संपूर्णम्॥

अथ कुंडलद्वीप के बीच कुंडलगिर के चारोंदिश चार सिद्धकूट जिनमंदिरे पूजा प्रारम्भः॥ नंबर ॥ ६१ ॥

॥ अथ स्थापना ॥ मदअवलिप्तकपोल छंद ॥

कुंडल नाम द्वीप ग्यारमो ताके बीच कहो गणधार। घेरे आधे द्वीप कनक द्युति कुंडलगिर कुंडल आकार॥चारोंदिशा चैार जिनमंदिर सुरपति जजत भक्ति उर धार। हम तिनको आव्हानन बिधकर जिनपद पूजत अष्टप्रकार॥ १॥ ओंह्रीं कुंडल द्वीपमध्ये कुंडल गिर के चारोंदिशा चैार जिनमंदिरेभ्यो॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाव्हाननं। अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं। अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट संधीसकरणं॥ स्थापनं॥

॥ अथाष्टकं ॥ चाल प्रमादिसूनकी ॥

क्षीरोदधिउनहार सुजलभरि कंचन झारी। जिनसन्मुख दे धार जरामरनादिनिबारी॥ सुरपति

पूजन जाहिं सिखर कुंडल गिरवर के । हमैं शक्ति सो नाहिं जजत पद श्रीजिनवरके ॥ २ ॥ ओंह्रींकुंडल द्वीप मध्ये कुंडलागिरपर्वतके पूर्वदिश रुचिकनाम ॥ १ ॥ दक्षिणदिश रुचिकप्रभनाम ॥ २ ॥ पश्चिमदिश हिमवननाम ॥ ३ ॥ उत्तरादिशा मंदिर नाम सिद्धकूटपर स्वयंसिद्ध जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ जलं ॥ मलयागिर घसलाय सुचंदन केसर भारी । जजत जिनेश्वर पाय सो भवआताप निवारी ॥ सुरपति० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं० ॥ चंदनं ॥ चंद्रकिरन सम स्वेत अमल अक्षत ले ताजे । जिनपद पुंज सुदेव अक्षयपद पावन काजे ॥ सुरपति० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ बरन बरन के फूल धरे बहु परमलताई । हरत मदन मद शूल चरन जिनराज चढ़ाई ॥ सुरपति० ॥ ५ ॥ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ नानाविध पकवान सिताघृत मिश्रित भारी । श्रीजिन चरन महान जजत तन क्षुधा निवारी ॥ सुरपति० ॥६॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ दीपक जोति जगाय दसोंदिश होत उजारा । मोह तिमर क्षय जाय जजत पद जिनवर केरा ॥ सुरपति० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं ॥ दीपं ॥ दसविध धूप सुगंध धूम ऊरधमुखदाई । हरत कर्म को बंध दहत जिन सन्मुख जाई ॥ सुरपति० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ ॥ धूपं ॥ फल की जात अपार मधुर गुण कोमलताई । मोक्ष सुपद दातार जजत जिनवर पदभाई ॥ सुरपति० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं । जल फल दर्वमिलाय अर्घ भर कंचनथारी । जजत जिनेश्वर पाय लाल तिनकी बलहारी ॥ सुरपति० । १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥ कुसुमलताछंद ॥

कुंडलागिरकी पूरवदिश में पांचकूट भाषे जिन राय । चार शैलके अंत बताए उरले एक रहीद्युति

ध्याय॥ सिद्धकूटतसुनाम रुचिकहे तापर जिनमंदिर सुखदाय। सुरसुरपति नित पूजत तिनको हमले अर्घ जजत जिनपाय॥ ११॥ ओंह्रीं कुंडल द्वीप मध्ये कुंडलगिर पर्वत के पूर्वदिश रुचिक नाम सिद्धकूट पर स्वयं सिद्ध जिन मंदिरेभ्योः॥ १॥ अर्घं॥ दक्षिणदिश कुंडलगिरकेरी पांचकूटसोहै सुखकार॥ पर्वत अंत चार कंचनमई पहली ओर एक उरधार॥ सिद्धकूट तसुनामरुचिक प्रभतापर श्रीजिन भवन निहार। अमरअमरपति जजत अष्टविध हमपूजत नितअघ सँवार॥ १२॥ ओं ह्रीं कुंडल द्वीपमध्ये कुंडलगिरके वीच दक्षिणदिश रुचिकप्रभनाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमंदिरेभ्योः॥ २॥ अर्घं॥ कुंडलगिर पश्चिम दिश सोहैपांचकूट कंचन द्युतिताम। बाहर भागचार भूपति के भीतर एक सरस सुखधाम॥ तहांजिनभवन अनूपम सुंदर सिद्धकूटतसुहिमवननाम। देवसचीपति वसुविधपूजत हमले अर्घ जजत जिनधाम॥ १३॥ ओं ह्रीं कुंडलद्वीप मध्ये कुंडलगिर के पश्चिमदिश हिमवन नाम सिद्धकूट पर स्वयं सिद्धजिनमंदिरेभ्योः॥ ३॥ अर्घ॥ उत्तरदिशा सुगिर कुंडलं की पांचकूटसोहैंसुरिशाल॥ गिरकेअंत चारसुर निवसें भीतर भाग एक सुविशाल॥ मंदिर नाम सुसिद्धकूटपर जिनमंदिर सुर जजत त्रिकालावसु विध अर्घ बनाय गाय गुण निजघर जिन पूजत भविलाल॥ १४॥ ओंह्रीं कुंडल द्वीप मध्ये कुंडल गिर के उत्तर दिश मंदर नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिन मंदिरेभ्यो॥॥ ४॥ अर्घ॥

॥ अथ जयमाल॥ दोहा॥

कुंडलगिर चारोंदिशा, श्रीजिनभवन विशाल। जिनपद शीश निवायके, अब बरनूं जयमाल १५

॥ पद्धड़ी ॥

जै एक खरब वसु अरब जान। जै कोड़ पचासी अधिक मान ॥ जोजन सुछिहत्तर लाखसार। इकइक दिशाको आयाम धार॥ १६ ॥ जैकुंडल द्वीप दिपै रिशाल। तिसबीच सुकुंडल गिर बिशाल चहुंओर द्वीप आधो सुघेर। कुंडल वत गोल परोसुहेर ॥१७॥ जोजन पचहत्तर सहस अंग। उन्नत कंचन के वरन रंग ॥ जैगिर ऊपर चहुंदिश सुचार। जैसिद्धकूट जिन भवन सार ॥ १८ ॥जैरतन मई प्रतिमा जिनेश। शतआठ अधिक बंदत सुरेश ॥ सबसमोसरन रचनानिहार। वरनत सुरगुरु पावैं नपार ॥ १९ ॥ जैचतुरनकाय देवआय। जै जिनगुणगावैं प्रीतलाय ॥ जैदुदुभिशब्दवजै सुजोर। अनहद सारे बारह किरोर ॥ २० ॥ जैद्रुमद्रुमद्रुम बाजैं मृदंग। निरजर निरजरनी नचैसंग ॥ ताथेइथेइथेइधुन रहीपूर। जगतारन जिनवर के हजूर ॥ २१ ॥ जिनचरन कमल पूजत सुरेंद्र। सबदेव करत जयजय जिनेंद्र॥ मन बचनकाय भुविशीश लाय। भविलाल सदा वलवल सुजाय २२

घत्ता दोहा ॥

कुंडल गिर जिन भवन की, पूजा बनी महान।जो वांचै मन लायकै, पावै अविचल थान ॥२३॥ इतिजयमाल ॥

अथाशीर्वादः ॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाके पुन्य तनी अति महिमा बर

नन को करसकैं वनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय । यह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुर जाय ॥ २४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति कुंडल द्वीप मध्ये कुंडल गिर की चारों दिशा चारें सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा संपूर्णम् ॥

अथ रुचिक द्वीप मध्ये रुचिक गिर के चारों दिशा चाँर सिद्धकूट जिन मंदिरे पूजा प्रारम्भः ॥ नंबर ॥ ६२ ॥

अथस्थापना ॥ छप्पयछंद ॥

रुचिक द्वीप तेरमो महा सुंदर द्युति धारी । ताके बीच सुगोल रुचिक गिर पर्वत भारी ॥ चारों दिशा जिन भवन चार सोहैं सुखदाय ॥ पूजत इंद्र सुजाय देव मिल चतुरन काय ॥ घेरे द्वीप समुद्र सब पहुंचन कौन उपाय । याते आह्वानन सुकर पूजत जिनवर पाय ॥ १ ॥ ओंह्रीं रुचिक द्वीप मध्य रुचिक गिर पर्वत पर चारों दिशा चार जिन मंदिर सिद्धकूटेभ्यो ॥ अत्रा वत्रा वत्र संवौषटाह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्नाहितो भव भव बिपट संधी सकरणं स्थापनं ॥

अथाष्टकं ॥ चालजयमालकी ॥

क्षीरोदधि सम उज्जल महानीरलें । हेमभ्रंगार भर धाराजिन चरणदे ॥ रुचिक गिरचार दिशाजिन भवन सुरजजैं । हम सुपूजत यहां ध्यानधर जिनभजैं ॥ २ ॥ ओंह्रीं रुचिकद्वीपकेवीच रुचिक गिरपर्वतके पूर्व दिश ॥ १ ॥ दक्षिण दिश ॥ २ ॥ पाश्चिम दिश ॥ ३ ॥ उत्तरादिश सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥

॥ जलं॥ अधिक घनसार चंदन सुगुण सीयरो । जजत जिनचरण आताप भविकी हरो ॥ रुचिकगिर ० ॥ ३ ॥ ओंह्रीं ० ॥ चंदनं ॥ स्वेतशशिकिरण समधोय तंदुल धरो । चरण जिनराज ढिग पुंज भविजन करो ॥ रुचिकगिर ० ॥ ४ ॥ ओंह्रीं० ॥ अक्षतं ॥ कमल अरकेतुकी वर्ण समजात कै । पूज जिनवर सुपद फूलबहु भांतिके ॥ रुचिकगिर ० ॥ ५ ॥ ओंह्रीं० ॥ पुष्पं ॥ संहपकवान घृतखंड मिश्रित लहा । पूजजिनपद कमल थाल भररुच महा ॥ रुचिक गिर० ॥ ६ ॥ ओंह्रीं० ॥ नैवेद्यं ॥ रत्नमई दीप तसु जोत उद्योतहै करत जिनआरती मोहक्षय होतहै ॥ रुचिकगिर ० ॥ ७ ॥ ओंह्रीं० ॥ दीपं । धूप दसगंधले अग्नि विचखेयिये । हरत वसु कर्म भविजन चरन सेयिये ॥ रुचिकगिर० ॥ ८ ॥ ओंह्रीं० ॥ धूपं ॥ फल सो उत्कृष्ट मीठेसुरस लाइये । तुरत शिवरमनी वरमोक्ष फल पाइये ॥ रुचिकगिर० ॥ ९ ॥ ओंह्रीं० ॥ फलं ॥ जल सुफल आठ विध दर्व सवधोयके । पूज जिनराज पद लाल मदखोयकै ॥ रुचिकगिर ० ॥ १० ॥ ओंह्रीं० ॥ अर्घ ॥

अथ प्रत्येकार्घ सोरठा ॥

पूरव दिशा निहार, रुचिक नाम गिर सीसपै । जिन मंदिर सुखकार, पूजो आठो दर्बले॥ ११ ॥ ओंह्रीं रुचिक द्वीप के पूर्व दिश रुचिक गिर पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ १ ॥ अर्घ ॥ दक्षिण दिशा सुजान, सैल रुचिक गिरकी कही । जिन मंदिर धर ध्यान, पूजो मन बच कायकै ॥ १२ ॥ ओंह्रीं रुचिक द्वीप के दक्षिण दिश रुचिक गिर पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ २ ॥ अर्घ ॥ पश्चिम दिश मनलाय, रुचिक सुगिर पर देखिये । जिन मंदिर मैं जाय, श्रीजिनबर पद पूजकै॥ १३ ॥

ओंह्रीं रुचिक द्वीप के पश्चिमदिश रुचिकगिर पर्वतपर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ३ ॥ अर्घ ॥
उत्तरदिश सुविशाल, रुचिकनाम गिरवर तने । जिनवर भवन त्रिकाल, पूजो भविजन अर्घसों १४
ओंह्रीं रुचिक द्वीप के उत्तरदिश रुचिकगिर पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो ॥ ४ ॥ अर्घ ॥

॥ अथ जयमाल ॥ दोहा ॥

रुचिक द्वीप के वीच में, पर्वत रुचिक विशाल । जिन मंदिर चारोंदिशा, तिनकी सुन जयमाल ॥१५॥

पद्धड़ी ॥

जै जोजन सत्रह खरवगाय । जै अरव सुइकतालिस मिलाय ॥ जै सत्तर दोय कहे किरोर । जै पोडस सहस सुअधिक जोर ॥ १६ ॥ यह रुचिक द्वीप आयान जान । इक इक के भापे हैं पुरान ॥ तिस वीच रुचिक गिर परो फेर । चारों दिश आधो दीप घेर ॥ १७ ॥ चवरासी सहस कहे उतंग । जो जन कंचन के वरन रंग ॥ दिग् आठ कूट चालिस सुचार । तहां रहै देव छप्पन कुमार ॥ १८ ॥ जिन गर्भ जन्म को समय पाय । ...न माताको सेवैं सुआय ॥ अरकूटचार गिरके सुअत । तहां देव चार सुवसो वसंत ॥ १९ ॥ जै चारों दिश में कूट चार । है सिद्धकूट तसु नाम सार ॥ तापर जिन मंदिर शोभमान । सव समोसरण रचना समान ॥ २० ॥ तहां श्री जिन विंव विराजमान । शतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान ॥ जै रत्नमई द्युति अति विशाल । सुर इंद्र चरन पूजत त्रिकाल ॥ २१ ॥ जै नृत्य करत संगीत सार । वाजे वाजत अनहद अपार ॥ जे जिन गुण गावैं अमरनार । सुरताल मधुर धुनिको संवार ॥ २२ ॥ जै जै जगतारन जै जिनेश । तुम चर्ण कमल सेवत सुरेश ॥ हम करत वीनती नमत भाल । भव भव तुम सेव करैं सुलाल ॥ २३ ॥

घत्ता दोहा ॥

रुचिक द्वीप जिन भवनकी,पूरन यह जयमाल।जोनर वांचैं भावधर,तिनके भाग विशाल२४इतिजयमाल

॥ अथाशीर्वादः॥ कुसुमलता छंद ॥

मध्य लोक जिन भवन अकीर्तम ताको पाठ पढ़ै मनलाय। जाकेपुन्य तनी अति महिमा बरनन कोकर सकै बनाय ॥ ताके पुत्र पौत्र अरु संपत बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय। यह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पद लहै शिवपुरजाय ॥ २५ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति रुचिकद्वीप मध्ये रुचिक गिर पर्वत के चारों दिशा चार जिनमंदिर सिद्धकूट बिराजमान ताकी पूजा संपूर्णम्॥

॥ इति तिर्यंच क्षेत्र मध्ये चौसैंठ जिन मंदिर सिद्धकूट तिन विषै रत्नमई प्रतिमा तिनकी पूजन संपूर्णम् ॥

इति श्रीतेरहद्वीप के दिशा विदिशा मध्ये चारसौअठावन सिद्धकूट जिनमंदिर कीर्तम अकीर्तम गंधकुटी और चैत्या के सहित विराजमान ताका पूजन पाठ विधान संपूर्णम् ॥

॥ अथ कविता नाम ॥ सवैया ३१ ॥

अष्टादस सात अरु सत्तर अधिक जान संवत शरद रितु शुक्ल कार्तिक मासहै ॥ दुवादशी भृगुवार उत्तर नपत भाय हर्षन सुजोग ज्ञारे चंद्र अंश भासहै ॥ पूजाको आरंभ ठयो कांशी देश हर्ष भयो भैलूपुरग्राम जैनी जनको निवासहै॥ अकीर्तम मंदिरहैं चारसै अट्ठावन जे तिनको सुपाठलाल जीत यों प्रकाशहै॥ १ ॥

इति श्रीतेरहद्वीप जिनमंदिर पूजनपाठ विधानसम्पूर्णम्

गोम्मटसंग्रह -)||
संकटहरणविनती)|
सामायिकभाषा)|||
छहढालादौलतरामकृत -)
छहढालाबुधजनकृत =)
छहढालाद्यानतरायकृत -)||
दससूत्रजीमूल -)
सूत्रजीवचनका |-)
सूत्रजीभा०टीकासहित १)
अर्थप्रकाशजीवडाभा० ३)
सूत्रादिनित्यपाठसंग्रह |=)
सर्वार्थसिद्धी वडीटीका २)
स्वानुभवदर्पन ||)
आलोचनापाठसटीक -)||
बारामासाराजुलजी)||
राजुलपचीसी -)|
प्रश्नोत्तरनेमनाथराजुल)|||
बारामासासीताजी)||
बारहमासावज्रदंतचक्रवर्ती)|
बारहमासा नेमनाथजी)||
बारहमासा मुनिराज)|
नेमीश्वर विवाह -)
व्याहला नेमनाथजी ||)
जैनसाखोचारभाषा)||
आलोचनापाठभाषा -)
आलोचना पाठ सटीक -)||
शिक्षाजकडी)||
परमार्थजकडी दो प्रकारकी)|||
परमार्थ जकडीदूसरी)|||
बारहभावनासंग्रह)|||
बारहभावना दो प्रकारकी)|||
बारहभावना दूसरी -)
बारहभावनावचनकावडी ||=)
बारहभावना वड़ी छंद वंद =)
सज्जनचित्तवल्लभकाव्य भाषा =)
सज्जनचित्तवल्लभकाव्य पांच
प्रकार की टीका सहित |-)

उपदेशपचीसी -)
निर्वाणकाण्ड भाषा)|
निर्वाणकाण्ड गाथा)|
समाधिमरणवडा =)
समाधिमरणतीर्थवदनासहित)|||
साधुवंदना)||
पंचमंगल रूपचंदकृत -)
जैनबालगुटका -)
जैनप्रथमपुस्तक अनेकग्रं०सा० ||)
जैनाद्वितीयपुस्तकअनेकग्रं०सा० ||)
जैनधर्मसुधासागरअनेकग्रं०सा० ||)
बाईसपरीषहजोगीरासासहित -)||
बाईसपरीषह)||
धारें
पंचपरमेष्टीमंगल
जिनगुणमुक्तावली
जैनग्रंथ नामावली
सुक्तमुक्तावली भाषा
नवकारमंत्र महिमा

जैनग्रंथ मंग

लाला जैनीलाल जैन मालिक